देखिए !

कई मित्रों के अनुरोध से हमने (Dr. Bernier's Travels) नामक अङ्गरेजी पुस्तक का नागरी भाषा में अनुवाद किया है । हिन्दी में उसका नाम " डाक्तर बर्नियर की यात्रा " रक्खा है । इतिहासप्रेमियों के लिए वह पुस्तक बडे काम की होगी । उसके छप जाने पर (Imperial Gazetteer of India) और " तवारीख़-फ़िरिश्ता " आदि पुस्तकों के अनुवाद करने का भी विचार है ।

जिन महाशयों को " डाक्तर बर्नियर की यात्रा " नामक पुस्तक के खरीदने की इच्छा हो उनको उचित है कि भारतजीवन के सम्पादक बाबू रामकृष्ण वर्म्मा से पत्र व्यवहार करें ।

काशी
१—९—०३. } गङ्गाप्रसाद गुप्त ।
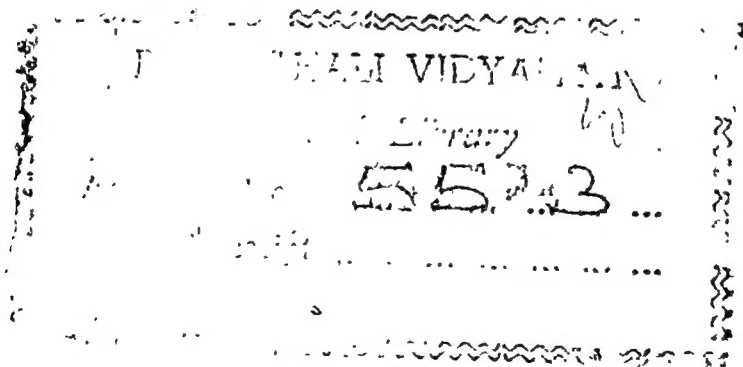
किसान की बेटी।

प्रथम भाग

पहला प्रकरण।

हमारा उपन्यास सन् १७८० ई० के वसन्तऋतु से प्रारम्भ होता है।

तीसरे पहर का समय था। ठण्डी ठण्डी हवा चल रही थी। सड़क के दोनों ओर लगे हुए वृक्षों की लम्बी डालियाँ झूम झूम कर परस्पर हाथाबाँहीं कर रही थीं। वृक्षों में लाल, हरे, नीले, पीले रङ्गविरङ्गे विलायती फूल खिले हुए थे और चञ्चल चिड़ियाँ चतुर्दिक चुहचुहा रही थीं। सड़क के बाईं ओर एक चौड़ा नाला था जिसका स्वच्छ जल कल कल शब्द करता हुआ शीघ्र गति से बह रहा था।

ठीक इसी सड़क पर जिसका संक्षिप्त वृत्तान्त हम ऊपर लिख चुके हैं एक टमटम दृष्टिगोचर हुई, जिसको एक बलवान टट्टू खींच रहा था।

इस टमटम को एक उन्नीस वर्ष का युवक हाँक रहा था। यद्यपि वह युवक किसानों के से वस्त्र पहिने हुए था और देखने में गँवार जान पड़ता था तथापि विचारपूर्व्वक देखने से वह किसी भले घर का बालक प्रतीत होता था। उस लड़के का नाम रूबन-वेलिस था। टमटम पर अकेला वही नहीं

सवार था, वरन एक नवयौवना सुन्दरी भी थी जो कि धनाढ्य किसान की पुत्री जान पड़ती थी।

उस लड़की का नाम मे-मिडिल्टन था। वह सौदा खरीदने के वास्ते निकटस्थ ग्राम में टमटम पर चढ़ कर गई थी और अब घर की ओर लौट रही थी। मे-मिडिल्टन अपने पिता की इकलौती पुत्री थी। उसकी माँ उसे बाल्यावस्था ही में छोड़कर परलोक को सिधार चुकी थी। मे अति कोमलाङ्गी व असामान्य रूपलावण्याधिकारिणी होने पर भी घर के काम काज में बहुत चतुर थी। उसके बूढ़े पिता मिष्टर जॉन-मिडिल्टन उसको बहुत चाहते थे, क्योंकि उसका स्वभाव अत्यन्त सरल था और वह पिता पर बड़ी भक्ति रखती थी।

माता की मृत्यु के अनन्तर मे का भरणपोषण उसकी एक मौसी द्वारा होता रहा, किन्तु भाग्य का फेर देखिए कि अभी उसने सीना पिरोना और पाकादि बनाना भली प्रकार नहीं सीखा था कि मौसी का भी देहान्त हो गया। परन्तु मे-मिडिल्टन ने अपने ही उद्योग एवं परिश्रम से बहुत कुछ सीख लिया और गृहकार्य्य में उत्तमता दिखाने लगी। रूबन-नेलि- सप्ताह में दो दिन, प्रति मङ्गल और शनिवार को गृहस्थी की सामग्री खरीदने के लिए मे-मिडिल्टन को किङ्गस-गेट नामक एक गाँव में जो उसके खेत से ५ मील के अन्तर पर उस सड़क के किनारे जो लन्दन गई है बसा था, ले जाया करता था।

रूबन अपनी नवीना साथिन 'मे' से गुप्तस्नेह भी रखता था। परन्तु उसने कभी अपना प्रेम किसी के आगे प्रगट करने का साहस नहीं किया। यद्यपि वे दोनों अर्थात् मे और रूबन बाल्यावस्था में एक ही साथ रहते थे और यद्यपि दोनों ने साथ ही शिक्षा भी पाई थी

यद्यपि वह बेचारा अपनी दशा देखकर रह जाता था और यही सोचता था कि—"कहां वह एक धनाढ्य किसान की बेटी और मैं उसका एक तुच्छ सेवक !"

हमारे पाठकों को रूबन-वेलिस और मे-मिडिल्टन का पूरा पूरा हाल मालूम होगया। अतः अब हम अपने किस्से की ओर मुड़ते हैं।

टमटम बराबर चली जाती थी और गाँव समीप होता जाता था कि सहसा मे की दृष्टि एक बुड्ढे पर पड़ी जो सड़क के किनारे हाथ पाँव पसारे लम्बा मृतप्राय पड़ा था।

मे०। (रूबन से) गाड़ी रोक लो, देखें यह मनुष्य अभी जीवित है वा मर गया है।

आज्ञानुसार गाड़ी रोक दी गई। पहले रूबन कूदा, तिस पीछे उसने हाथ का सहारा देकर 'मे' को उतारा। बुड्ढा पीड़ा के मारे कराह रहा था, किन्तु जब ये दोनों उसके पास पहुँचे और मे ने अपने जेब से एक छोटी शीशी निकाल कर उसको दो तीन बूंद औषधि पिलाई तो वह सचेत हुआ। मे ने पूछा—"अब तो जान पड़ता है कि आपकी तबीयत कुछ ठीक हुई। मेरा घर यहाँ से बहुत दूर नहीं है। आप मेरे साथ वहाँ चलें। पिताजी बहुत प्रसन्न होंगे और वहां आपकी चिकित्सा भी की जायगी।"

बुड्ढे ने धन्यवाद देकर कहा—"हां, ईश्वर की दया से अब मै अच्छा हूँ और आपके साथ चल भी सकता हूं, परंतु यह सोचता हूं कि ऐसा न हो कि आपको कष्ट हो।"

रूबन०। कष्ट ! और इस दशा में ! नहीं नहीं, फार्मर मिडिल्टन (अर्थात् मे के पिता जॉन) का द्वार प्रत्येक दीन दरिद्र के निमित्त सदैव

खुला रहता है। (मे की ओर देखकर) मिस महाशया! चलिए, हम इस बेचारे को गाड़ी पर उठाँ ले चलें।

दोनों ने मिलकर उस बुड्ढे को गाड़ी पर चढ़ा लिया और जहां तक बन पड़ा उसके आराम का प्रबन्ध कर दिया। रूबन धीरे धीरे गाड़ी हाकने लगा, और थोड़ी ही देर में सब लोग गाँव में पहुँच गए।

गाड़ी से उतरते ही मे अपने पूज्य पिता के पास दौड़ी गई और उस जर्जर बुड्ढे का सारा हाल कह सुनाया। परहितकारी पिता ने पिकबैनी पुत्री की इस परोपकारिता पर पूर्ण प्रसन्नता प्रगट की और कहा—"आओ हम सब मिल कर उस बेचारे को किसी ऐसी जगह रक्खें जहां उसको सुख मिले।"

अन्त वह बुड्ढा गाड़ी से उतारा गया और एक बहुत अच्छे कमरे में उसको रहने की जगह दी गई, परंतु उसकी शोचनीय दशा देखकर मे के पिता मिष्टर जॉन ने रूबन-वेलिस को आज्ञा दी कि गाड़ी में दूसरा घोड़ा जोतकर गाँव में अभी जाओ और वहां से एक सुयोग्य डाक्तर बुला लाओ।"

रोगी की यह दशा देखकर सब की यह सम्माति हुई की उससे पूछा जाय कि उसका कोई इष्ट मित्र भी है वा नहीं, किन्तु उस समय वह इस योग्य नहीं था कि उससे कुछ पूछा जाता। दूसरे दिन मे ने उससे इस विषय में बात चीत की तो वह बोला कि—" न तो मेरा कोई मित्र है, न कोई नातेदार ही है। आप कृपाकर मेरे कोट के जेब से मेरी पॉकेट-बुक निकाल ला दीजिए।"

मे तुरंत उठकर चली गई और पॉकेट-बुक निकाल लाई।

बुड्ढा। आप मुझे सहारा देकर उठावें तो मैं यह पुस्तक

खोलूं और मेरे वास्ते जो कुछ खर्च हुआ है चुका दूं। यद्यपि मैं धनहीन हूं, तथापि ईश्वर की दया से अब भी मेरे पास आपका हिसाब चुकाने भर रुपया वर्त्तमान है।

मे०। यह आप क्या कह रहे हैं ? इस जगह धनवान और धनहीन सब ही की सेवा की जाती है, परंतु बदले में उससे कुछ लिया नहीं जाता है। कदाचित् आपने यह सोचा होगा कि आपके सम्बन्धियों का पता ठिकाना पूछने से हम लोगों का यह अभिप्राय था कि आप यहाँ से चले जायँ। विश्वास मानिए, हमलोगों ने कदापि ऐसी अमानुषिक बात नहीं सोची थी। आपकी सेवा में सदैव तत्पर रहने के लिए हम सब प्रसन्नतापूर्व्वक प्रस्तुत हैं।

यह सुनकर बुड्ढे ने मे को अनेकानेक धन्यवाद दिए। इसके अनन्तर मन ही मन उस बुद्धिमती बालिका के सद्गुणों की प्रशंसा करने लगा।

दूसरा प्रकरण।

'मिडिल्टन' एक प्राचीन और प्रसिद्ध वंश था। मे के पिता जॉन-मिडिल्टन ९ भाई बहिनों में सबसे छोटे थे। परलोकवासी मिष्टर मिडिल्टन अर्थात् जॉन-मिडिल्टन के पिता ने खेती बारी में बड़ी उन्नति की थी और नकद रुपया भी एकत्र कर लिया था। सुतरां उन्होंने यह सोचा कि अपनी सन्तान में से किसको नकद रुपया दें और किसे खेतीबारी का प्रबन्ध सौंपें।

बड़े बेटे विल्फ्रिड की इच्छा सौदागरी करने की थी, इसी

डिल्टन से कहने लगा—"मैं एक गरीब आदमी हूं। किसी आवश्यक काम के लिए लन्दन से किराये की गाड़ी पर सवार होकर जा रहा था कि रास्ते में मेरा यह हाल हुआ। विवश हो गाड़ी से उतर कर वहीं पड़ रहा, जिसके बाद मेरी दुर्दशा देख आप मुझे वहाँ से उठा लाईं। आप सबों ने जहाँ मुझ पर इतनी कृपा की है तहाँ इतना अनुग्रह और कीजिए कि मैं एक महीना यहां और रहूं।"

मिष्टर जॉन ने उसके बुरे स्वभाव पर तनिक भी ध्यान न दिया और उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली।

इस बातचीत के बाद मिष्टर जॉन अपनी पुत्री को साथ लेकर बगीचे में आए और इधर उधर की बातें करने लगे। सहसा उनकी दृष्टि रूबन-वेलिस पर पड़ी, जिसको देखते ही उन्होंने मे से कहा-"देखो रूबन अस्तबल की ओर जा रहा है। मैं उसे बहुत चाहता हूं। तुम्हारा विचार उसके बारे में कैसा है?"

मे०। मैं इस प्रश्न का कारण न समझ सकी, क्योंकि यदि मैं उसको अच्छा न जानती तो उसके साथ इतना मेल जोल क्यों रखती।

जॉन०। (प्रसन्न होकर) रूबन भी हमारी ही तरह एक किसान है। उसकी अवस्था अभी उन्नीस ही वर्ष की होगी। मैं बहुत प्रसन्न हूं कि मैंने उसको अच्छी शिक्षा दी है। बेटी मे! मैंने तुम्हारे वास्ते एक बात सोची है और आशा करता हूँ कि उसमें तुम भी सहमत होगी। सुनो,—मेरी सम्पत्ति और मेरी जमीन्दारी तुम सी एक मध्यम श्रेणी के किसान की बेटी के लिए सुख से जन्म भर खाने पहिरने को बहुत है। कदा-

चित मेरी बहिनों एन्ना और मेरी की तरह तुम भी किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के साथ ब्याही जाना चाहती होगी, परंतु जहां तक मैंने देखा और सुना है ऐसे विवाह का परिणाम बहुधा दुःखमय ही होता है। देखो "कर्नल-बिलासिस" जिन्हों ने तुम्हारी फूफी 'एन्ना' से विवाह किया था बहुत धन होने पर भी सदैव ऋणी रहते हैं, और मिष्टर- बिउशम्प जिनके साथ तुम्हारी फूफी 'मेरी' का विवाह हुआ था, एक की जगह दो खर्चकर अपना धन किस प्रकार बहा रहे हैं।

मे०। (आश्चर्य्यान्वित होकर) मेरी समझ में नहीं आता कि यह बात आप क्यों कह रहे हैं।

जॉन०। बेटी! सच तो यह है कि मैं चाहता हूं कि तुम्हारा विवाह रूबन के साथ हो जाय, क्योंकि वह बहुत ही भला सीधा सादा होनहार लड़का है। यद्यपि वह धनहीन है और उसके साथ विवाह करने से तुम्हारे धन और तुम्हारी प्रतिष्ठा में उन्नति न होगी, किन्तु मुझे दृढ़ विश्वास है कि वह तुम्हारा धन नष्ट न करेगा वरन सदैव उसकी उन्नति ही की चिन्ता और चेष्टा में लगा रहेगा।

यह सुनकर मे-मिडिल्टन को आश्चर्य्य हुआ, किन्तु वह उस प्रकार की बालिकाओं में से न थी जो पिता की आज्ञा नहीं मानतीं हैं। इसके सिवाय वह ऐसी पितृभक्ता थी कि पिता के वास्ते अपने प्यारे प्राण को भी तुच्छ समझती था। उसने अपने मन में इस श्लोक का कि—" पिता धर्म्मः पिता स्वर्गः पिता हि परमन्तपः। पितरि प्रीतिं मापन्ने प्रीयन्ते सर्वदेवताः॥" पाठ किया और बहुत ही नम्र होकर बोली—" पिताजी! मैं यावत् संसार के सुख से दूर रहना अच्छा समझती हूं, परंतु

आपकी आज्ञा का उलङ्घन करना महा पाप जानती हूं।" और वह यह कहकर रोने लगी। ठीक उसी समय सहसा पीछे की ओर से मिष्टर डार्नले ने बाग में प्रवेश किया। उनका इस समय आ जाना मे और उसके पिता दोनों को बुरा लगा, कारण कि दोनों ने सोचा कि कहीं मिष्टर डार्नले ने हमारी बातचीत सुन न ली हो।

तीसरा प्रकरण।

मिष्टर डार्नले में अब इतनी शक्ति आ गई थी कि विना कष्ट चल फिर सकते थे और मिष्टर जॉन आदि के साथ "किङ्गस्-गेट" गिर्जे में जाया करते थे।

एक दिन मिष्टर जॉन रूबन-वेलिस को साथ लेकर खेत का काम देखने गए थे और मे अपने सब कामों से छुट्टी पाकर अपने कमरे में बैठी कुछ सी रही थी कि इतने में मिष्टर डार्नले चन्दन का एक छोटा सा बक्स हाथ में लिए हुए आए और कुर्सी खींच मे के सम्मुख बैठकर कहने लगे-"आज तुमने कल की तरह बढ़िया कपड़े नहीं पहिने?"

मे०। जी हां, कल पूजा का दिन था और आज काम का दिन है।

मिष्टर डा०। (मुसकुरा कर) हां मैं समझा। उस दिन को तुम छुट्टी और मनबहलाव का दिन समझती हो न कि पूजा का।

मे०। गांव की जैसी रीति है उसके अनुसार मैं उस दिन को छुट्टी और पूजा दोनों का दिन समझती हूं और उस दिन

योग्यतानुसार हमलोग अच्छे वस्त्र पहिनना और इत्र लगाना शुभ समझते हैं।

मिष्टर डा०। अस्तु, जो हो मैं इन बातों में वादाविवाद नहीं करना चाहता। मैं आशा करता हूं कि तुम कृपापूर्व्वक इस वस्तु को जिसे मैं वड़े उत्साह से भेंट देता हूं स्वीकार करोगी।

इतना कहकर मिष्टर डार्नेले ने वह बक्स जो साथ लाए थे खोला। उसमें तीन बहुमूल्य रत्नजटित आभूषण दीख पड़े।

मे०। (अतीव प्रसन्न होकर) महाशय! मैं किस तरह और किन शब्दों में आपको धन्यवाद दूं?"

परंतु इसके साथ ही कोई ऐसी बात उसके मन में आई कि वह चुप हो गई और पुनः बोली—"कदाचित् आप इस वहाने से उस थोड़ी सेवा का बदला चुकाते हैं जो मैंने और मेरे पिता ने की है?"

मिष्टर डा०। नहीं, कदापि नहीं। आप लोगों ने मेरे साथ जो जो उपकार किए हैं उनका वदला मैं कभी नहीं चुका सकता। मेरी इच्छा है कि आप इन आभूषणों को मेरे स्मारकचिन्हवत् अपने पास रक्खें।

यह बात सुनकर मे देर तक चिन्तासागर में गोते खाती रही। वह कभी तो उन बहुमूल्य आभूषणों के विषय में सोचती थी और कभी मिष्टर डार्नेले की बातों पर आश्चर्य्य करती थी। सहसा जान पड़ा कि कोई उत्तर उसको सूझ गया। वह बोली—"नहीं महाशय! मुझे क्षमा कीजिए। मैं इनको नहीं ले सकती। ये बहुमूल्य रत्न प्रतिष्ठित और धनाढ्य सुन्दरियों के वास्ते हैं न कि मुझ सी गरीब लड़की के लिए। मैं इतने ही में सहस्त्रगुणा आपकी अनुगृहीत हो गई कि आपने मुझ सी धन-

हीन लड़की को ये रत्नजटित आभूषण देने चाहे ।"

मिष्टर डा० । (निर्निमेष नेत्रों से मे को निहार कर) कदाचित् फिर तुमको मन में पछताना पड़े कि ऐसी वस्तु हाथ से क्यों गँवा दी ।

मे० । (मुसकुरा कर) नहीं साहब ! मुझको ऐसी वस्तु के न पाने का कुछ भी दुःख न होगा जिसके योग्य मैं नहीं हूं ।

मिष्टर डार्नले यह कह कर कि-" जैसी तुम्हारी इच्छा हो " वहाँ से चले गए । इस बात को पन्द्रह दिन व्यतीत हो गए । इस बीच में कोई ऐसी घटना नहीं हुई जो लिखने योग्य हो । मे-मिडिल्टन हर घड़ी अपने पिता की उस दिन की बात ही को सोचा करती थी । यद्यपि रूबन-वेलिस की पत्नी बनने की उसकी इच्छा नहीं थी, परंतु पिता की आज्ञा स्मरण करके चुप हो रहती थी ।

एक दिन तीसरे पहर मे अकेली बाग की सैर कर रही थी । उसका ध्यान उस समय न मालूम कहां कहां पहुँचा हुआ था । टहलते टहलते एक पेड़ के नीचे बैठ गई । हाथ में एक गुलाव का फूल था । वह उसको देखकर आप ही आप कहने लगी-" यह फूल मेरे जूड़े में बहुमूल्य गहने से अधिक शोभा देगा । " सहसा पीछे से आवाज आई-" यह फूल मुझे दे दीजिए । "

यद्यपि सुनने के साथ ही 'मे' ने आवाज पहचान ली, परंतु फिर भी फिरकर देखा तो रूबन-वेलिस को खड़ा पाया ।

रूबन० । यद्यपि इस स्पष्टता और ढिठाई से फूल माँगना उचित नहीं है, परंतु जब मैं सुन चुका हूं कि आप इस फूल को उन आभूषणों से बढ़कर समझती हैं जो मिष्टर डार्नले

देते थे, तो मैं आशा करता हूं कि मुझसे जो आप ही का सा सीधा सादा है इसके देने में नहीं न करेंगी।

मे०। (सिर झुकाकर) यह तुमसे किसने कहा कि मिष्टर डार्नले मुझे गहने देते थे ?

रूबन०। आपके पिता और मेरे पूज्य स्वामी ने। और उन्होंने यह भी कहा है कि एक दिन ऐसा भी हो सकता है कि मैं उस कोमल हाथ को भी पा जाऊँ जिससे आज मैं फूल मांग रहा हूं।

रूबन इतना कहकर फूल लेने के लिए मे की ओर झुका, किन्तु मे हँसती हुई उठी और फुर्ती से जाकर कुछ दूर पर खड़ी हो गई।

रूबन० क्या यह फूल मुझको नहीं दीजिएगा ? आपके पिता ने मुझे उस बात की आशा दिलाई है जो कभी होनेवाली नहीं थी।

मे ने मन में सोचा कि—"वृथा इस बेचारे का जी तोड़ना और एक प्रकार अपने पिता की आज्ञा का उलङ्घन करना बुद्धिमानी नहीं है।" यह सोचकर वह चाहती थी कि फूल उसको दे दे कि इतने में उसकी दृष्टि एक सुन्दर युवक पर पड़ी जो उसी की ओर आ रहा था। उसको देखते ही उसने अपनी टोपी जो वहां रक्खी थी उठा ली और घबराहट में फूल हाथ से गिर पड़ा।

युवक ने मे को सलाम किया और कहने लगा—" क्या आपने मुझे नहीं पहचाना ?"

मे०। अरे ! मेरे चचेरे भाई विल्फ्रिड !

विल्फ्रिड०। मैं अभी आया और सुना कि आप बगीचे

में हैं इसवास्ते यहीं चला आया।

मे०। पिता जी नहीं मिले ?

विल्फ्रिड। नहीं, परंतु देखो वह आपही चले आते हैं। आओ हम सब उनकी अगवानी को चलें।

यह हाल देखकर वेचारा रूवन बहुत ही उदास हो गया। उसने सोचा कि ऐसे रूपवान और धनी युवक को छोड़कर मे मुझसे क्यों विवाह करेगी ?

मे और विल्फ्रिड वहां से चले गए तब वेचारे ने उस फूल को भूमि पर से उठा लिया, और उसको बार बार चूमकर अपने प्राण से भी अधिक प्यारा बनाकर रख लिया।

चौथा प्रकरण।

विल्फ्रिड–मिडिल्टन बहुत ही सुन्दर और हृष्ट पुष्ट युवक था। लोगों से बहुत अच्छी तरह मिलता था और झूठ सच गप उड़ाकर अपने ऊपर प्रसन्न कर लेता था। लन्दन में रहने ही के कारण वह ऐसा हो गया था। वह व्यर्थ रुपये वहुत व्यय करता था और द्यूतप्रिय भी था। इन्हीं कारणों से उसने अपनी पैतृकसम्पत्ति को नष्टप्राय कर डाला था। अब चाचा के पास आया था कि कुछ उनसे भी ठगकर ले जाय।

मिष्टर जॉन को अपने भतीजे का हाल सुनकर बहुत दुःख हुआ था। यद्यपि उन्होंने उसको कई बेर लिखा था कि–" इन कुचालों को छोड़ दो और अपने पिता का धन जिसको उन्होंने बड़े परिश्रम से एकत्र किया था नीच कामों में न लुटाओ।" किन्तु उन पत्रों का प्रभाव पड़ना तो कैसा, किसी का उत्तर भी नहीं मिला।

विल्फ्रिड के आने और उसकी झूठी सच्ची बातों से मिष्टर जॉन उसकी सब बुराई भूल गए और उसके साथ बहुत अच्छा बर्ताव किया।

गत प्रकरण में हम लिख चुके हैं कि मे विल्फ्रिड को लेकर अपने पिता की ओर चली। जब विल्फ्रिड और मिष्टर जॉन से साक्षात हुआ तो मिष्टर जॉन उसको देखकर बहुत प्रसन्न हुए और मे से कहने लगे–" जल्दी जाओ और विल्फ्रिड के वास्ते टेबुल पर जलपान का सामान चुन दो। "

विल्फ्रिड०। नहीं नहीं, मैं यहाँ आप लोगों को कष्ट देने नहीं आया हूँ। मैं भी सबके साथ भोजन करूँगा। अभी तो बगीचे ही की सैर करने की इच्छा होती है।

मिष्टर जॉन। जैसी तुम्हारी इच्छा हो, परंतु हाँ, सच सच बताओ तुम्हारे बारे में जो महा निन्दनीय बातें लोगों ने प्रसिद्ध की थीं वे सच थीं या झूठ?

विल्फ्रिड०। वह किम्बदन्ती एकदम बे-सिर पैर की थी। लन्दन के लोग ऐसे दुष्ट हैं कि जिसपर चाहते हैं उसी पर दोष लगा देते हैं।

बेचारे मिष्टर जॉन सीधे सादे आदमी थे। वह विल्फ्रिड की बातों पर विश्वास करके बहुत प्रसन्न हुए, और बोले– " धन्य परमेश्वर कि वे बातें असत्य निकलीं! अब कहो आज कल तुम्हें अपनी फुफेरी बहिनों से मिलने का अवसर मिला था कि नहीं? "

विल्फ्रिड०। मैं उनसे बहुत कम मिलता हूं, इस कारण कि कर्नल बिलासिस और ड्यूशम्प रुपया उधार मांगते हैं, और किसी से लेकर फिर देने की इच्छा उनकी होती ही नहीं

है। इन्हीं बातों से मैं अपव्ययी लोगों से मिलना पसंद नहीं करता। अब मेरे रहन सहन का ढंग ही बदल गया है।

मिष्टर जॉन। मैं समझा, तुम्हारी इच्छा विवाह करने की है। वस्तुतः विवाह कर लेने से सुख की वृद्धि होती है। अब मुझे विश्वास हुआ कि वह बात असत्य थी कि तुमने थिएटर की एक एक्ट्रेस को घर में रख लिया है।

विल्फ्रुड०। (घबरा कर) हाँ, सरासर झूठ थी।

मिष्टर जॉन। अब मुझे अच्छी तरह विश्वास हो गया कि वे सब बातें असत्य थीं।(मे की ओर देखकर) क्या मे अब जवान लड़की नहीं मालूम होती है?

मिष्टर जॉन ने विना सोचे समझे बड़ी निश्चिन्तता के साथ यह बात पूछी थी क्योंकि वह समझते थे कि विल्फ्रुड मे को उसी प्रकार चाहता है जैसे कोई भाई अपनी सगी बहिन को चहता होगा।

विल्फ्रुड०। जी हाँ, ऐसी लड़कियाँ कम होती हैं।

मिष्टर जॉन। और रूबन-वेलिस जो बाल्यावस्था में तुम्हारे साथ खेला करता था अब एक समझदार युवक हो गया है।

रूबन का नाम सुनकर भोली भाली मे को बहुत दुःख हुआ। उसने अपने मन मे कहा—"अरेरे! मैंने उस वृक्ष के नीचे बेचारे को अकेला छोड़ दिया। वह कैसा दुःखित हुआ होगा।"

विल्फ्रुड ने मे से पूछा,—"क्या वह रूबन ही था जिसको हमने तुम्हारे साथ देखा था?"

मे०। हां, वह रूबन था।

तीनों अदमी बाग की सैर कर रहे थे कि इतने में

मिष्टर डार्नले लाठी टेकते हुए आते दिखाई दिए। मिष्टर जॉन उनको दूर से देखकर कहने लगे—" यह हमारे मेहमान मिष्टर डार्नले हैं। "

विल्फ्रिड०। यह मिष्टर डार्नले कौन हैं ?

मिष्टर जॉन। यह बेचारे रोगी थे। मे इनको यहाँ उठा लाई थी। अब यह अच्छे हुए हैं और हमारे घर में रहते हैं।

मिष्टर डार्नले जब पास पहुँचे तो मिष्टर जॉन ने विल्फ्रि-ड से उनको मिला दिया। रूबन-वेलिस इतना शिथिल हो गया था कि अपनी कोठरी में जाकर बैठ रहा। आज उसकी भोजन करने की भी इच्छा नहीं थी, परंतु यह सोचकर कि कदाचित् मे को दुःख हो भोजन के समय उपस्थित हो गया। मिष्टर जॉन ने उसकी भी विल्फ्रिड से जान पहचान कराई, और कहा—" यह तुम्हारा बचपन का मित्र है। " किन्तु वि-ल्फ्रिड ने इस बात पर विशेष ध्यान नहीं दिया, और मे के बराबर टेबुल पर जा बैठा।

इससे बेचारे रूबन को और भी शोक हुआ। विवश होकर एक ओर चुपचाप वह भी बैठ गया।

पांचवां प्रकरण।

चौथा प्रकरण पढ़कर प्रतिष्ठित पाठकगण समझ गए होंगे कि मिष्टर जॉन अपने सम्बन्धियों के बड़े हितेच्छु थे और उनकी हानि को अपनी ही हानि समझते थे।

विल्फ्रिड ने अपनी फुफेरी बहिनों का जो हाल कहा उसको सुनकर मिष्टर जॉन को अत्यन्त खेद हुआ। उन्होंने सोचा कि "जब लड़कियाँ पितृविहीना हो जायँगी तब उनकी

क्या दशा होगी ? ” यह सोचकर दूसरे दिन जलपान से पहले विल्फ्रिड को एकान्त में ले जाकर उनके विषय में बातें करने लगे।

विल्फ्रिड ने उन लड़कियों के बारे में जो कुछ कहा उसके इस जगह लिखने की कुछ आवश्यकता नहीं है। समय पर उन चारों लड़कियों का हाल वर्णित होगा।

बात करते करते मिष्टर जॉन ने मे के विवाह के विषय में जो बात स्थिर की थी प्रगट कर दी, जिसको सुनकर विल्फ्रिड अतिशय विस्मित हुआ, परंतु वह ऐसा मूर्ख न था कि तत्काल उस बारे में अपनी अनिच्छा प्रगट करता। उसने उस बात का तो कुछ उत्तर नहीं दिया, किन्तु बात टालकर कहने लगा— “ क्या यह निश्चय है कि (आपके बड़े भाई) मिष्टर जॉर्ज अब इस लोक में नहीं रहे ? ”

मिष्टर जॉन। हाँ, क्योंकि न तो वह जहाज जिसपर वह गए थे वापस आया, न उसका कोई खलासी ही आया।

विल्फ्रिड०। अस्तु, हां मे के विवाह के विषय में आप अभी क्या कह रहे थे ? क्या स्वयं मे रूबन के साथ विवाह करना चाहती है ?

मिष्टर जॉन। वह एक सुशीला बालिका है और जानती है कि उसकी प्रसन्नता और सुख पिता की प्रसन्नता और सुख पर निर्भर है। उसका चरित्र बहुत ही पवित्र है। उसकी सरलता का एक उदाहरण यह भी है कि मिष्टर डार्नले जिसको वह उठा लाई थी और जिसकी उसने बहुत सेवा सुश्रूशा की थी उसपर ऐसे प्रसन्न हुए कि उसको कई रत्नजटित आभूषण देने लगे, किन्तु उस सरलहृदया ने उनको

अस्वीकृत किया और कहा—"मैं इस योग्य नहीं हूं कि ऐसे बहुमूल्य आभूषण पहिनूँ।"

विल्फ्रिड०। निःसन्देह मे की सरलता प्रशंसनीय है, परंतु आपके मुँह से यह बात सुनकर मुझे आश्चर्य्य होता है। मैं समझता था कि मिष्टर डार्नले एक धनहीन और दरिद्री पुरुष हैं।

मिष्टर जॉन। सचमुच वह धनहीन हैं। कदाचित् ये आभूषण उस समय के होंगे जब वह धनवान थे। परंतु मे कहती थी कि वे सब तो नए थे!

विल्फ्रिड०। आश्चर्य्य की बात है। मेरी समझ में तो कुछ भी नहीं आता।

मिष्टर जॉन। अस्तु जो हो, किन्तु अब तुम रूबन के साथ अच्छे बर्ताव करना क्योंकि मैं उसको अपना दामाद समझता हूं।

मानो विल्फ्रिड ने कुछ सुना ही नहीं। उसने मनमें सोचा—"यह मिष्टर डार्नले हैं कौन?"

इतने में मे आ कर बोली—"चाय तय्यार है।"

जलपान के अनन्तर मिष्टर जॉन रूबन को लेकर जमीन्दारी का काम देखने चले गए और मे घरेलू कामकाज में लवलीन हुई। केवल विल्फ्रिड और मिष्टर डार्नले कमरे में रह गए तो दोनों में इस प्रकार बातचीत होने लगी——

विल्फ्रिड०। यदि आपको कष्ट न हो तो चलिए बगीचे की सैर कर आवें।

मिष्टर डा०। मैं तो चाहता था कि मिष्टर जॉन की गाड़ी पर सवार होकर एक स्थान की जो यहाँ से थोड़ी ही दूर पर है सैर कर आऊँ।

विल्फ्रिड० । चलिए, मैं भी तय्यार हूं।

थोड़ी देर में गाड़ी में घोड़ा जुत गया, और दोनों सैर करने चले।

विल्फ्रिड० । किस रास्ते से चलना चाहिए ?

मिष्टर डा० । बाएँ हाथ को जो सड़क गई है और एप्सूली-कोर्ट पहुंची है उसी सड़क से चलना चाहिए।

विल्फ्रिड० । क्या आपसे और एप्सूली साहब से जान पहचान है ?

मिष्टर डा० । नहीं, किन्तु क्या आपने नहीं सुना कि उनका कारखाना नष्ट हो गया और वह वृहद् अट्टालिका जो कई पुश्त से उन्हीं के अधिकार में चली आती थी रुपया उधार देने वाले महाजनों के हाथ में है और दो एक महीने में बेची जायगी ?

विल्फ्रिड० । मैंने कुछ नहीं सुना है। छः वर्ष पर तो यहाँ मेरा आना हुआ है। मैं यहाँ का हाल कुछ भी नहीं जानता।

मिष्टर डा० । मैंने तुम्हारे चाचा से सुना है कि सुन्दर सुन्दर चित्र, दुष्प्राप्य पुस्तकें और बहुमूल्य पात्र आदि सब वस्तुएँ बेंची जायँगी। मैं चित्रों को बहुत पसंद करता हूं। इसी वास्ते चलता हूँ कि देखूं मेरे मन की भी कोई चीज वहाँ है कि नहीं।

गाड़ी एप्सूली-कोर्ट के द्वार पर जा लगी और दोनों साहब उतरे। मकान के चारों ओर बगीचा लगा था जिसमें नाना प्रकार के वृक्ष और तरह तरह के फल तथा फूल शोभायमान थे। इमारत के सामने बेड्मिण्टन् खेलने का सुचिक्कण स्थान था, और पीछे एक बड़ा अस्तबल तथा गाड़ीखाना बना हुआ था।

एक नौकर जो महाजनों की ओर से मकान और बेंची जाने वाली वस्तुएँ दिखाने के वास्ते नियुक्त था आया, किन्तु मिष्टर डार्नले के मैले कुचैले कपड़े देखकर सोचने लगा कि इन लोगों मकान के भीतर जाने दूं कि नहीं, परंतु जब उसने विल्फ्रिड के भड़कीले वस्त्र देखे तो उसको कुछ भरोसा हो गया, और तब वह इनके साथ चारों ओर घूम घूम कर मकान की सैर कराने लगा। थोड़ी देर के बाद दोनों घर की ओर लौटे और वहाँ पहुंचकर भोजन तय्यार पाया।

भोजन के अनन्तर मिष्टर जॉन रूबन को लेकर पुनः खेत का काम देखने चले गए, और मिष्टर डार्नले एक आरामकुर्सी पर लेट समाचारपत्रों को उलट पुलट कर देखने लगे।

विल्फिड ने 'मे' से बगीचे में चलकर सैर करने की इच्छा प्रगट की। वह तुरंत तय्यार हो गई और कपड़े बदलने लगी। विल्फिड अपनी टोपी लेने गया। जब वह डार्नले साहब के शयनागार के निकट पहुँचा तो कमरे का द्वार खुला पाकर भीतर घुस गया। उसने मिष्टर डार्नले की पॉकेट-बुक टेबुल के नीचे पड़ी देखी। वह उसको उठाकर देखने लगा, और जल्द देखकर जहाँ रक्खी थी वहीं रख तुरंत बाहर निकल आया। विल्फिड ने पॉकेट-बुक क्यों देखी? और उसमें क्या देखा? इसके बताने का अभी प्रयोजन नहीं है।

छठाँ प्रकरण।

विल्फिड को आए एक मास व्यतीत हो गया और मिष्टर डार्नले जिन्होंने प्रतिज्ञा की थी कि एक महीने बाद मैं यहां से चला जाऊँगा अभी तक नहीं गए, बल्कि उस एक महीने से

भी तीन सप्ताह अधिक बीत गए परंतु उन्होंने जाने का नाम भी नहीं लिया ।

मिष्टर जॉन और उनकी पुत्री को मिष्टर डार्नले से बहुत स्नेह हो गया था, अतः वे भी किसी प्रकार नहीं चाहते थे कि वह हमसे पृथक् हों ।

मिष्टर डार्नले के स्वभाव में अब बहुत अन्तर पड़ गया अर्थात् अब उनमें वह चिड़चिड़ापन नहीं था । विलिफ्रड प्रति दिवस डार्नले साहब को सैर कराने ले जाता और सन्ध्या समय मे के साथ बगीचे की सैर करता था । मिस–मिडिल्टन का सौदा खरीदने के वास्ते किङ्गस्-गेट जाना अब बहुत कम हो गया था, किन्तु जब वह वहाँ जाती तो रूबन उसके साथ जाता, और यही एक अवसर उस बेचारे के हर्ष तथा सुख का मिलता ।

रूबन बराबर चिन्तित रहता था और प्रेमानल से उसका हृदय जला करता था। उस बेचारे को भोजन से अरुचि हो गई थी और रात रात भर कोरी आँख बिता देता था। रात्रि दिवस वह मे-मिडिल्टन ही को याद किया करता था ।

एक दिन मिष्टर जॉन ने अपने भतीजे से खेत में चलने को कहा । यद्यपि वह उनके साथ जाना नहीं चाहता था क्योंकि वह समय मिस–मिडिल्टन के साथ सैर करने का था, किन्तु विवश हो उसे जाना ही पड़ा । जब दोनों चले गए तो मिष्टर डार्नले ने रूबन को बुलाकर कहा–" हम एक बात कहना चाहते हैं, लेकिन खबरदार किसी से न कहना (इसके अनन्तर उसकी ओर निर्निमेष नेत्रों से देखकर बोले) तुम मिस-मिडिल्टन को प्यार करते हो ? "

रूबन०। (लज्जित होकर) जी हाँ, ईश्वर ही जानता है कि मेरे चित्त का क्या हाल है।

मिष्टर डा०। और मिष्टर जॉन ने भी कहा है कि तुम बेटी का हाथ अपने हाथ में लेने की आशा रख सकते हो ?

रूबन०। जी हाँ, किन्तु....

मिष्टर डा०। हम समझे। तुम अपने चेहरे से शोकचिन्ह के दूर करने का भी प्रयत्न कर रहे हो। यद्यपि तुम विल्फ्रिड से द्वेष नहीं रखते, परंतु इस वात से डरते हो कि कहीं वह छीन न ले जाय। हमारी राय तो यह है कि तुम इस सन्देह और चिन्ता में न पड़े रहो किन्तु उससे पूछ लो कि वह भी तुमको चाहती कि नहीं। अपने आप को व्यर्थ संशय में रखना अच्छा नहीं है। मैं तुम्हारा हितेच्छु हूं। तुमने भी मेरी सेवा सुश्रूषा की है, इस कारण मैं तुम्हें यह सहज उपाय बताए देता हूं। 'मे' अभी बगीचे में जायगी, तुम वहाँ जाकर उससे साफ जवाब ले लो। अब जल्दी जाओ और जैसा हमने कहा है तैसा ही करो।

आध घण्टे के वाद मिस मिडिल्टन बगीचे में सैर करने गई और घूम घूम कर देखने लगी। इतने में रूबन उसके निकट पहुँचकर कहने लगा—" मिस-मिडिल्टन ! आह ! अब मुझसे नहीं रहा जाता। अब प्रणान्त का समय आ गया है। यदि आपके पिता ने जिनको मैं अपने पिता की जगह मानता हूं कुछ आशा न दिलाई होती तो मैं कदापि अपनी जिह्वा से इस प्रकार की बातें न निकालता। मैं जानता हूं कि मैं धनहीन हूं किन्तु आह ! मेरे अधिकार में वह कोश है जो प्रेमधन से परिपूर्ण है। मैं यह भी जानता हूँ कि मेरे चरित्र पर कोई किसी प्रकार का सन्देह नहीं कर सकता है। "

मे०। रूबन! यह कैसी बात है? मैं तुम्हारी सौजन्यशीलता और कार्य्यपटुता से भली भाँति विज्ञ हूं।

रूबन०। क्या आप मुझको अपना दास बनाना स्वीकार करती हैं? बस एक और केवल एक ही शब्द से मेरी जान बचती है, हर्ष होता है, सुख मिलता है अथवा प्राणान्त होता है।

रूबन के इन वाक्यों को सुनकर मे चिन्तित हुई। वह कभी तो उसकी शोचनीय दशा देखकर आँसू बहाती, कभी विल्फ्रिड की सुन्दरता और भोली भाली बातें याद करती थी। बड़ा ही बारीक मामिला था। उसका चित्त विल्फ्रिड की मीठी मीठी बातों पर डावाँडोल हो गया था। उस समय यद्यपि बेचारे रूबन की दशा देखकर वह बेचैन हो गई, किन्तु उसका मन विल्फ्रिड की ओर मुड़ गया, फलतः बहुत ही धीमे स्वर में वह बोली,—"मुझको तुम्हारी दशा पर खेद है। मैं तुम्हें प्यार करती हूं, किन्तु वैसे नहीं जैसे कोई पत्नी अपने पति को चाहे।"

रूबन०। अच्छा (आंसू बहाकर) भगवान् आपको सुखी रक्खें।

यह कह कर रूबन वहाँ से चला गया। हम पहले ही कह चुके हैं कि मे-मिडिल्टन बड़ी सरलहृदया थी। यह दृश्य देखकर वह बेचारी बहुत पछताई और एक वृक्ष के नीचे बैठकर रोने लगी। थोड़ी देर के बाद विल्फ्रिड आया और उसका हाथ पकड़ कर कहने लगा—"मेरी प्यारी मे! बताओ क्या हुआ? तुम रोती क्यों हो? मुझें भी अपने दुःख से सूचित करो। बोलो बोलो, तुम क्यों रो रही हो?"

दोनों देरतक एक दूसरे का मुंह देखते रहे। अन्त यह निश्चय हुआ कि अभी दोनों का प्रेम छिपाया जाय और मिष्टर

जॉन को न मालूम होने पावे।

निदान दोनो प्रेमी पेड़ के नीचे से उठे। भोजन का समय था, इसवास्ते दोनों उसी कमरे में गए जहाँ भोजन किया जाता था। वहाँ मिष्टर जॉन और मिष्टर डार्नले भी बैठे थे। रूबन नहीं था। मिष्टर जॉन ने नौकर को आज्ञा दी कि, "जाओ रूबन को बुला लाओ" परन्तु वह घर में भी नहीं मिला। मिष्टर जॉन ने कहा—"कदाचित वह खेत में गए होंगे। सब लोग प्रारम्भ करें, वह भी आते होंगे।"

भोजन समाप्त हो गया किन्तु रूबन अब तक नहीं आया। तब तो मिष्टर जॉन बहुत दुःखित हुए और मे-मिडिल्टन के मनोहर मुखड़े पर भी मलीनता छा गई। मिष्टर जॉन ने पुनः उसके कमरे में आदमी भेजा। आदमी एक पत्र जिसपर मिष्टर जॉन का नाम लिखा था लाया और बोला "यह पत्र उनके डेस्क पर रक्खा था।" मिष्टर जॉन उसको खोलकर पढ़ने लगे। लिखा था,—

"मेरे पूज्य स्वामी!

"इस दास पर आपने बड़ी कृपा की है। भगवान् आपको और आपकी प्यारी पुत्री 'मे' को उसका अवश्य बदला देंगे और सदैव प्रसन्न रक्खेंगे। मुझे उस बात की आशा थी जो कभी होनेवाली नहीं थी, परन्तु अब वह आशा धूल में मिल गई, इसवास्ते मैं चाहता हूं कि और कहीं चला जाऊँ और वहीं परिश्रम कर अपना उदरपोषण करूँ। मेरे इस साहस पर आप दुःखित न होइएगा, मुझे विवश होकर आपका द्वार छोड़ना पड़ा है।

"आपका सदैव शुभचिन्तक—

रूबन।"

सातवाँ प्रकरण ।

मिष्टर जॉन को इस पत्र के पढ़ने से अकथनीय शोक हुआ, और उनसे अधिक उनकी पुत्री शोकान्वित तथा चिन्तित हुई । मिष्टर डार्नले कभी कभी मे की ओर देखते थे और मन ही मन सारी कहानी स्मरणकर चुप हो रहते थे ।

विल्फ्रिड को रूबन के चले जाने से बड़ी प्रसन्नता हुई और उसको विश्वास हो गया कि सुन्दरी मे का विवाह अब मेरे ही साथ होगा ।

मिष्टर जॉन पत्र पढ़कर बहुत देर तक कुछ सोचते रहे, फिर कहने लगे—"बेचारा रूबन कहाँ गया? और क्यों गया? कल प्रातः—काल मैं उसे सब जगह ढुँढ़वाऊँगा ।"

मिष्टर डार्नले यह कह कर कि—"महाशय ! रूबन को आप उसी की इच्छा पर रहने दीजिए और उसके पीछे न पड़िए" उठे और अपने कमरे में चले गए। उनके पीछे सब उठ गए और टेबुल पर से भोजन के पात्र हटाए गए ।

मिस-मिडिल्टन वहाँ से उठकर अपने कमरे में गई और बैठकर रो रो के कहने लगी—"हे अन्तर्यामी जगदीश्वर ! यदि रूबन मेरे कारण गया हो तो मुझे क्षमा कर। मैं विवश हूं। प्रेम ने मुझे अन्धा बना दिया है। हाय ! मैंने बेचारे को बहुत दुःख दिया ।"

दूसरे दिन प्रातःकाल सबसे पहले डार्नले साहब मिष्टर जॉन के निकट गए और बोले—"मैं आपके उपकारों और सदुव्यवहार के कारण आपका बेमोल का दास हो गया, अतएव आपकी हानि और लाभ को अपनी ही हानि तथा

लाभ समझता हूं, सुतरां मैं वही बात जो कल रात्रि समय कह चुका हूं फिर कहता हूं कि आप रूबन के वास्ते चिन्ता न कीजिए। कोई ऐसा ही कारण होगा जिससे वह चला गया है। वह होनहार और समझदार लड़का है, अपने बाहुबल से बिना किसी प्रकार का कष्ट सहन किए खाने भर रुपया पैदा कर लेगा।"

इस बातचीत का मिष्टर जॉन पर बड़ा प्रभाव पड़ा। अन्त उन्होंने रूबन की चिन्तना छोड़ दी। इस काम से निपट कर मिष्टर डार्नले बगीचे में जाकर मिस-मिडिल्टन की बाट जोहने लगे और जब वह आई तो उसके निकट जाकर बोले-"मिस-मिडिल्टन! मुझको ऽसे कुछ कहना है।"

मे०। (घबराकर) कहिए?

मिष्टर डा०। पहले यह बताओ कि अभी तो तुम्हारे काम का समय है यहाँ क्यों चली आई हो?

मे०। पिताजी के निकट जाती हूं, उनसे कुछ काम है।

मिष्टर डा०। क्यों? क्या काम है? यद्यपि ऐसी बातों में हस्तक्षेप करना सभ्यता के विरुद्ध है, किन्तु जब हम आपके शुभेच्छु हैं तो हमसे छिपाने की भी कुछ आवश्यकता नहीं है।

मे०। उनसे कुछ कहना है।

मिष्टर डा०। कदाचित् रूबन के विषय में (उसका मुँह निहारकर) क्या यह नहीं है?

मे०। जी हाँ। (सजलनयन से) मिष्टर डार्नले साहब! मैंने बहुत बड़ा अपराध किया है, मैंने अपने पूज्य पिता की आज्ञा भङ्ग की है। भगवान्! अब मैं क्या करूं? पिता जी ने कहा था कि रूबन को अपना पति समझना, किन्तु मैंने वैसा नहीं किया, यही कहने पिता जी के पास जा रही हूं।

मिष्टर डा० । बस केवल इतना ही कहोगी कि और भी कुछ ?

मे० । हाँ, एक और भी रहस्य है ।

मिष्टर डा० । बस मैं समझ गया, तुम यही कहोगी कि 'मैंने रूबन से इसवास्ते इनकार किया कि मेरा मन विलिफ्रूड पर आ गया है ।'

मे० । जी हाँ, बस यही । हे राम ! अब मैं क्या करूं ?

मिष्टर डा० । अस्तु, जैसी होतव्यता थी वह हुई । अब मेरी सम्मति यह है कि इस विषय में अभी तुम अपने पिता से कुछ न कहो, इसवास्ते कि अभी उनको रूबन के चले जाने का रंज है, ऐसी दशा में यदि वह सुन लेंगे कि तुमही उसके चले जाने का कारण हो तो शोक से उनकी न जाने कैसी दशा हो जायगी, अतएव अब यही उचित है कि चुप हो रहो ।

मे० । आपकी निष्पक्ष सम्मति से मैं बहुत सन्तुष्ट हुई । मैं आपकी बाधित हूं कि आपने ऐसे बारीक समय में मुझ अभागी की रक्षा की । आप जो आज्ञा देते हैं मैं वहीं करूंगी ।

मे इतना कह कर अपने कमरे की ओर चली गई और अपने काम में लवलीन हुई । दो दिन बीत गए, किन्तु रूबन का कुछ पता न लगा । तीसरे दिन शनिवार था, जिस दिन नियमानुसार मिस-मिडिल्टन किङ्स्-गेट जाया करती थी परंतु रूबन के न होने के कारण विवश हो स्वयं मिष्टर जॉन को उसके संग जाना पड़ा । इन दोनों के जाने के पश्चात् मिष्टर डार्नले एक खिड़की के निकट एक आराम-कुर्सी पर लेट गए और विलिफ्रूड अपने बेकाम का समय बिताने के अभिप्राय से बगीचे की ओर चला । द्वार पर एक स्त्री मिली जिसे देखते ही

उसका चेहरा पीला पड़ गया और वह घबरा घबरा कर मिष्टर डार्नले के कमरे की ओर देखने लगा, किन्तु उसने समझा कि वह सो रहे हैं। वह स्त्री रूपवती थी, किन्तु शरीर कुछ लाँबा था और हाथ पाँव पतले पतले सूखे से थे। तात्पर्य्य यह कि वह युवतियों में गिनी जाने योग्य थी।

द्वार के निकट आकर वह चाहती थी कि भीतर प्रवेश करे कि इतने में बिल्फ्रिड से उसकी मुलाकात हो गई। विल्फ्रिड उसका लेकर घर के भीतर आया और कमरे का द्वार खोलकर कहने लगा—"भीतर चलो, लेकिन देखो ईश्वर के वास्ते धीरे धीरे बातें करना।"

मिष्टर डार्नले जो खिड़की में से यह सब दृश्य देख रहे थे खिड़की से उठ और उस कमरे के पीछे जहाँ दोनों बैठे थे जा छिपे और दोनों के प्रत्येक शब्द को ध्यान देकर सुनने लगे।

आठवाँ प्रकरण।

विल्फ्रिड के साथ कमरे में जाकर वह औरत जिसका नाम रोसालिण्ड था एक कुर्सी पर बैठ गई तो दोनों में बातें होने लगीं।

विल्फ्रिड०। यहाँ तुम्हारा कैसे आना हुआ?

रोसालिण्ड। गरीबी और रुपये कि आवश्यकता मुझको यहाँ खींच लाई।

विल्फ्रिड०। रोसालिण्ड! तुम मेरा हाल भली प्रकार जानती हो। मेरे पास कुछ नहीं है, क्या दूं? इसके सिवाय हमारे तुम्हारे जो प्रतिज्ञा हुई थी तुम उसके विपरीत चलती हो।

रोसालिण्ड। जब पहले तुम्हीं ने प्रतिज्ञा भङ्ग की तो मैं

कैसे चुप रह सकती हूं? क्या मैं चुपचाप तुम्हारे साथ विवाह करने पर राजी नहीं हो गई थी? क्या मैंने.....

विलिफ्रण्ड०। बस करो बस करो। ईश्वर के वास्ते जरा धीरे बोलो।

रोसालिण्ड। वाह वाह! तुम्हें लज्जा नहीं आती! मुझको देखो कि अनेक प्रकार के कष्ट भोगे, संकट में पड़ी, लेकिन सदैव तुम्हारी इच्छा के अनुकूल काम करती रही, उसका यह फल पाया कि तुमने अपने से मुझको पृथक् कर दिया।

विलिफ्रड०। ऐसा करना तो तुम्हीं ने स्वीकार किया था।

रोसालिण्ड। हाँ मैंने स्वीकार किया था, लेकिन क्यों? तुमने कसम खाया था कि हमारे पास एक पैसा भी नहीं है, किन्तु अब तुम्हारे कपड़ों के देखने से प्रतीत होता है कि जो कुछ तुम कहते थे वह असत्य था।

विलिफ्रड०। तुमको भली प्रकार ज्ञात है कि मैं तुम्हारे ही अपव्यय के कारण दरिद्र हो गया हूं।

रोसालिण्ड। अब मुझपर दोषारोपण करते हो? क्या मेरे ही वास्ते पृथक् घर लिया था? एक "एक्ट्रेस" को अपनी अर्द्धाङ्गिनी बना कर खुद अपने घर में रखने में तुम्हें लज्जा आती थी?

विलिफ्रंड०। इस वृथापवाद से क्या लाभ? अब जो तुम चाहती हो वह कहो।

रोसालिण्ड। हम पहले ही कह चुके हैं कि हमें रुपये की बड़ी आवश्यकता है। हम तो बस रुपया चहते हैं, और भविष्य के वास्ते भी कुछ प्रबन्ध कर दिया जाय।

विलिफ्रड०। और यदि ऐसा न हुआ तो क्या करोगी?

रोसालिण्ड । सर्वत्र अपने को तुम्हारी पत्नी प्रसिद्ध करूंगी और रोटी कपड़े का दावा करूंगी ।

विल्फ्रिड० । अच्छा अब मैं अपना अभिप्राय स्पष्ट प्रगट किए देता हूं ।

रोसालिण्ड । हाँ, यही उचित है, क्योंकि मैं जानती हूं कि अब तुमको मुझसे एकदम घृणा है, परन्तु अब तो मुझको भी इसकी कुछ पर्वाह नहीं है, मैं तो रुपये की भूखी हूं ।

विल्फ्रिड० । सुनो रोसालिण्ड ! अभी तो मेरी अवस्था बहुत ही खराब है। यदि मैं किसी धनाढ्य युवती को अपनी पत्नी बना सका तो तुमको बहुत कुछ दूंगा। तब तक यदि मेरी स्थिति के अनुसार कुछ लेकर चली ओ और उस विवाह का हाल किसी पर प्रगट न करो तो मैं रुपया देने को तय्यार हूं ।

रोसालिण्ड । अच्छा मैं तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार करती हूं ।

मिष्टर डार्नले ने कमरे के पीछे से सारी बातें सुन लीं और शीघ्रता से अपने कमरे में जाकर पूर्ववत् लेट रहे। पति पत्नी में लेन देन हो जाने के पीछे विल्फ्रिड ने अपनी गुप्त-पत्नी को घर के बाहर तक पहुंचा दिया और लौटती समय देखने लगा कि मिष्टर डार्नले क्या करते हैं । उनको उसी प्रकार सोते देख कर वह मन में बहुत प्रसन्न हुआ । मिष्टर जॉन किङ्स्-गेट गाँव से आए और भोजन करके जमीन्दारी का काम देखने चले गए। मिस-मिडिल्टन गृहस्थी का काम करने लगी । भोजन के कमरे में केवल विल्फ्रिड और मिष्टर डार्नले रह गए तो उन दोनों में इस प्रकार बातचीत होने लगी,-

मिष्टर डा० । तुम्हारा लन्दन जाने का कबतक इरादा है?

विल्फ्रिड० । जल्दी तो नहीं जाऊँगा, लेकिन क्यों, क्या

आपका कोई काम है ?

मिष्टर डा०। मुझको कुछ "कागज-पत्तर" भेजने हैं, और उनको हरएक आदमी के हवाले नहीं कर सकता। तुम जाते तो तुम्हें दे देता।

विल्फ्रिड०। मैं आपका काम करने को तय्यार हूं।

मिष्टर डा०। क्या केवल मेरे काम के वास्ते चले जाओगे?

विल्फ्रिड०। जी हां, जब आप मेरे चाचा के मेहमान हैं, तो आपकी सेवा करना मेरा धर्म्म है। कहिए, कब जाऊं ?

मिष्टर डा०। कल प्रातःकाल।

विल्फ्रिड०। मैं तय्यार हूं।

मिष्टर डा०। लेकिन मैं चाहता हूं कि यहां कोई न जानने पावे कि मैंने तुमको भेजा है।

विल्फ्रिड०। यद्यपि मुझको झूठ बोलने का अभ्यास नहीं है, परन्तु आपके वास्ते कुछ हर्ज नहीं। मैं कहूंगा कि अपने एक आवश्यक के वास्ते जा रहा हूं।

मिष्टर डार्नले ने धन्यवाद दिया, और दोनों एक दूसरे से पृथक् हुए। रात को भोजन के समय विल्फ्रिड कहने लगा—"कल सुबह मैं दो चार दिन के वास्ते यहां से जाऊंगा।" मिष्टर जॉन बोले, "क्या यहां रहते रहते घबरा गए ? कदाचित् यहां तुम्हारा जी नहीं लगता है।"

विल्फ्रिड०। जी नहीं, यहां रहने से अधिक सुख की कौन सी बात हो सकती है ? मुझे एक आवश्यक काम के लिए जाना है।

मिष्टर डा०। मैं समझता हूं कि आज तीसरे पहर को डाँकवाला चिट्ठी दे गया है, कदाचित् उसी वास्ते तुमको जाने की जरूरत पड़ी है।

विल्फ्रिड०। जी हां, ऐसा ही है।

प्रातःकाल नित्यकृत्य से निपट कर विल्फ्रिड नीचे उतरा। मिष्टर डार्नले उसको आपने कमरे में ले गए और कहने लगे— "इस कष्ट के वास्ते जो आप मेरे लिए उठाते हैं मैं पुनः आपको धन्यवाद देता हूं, परन्तु कृपाकर जाने में जो कुछ खर्च हो मुझसे ले लीजिए।"

मिष्टर डार्नले ने यह कह रुपये गिनकर सामने रख दिए और एक पत्र हाथ में देकर कहा—"यह पत्र मिष्टर जान्सन को जो Gray's Inn Square नामक मोहल्ले में रहते हैं दे देना।"

यद्यपि विल्फ्रिड ने रुपया लेने से इनकार किया, किन्तु मिष्टर डार्नले ने एक न सुनी और रुपया दे ही दिया।

जलपान के उपरान्त गाड़ी आई और विल्फ्रिड रवाना हुआ। यह गाड़ी उसको किङ्ग्स्-गेट तक पहुंचावेगी और वहां से उसको भाड़े की गाड़ी पर जाना होगा। रूबन की अनुपस्थिति के कारण मिष्टर जॉन विल्फ्रिड को वहां तक पहुंचाने गए। अब केवल मिस-मिडिल्टन और मिष्टर डार्नले कमरे में रह गए। मिष्टर डार्नले मिस-मि० से यों बातें करने लगे—

मिष्टर डा०। मिस महाशया! मुझको आपसे कुछ आवश्यक बातें कहनी हैं।

मे०। क्या?

मिष्टर डा०। अब तुम अपन चित्त को सम्हालो। शोक और चिन्ता से कुछ लाभ लाभ नहीं होगा। विल्फ्रिड कदापि इस योग्य नहीं है कि तुम उसके साथ विवाह करो।

मे०। (सजन नयनों से) क्यों? क्या हुआ?

मिष्टर डा०। सुनो मैं सारी कहानी तुमसे कहता हूं, जिसमें

तुम विल्फ्रिड का ध्यान एकबार ही चित्त से दूर कर दो । उसका चरित्र उससे भी बहुत खराब है जैसा कि तुम सबको मालूम हुआ था । अब उसके पास कुछ भी नहीं है । इसके अतिरिक्त उसने सबसे छिपाकर एक विवाह भी किया है । तुम विश्वास मानो, मैंने ठीक पता लगाया है । मैंने उसको इसी वास्ते लन्दन भेजा है । अब वह यहां नहीं आवेगा । उस दुष्ट का सब हाल मैं तुम्हारे पिता से भी कह दूंगा, किन्तु तुम्हारा भेद न खुलने पावेगा ।

मे० । आपने मुझको बड़ी आफत से बचा लिया, अन्यथा जन्म भर मुझको दुखी रहना पड़ता । ईश्वर को सहस्र सहस्र धन्यवाद हैं कि मैं आपके सदुपदेश के प्रभाव से बच गई ।

मे के मुख से ये बातें सुनकर मिष्टर डार्नले अतीव प्रसन्न हुए और उसे अपनी बेटी की तरह प्यार करके कहने लगे-"तुम्हारी सरलता और योग्यता को मैं खूब जानता हूं । अपने मुख पर से शोकचिन्ह मिटाने का प्रयत्न करो । देखो, कोई यह न जानने पावे कि तुमको किसी बात की चिन्ता वा घबराहट है ।"

नवां प्रकरण ।

विल्फ्रिड को गए एक महीना बीत गया परन्तु न वह आज आता है न कल । उसकी कोई चिट्ठी भी नहीं आई । मिष्टर डार्नले ने मिष्टर जॉन से उसकी सारी चतुराई और गरीबी का हाल कह डाला, जिसको सुनकर उनको बहुत दुःख हुआ, किन्तु वह सोचने लगे कि डार्नले साहब यह सब भेद कैसे जान सके ?

मिस-मिडिलन विल्फ्रिड का ध्यान एकबार ही चित्त से

दूर कर देने का प्रयत्न करती रही किन्तु यह बात ऐसी न थी जो तत्काल भूल जाती। मे के शरीर में उमङ्ग के स्थान पर अब शिथिलता आ गई थी।

इस महीने में मिष्टर डार्नले के नाम कई पत्र आए और मे-मिडिल्टन जब किङ्गस्-गेट गांव को जाते तो वह एक पुलिन्दा जिसपर "मिष्टर जान्सन एटर्नी" का नाम लिखी होता पोष्ट-आफिस में देने के लिए उसको अवश्य देते। मिष्टर जॉन और उनको बेटी को आश्चर्य्य था कि जब मिष्टर डार्नले का कोई शत्रु वा मित्र है ही नहीं तो वह पत्रव्यवहार किससे करते हैं और क्यों करते हैं!

मिष्टर डार्नलेको मिष्टर जॉन का मेहमान हुए चार महीने हो गए, अब सब लोग उनसे इतने हिल मिल गए थे कि वह भी उसी वंश से जान पड़ते थे।

एक दिन प्रातःकाल मिष्टर जॉन और उनकी लड़की किङ्गस्-गेट से लौट आने पर मिष्टर डार्नले से मिली। मिष्टर जॉन ने उनसे पूछा, "आपने कुछ और भी सुना? वह एप्सूली-कोर्ट जिसको आप देखने गए थे बिक गया।"

मिष्टर डा०। यह भी मालूम हुआ कि किसने खरीदा?

मिष्टर जॉन। यह तो अभी नहीं मालूम हुआ। यह कार-रवाई बड़ी जल्दी में हुई हैं। मेरी समझ में तो कुछ भी नहीं आया।

मिष्टर डा०। कदाचित् बीमे की बातचीत् लन्दन में हुई। इसवास्ते कि मैंने किसी समाचारपत्र में देखा था कि उसकी बात-चीत लन्दन में एक एजेण्ट से करनी चाहिए। सम्भव है कि अभी वहां से खबर न आई हो कि किसने खरीदा।

मिष्टर जॉन । हां बस यही बात है । वहां तो लोग कहते हैं कि आज सायंकाल में नए मालिक एप्मूली-कोर्ट में आनेवाले हैं । मैं समझता हूं कि कल प्रातःकाल वह एडिङ्गटन-गिर्जे में वह आ जायँगे ।

मिष्टर डा० । एडिङ्गटन गिर्जा कहां है ?

मिष्टर जॉन । यह एप्मूली-कोर्ट के गिर्जे का नाम है । यदि आपकी इच्छा हो तो चलिए कल सुबह हम सब भी उसी गिर्जे में चलें, क्योंकि "किङ्ग्स्-गेट-गांव" का गिर्जा यहां से बहुत दूर पड़ता है ।

मिष्टर डा० । (मुस्कुरा कर) कदाचित् आपको एप्मूली-कोर्ट के नए मालिक के देखने की बड़ी उत्कण्ठा है ।

मिष्टर जॉन । जी हां, सब ही को अपने पड़ोसी का ध्यान रहता है ।

दूसरे दिन मिष्टर जॉन, उनकी लड़की और मिष्टर डार्नले पैदल 'एडिङ्गटन' गिर्जे को रवाना हुए । जब पास पहुँचे तो बड़ी भीड़ देखी, और बराबर गाड़ियां चली आती थीं । जान पड़ता था कि मानो उस गांव के सब आदमी चले आते हैं ।

मिष्टर जॉन बोले, "चलो हम सब भी जल्दी से बैठ जायं नहीं तो जगह कठिनाई से मिलेगी ।"

गिर्जे के भीतर इन लोगों को स्थान मिल गया । भीड़ का यह हाल था कि एक पर एक गिरे पड़ते थे, और पाँव धरने की जगह नहीं थी । बस वही जगह खाली थी जो एप्मूली-कोर्ट के नए मालिक के बैठने के वास्ते नियत कर दी गई थी ।

पूजा समाप्त होने पर इन लोगों का छोटा दल बाहर निकला तो सुनने में आया कि मालिक अबतक नहीं आए

और नहीं मालूम कि कबतक आवेंगे। विशेष आश्चर्य्य की बात तो यह थी कि वहां के नौकरों में से भी कोई अपने मालिक का नाम नहीं जानता था।

तीसरे पहर मिस-मिडिल्टन और मिष्टर डार्नले मैदान में सैर करने चले। जब थोड़ी दूर निकल गए तो मिष्टर डार्नले ने मे को एक खेमा दिखाया जिसमें तीन स्त्रियां बैठी रमल के पासे फेंक रही थीं।

मिष्टर डा०। कदाचित् वे सब भविष्य का हाल बता देती हैं।

मिस-मि०। क्या आपको उनकी बातों पर विश्वास है?

मिष्टर डा०। हां।

मिस-मि०। (आश्चर्य्य से) यह कैसे सम्भव है कि आप उनकी बातों पर विश्वास कर लें?

मिष्टर डार्नले ने इसका उत्तर नहीं दिया, परन्तु कहने लगे, "बाल्यावस्था में क्या तुमने कभी इस प्रकार की औरतों को अपना हाथ नहीं दिखलाया?"

मिस-मि०। (मुस्कुरा कर) मुझे याद आता है कि जब मैं नौ-दश वर्ष की थी, तो मैंने एक ऐसी ही औरत को हाथ दिखलाया था। उसने बहुत कुछ कहा था, लेकिन मैंने उन सब बातों को अपने चित्त से भुला दिया।

मिष्टर डा०। अच्छा बताओ उसने क्या कहा था?

मिस-मि०। (लज्जित होकर) यदि आपकी इच्छा है तो सुनिए। वह कहती थी कि तुम बहुत धन की स्वामिनी होओगी, गाड़ी घोड़े दौड़ाती फिरोगी, और सहस्रों दास दासी तुम्हारी सेवा कर अपना पेट पालेंगी।

मिष्टर डा०। क्या बस इतना ही कहा था?

मिस-मि०। (हँसकर) नहीं इतनाही नहीं, किन्तु आप मुझको मूर्ख न बनाइए, मैं उन बातों पर विश्वास नहीं करती।

दोनों चुप होकर टहलने लगे, लेकिन जब मैदान के छोर पर पहुंचे तब मिष्टर डार्नले कुछ ऐसी बातें करने लगे कि मिस-मिडिल्टन ने समझा कि वह पागल हो गए हैं।

दशवां प्रकरण।

मिस-मिडिल्टन को निश्चय हो गया कि मिष्टर डार्नले की बुद्धि बहँक गई है, इस कारण कि वह सहसा कह उठे, " मिस-मिडिल्टन! तुमने उस समय पूछा था कि तुम उन भविष्य की बाते कहनेवाली स्त्रियों को सत्यवक्ता जानते हौ कि नहीं? अब मैं उस बात उत्तर देता हूं। मैं उनकी बातों पर विश्वास करता हूं। तुम भी सच जानो, विश्वास मानो कि उस स्त्री ने जिसको तुमने बाल्यावस्था में हाथ दिखाया था जो कुछ कहा था सब सच होगा। मैं शपथपूर्व्वक कह सकता हूं कि वे सब बातें पूरी होंगी। उन बातों को अब झूठ और व्यर्थ की बातें न समझो और यह सोचो कि जब तुमको धन मिलेगा तो तुम उसको किस प्रकार व्यवहार में लाओगी। (दम लेकर) मिस-मिडिल्टन! मुझको पागल न जानो। मेरा जी गवाही देता है कि वह भविष्यद्वाणी शीघ्र ही प्रत्यक्ष होनेवाली है। "

मिस-मि०। महाशय! आपको उचित नहीं है कि इस प्रकार की व्यर्थ बातें एक अल्पवयस्का बालिका के मस्तिष्क में भर दें। ईश्वर ने दया करके मुझको थोड़ी बहुत बुद्धि और विवेकशक्ति अवश्य दी है। इन बातों की ओर मेरा ध्यान आकर्षित न होगा, किन्तु मैं अनुमान करती हूं कि आपने ये

बातें मेरी जाँच के लिए की होंगी।

मिष्टर डा०। (हंसकर) हां मेरा अभिप्राय यही था। अब तुमसे एक बात चाहता हूं।

मिस-मि०। कहिए।

मिष्टर डा०। लेकिन पहले उसके पूरा करने की प्रतिज्ञा करो। तुम मेरा स्वभाव जानती हो। मैं वह बात नहीं चाहता जिसको तुम कर न सको। खासकर ऐसी अवस्था में जबकि मैं यहां से बहुत जल्द चला जाने वाला हूं।

मिस-मि०। (साश्चर्य) क्या आप जल्दी चले जायँगे?

मिष्टर डा०। हां, अब मैं तुम्हारे पिता को उनके घर में रहने का कष्ट नहीं दे सकता।

मिस-मि०। ऐसी बात न कहिए। आप कदापि ऐसा न समझिए कि आपके रहने से उनको कष्ट होता है।

मिष्टर डा०। मैं खूब जानता हूं कि उनकी मुझ पर बड़ी कृपा है और मेरे रहने से उनको कष्ट नहीं होता है।

मिस-मि०। फिर चले जाने की बात क्यों करते हैं?

मिष्टर डा०। तो क्या तुम चाहती हो कि मैं न जाऊं?

मिस-मि०। निस्सन्देह, हम सब आपको अपना शुभेच्छु समझते हैं और मुझे निश्चय कि आपके चले जाने से पिता जी को बहुत दुःख होगा।

मिष्टर डा०। किन्तु मुझे स्मरण है कि किसी समय मैंने तुम्हारे साथ कटुवाक्यों का व्यवहार किया था।

मिस-मि०। यह ठीक है, किन्तु अब आपकी कृपा और आपके सद्व्यवहार ने उन बातों को एकबार ही भुला दिया। अच्छा यह तो कहिए कि आपके जाने का हाल पिता जी को

मालूम है कि नहीं ?

मिष्टर डा० । नहीं, कल मैं उनसे कहूंगा।

मिस-मि० । आप कहां जायँगे ?

मिष्टर डा० । (मे की ओर कनखियों से देखकर) मुझ सा आदमी कहां जा सकता है ? सिवाय इसके कि एक जगह से दूसरी जगह।

मिस-मि० । क्या आपके वास्ते यहां जगह नहीं है ?

मिष्टर डा० । तुम्हारे हृदय में बहुत दया है, परन्तु अब चाहे जो कुछ कहो मैं जल्दी चला जाऊंगा, किन्तु मुझे एक बात की इच्छा है।

मिस-मि० । वह क्या ?

मिष्टर डा० । तुम उसके पूरा करने की प्रतिज्ञा करती हो ?

मिस-मि० । जी हां, अवश्य।

मिष्टर डा० । अच्छा फिर तुम मुझको सिड़ी या पागल तो न बनाओगी ? परन्तु इसको मुझको कुछ पर्वाह नहीं। तुम्हारे जी में जो आवे वही समझो। मैं चाहता हूं कि उस स्त्री को तुम अपना हाथ फिर दिखालाओ जो उस खेमे में बैठी है।

मिस-मिडिल्टन ने देखा कि इसमें कुछ हर्ज की बात नहीं है, अतः उनका कहना तुरन्त स्वीकार कर लिया। दोनों उस ओर चले जहां खेमा गड़ा था। जब पास पहुंचे तो उनमें से एक स्त्री खेमे के बाहर निकल आई और कहने लगी, "इतना कष्ट उठाया है तो कृपाकर भीतर चलिए और अपना हाथ दिखलाइए।" मिस-मि० खेमे के भीतर गई और अपना हाथ दिखलाने लगी। उन स्त्रियों में से एक आगे बढ़ आई और हाथ को बड़े ध्यान से देखकर कहने लगी, "आप कुछ

दिन में बहुत बड़ी सम्पत्ति पावेंगी। असंख्य धन हाथ लगेगा। बहुमूल्य गाड़ी घोड़े आपके अस्तबल में बँधे रहेंगे।"

मिस-मिडिल्टन ने इतना सुनकर हाथ खींच लिया और डार्नले साहब की ओर देखने लगी। मिष्टर डार्नले ने सोचा कि कदाचित् वह अब हाथ दिखाना नहीं चाहती, अतः बढ़कर चुपके से उसके कान में कहा, "इससे क्या होता हैं? तुम प्रतिज्ञा कर चुकी हो कि मेरी यह इच्छा पूर्ण करोगी। सो अब उसका निर्वाह करो।"

मिस-मि० ने दिखलाने के लिए पुनः हाथ बढ़ाया। उस स्त्री ने देर तक सोच समझ कर कहा, "आपका मन किसी पर आ गया था, परन्तु वह आपकी बराबरी के योग्य न निकला। अब एक और व्यक्ति आपके वास्ते हैरान है, और वही अन्त में आप का स्वामी और पति होगा।"

अब मिस-मिडिल्टन को उन औरतों की बातों का कुछ कुछ विश्वास हो चला, और मन में कहने लगी, "हो सकता है कि यह विद्या सच हो।" किन्तु वह सौन्दर्य्य-स्वर्ग की सुकुमारी, सरोजनयनी, सरसमयी, सुरीली, स्थिरचित्त सरल-हृदया सुन्दरी अपने सौभाग्य का समाचार सुनकर सम्पत्ति-इच्छुक सुन्दरियों के समान सुखी नहीं हुई, क्योंकि वह लावण्य-मयी ललना लालचिन नहीं थी। डार्नले साहब ने अपने जेब से एक रुपया निकालकर उस भविष्यद्वक्त्री स्त्री के हाथ में दिया और घर को लौट चले। रास्ते में दोनों चुपचाप और अपने २ ध्यान में डूबे हुए चले जाते थे। जब घर के पास पहुंचे तब डार्नले साहब ने कहा, "उचित नहीं है कि ये बातें तुम्हारे पिता से कही जायँ।" मिस-मिडिल्टन ने भी इस राय को

पसन्द किया और अपने पिता से इस विषय में कुछ भी नहीं कहा।

दूसरे दिन प्रातःकाल जलपान के समय मिष्टर डार्नले ने मिष्टर जॉन से कहा, "महाशय! आज मैं आपसे बिदा होना चाहता हूं।"

मिष्टर जॉन। (आश्चर्य्य से) क्या यहां से चले जाइएगा? क्या किसी तरह का आपको कष्ट हुआ या किसी बात का दुःख हुआ?

मिष्टर डा०। नहीं, मैं यहां बहुत सुख से रहता हूं। आपकी दया और कृपा का मैं किस प्रकार वर्णन करूं। जगदीश्वर आपके परोपकार का उचित फल देंगे।

मिष्टर जॉन। अच्छा फिर कब तक आइएगा? मैं अनुमान करता हूं कि आठ दश दिन में, बहुत २ पन्द्रह दिन में आप लौट आवेंगे।

इतने में मिष्टर जॉन के एक नौकर ने उनके नाम का एक पत्र लाकर हाथ में दे दिया। मिष्टर जॉन उसको उच्चस्वर से पढ़ने लगे। पत्र में यह लिखा था,—

१०–८–१७८०,
"एप्सली-कोर्ट"

"महाशय—

"कल तीसरे पहर को तीन बजे आपकी और आपकी पुत्री की दावत है। यह दावत एप्सली-कोर्ट के नए मालिक से मुलाकात कराने के लिए की गई है। यदि आपके घर में आपके कोई मित्र वा सम्बन्धी हों तो उनको भी साथ लेते आइएगा।

"भवदीय—
"टामस बेकर।"

मिष्टर जॉन इस पत्र को पढ़कर कहने लगे, "यह पत्र एप्मूली-कोर्ट के मैनेजर के पास से आया है। मिष्टर डार्नले! अब तो आपका जाना नहीं हो सकता।"

मिष्टर डा०। आपकी खातिर से मुझको यह भी स्वीकार है।

मिष्टर जॉन। (प्रसन्न होकर) एक दिन आपके साथ और रहने का अवसर प्राप्त हुआ, लेकिन आपने हमारे पहले प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। कहिए,कब तक लौट आइएगा?

मिष्टर डा०। यदि आप लोगों मेरे आने से हर्ष हो तो मैं प्रण करता हूं कि आवश्य आऊंगा।

इतना कहकर मिष्टर डार्नले उठे और अपने कमरे में चले गए। मिष्टर जॉन जमीन्दारी का काम देखने गए और मे-मिडिल्टन घर का काम काज करने लगी।

ग्यारहवां प्रकरण।

मिष्टर जॉन, उनकी बेटी और मिष्टर डार्नले तीनों तीन बजे फिटन गाड़ी पर सवार होकर एप्मूली कोर्ट को रवाना हुए। मिष्टर जॉन अपने सबसे अच्छे कपड़े पहिने हुए थे और उनकी पुत्री ने बहुमूल्य और भड़कीले वस्त्र पहिनकर अपने को बनाया सँवारा था,किन्तु आश्चर्य्य की बात थी कि मिष्टर डार्नले वेही कपड़े पहिने हुए थे जिनको पहिन कर वह पहले पहल सड़क पर पाए गए थे। यहां तक कि उन्होंने बालों में कंघी तक नहीं की। यद्यपि मिष्टर जॉन को उनकी यह चाल पसंद नहीं आई किन्तु सभ्यता के विरुद्ध जानकर वह कोई बात मुंह से निकालने का साहस न कर सके।

सबने समझा था कि वहां गाड़ियों और मेहमानों की भीड़ भाड़ होगी लेकिन अभी तक एक भी गाड़ी नहीं आई थी ।

वहां पहुंचकर तीनों आदमी गाड़ी से उतरे और मिष्टर बेकर से जो अपने बहुत से नौकरों को लेकर जिनके शरीर पर बहुमूल्य वर्दियां थीं अगवानी के लिये आए थे उनकी मुलाक़ात हुई । जॉन साहब ने मिष्टर बेकर से कहा, " आपके लेखानुसार मैं अपने मित्र मिष्टर डार्नले को साथ लेता आया । "

मिष्टर बेकर और उन दोनों नौकरों ने मिष्टर डार्नले को भी सलाम किया, किन्तु उनके मैले कुचैले वस्त्र देखकर सब एक दूसरे का मुंह देखने लगे कि मिष्टर जॉन ऐसे व्यक्ति को अपने साथ क्यों लाए ? मिष्टर जॉन और उनकी पुत्री नौकरों का यह हाल देखकर बहुत दुःखित हुई, परन्तु मिष्टर डार्नले ने इन बातों पर ध्यान भी नहीं दिया ।

मिष्टर जॉन । (मिष्टर बेकर से) क्या मालिक मकान आ गए ?

मिष्टर बे० । नहीं महाशय ! किन्तु मैं समझता हूं कि अब कुछ देर में आया ही चाहते हैं ।

मिष्टर जॉन० । अन्दर तो बहुत से मेहमान इकठ्ठे होंगे ?

मिष्टर बे० । आपके सिवाय अब तक कोई नहीं आया । केवल छः ही आदमियों की तो वहां बुलाहट है । शेष लोग बहुत दूर से आनेवाले हैं । पाँच बजे भोजन होगा, अभी बहुत समय है ।

मिष्टर जॉन० । आश्चर्य की बात है कि इस प्रान्त के लोगों में से केवल मैं ही बुलाया गया ! मिष्टर बेकर ! क्या निमन्त्रण आपकी ओर से दिया गया था ।

मिष्टर बे० । नए मालिक के " एटर्नी " की ओर से । वह इस समय मकान के भीतर वर्तमान हैं ।

मिष्टर जॉन । कृपाकर यह तो बताइए कि आपके नए मालिक का नाम क्या है ? आश्चर्य है कि जिनसे मिलने के वास्ते हमलोग आए हैं उनका नाम तक नहीं जानते !

मिष्टर बे० । आपका न जानना तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि हम लोग भी अभी तक नहीं जानते ।

मिष्टर जॉन । आश्चर्य ! कदाचित् आपसे हमको निमन्त्रित करने में भूल हुई । अस्तु, यह बताइए कि वह एटर्नी महाशय कहां हैं ?

मिष्टर बे० । वह पत्र आदि देखने में लवलीन हैं और मना कर दिया है कि इस समय उनके पास कोई न जाय ।

मिष्टर जॉन० । जो हो, वह हमसे मिलने अवश्य आवेंगे । (फिर अपनी पुत्री की ओर देखकर बोले) हमारी बुद्धि कुछ काम नहीं करती । क्या करें ? चलो लौट चलें ।

मिष्टर बेकर यह बात सुनकर बोले, " आप कुछ संशय न कीजिए । जो कुछ मैं कहता हूं उसपर विश्वास कीजिए और थोड़ी देर ठहर जाइए ।

मिस-मिडि० । (अपने पिता के कान में) मिष्टर बेकर सच कहते हैं । कदाचित् सब हाल मालूम हो जाय ।

मिष्टर जॉन ने अपनी पुत्री की राय को पसन्द किया और मकान के अन्दर चले । मिष्टर डार्नले ने किसी बात पर ध्यान नहीं दिया और मिष्टर जॉन के पीछे हो लिए । इन लोगों के साथ मिष्टर बेकर और सब नौकर चाकर भी चले । मिष्टर डार्नले की भद्दी सूरत देखकर एक नौकर हँसकर दूसरे

से कहने लगा, "मैं समझता हूं कि यह वही बुड्ढा है जो एक महीना हुआ यहां आया था।"

दूसरा०। मुझको याद पड़ता है कि मैंने इसे पहले भी देखा है, परन्तु मिष्टर जॉन को इस जङ्गली "हूस" को अपने साथ लाना उचित नहीं था।

मिष्टर डार्नले नौकरों के समीप थे, इस कारण उनकी बात-चीत स्पष्ट सुन सके। अपनी निन्दा सुनकर जब उन्होंने उन नौकरों की ओर कड़ी दृष्टि से देखा तो वे चुप हो गए।

मिष्टर बेकर ने इन तीनों मनुष्यों को एक सजे हुए कमरे में लाकर बिठलाया। थोड़ी देर के बाद गाड़ियों के आने की घरघराहट सुनाई दी। मिष्टर जॉन ने उठकर एक खिड़की में से देखा और कहा, "कदाचित् इसी गाड़ी पर मालिक-मकान आए होंगे।" मिस-मिडिल्टन भी खिड़की के निकट गई और देखकर कहने लगी, "यह तो भाड़े की गाड़ी है। नए मालिक अपनी फिटन गाड़ी पर तड़क भड़क से आवेंगे। वह इस प्रकार भला क्यों आवेंगे?"

मिष्टर जॉन। वस्तुतः आश्चर्य्य है कि मालिक नहीं हैं और मेहमान सब आ गए।

इतने में दोनों गाड़ियाँ आकर ठहरीं और प्रत्येक गाड़ी पर से एक एक जण्टिलमैन और दो दो लड़कियां उतरीं।

मिस-मि०। कदाचित् ये दोनों जण्टिलमैन पिता हैं और चारो लड़कियां उनकी कन्याएं हैं (इधर उधर देखकर) परन्तु मिष्टर डार्नले कहां चले गए?

मिष्टर जॉन (चारो ओर देखकर) वह निश्चय उस ओर गए होंगे जहां चित्र लगे हैं, क्योंकि चित्रों से उनको बहुत प्रेम हैं।

इतने में एक नौकर चाय और मिठाई लाया। मिष्टर जॉन ने उससे पूछा, "क्या इन गाड़ियों पर सब मेहमान आ गए?"

नौकर। जी हां।

मिष्टर जॉन ने थोड़ी चाय पी, किन्तु मिस-मिडिल्टन ने कुछ नहीं खाया। थोड़ी देर के बाद द्वार खुला और दूसरे नौकर ने आकर कहा कि "कर्नल बिलासिस और उनकी दो पुत्रियां तथा मिष्टर ब्यूशम्प और उनकी दो लड़कियां आती हैं।"

कर्नल बिलासिस की अवस्था साठ वर्ष के लगभग होगी। उनका स्वभाव बहुत ही कटु था। उनकी दो पुत्रियां जिनका नाम करोलिन और बर्था था यद्यपि अत्यन्त रूपवती तो न थीं तथापि युवावस्था और बहुमूल्य वस्त्रों के कारण कुछ भली लगती थीं। बड़ी की अवस्था २२ वर्ष की और छोटी की २० वर्ष की थी। उन दोनों का स्वभाव भी उनके पिता ही का सा था। वही चञ्चलता, वही कटुता, वही अपव्यय और वही शृङ्गारप्रियता दोनों में थी।

मिष्टर ब्यूशम्प की अवस्था भी प्रायः उतनी ही जितनी कर्नल बिलासिस की और स्वभाव भी दोनों का एक ही सा था। अहङ्कार और घमण्ड दोनों के मस्तिष्क में भरा हुआ था और दोनों अपने को बड़ा बुद्धिमान समझते थे।

मिष्टर ब्यूशम्प की दो पुत्रियां एमिली और लूसी जिनकी उम्र १८ और २० वर्ष की थी उतनी भी रूपवती न थीं जितनी कर्नल की पुत्रियां थीं, किन्तु इन दोनों के मुखड़े पर भोलापन और गम्भीरता पाई जाती थी और बातचीत से प्रतीत होता था कि इनका स्वभाव नम्र और दयालु है। मिष्टर ब्यूशम्प और कर्नल बिलासिस मिष्टर जॉन के बहनोई

थे, परन्तु कई वर्ष से साक्षात् न होने के कारण मिष्टर जॉन उनको सहसा न पहचान सके।

मिष्टर जॉन ने उनसे हाथ मिलाना चाहा परन्तु उन दोनों ने उनके हाथ में मानो उंगलियां छुला कर अपना२ हाथ खींच लिया, किन्तु मिष्टर जॉन इतने प्रसन्न थे कि उन्होंने इन बातों को लक्ष भी नहीं किया और अपने बहनोई तथा भाञ्जियों से एक २ करके मिलने लगे। करोलिन और बर्था तो बड़ी अप्रसन्नता से मिलीं, किन्तु जान पड़ता था कि एमिली और लूसी को इस मुलाकात से बहुत हर्ष हुआ है।

मिष्टर जॉन उन चारो को आशीर्वाद दे कर कहने लगे, "मे यही है। प्यारी बेटी मे! (मे-मिडिल्टन की ओर देखकर) अपनी वहिनों से गले मिलो और उनको प्यार करो।"

एमिली और लूसी ने बढ़कर 'मे' को प्यार किया और उससे मिलकर बहुत प्रसन्न हुईं। करोलिन और बर्था ने केवल सलाम का जवाब दिया।

कर्नल बिलासिस 'मे' से हाथ मिलाकर कहने लगे, "अहा! तुम हो मिस-मिडिल्टन! (मिष्टर ब्यूशम्प की ओर देख कर) ऐसी रूपवती लड़की और एक किसान के घर में!"

ब्यूशम्प। (हँस कर) ठीक, ठीक, खूब कहा।

परन्तु इन महाशय ने इतनी दया की कि मे की पीठ पर जरा हाथ फेर दिया।

मिष्टर जॉन को अपने बहनोइयों की असभ्यता का अब ध्यान हुआ। उनको विशेष दुःख इस बात का हुआ कि फिर कर 'मे' को देखा तो वह अपने नेत्रों से आँसू पोंछ रही थी।

एक और मनुष्य भी यह दृश्य देख रहा था। वह मिष्टर

डार्नले थे। जिस समय कर्नल बिलासिस आदि आए थे उस समय तो वह एक द्वार के पीछे छिपकर सारा दृश्य देख रहे थे, परन्तु अब सबके सामने बड़े कमरे में चले आए।

मिष्टर जॉन मिष्टर डार्नल को अपने साथ लाए थे, इस कारण सबको उनका परिचय देना उचित जानकर उन्होंने कहा, "यह हमारे मित्र मिष्टर डार्नले हैं।"

कर्नल बिलासिस ने हाथ के संकेत से मिष्टर डार्नले के सलाम का उत्तर दिया और उनकी पुत्रियां केवल सिर हिलाकर चुप हो रहीं। मिष्टर ब्यूशम्प और उनकी दोनों लड़कियां आश्चर्य्य से मिष्टर डार्नले का मुँह देखने लगीं। उस समय उस बुड्ढे ने उच्चस्वर से कहा, "हमारा नाम डार्नले नहीं है। हम वही हैं जिनसे मिलने आप लोग आए हैं, अर्थात् हम इस गृह के स्वामी हैं। आप लोग केवल हमारे मेहमान ही नहीं हैं वरन् सम्बन्धी भी हैं। हम वही है जिसके विषय में कई वर्ष से प्रसिद्ध था कि डूबकर मर गया,. अर्थात् हम मिष्टर जॉन के बड़े भाई जार्ज-मिडिल्टन हैं।"

बारहवां प्रकरण।

मिष्टर जॉर्ज अपने छोटे भाई मिष्टर जॉन से दशही वर्ष बड़े थे, किन्तु निर्बल और क्षीणकाय होने के कारण बहुत ही वृद्ध जान पड़ते थे। यदि उनका सम्पूर्ण जीवनचारित लिखा जाय तो एक बड़ी पोथी तय्यार हो जाय, अतएव संक्षेप में वर्णन किया जाता है कि जब उनकी अवस्था केवल २४ वर्ष की थी तो वह व्यापार का माल लेकर लिवेण्ट नगर की ओर रवाना हुए थे। मार्ग में उनपर डाका पड़ा और डाकुओं ने उनके सब

माल असबाब और जहाज पर अपना अधिकार कर लिया। वे सब जहाज को ट्यूनिस की ओर जहां वे रहते थे ले चले, किन्तु जब जहाज उस नगर के निकट पहुँचा तो समुद्र में एक बड़ा भारी तूफान आ गया। यहां तक कि जहाज डूब गया और मिष्टर जॉर्ज को छोड़ एक आदमी भी जीवित न बचा।

मिष्टर जॉर्ज एक तख्ते को पकड़े हुए बहते बहते किनारे पर जा लगे। वहां के नौकरों ने उन्हें पकड़कर गुलाम बनाया और अर्बी सेना के "मेगजीन" में उनको कोई काम सुपुर्द किया गया। मिष्टर जॉर्ज ने अपने उद्योग और परिश्रम से वहां के सब लोगों को अपने ऊपर प्रसन्न कर लिया, जिसका परिणाम यह हुआ कि वे सब प्रसन्न होकर उनको अपने सर्दार के सम्मुख ले गए। सर्दार ने मिष्टर जॉर्ज को एक उच्च पद पर नियुक्त किया। मिष्टर जॉर्ज ने वहां कई वर्ष में अपनी बुद्धिमानी से बहुत धन एकत्र कर लिया। उस नगर में वह ३५ वर्ष रहे। वहीं उनके काले बाल सफ़ेद हुए और दांत टूटे। उस समय उन्होंने सोचा कि मेरे कोई सन्तान नहीं है और इस धन का जिसको मैंने बड़े परिश्रम से एकत्रित किया है कौन मालिक होगा? उस जगह कोई ऐसा मनुष्य नहीं था जिसको वह सहर्ष अपना सब धन दे देते। अन्त में उन्होंने यही निश्चय किया कि अपनी जन्मभूमि में जाकर बिछुड़े हुए मित्रों और सम्बन्धियों में जा मिलूं।

मिष्टर जॉर्ज यह इरादा करके वहां से भागकर "जेनेवा" नगर में आए और वहां से अपना सब धन लन्दन के एक महाजन के नाम हुण्डी कर दिया। उसके उपरान्त आप भी अपनी जन्मभूमि की ओर चले। उन्होंने उचित नहीं जाना

कि पहले आते ही अपना नाम प्रगट कर दें। बस यही सोच कर और अपना नाम मिष्टर डार्नले रखकर वह उस गांव में पहुंचे, जहां अब उनके छोटे भाई मिष्टर जॉन रहते थे और जो उनकी जन्मभूमि था।

मिष्टर जॉर्ज को पता लगा कि उनके बड़े भाई एक पुत्र छोड़कर मर गए और उनकी दोनों बहिनें भी प्रत्येक दो दो पुत्रियां छोड़कर परलोक की यात्रा करने चली गईं, केवल छोटे भाई जीवित हैं और अद्यावधि जमीन्दारी का काम वही सम्हाले हैं। ये बातें उनको मिष्टर जान्सन एटर्नी द्वारा मालूम हुई थीं।

हमारे पाठकगण मिष्टर जॉर्ज के विषय में बहुत कुछ जान गए, अब हम कहानी को इस प्रकार पुनः आरम्भ करते कि जब उस बुड्ढे ने अपने को जॉर्ज-मिडिल्टन बतलाया तो जितने लोग उस कमरे में उपस्थित थे सब पर एक सन्नाटा छा गया। मिष्टर जॉन ने अपने खोए हुए भाई को पहचाना और उनसे गले मिलकर आनन्दाश्रु विसर्जन करने लगे।

मिष्टर जॉन के अलग होते ही करोलिन और बर्था दौड़कर उनसे गले मिलीं। कुछ देर पहले जिसके सलाम के जवाब में केवल माथा हिलाती थी, अब उसकी चापलूसी करने लगी!

मिष्टर जॉर्ज का एक हाथ तो कर्नेल विलासिस ने पकड़ा तथा दूसरा मिष्टर ब्यूशम्प ने, और बड़ी प्रतिष्ठा करने लगे, इस कारण कि उन सबको विश्वास हो गया था कि मिष्टर जॉर्ज अपने साथ बहुत धन कमा कर लाए है। अब एमिली और लूसी के गले मिलने की बारी आई। उन दोनों ने भी गले मिलकर प्रसन्नता प्रगट की। यह स्पष्ट प्रतीत होता था

कि उन दोनों को निःसन्देह हर्ष हुआ है, परन्तु ऐसे आवश्यक समय पर मिस-मिडिल्टन कहां गई ?

वह यह दृश्य देखकर अपना चित्त सम्हाल न सकी । मारे हर्ष के फूली न समाकर एक कुर्सी पर बैठ गई और आनन्दाश्रु बहाने लगी । इतने में उसके कान में आवाज आई, " क्या और कोई मिलने को नहीं है ? मे कहां है ? "

मे० । चाचा जी ! मैं यहां हूं ।

यह कहती हुई वह दौड़ी और जाकर पांवों पर गिर पड़ी, फिर सिर उठाकर उनके हाथों को चूम लिया । मिष्टर जॉर्ज ने उसको प्यार किया और आशीर्वाद देने लगे ।

इसके उपरान्त मिष्टर जॉर्ज सबको लेकर एक जगह बैठ गए और अपनी सारी कहानी कह सुनाई जो ऊपर कही जा चुकी है, परन्तु यह नहीं कहा कि यह सब धन किसको देंगे और यह भी नहीं बतलाया कि अपने को मिष्टर डार्नले क्यों बना रक्खा था ।

थोड़ी देर पीछे उनके सेक्रेटरी मिष्टर जान्सन एटर्नी आए। अब मिष्टर जॉन और उनकी पुत्री को ज्ञात हुआ कि मिष्टर डार्नले और एटर्नी महोदय से क्यों पत्रव्यवहार होता था। मिष्टर जान्सन मिष्टर जॉर्ज के निकट जाकर कहने लगे, " हमने मिष्टर बेकर को उसके नए साहब का नाम अभी बतलाया, जिसके सुनने से उसको बड़ा आश्चर्य हुआ । "

मिष्टर जॉर्ज । हां, स्वयं मैंने दो नौकरों को कुछ कहते सुना था, परन्तु उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया ।

भोजन का समय हो चुका था । मिष्टर जॉर्ज सबको साथ लेकर टेबुल के कमरे की ओर चले । जब सीढ़ियों पर पहुंचे तो

सब नौकरों ने अपने नए स्वामी को सलाम किया, किन्तु वे दोनों जिन्होंने मिष्टर जॉर्ज को मिष्टर डार्नले जानकर बुरा भला कहा था सबसे झुक झुक कर सलाम करने लगे । उनकी यह चाल देखकर मिष्टर जॉर्ज को हँसी आ गई ।

तेरहवां प्रकरण ।

सब उस टेबुल के चारों ओर जिसपर बहुमूल्य पात्रों में भोजन चुने गए थे जा बैठे और भोजन करने लगे ।

अब कर्नल बिलासिस और ब्यूशम्प मिष्टर जॉन और उनकी पुत्री के साथ अच्छी तरह बातचीत करने लगे, इस कारण कि उन्होंने देखा कि मिस्टर जॉर्ज उन दोनों से बहुत प्रसन्न हैं ।

मिष्टर जॉर्ज ने भोजन समाप्त होने पर कहा, " आप लोग इस मकान को अपना ही घर समझें और चारो ओर सैर करके भी बहलावें । पहले तस्वीरों के कमरे में चलें, फिर बड़े कमरे में चलकर बैठेंगे । "

तस्वीरों के कमरे के देखने को सब लोग चले । वहां अत्यन्त सुन्दर और बड़े२ चित्र थे । मिष्टर जॉर्ज चित्रों को इस प्रकार देख रहे थे कि मानो इस समय उनको किसी और बात की सुधि ही नहीं है । एक ओर कर्नल बिलासिस और ब्यूशम्प खड़े होकर उस बड़े मकान पर किसी प्रकार अपना अधिकार कर लेने के विषय में सलाह करने लगे, दूसरी ओर मिष्टर जॉन अपनी पुत्री और जान्सन एटर्नी के साथ टहलने लगे और करोलिन तथा बर्था भी एक ओर का दृश्य देखने लगीं । तात्पर्य्य यह कि इसी प्रकार सब दो दो एक एक साथ होकर इधर

उधर टहल टहल कर देखने भालने लगे ।

तस्वीरों के कमरे के दोनों ओर दो कमरे थे । करोलिन और बर्था उन्हीं कमरों में से एक में गई । वहां जाकर देखा कि एक चित्र पर पर्दा पड़ा हुआ है । करोलिन को आश्चर्य्य हुआ कि यह चित्र छिपाकर क्यों रक्खा गया है । अपनी बहिन से पूछने लगी, "मैं यह चित्र देखना चाहती हूं । मुझे आश्चर्य्य है कि यह छिपाया क्यों गया !"

बर्था । (धीरे से) कहीं ऐसा काम न करना कि हमारे बहुत दिन के खोए हुए मामा रुष्ट हो जायँ । कौन जानता है कि वह किसको अपना सब धन दे देंगे ।

करोलिन । मैं बड़ी सावधानी से देखूंगी, परन्तु सोचती हूं कि कहीं यह किसान और उनकी गँवार बेटी ही हमारे बुढ़े मामा के धन की सर्वाधिकारिणी न हो ।

बर्था । नहीं ऐसी नहीं हो सकता । इस कारण कि मैंने भोजन के समय देखा कि वह सब को एक ही दृष्टि से देखते थे । खैर क्या वह चित्र अब न देखोगी ?

करोलिन ने चारो ओर देखकर पर्दा उठाया । एक साधारण चित्र दिखाई दिया । यह देखकर उन दोनों को और भी आश्चर्य्य हुआ कि इस चित्र पर पर्दा क्यों डाला गया है ? फिर अपने मन में सोचने लगीं कि कदाचित् गर्दे से बचाने के लिए पर्दा डाला गया होगा । अकस्मात् बर्था की दृष्टि द्वार पर पड़ी । देखा कि मिष्टर जार्ज सहसा आ पड़े । दोनों ने तुरन्त चित्र पर पर्दा डाल दिया और उनके समीप जाकर उनका मुंह देखने लगीं, किन्तु मिष्टर जॉर्ज के मुखड़े पर असन्तुष्टता का कोई लक्षण न देखकर बहुत प्रसन्न हुई । चित्र विषयक बातें

पाठकों को आगे चलकर मालूम होंगी, अभी बताने की कुछ आवश्यकता नहीं है।

प्रातःकाल मिष्टर जॉर्ज ने अपने एटर्नी मिष्टर जान्सन से सब हिसाब-किताब समझकर अपने भतीजे विल्फ्रिड का हाल पूछा, जिसके उत्तर में एटर्नी महाशय ने कहा, " लगभग एक मास पूर्व्व एक दिवस विल्फ्रिड मेरे पास आया और एक पुलिन्दा देकर बोला कि ' यह पुलिन्दा मिष्टर डार्नले ने आपको दिया है और मुझही से जवाब लाने को भी कहा है। ' मैं समझ गया कि आप ही ने उसको भेजा है। पत्र पढ़कर मैंने उससे कहा कि वह मिष्टर डार्नले नहीं हैं, वरन् तुम्हारे चाचा मिष्टर जॉर्ज-मिडिल्टन हैं जो बहुत दिन से गुम हो गए थे। यह सुनकर उसको आश्चर्य्य हुआ, किन्तु मैंने उसको कुछ और कहने का अवसर नहीं दिया, कहा कि तुमको तो उनका सब हाल मालूम है, क्योंकि उन्होंने जान बुझकर अपनी पाकेट-बुक टेबुल के नीचे छोड़ दी थी। उनको भी तुम्हारे गुप्तविवाह और धोखा देकर मिस मिडिल्टन के साथ विवाह करने की चेष्टा करने का हाल भी मालूम है। "

मिष्टर जॉर्ज। इन बातों को सुनकर उसने क्या कहा?

मि० जान्सन। वह बहुत घबरा गया और उसका चेहरा पीला पड़ गया। कुछ कहना चाहता चाहता था, परन्तु मुंह से बात नहीं निकलती थी। तब मैंने उससे कहा कि, " तुहारे चाचा यह भी जानते हैं कि तुमने अपनी सब सम्पत्ति नष्ट कर डाली, परन्तु वह आशा करते हैं कि अब तुम सीधी चाल चलोगे और अपने परिश्रम से सर्वप्रिय बनोगे, लेकिन अब तुम मिस-मिडिल्टन के पास जाने अथवा उससे पत्रव्यवहार करने न पाओगे और

यदि करोगे तो हानि उठाओगे क्योंकि वह तुम्हारी दुष्टता तो जान ही गए हैं? इसके सिवाय तुम कर्नल बिलासिस या और किसी से अपने चाचा के आने का हाल न कहना।"

मिष्टर जॉर्ज। (सब बातों को ध्यानपूर्व्वक सुनकर) फिर उसने क्या कहा?

मि० जान्सन। उसको इन आशातीत बातों से जो एक बार पुनः अपने खोटे भाग्य के परखने का अवसर मिला तो वह प्रसन्न हुआ और कहने लगा कि, "वह मेरे वास्ते जो चाहें करें, परन्तु अब मैं प्रतिज्ञा करता हूं उन निन्दनीय बातों से एकबार ही दूर रहकर जिस प्रकार भले लोग रहते हैं उसी प्रकार अपना निर्वाह करूंगा।" जान पड़ता था कि वह अपने किए पर आप पश्चात्ताप करता था और जैसा कहता है वैसाही करेगा।

मिष्टर जॉर्ज। ईश्वर करे ऐसाही हो, परन्तु मुझको उसके कहने पर बिश्वास नहीं है।

मि० जान्सन। तब मैंने आपकी आज्ञा के अनुसार एक सहस्र रुपये का नोट देकर कहा, "इन रुपयों से कोई व्यापार आरम्भ करो। यदि तुम्हारी चाल चलन अच्छी रही तो तुम्हारे चाचा फिर तुम्हारी सहायता करेंगे, किन्तु यदि इससे विपरीत रही तो उनसे कुछ आशा न रखना। अब इन रुपयों को ले जाओ और सावधानी से काम करो।"

मिष्टर जॉर्ज। तब उसने क्या कहा?

मि० जान्सन। आपको धन्यवाद देने लगा। फिर बोला कि "आज से आप मुझको वह पहला विलिफ़ूड न पावेंगे।" और यह कहकर बिदा हुआ।

मिष्टर जॉर्ज। तुमने यह नहीं पूछा कि कहां रहता है और क्या करता है !

मि० जान्सन। नहीं, मैं आपके कामों में इस प्रकार मुग्ध हुआ कि मुझको फिर अवकाश ही नहीं मिला। लन्दन जाने पर उसका हाल आपको अवश्य लिखूंगा।

जिस दिन मिष्टर जॉर्ज के साथ बातचीत हुई उसी दिन तीसरे पहर मिष्टर जार्ज के बारिष्टर मिष्टर जान्सन सब से बिदा होकर लन्दन चले गए।

मिष्टर जॉर्ज ने स्वयं कर्नल बिलालिस और मिष्टर ब्यूशम्प से एक महीना ठहरने के लिए कहा, जिसको उन दोनों और उनकी पुत्रियों ने सहर्ष स्वीकार किया। इसके अनन्तर मिष्टर जॉर्ज ने अपने छोटे भाई को कमरे में ले जाकर कहा, " भाई ! यद्यपि मैं जानता हूं कि आपकी इच्छा यही है कि सदैव मेरे साथ रहकर यह चार दिन जिन्दगी सुख से बितावें, परन्तु आपको भी तो अपना काम काज देखना आवश्यक है, इस वास्ते मैं चाहता हूं कि आज तीसरे पहर के समय आपको बिदा करूं। मेरी इच्छा तो यह थी कि 'मे' को अपने साथ रखता और उसकी भोली भोली बातों से अपना जी बहलाता, किन्तु मैं ऐसा बुद्धिहीन नहीं हूं कि अपने सुख के लिए उसको उसके प्यारे पिता से पृथक् करूं। इसके अतिरिक्त उसके न रहने से आपके काम में भी हर्ज होगा, फलतः उसको भी आपके संग ही बिदा करूंगा और जब हम दोनों थोड़ी ही दूर पर रहते हैं तो बराबर मिलते रहेंगे और मिस-मिडिल्टन प्रत्येक सोमवार को मेरे पास आया करेगी। एक मास के लिए मैंने कर्नल बिलासिस और मिष्टर ब्यूशम्प को मय उनकी पुत्रियों के अपने यहां रख लिया

है। उनके जाने के बाद मैं प्रायः आपके यहां आया करूंगा।"

मिष्टर जॉन। जितनी जल्दी मुलाकात हो उतना ही अच्छा है।

इस बातचीत के बाद मिष्टर जॉर्ज अपने भाई आदि को लेकर टहलने गए और भोजन के समय लौट आए। भोजन के पश्चात् मिस-मि० और मिष्टर जॉन मिष्टर जॉर्ज से बिदा होकर अपने घर की ओर चले और आठ बजे रात को आराम से वहां पहुंच गए।

मिस-मिडिल्टन घर का काम-काज करके जी बहलाने के लिए बगीचे में गई और आश्चर्य्य में डालनेवाली पिछली घटनाओं पर विचार करने लगी। उसको जान पड़ता था कि जितनी बातें देखीं थीं सब स्वप्न था। सहसा पीछे किसी के पांवो की आहट मालूम हुई। उसने फिर कर देखा कि विल्फ्रिड आ रहा है। विल्फ्रिड को देखते ही उसके चित्त पर एक प्रकार का सन्नाटा छा गया।

चौदहवां प्रकरण।

विल्फ्रिड मातमी कपड़े पहिने हुए था। उसको देखकर मिस-मिडिल्टन को बड़ा आश्चर्य्य हुआ कि कौन मर गया है। वह आश्चर्य्यदृष्टि से उसका मुंह देखने लगी। सहसा विल्फ्रिड दौड़कर उसके पांवों पर गिर पड़ा और कहने लगा—

"मिस—मिडिल्टन! मेरे अपराधों को क्षमा करो। मैं तुम्हारे मुंह से केवल "क्षमा" का शब्द सुनना चाहता हूं।"

मि-मि०। (अपने को सम्हालकर) हां, मैं तुम्हारे अपराधों को क्षमा कर सकती हूं, परन्तु यदि तुम्हारा यह मतलब

हो कि मुझसे फिर वही मेल जोल और प्रीति बढ़ाओ तो यह कदापि सम्भव नहीं है।

यह कहकर वह घर की ओर चली, किन्तु उसी समय एक करुणोत्पादक स्वर उसे सुन पड़ा। वह खड़ी हो गई। इतने में विल्फ्रिड पुनः उसके सम्मुख आया और गिड़गिड़ाकर कहने लगा, "मैं तुमको शपथ दिलाता हूं कि मेरी प्रार्थना स्वीकार कर लो और क्षण भर ठहर कर जो कुछ मैं कहूं सुन लो।"

मिस मि०। तुम्हें जो कुछ कहना हो पिता जी के सामने चलकर कहो।

विल्फ्रिड। (काँपकर) नहीं नहीं, मैं उनके सामने जाने का साहस कदापि नहीं कर सकता।

मि-मि०। जब तुम उनसे मिलने से लज्जित होते हौ तो उनकी पुत्री से क्यों बातचीत करना चाहते हौ ?

'मे' इतना कहकर पुनः घर की ओर चली। विल्फ्रिड निराश होकर चिल्ला उठा, "आह ! अब वह नहीं सुनेगी। अब तो लाचार आत्मघात करना पड़ा।" आत्मघात का शब्द सुनकर मे थर्रा उठी और इस भय से कि कदाचित् वह वैसाही करे जैसा कह रहा है सहम कर खड़ी हो गई।

विल्फ्रिड। (रोकर) तुम अपने सम्मुख एक ऐसे व्यक्ति को देखती हौ जिसने तुम्हारा ऐसा अपराध किया है कि उसके लिये मरना जीना दोनों बराबर है।

मिस-मि०। यदि सचमुच तुमको अपने अपराधों का पश्चात्ताप है तो उन बुरी चालों को छोड़ दो और भगवद्भजन में मन लगा कर उसी सर्वशक्तिमान् परमेश्वर से अपना अपराध क्षमा कराओ।

विल्फ्रिड । (आँसू पोंछकर) तुम्हारी बातों से मन सन्तुष्ट हुआ । आह ! मिस मिडिल्टन ! यदि तुम मेरी दुःखकथा सुनो तो तुम अवश्य मुझ पर दया करोगी । आह ! जिससे मैंने विवाह किया था और जिसके साथ विवाह करने के कारण मेरी यह दुर्दशा हुई वह मेरा साथ छोड़कर परलोक को चली गई ।

मिस-मि० । (धीमी आवाज से) भगवान् उसकी आत्मा को शान्ति दें ।

विल्फ्रिड । मैंने इन मातमी कपड़ों को केवल जातीय नियम की पुष्टता के लिए पहिना है, अन्यथा मुझको उसके मरने का किञ्चित भी शोक नहीं है ।

मिस-मि० । बस, अब मैं और कुछ नहीं सुनना चाहती ।

विल्फ्रिड । एक बात और ! मैंने अब तक यह नहीं कहा कि छिपकर तुम्हारे पास क्यों आया और अपने अपराधों को क्यों क्षमा कराना चाहा ।

मिस-मि० । विल्फ्रिड ! वे थोड़े दिन जो तुम्हारी कुसङ्गत में व्यतीत हुए स्वप्न के समाने थे । अब वह बात फिर न होगी । यदि तुम यह समझते हो कि तुम्हारी स्त्री की मृत्यु से वह बात जो पहले थी फिर हो जायगी, तो यह तुम्हारा भ्रम है ।

विल्फ्रिड । तुम मुझको निराश करती हो ? बस ईश्वर ही जानता है कि तुम्हारे वास्ते मेरा क्या हाल है ।

मिस-मि० । (क्रोध से) बस अब कोई बात मुंह से न निकलना । यहां से अभी चले जाओ ।

विल्फ्रिड । केवल एक मिनट ठहरकर मेरी बात सुन लो ।

मिस-मि० । (दयाभाव से) अच्छा कहो, कहते हो तो जल्दी कहो । मैं देरतक ठहर नहीं सकती ।

विल्फ्रिड। यदि अब मेरा चालव्यवहार सर्वप्रिय हो जाय और मैं दो एक वर्ष में अपने को साधुस्वभाव प्रमाणित कर दूं तो क्या तब भी तुम्हारे पाने की आशा नहीं कर सकता ?

मिस-मि०। हमने पहले ही कह दिया कि यह कदापि नहीं हो सकता और तुम इस बात को अपने चित्त से दूर करो। यदि तुम मेरे सम्बन्धी न होते तो मैं कदापि इतनी देर तक तुम्हारे पास न बैठती।

विल्फ्रिड। तो अब मुझे तुम्हारे मिलने की कोई आशा नहीं रही ? (निराश होकर) अब मुझे विश्वास हो गया कि तुम कभी मुझसे प्रीति नहीं करती थीं। तब तुमने समझा था कि मैं बड़ा धनी हूं और इसी कारण धोखे से कहा था कि मैं तुमको चाहती हूं।

यह बात सुनकर मिस-मिडिल्टन को बहुत दुःख हुआ, इस कारण कि पहले वह सचमुच विल्फ्रिड को चाहती थी, और उसकी आँखों में आँसू डबडबा आए। विल्फ्रिड ने फिर कहा, "जब हम और आप अकेले बगीचे की सैर करते थे, उस समय की प्रेम की मीठी मीठी बातें केवल वाकपटुता से सम्बन्ध रखती थीं।"

मिस-मि०। (क्रोध को रोककर) जरा मुंह सम्हालकर बातें करो। अपनी उन बातों की पुष्टि के लिये अब मुझको भी कुछ कहना पड़ा। उसको ईश्वर ही जानता है कि मुझको तुमसे प्रीति थी वा नहीं, परन्तु जब मैंने सुना कि तुम विवाह कर चुके हो और धोखा देकर मुझको अपने अधिकार में लाना चाहते हो तो मुझको बहुत दुःख हुआ और तुमसे घृणा हो गई।

विल्फ्रिड। (कुछ आशा करके) मिस-मिडिल्टन ! कुछ तो आशा दिलाओ कि मुझको वही विल्फ्रिड समझती हौ। कोई पापिष्टी जब उस जगत्पालक परमेश्वर के ध्यान में मुग्ध होकर क्षमाप्रार्थी होता है तो वह उसके अपराधों को क्षमा कर देता है और उसपर दया करता है। तुम्हें भी वैसा ही करना चाहिए जैसा कि तुम्हारा स्वामी बल्कि समग्र संसार का स्वामी करता है। (मे के पैरों पर गिर कर) तुमको उसी की कसम है जिसने समस्त जीवों के उत्पन्न किया है और मारेगा। तुम अपने मुंह से केवल इतना ही कह दो कि मुझे अब भी तुम्हारे पाने की थोड़ी बहुत आशा हो सकती है।

मिस-मि०। (खेद की दृष्टि से देखकर) क्या करूं, लाचार हूं। मेरे मुंह से तो आशा का शब्द नहीं निकल सकता।

विल्फ्रिड। (पांवों पर से उठकर) तो तुम मुझे निराश ही करती हौ ?

मिस-मि०। मैं ईश्वर से प्रार्थना करती हूं कि वह तुमको बुद्धि और सद्विचार दें।

विल्फ्रिड। एक बात और भी कहनी है। मिष्टर जॉर्ज जिन्होंने मेरी बड़ी सहायता की है और आगे सहायता देने की प्रतिज्ञा भी की है आज की बातें न जानने पावें।

मिस-मि०। तुम्हारी यह बात मैं तब ही स्वीकार कर सकती हूं जब तुम प्रतिज्ञा करो कि मेरे पास फिर कभी छिपकर न आओगे।

यह कहती हुई मे उठी और विल्फ्रिड की दृष्टि से दूर हो गई। दूसरे दिन प्रातःकाल जिस समय वह अपने पिता के साथ जलपान कर रही थी, एक नौकर ने आकर कहा, " एक

मजदूर की लड़की बहुत बीमार हो गई है।"

मिस-मि०। मैं उसके पास जाकर उसे अवश्य देखूंगी।

मिष्टर जॉन अपनी पुत्री के इस सद्विचार से बड़े प्रसन्न हुए और उसको आशीर्वाद देने लगे। जलपान के उपरान्त मिस-मिडिल्टन एक टोकरी में भोजन की चीजें साथ लेकर उस लड़की को देखने चली। वह झोपड़ा जिसमें वह मजदूर अपने बाल बच्चों के साथ रहता था 'मे' के घर से एक मील के अन्तर पर एक रमणीक स्थान में अवस्थित था। चारो ओर सरो के सुन्दर वृक्ष लगे हुए थे। चञ्चल चिड़ियां इतस्ततः फुदक रही थीं और ठण्डी ठण्डी हवा चल रही थी। मिस-मिडिल्टन भी अठखेलियां करती हुई उस सुरम्य स्थान के समीप पहुंची।

यह मजदूर वही है जो १९ वर्ष पूर्व्व अपनी गाय की घास रखने की जगह के पास एक छोटे बच्चे को पड़ा देखकर उठा लाया था, और जिस बच्चे को मिष्टर जॉन ने पाल पोस कर बड़ा किया था, तथा जिसका नाम उन्होंने रूबन वेलिस रक्खा था।

मे को देखते ही वह मजदूर समझ गया कि मेरा भाग्य उदय हुआ है। तुरंत झुककर सलाम किया और झोपड़े के भीतर ले जाकर कहा,—"दास तो अब आपके पिता के खेत में काम करने जाता है।"

मिस-मि०। तुम कुछ चिन्ता न करो। पिताजी डाक्तर को बुलाने गए हैं और मैं ये चीजें तुम्हारी बेटी के वास्ते लाई हूँ।"

यह कहकर मिस ने जो कुछ उस टोकरी में था निकाल कर सामने रख दिया। मजदूर आशीर्वाद देने लगा और प्रसन्नतापूर्व्वक उसके पिता के खेत का काम देखने चला गया। इधर मिस-मिडिल्टन लड़की का हाल उसकी मां से पूछने लगी।

लड़की की मां । कल हमारे "वह" कहते थे कि वह बूढ़े आदमी जो आपके यहां रहते थे और जिन्होंने एक दिन यहां आकर हमारी लड़की को एक रुपया दिया था आपके चाचा जॉर्ज-मिडिल्टन निकले ! वह अपने साथ बहुत धन लाए हैं और एप्सूली-कोर्ट को भी उन्होंने खरीद लिया है । प्यारी मिस ! क्या ये बातें सच हैं, या उन्होंने सपना देखा था ?

मिस-मि० । (हंसकर) हां, सत्य हैं ।

ल० की मां । (आश्चर्य्य से) यह तो कहानी मालूम होती है ! बिल्कुल वैसी ही कहानी जैसी जाड़े के दिनों में आग के पास बैठकर हमलोग कहा और सुना करते है । प्यारी मिस ! जबसे रूबन यहां से गया हमने एक दिन भी आपकी सूरत नहीं देखी । जिस रात को वह बेचारा गया है, बहुत ही उदास मालूम होता था ।

रूबन का नाम सुनतेही मिस-मिडिल्टन को सब बातें याद आ गईं और वह "आह" भर कर कहने लगी, " क्या वह जाती समय तुम्हारे पास भी आया था ? "

ल० की मां । जी हां, वह बेचारा हमसे बिदा होकर गया था । आपने तो सुना होगा कि हमारे पति रूबन को घास रखने की जगह से उठा लाए थे । न मालूम कौन निर्दयी बेचारे को वहां फेंक गया था । वह कभी कभी कहा भी करते हैं कि, " मुझको बड़ा आश्चर्य्य मालूम हुआ जब मैंने घास रखने की जगह में एक बच्चे के रोने की आवाज सुनी । जाकर देखता हूं तो एक बच्चा बहुमूल्य कपड़े पहिने पड़ा है । चेहरे और पहरावे से जान पड़ता था कि वह किसी बड़े घर का लड़का है । " प्यारी मिस ! नहीं मालूम कौन अभागा उसको वहां फेंक गया था ।

मिस० मि० । ईश्वर जानता होगा, और कौन जानेगा । हां, तुमने अभी कहा था न कि रूबन तुमसे बिदा होकर गया था ?

ल० की मां । हां, मैं नौ बजे रात को भोजन कर रही थी कि इतने में रूबन हाथ में एक गठरी लिए हुए आया । वह उस समय बहुत ही उदास मालूम पड़ता था । जब हमने बहुत जोर देकर पूछा तो कहने लगा कि, "अब मैं यहां से चला जाता हूं, लेकिन किसी से लड़-झगड़ कर नहीं जाता, सैर करने की इच्छा से जाता हूं ।" यह सुनकर हम सबने समझा कि वह पागल हो गया है, लेकिन वह बहुत रोने और सिर धुनने लगा............(मि को रोते देखकर) इन बातों से आप को दुःख होता तो मुझे क्षमा कीजिए । मैंने व्यर्थ यह बात छेड़ी ।

मिस-मि० । (अपना चित्त सम्हालकर) वह बेचारा और क्या कहता था ?

ल० की मां । कहता था कि ईश्वर आपके पिता को और आपको सुखी रक्खे....(द्वार की ओर-देखकर) लीजिए अब डाक्तर साहब आ गए, यह बात जाने दीजिए ।

मिस-मिडिल्टन ने रूमाल से मुंह पोंछा और चेहरे से शोकचिन्ह दूरकर डाक्तर साहब से मिली । डाक्तर ने रोगी को देखकर कहा, "घबराने की कोई बात नहीं है" और नुसूखा लिखकर चले गए । मिस-मिडिल्टन भी रूबन को याद करती और मन्द २ रोती हुई घर की ओर चली ।

पन्द्रहवां प्रकरण ।

अब वह महीना व्यतीत हो गया है जिसमें कर्नल बिलासिस और ब्यूशम्प मिष्टर जॉर्ज के मेहमान थे । आजकल प्रत्येक

रविवार को मिष्टर जॉन मय अपनी पुत्री के मिष्टर जॉर्ज से मिला करते हैं और कभी कभी मिष्टर जॉर्ज भी दो एक घण्टे के लिए अपने भाई के घर चले जाते हैं ।

मिष्टर जॉर्ज अपनी भाञ्जियों की जो लन्दन से आई थीं हर बात में जाँच करते थे । कभी बाजा बजाने को कहते, कभी कोई पुस्तक पढ़वाकर सुनते, कभी घराऊ काम काज की बातें करते और उनकी हरएक बात को ध्यान देकर सुनते थे ।

एक दिन की बात है कि मिष्टर जॉर्ज अपनी भाञ्जियों के साथ बड़े कमरे में बैठे थे और कर्नल बिलासिस तथा ब्यूशम्प बाग की सैर कर रहे थे । कर्नल बिलासिस ने कहा, "अब हमारे जाने को बहुत कम दिन रह गए हैं और हमारी समझ में मिष्टर जॉर्ज अब हमलोगों से ज्यादा दिन ठहरने के लिए न कहेंगे ।"

ब्यूशम्प । लेकिन मैं तो समझता हूं कि हमारे जाने से पहले ही वह अपना मतलब प्रगट कर देंगे, अर्थात् दानपत्र लिखने के विषय में वह अवश्य हमसे कुछ राय लेंगे, क्योंकि उनको हृदरोग है, जिससे मनुष्य सहसा मर जाता है । वह अपनी बीमारी का हाल कहते भी थे ।

कर्नल बि० । हां हां, बुड्ढा मुझसे भी कहता था, लेकिन यह तुमने कैसे जाना कि वह राय भी पूछेगा ?

ब्यूशम्प । आज प्रातःकाल एकान्त में उसने मुझसे मेरा हाल और इधर उधर की बातें पूछी थीं, और यह पूछना बेसबब नहीं था ।

कर्नल बि० । मुझसे भी पूछता था । अच्छा तुमने क्या जवाब दिया ?

ब्यूशम्प । मैंने पहले तो उसको धन्यवाद दिया, फिर इस

बात का विश्वास दिलाया कि उसकी बहिन जो मुझसे ब्याही गई थी व्यर्थ रुपया नष्ट करने में बड़ी तेज थी, और मैं उसी के कारण ऐसा धनहीन हो गया कि आज तक सम्हल न सका। मैंने यह भी प्रमाणित कर दिया कि मुझे दोनों लड़कियों की बड़ी चिन्ता है कि मेरे मरने के बाद उनका क्या हाल होगा (हँसकर) मैंने अपना दुःख प्रगट करने के लिए आँखें मलते मलते दो तीन बूंद आँसू भी निकाल दिए, और बड़ी बुद्धिमानी से बुद्धिहीन बुड्ढे को बेवकूफ बना दिया।

कर्नल बि०। (हंसकर) वाह वाह ! तुमने तो बड़ा काम किया। झूठ सच कहकर समझा तो मैंने भी दिया, और इन लड़कियों के विषय में भी विशेष दुःख प्रगट किया (मुस्कुराकर) किन्तु यार ! आँसू हमारे निकाले न निकल सके।

ब्यूशम्प। अब देखना है कि बुड्ढा अपना धन किस प्रकार बाँटता है। मुझसे तो कहता था कि जमीन्दारी को छोड़ प्रायः दो लाख उसके पास नकद भी है।

कर्नल बि०। फिर जबकि मैं उसकी बड़ी बहिन का पति हूं तो अपनी जमीन्दारी का मालिक मुझही को बनावेगा, और कम से कम पचीस हजार रुपया मेरी दोनों बेटियों को देगा।

ब्यूशम्प। खैर योंही सही। यदि मेरे हिस्से में एक लाख रुपये पड़े तो जॉन और उसकी बेटी के लिए पचहत्तर हजार बहुत हैं।

कर्नल बि०। बस इतना उन दोनों के लिए बहुत है। (सहसा चौंककर) लेकिन सुनो तो, यह पेड़ों के पास से खर-खराहट की आवाज कैसी आ रही है, तुम भी सुनते हो न ?

ब्यूशम्प। कुछ नहीं, यह हवा की आवाज है। इस ऋतु

में दिन रात ऐसी ही हवा चला करती है।

कर्नल बि०। खैर, लेकिन बुड्ढा बड़ा चतुर है।

ब्यूशम्प। वही बुड्ढा सूअर न ? (हँसकर) निःसन्देह, चतुर नहीं है तो उसने इतना धन कैसे पैदा कर लिया।

कर्नल बि०। अच्छा यदि वह चतुर है तो बुद्धिमान और कार्य्यपटु जानकर भी मुझही को अपनी जमीन्दारी का मालिक बनावेगा। मुझे विश्वास है कि तुमको भी बहुत रुपये देगा और अपने दिहाती जङ्गली भाई को बस इतनाही दे दिला कर टाल देगा कि उसके खाने भर को बहुत हो। तुम विश्वास मानो कि जो कुछ मैं कहता हूं वह वैसाही करेगा।

ब्यूशम्प। हां, वह गँवार क्या जाने कि रुपया क्या होता है (कुछ सोचकर) परन्तु हम विल्फ्रिड को भूल गए।

कर्नल बि०। नहीं हमें वह खूब याद है, भूलने क्यों लगे ? लेकिन वह कुछ पा नहीं सकता, क्योंकि यदि जॉर्ज उससे प्रसन्न होता तो उसको भी अवश्य बुलवाता। इसके अतिरिक्त मैंने उससे उसकी बड़ी निन्दा की है।

ब्यूशम्प। और मैंने भी उस बुड्ढे गधे से उसके दुष्ट भतीजे की खूब ही खोलकर शिकायत की है।

कर्नल बि०। अब हमें केवल एक बात की चिन्ता है।

ब्यूशम्प। वह क्या ?

कर्नल बि०। यदि बुड्ढा दानपत्र लिखने से पहले ही मर गया तो न्यायानुसार विल्फ्रिड उसकी सब सम्पत्ति का स्वामी हो जायगा।

ब्यूशम्प। (दुःखित होकर) हां, खूब बताया। अब हम-लोगों को चाहिए बुड्ढे को समझा बुझाकर जल्दी दानपत्र लिखा

लें, और हमको तो उसके समझाने का अधिकार भी है, क्योंकि हम उसके शुभेच्छु समझे जाते हैं। हम उससे कहेंगे कि मरने से पहले अपना धन किसी योग्य पुरुष को सुपुर्द कर दे।

कर्नल बि०। (हँसकर) हमारे या तुम्हारे सिवाय तीसरा "योग्य पुरुष" है कौन? अच्छा अब बहुत देर हो गई। चलो चलें। वे सब बड़े कमरे में हमारी बाट जोह रहे होंगे।

इतनी बातें करके दोनों मन के लड्डू फोड़ते हुए उस बड़े कमरे की ओर चले जहां एमिली, लूसी, करोलिन और बर्था आदि पहले से बैठी थीं।
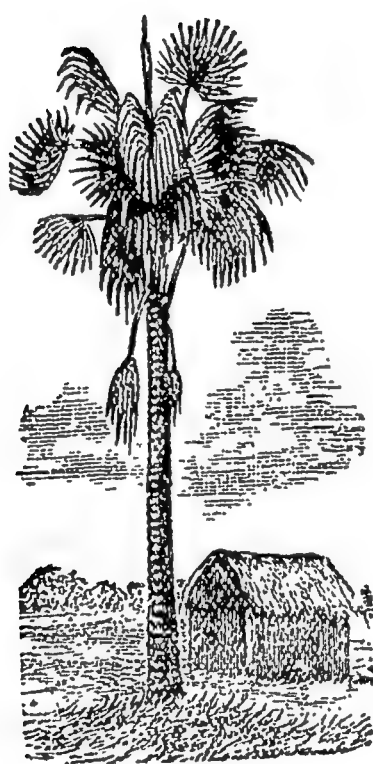
किसान की बेटी।

दूसरा भाग

रेनल्ड्स कृत "मे मिडिल्टन" उपन्यास का

भाषानुवाद।

काशीनिवासी

बाबू गङ्गाप्रसाद गुप्त कृत

भारतजीवन-सम्पादक बाबू रामकृष्णवर्म्मा

द्वारा प्रकाशित और विक्रीत।

काशी।

हितचिन्तक प्रेस में मुद्रित।

सं० १९६१

निवेदन !

जो महाशय यह कहते हैं कि मिष्टर रेनल्ड्ज् के नावलों से कुछ शिक्षा नहीं मिलती उनसे विनयपूर्व्वक निवेदन है कि वे अपना कुछ समय नष्ट करके यह पुस्तक ध्यान देकर पढ़ जायँ और कहैं कि इससे कुछ शिक्षा मिलती है वा नहीं ? हम यह नहीं कहते कि रेनल्ड् साहब के सबही उपन्यासों से अच्छी शिक्षा मिलती है, परंतु इतना अवश्य कहेंगे कि उनके बनाए उपन्यास अच्छे भी हैं और बुरे भी । जो शिक्षाप्रद हैं उनका अनुवाद हिन्दी में ज़रूर होना चाहिए । और जो लोग मिस करोली तथा सर वैल्टर स्कॉट के उपन्यासों के अनुवाद करने की राय देते हैं उनसे केवल यही कहना है कि मिस करोली और स्कॉट साहब के दो तीन नावल ऐसे हैं जिन्हें नवयुवकों को छूना भी न चाहिए ।

काशी
१—१०—०३. }

गङ्गाप्रसाद गुप्त ।

किसान की बेटी।

दूसरा भाग

पहला प्रकरण।

प्रथम भाग के अन्त में हम लिख चुके हैं कि कर्नेल बिलासिस और मिष्टर ब्यूशम्प उस कमरे की ओर चले जहां पहले से मिस एमिली, लूसी, करोलिन और बर्था बैठी थीं। दोनों वहां पहुंच गए, परन्तु मिष्टर जॉर्ज को न पाया। थोड़ी देर के बाद मिष्टर जॉर्ज आकर कहने लगे, "मुझे क्षमा कीजिएगा, मैं एक आवश्यक काम कर रहा था, इस कारण यहां न आ सका।"

दूसरे दिन मिष्टर जॉर्ज ने कर्नेल बिलासिस और ब्यूशम्प को अपने कमरे में ले जाकर कहा, "मुझको आप दोनों महानुभावों से एक आवश्यक बात में सलाह लेनी थी, इसी कारण आपको कष्ट दिया है।"

दोनों ने एक दूसरे को कनखियों से देखा और आँखों के संकेत से कहा, "देखा" और मन में प्रसन्न हुए कि अब बुड्ढा फँसना चाहता है। मिष्टर जॉर्ज एक कुर्सी पर बैठे और उन दोनों को अपने समीप बैठाया तो इस प्रकार बातचीत आरम्भ हुई—

मि॰ जॉर्ज। मैं आप दोनों की योग्यता, कार्य्यपटुता, सरलता और सहनशीलता की जाँच अच्छी तरह कर चुका।

कर्नल बि०। यह आप प्रशंसा करते हैं, नहीं तो मैं किस योग्य हूं; हां आपने जो कृपा की है उसके बदले में आपके लिए प्राण तक न्योछावर कर देने में कदाच ही किसी को आपत्ति होगी।

ब्यूशम्प०। मेरा मत भी यहीं है जो कर्नल बिलासिस का, अर्थात् आपके लिए अपने प्राणों को भी दे देना हमलोग अपना सौभाग्य समझते हैं।

जॉर्ज मि०। आप लोग भली प्रकार जानते हैं कि मुझको एक ऐसी बीमारी है जिससे छुटकारा पाने की बहुत कम आशा है, नहीं मालूम कब मृत्यु आ जाय और मैं सदैव के हेतु सो जाऊं।

ब्यूशम्प०। (रोनी सूरत बनाकर) आह! ऐसी बात न कहिए। ईश्वर करे आप १२० वर्ष जीएं।

कर्नल बि०। (मन में) जितनी जल्दी मर जाओ उतना ही अच्छा है।

मि० जॉर्ज। "हरेरिच्छा बलीयसी।" इसमें किसी का क्या बस? जो कर्म में लिखा है वह अवश्य होगा। मिष्टर जॉन्सन शीघ्र ही लन्दन से आनेवाले हैं, मैं चाहता हूं कि अपनी सब सम्पत्ति इस प्रबन्ध से छोड़ जाऊं कि मेरी मृत्यु के पश्चात् एक "योग्य पुरुष" उसका अधिकारी रहे। हां, मुझको आप दोनों महाशयों से यह भी पूछना है कि विल्फ्रिड के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए?

कर्नल बि०। जब आप हमारे सम्बन्धी और रक्षक हैं तो मुझको अपनी राय ठीक २ प्रगट करनी चाहिए। विल्फ्रिड ऐसा कुचरित्र और चञ्चल है कि उसको एक पाई भी देना अनुचित है।

मि० जॉर्ज। परन्तु मिष्टर जान्सन के पत्रों से विदित

होता है कि अब वह अपने पिता की तरह व्यापार करता है है और रात दिन उसी की चिन्तना में लगा रहता है । इसके अतिरिक्त उसकी स्त्री रोसालिण्ड जिसके साथ उसने गुप्तविवाह किया था पांच सप्ताह पूर्व्व मर गई । कोई आश्चर्य्य नहीं कि इसी दुःख से उसका चरित्र सुधर गया हो ।

कर्नल बि० । हां ऐसी अवस्था में कुछ हर्ज नहीं । मुझको यह सुनकर बहुत हर्ष हुआ कि वह सुधर गया । मेरी समझ में उसके लिए दस पाँच हजार रुपये बहुत हैं ।

ब्यूशम्प । बस दस हज़ार से अधिक नहीं ।

मि० जॉर्ज । जब आप लोग मेरे हित के लिए ये बातें कहते हैं तो आप दोनों की सलाह माननी अत्यावश्यक है । खैर, विल्फिड की बात तो तै हो गई, अब मिष्टर जॉन के विषय में आप लोग क्या कहते हैं ?

कर्नल बि० । फार्मर मिडिल्टन बहुत अच्छे और सच्चरित्र पुरुष हैं ।

ब्यूशम्प । निःसन्देह वह एक निष्कपट, भोले भाले और सुयोग्य पुरुष हैं, किन्तु उनको अपनी वर्त्तमान अवस्था में ही रहने दीजिए और सांसारिक झंझट तथा बखेड़े में न डालिए । उनके लिए गांव में रहना और सरलता से कालयापन करना ही उचित है ।

कर्नल बि० । हां, मेरा मत भी यही है कि मिष्टर जॉन जो सांसारिक सुख और चहल पहल से पूर्णतया अनभिज्ञ हैं उनके लिए तो एक सहस्र रुपये और उनकी बेटी के लिए दस सहस्र बहुत हैं, क्योंकि वे तो रुपये को उचित रीति से खर्च करना जानते ही नहीं ।

ब्यूशम्प । हां बस, इससे अधिक क्या हो सकता है ? वे लोग जिस अवस्था में हैं उसमें उनके लिए इतना भी बहुत है ।

मि० जॉर्ज । मुझको आपकी बातों से पूर्ण विश्वास हो गया कि सचमुच आप लोग मेरे शुभेच्छु (?) हैं और शुभेच्छुओं की ऐसी ही राय हुआ करती है । मेरे मरने के उपरान्त मालूम होगा कि जो जिस योग्य था उसको उतना दिया गया ।

दोनों बुद्धिहीन मारे हर्ष के फूल गए और मिष्टर जॉर्ज की खुशामद तथा प्रशंसा करने लगे और जब मिष्टर जॉर्ज उठकर कमरे के बाहर चले गए तो दोनों प्रसन्न हो २ कर तालियां बजाने और उछलने कूदने लगे ।

———xxxxx———

दूसरा प्रकरण ।

कर्नल बिलासिस और ब्यूशम्प मय अपनी पुत्रियों के बिदा हुए । उन सब के चले जाने के पश्चात् मिष्टर जॉर्ज एक सप्ताह के लिए अपने भाई के घर गए । वह अपनी भतीजी के साथ बगीचे की सैर करते और उसकी प्यारी प्यारी बातों से जी बहलाते थे । निदान यह सप्ताह भी आनन्द में व्यतीत हुआ और मिष्टर जॉर्ज अपने घर को लौट आए, क्योंकि मिष्टर जॉन्सन किसी आवश्यक काम के लिए आनेवाले थे ।

एटर्नी महोदय जब एप्सूली-कोर्ट में पहुँचे तो मिष्टर जॉर्ज ने उनसे एकान्त में जाकर मुलाकात की । अभिवन्दनानन्तर उन्होंने विल्फ्रिड का हाल पूछा कि, " अब वह कहां है और क्या करता है ? "

एटर्नी । मैं हर्षपूर्व्वक आपके प्रश्न का उत्तर देता हूं कि उसकी चालचलन पहले की अपेक्षा बहुत बदल गई है । मेरे

जाँच करने पर ज्ञात हुआ कि वह प्रातःकाल से सूर्य्यास्त पर्य्यन्त अपने आवश्यकीय कामों में लगा रहता है और व्यापार में बड़ी उन्नति कर रहा है।

मि० जॉर्ज। निःसन्देह यह विशेष हर्ष की बात है किन्तु क्या तुमने ठीक पता लगा लिया है कि उसकी थिएटरवाली स्त्री मर गई?

एटर्नी। यह समाचार सुनते ही मैंने स्वयं उसके महल्ले में जाकर पूछताछ की तो मालूम हुआ कि यह बात बहुत ठीक है। मुझे तब भी विश्वास न हुआ तो मैंने उस डाक्टर से जो उसका चिकित्सक था जाकर पूछा; जब उसने सब हाल कहा तब मुझे विश्वास हुआ।

मि० मि० जॉर्ज। वह कब मरी?

एटर्नी। जब मैं प्रथमवार यहां आया था मेरे आने के कई दिन पहले मेरे चुकी थी और मैं आपके आज्ञानुसार लन्दन में पहुंचते ही विलिफ्र्ड के विषय की बातें मालूम करने में लवलीन हुआ।

मि० जाज। अस्तु, अब एक और काम की ओर ध्यान देना चाहिए जो बहुत ही आवश्यक है। तुम तो पूर्णतया जानते होगे कि मैं हृद-रोग से पीड़ित हूं और नहीं मालूम किस समय मेरी आत्मा शरीर से पयान जाय, अतएव उचित है कि अपनी मृत्यु से पूर्व्व मैं अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति का कोई उचित प्रबन्ध कर दूं। तुम्हें तो स्मरण होगा कि जब मैं लन्दन में गया था उस समय सबसे पहले तुमसे मुलाकात करके अपने सम्बन्धियों का हाल पूछा था। अब तुमसे कहे देता हूं कि मैंने इतने दिनों तक अपने को अपरिचित क्यों बना रक्खा था। मैंने अपने मन में यह बात ठानी कि पहले जाँच करके देखूं कि मेरे

सम्बन्धियों में से कौन अयोग्य है और कौन सुयोग्य। अपने को अपरिचित प्रगट करने से मैं इस काम में कृतकार्य्य हुआ और मालूम कर लिया कि कौन किस योग्य है। अब आप कलम हाथ में लीजिए और जो कुछ मैं बताता जाऊं लिखते चलिए, अर्थात् मैं अपना दानपत्र लिखाए देता हूँ।

मिष्टर जॉर्ज के आज्ञानुसार मिष्टर जान्सन ने लिखना आरम्भ किया और मिष्टर जॉर्ज धीरे २ इस प्रकार लिखाने लगे,—

"हमारी इच्छा है कि कर्नल बिलासिस और ब्यूशम्प हमारी सम्पत्ति से कुछ भी लाभ न उठावें क्योंकि ये दोनों बड़े भारी अपव्ययी, अहङ्कारी और स्वार्थी पुरुष हैं। यद्यपि ब्यूशम्प की दोनों बेटियां कर्नल बिलासिस की पुत्रियों से अच्छी हैं, किन्तु इससे उनके पिता की कोई बड़ाई नहीं। हम कर्नल बिलासिस और ब्यूशम्प का ठीक २ वृतान्त वर्णन किए देते हैं क्योंकि इन दोनों की चालचलन की हमने पूरी जाँच कर ली है। जब दोनों एप्सूली कोर्ट में हमारे मेहमान होकर रहते थे तो रात्रि समय मदिरा की चार पाँच (!) बोतलें उड़ाते थे और समझते थे कि हम यह हाल जानते ही नहीं। शराब के नशे में ये दोनों हमारे ही विषय की बहुत ही बुरी २ बातें कहते थे और गालियाँ बकते थे।। एक दिन हमारे बगीचे में हमारा नाम ले २ कर इन्होंने बातें करना आरम्भ किया और जिह्वा से अनेक निन्दनीय शब्द निकाले तथा अपनी समझ में हमारी सब सम्पत्ति और एप्सूली-कोर्ट दोनों ने परस्पर बांट लिया। स्वयं हमने एक पेड़ की आड़ में छिपकर दोनों की सारी बातें सुन लीं। जब हमने अपनी सम्पत्ति के बांटने के विषय में इन-

दोनों से सलाह पूछी तो ये दोनों मूर्ख हमें बुद्धिहीन समझकर आत्मप्रशंसा करने लगे, और समझा कि बुड्ढे को उल्लू बना दिया। इन्हीं कई कारणों से ये दोनों हमारी सम्पत्ति में से एक पैसे के भी अधिकारी नहीं हो सकते, ताकि ऐसे मनुष्यों को शिक्षा मिले, और उनका गर्ब चूर्ण हो।"

मिष्टर जॉर्ज इतना कहकर चुप हो गए और थोड़ी देर ठहर कर फिर लिखने लगे—

"करोलिन और बर्था पर कुछ दया अवश्य करनी चाहिए, क्योंकि बाल्यावस्थासेही व्यभिचारी पिता के संग रहने के कारण उन दोनों पर बुरा प्रभाव पड़ा है किन्तु यह हम जरूर कहेंगे कि उनका इतना अपराध अवश्य है कि बड़ी होकर उन्होंने अच्छे और बुरे की पहचान न की। जब पहले पहल वे मिस मिडिल्टन से मिलीं तो उसको एक साधारण किसान की बेटी समझकर उससे बात तक करने में अपनी अप्रतिष्ठा समझती थीं, परन्तु जब देखा कि हम उससे प्रसन्न हैं तो आप भी प्रीतिपूर्व्वक मिलने लगीं।

"हमने एक चित्र पर जान बूझकर पर्दा डाल रक्खा था कि देखें कौन इस पर्दे को उठाता है और कौन इस ओर ध्यान नहीं देता। वे करोलिन और बर्था ही थी जिन्होंने उस पर्दे को उलटकर अपने चञ्चल स्वभाव का परिचय दिया। यद्यपि यह बात प्रसिद्ध है कि जिस चित्र पर पर्दा पड़ा हो उसे औरतों को न देखना चाहिए, किन्तु मन की अस्थिरता के वशीभूत हो, उन्होंने अपनी जान में हमसे छिपकर उस चित्र को देख लिया। हमने उन दोनों को सीने पिरोने में भी आजमाया, परन्तु किसी में भी पूरी योग्यता न पाई। हम ऊपर लिखा चुके हैं कि

उन दोनों पर कुछ न कुछ दया अवश्य करना चाहिए, अतएव अपनी सम्पत्ति में से हरएक को पाँच २ सहस्र मुद्रा देते हैं, किन्तु इन रुपयों पर उनके पिता का कुछ स्वत्व न रहेगा। ये रुपये विवाह हो जाने के बाद उनको मिलेंगे।" (फिर मिष्टर जॉर्ज ठहरकर कुछ सोचने लगे, पश्चात् बोले,—

"एमिली और लूसी पर करोलिन और बर्था की अपेक्षा अधिक दया आती है, क्योंकि इन दोनों के स्वभाव में नम्रता, दयालुता, शील और प्रीति पाई जाती है। इनको भी हमने जाँचा और दोनों को करोलिन और बर्था से हर बात में बढ़कर पाया, अतएव इन दोनों को दश २ सहस्र रुपये देते हैं, परन्तु ये रुपये भी ब्यूशम्प के हाथ में न जाने पावेंगे।"

(पुनः मिष्टर जॉर्ज चुप हुए और सोच समझकर कहने लगे)

"क्लिफर्ड की चालचलन एवं योग्यता अयोग्यता के विषय की बात हम पहले कहे देते हैं, पश्चात् जो उचित होगा कहेंगे। पहले पहल जब वह मिष्टर जॉन के मकान पर हमें मिला, तो उसने हमको बहुतही घृणा की दृष्टि से देखा; हमसे बोलना बुरा समझता था और हमसे अलग २ रहता था; परन्तु एक दिन हमारी पॉकेट-बुक देख लेने से उसको विदित होगया कि हमही उसके खोए हुए चचा हैं और बहुतसा धन लेकर आए हैं। इतना जानते ही वह हमारी प्रतिष्ठा और चापलूसी करने लगा। उसने एक गुप्त-विवाह भी किया था, और उस विवाह को छिपाकर और अप्रगट रखकर चाहता था कि मे-मिडिल्टन के साथ विवाह करके धनवान् बने; परन्तु उसकी चतुरता का जाल खुल गया, और बड़ी अप्रतिष्ठा से वह निकाल दिया गया। उसकी कुटिलता, चपलता, दुष्टता, योग्यता और अयोग्यता आदि सब का हाल हम

लिखा चुके, परन्तु उसके स्वर्गवासी सुयोग्य पिता का नाम स्मरण कर और उसकी दशा पर दया करके पांच सहस्त्र रुपए हम विलिफ्रेड के नाम पर लिख देते हैं।"

इतना कहकर मिष्टर जॉर्ज चुप हो गए, और सोचने लगे कि छोटे भाई अर्थात् मिष्टर जॉन को क्या देना चाहिए। देर तक मन में कुछ बिचारते रहने के अनन्तर उन्होंने एटर्नी महाशय से कहा,—

"अपने भाई मिष्टर जॉन मिडिल्टन की योग्यता के विषय में हमें कुछ अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है। उनकी निष्छलता और सुयोग्यता का डङ्का चारो ओर बज रहा है; और उन्होंने अपने सरल स्वभाव के कारण इस प्रान्त के सब मनुष्यों को बेमोल का दास बना रक्खा है। संसार भर में ढूँढ़ने पर भी कदाचित् ऐसा गुणवान् पुरुष कहीं न मिलेगा। ईश्वर उनको उनकी योग्यता का उचित बदला दे; और उन्हें सदैव सुख और शान्ति में रक्खे।

"अपनी भतीजी मे—मिडिल्टन के बारे में लिखते हैं कि हमने आदि से अन्त तक प्रत्येक विषय में उसकी परीक्षा की, और सब में उसको अन्य लड़कियों की अपेक्षा अच्छी पाया। अब हम उसकी कार्य्यवाहियो की कतिपय बातें वर्णन करते हैं। जब पहले पहल हम बीमार होकर यहां आए तो हमने जान बूझकर अपने स्वभाव को बहुतही चिड़चिड़ा और कटु बना लिया। उस समय हमको बात २ पर क्रोध आ जाता था, और छोटी २ बातों में भी हम रुष्ट हो जाते थे; परन्तु सरल—स्वभाव-सम्पन्ना मिस-मिडिल्टन ने सम्यक् प्रकार हमारी सेवा की; और हमारे चिड़चिड़े स्वभाव पर कुछ भी ध्यान न दिया। हमने उसकी जाँच के लिए बहुमूल्य रत्न और आभूषणादि दिखाकर उसको लाल-

च दिखाया; परन्तु उस गुणवती ने उनको ग्रहण नहीं किया। हमने प्रायः उसको बहुत सी बातों में समझाया, सलाह दी, और उसने एक आज्ञाकारिणी बालिका के समान हमारी सब बातें स्वीकार कीं और उनपर अमल किया। क्या ऐसी भली भतीजी को हम सहस्त्रों भतीजों से बढ़कर कहें तो अत्युक्ति होगी? नहीं कदापि नहीं। जगदीश्वर! तू समस्त संसार की बालिकाओं को मे-मिडिल्टन के समान गुणवती बना; परन्तु हमको भय है कि हमारा आशीर्वाद वृथा होगा, क्योंकि आजकल के लड़के लड़कियों का कुछ ढङ्ग ही निराला है। अस्तु। हम असीम हर्ष एवं प्रसन्नता के साथ मिष्टर जॉन को पचास सहस्र रुपये देते हैं, और मेमिडिल्टन के नाम अपनी सब जमीन्दरी मय एप्सूलीकोर्ट के महल आदि के लिखे देते हैं; और इसके अतिरिक्त नकृद रुपयों में से हम मे-मिडिल्टन को एक लक्ष मुद्रा देते हैं; परन्तु जब तक वह बालिग न हो तब तक यह रुपया उसको न मिलेगा। हमारी अभिलाषा है कि हमारे मरने के बाद मे मिडिल्टन आकर एप्सूली-कोर्ट के महल में रहे; और सदैव के निमित्त इस महल को निज निवासस्थान बनावे। और हम बहुत समझ बूझकर कहते हैं कि जब तक वह बालिग न होले, तब तक उसका विवाह न किया जाय। इन कामों का प्रबन्ध मिष्टर जॉन के हाथ में रहेगा, और वही समस्त सम्पत्ति और सब रुपयों को बाँटेंगे।"

यहां तक लिखवाकर मिष्टर जॉर्ज ने अपना दानपत्र समाप्त किया, और अपने एटर्नी से आग्रहपूर्वक कहा कि जहां तक शीघ्र हो सके, यह काम कर डाला जाय।

मिष्टर जॉर्ज की आज्ञा के अनुसार मिष्टर जान्सन ने दान-पत्र को साफ किया, और मिष्टर जॉर्ज से अन्त में हस्ताक्षर

कराया, और गवाहों से भी जिनको यह बात भली भाँति समझा दी गई थी कि इस दानपत्र के विषय मे किसी के आगे कुछ न कहें, हस्ताक्षर कराए गए।

तीसरा प्रकरण।

मिष्टर जान्सन एटर्नी लन्दन रवाना हुए, और दूसरे दिन मिष्टर जॉर्ज अपने भाई के घर गए।

थोड़ी देर ठहरकर मिष्टर जॉर्ज अपने छोटे भाई को एक ऐसे कमरे में ले गए जो बिल्कुल सुनसान था, और उसके आस पास कोई मनुष्य नहीं था। वहां जाकर मिष्टर जॉर्ज ने कहा,—

" भाई साहब! हमने वह काम कर दिया जिसका करना बहुतही आवश्यक और हमारा धर्म्म था, अर्थात् हमने अपना दानपत्र लिख दिया, और उसका मैनेजर तुम्हीं को बनाया है। आध घण्टे के लिए हम बगीचे में जाते हैं; इतनी देर में तुम उसको अच्छी तरह देख लो; परन्तु ईश्वर के वास्ते देखो, हम इतना कहे देते हैं कि हमसे इस विषय मे कुछ तर्क वितर्क न करना। हमारी जो कुछ इच्छा थी, हमने उसके अनुसार लिख दिया है। यदि तुम उसके अनुसार कार्य्य करोगे तो हमारी आत्मा को शान्ति मिलेगी। "

मिष्टर जॉर्ज ने इतना कहा और उठकर बगीचे में चले गए, और मिष्टर जॉन दानपत्र पढ़ने लगे। आध घंटे के उपरान्त मिष्टर जॉन उनको बगीचे से लौटते देखकर देखतेही उनके गले से लिपट गए और प्रेमाश्रु विसर्जन करने लगे। देर के बाद जब जरा जी ठहरा तो बोले, " भाई साहब! हमको इस बात का ध्यान भी न था,

और हमारी समझ में यह बात सम्भव भी नहीं थी, परन्तु वास्तव में ...."

मि० जॉर्ज। (बात काटकर) देखो हमने पहले कह दिया था कि हमसे कुछ तर्क वितर्क न करना, और न किसी प्रकार की आपत्ति करना।

मि० जॉन। अस्तु, यदि आपकी ऐसीही इच्छा है तो सब काम आदि से अन्त तक आपही के आदेशानुसार होंगे।

मि० जॉर्ज। परन्तु अभी इन बातों को मिस "मे" से मत कहना। उचित समय पर हम स्वयं उससे सब वृत्तान्त कह देंगे। अभी दो एक दिन मैं यहां रहूंगा; किन्तु सावधान! तुम अपना ढङ्ग न बदलना, और किसी के आगे भूल कर भी यह बात न कहना कि तुम हमारे दानपत्र को पढ़ चुके हो, अथवा यही कि हमने कोई दानपत्र लिखा है।

मि० जॉन। बहुत अच्छा, परन्तु इस दानपत्र के देखने से मुझको एक नई बात मालूम हुई, जिसको मैं नहीं जानता था, और जिसको मैंने स्वप्न में भी नहीं सोचा था।

मि० जॉर्ज। हां २, मैं समझ गया। तुमको यह मालूम हुआ है कि विल्फ्रिड जो पहले विवाह कर चुका था और उसकी एक स्त्री वर्त्तमान थी, वह धोखा देकर और जाल फैलाकर तुम्हारी सरलहृदया प्रिय पुत्री को अपने प्रेमजाल में उलझाना चाहता था, और इस विचार में था कि उसके साथ विवाह करे। वह केवल हमारे कारण हतमनोरथ रहा, और हमहीं ने उसको यहां से निकाला। हमारी ही सम्मत्यनुसार " मे " इतने दिनों तक सब काम करती रही। कृपया उस बेचारी लड़की को कुछ न कहना; क्योंकि उसका कुछ भी अपराध नहीं है।

इस बातचीत को हुए एक मास व्यतीत हो गया, और शरदऋतु आ गई। बड़े दिन के त्योहार में मे-मिडिल्टन मिष्टर जॉर्ज के साथ एप्स्ली-कोर्ट को गई। मिष्टर जॉर्ज का यह नियम था कि वह सदैव बड़े २ रईसों और भले-आदमियों की दावत किया करते थ, और अपने भाई तथा भतीजी को बुलाकर उन प्रतिष्ठित पुरुषों से मिलाया करते थे। वह इस प्रकार की दावतों का सब प्रबन्ध मिस-मिडिल्टनही को दिया करते थे। पहले तो वह इन बातों से कुछ घबराती थी, परन्तु मिष्टर जॉर्ज के समझाने बुझाने और प्रत्येक काम मे उत्साह दिलाने तथा सहायता देने से, वह थोड़े दिनों में सब कामों को बड़ी उत्तमता से करने लगी।

अब इस काल में मिस-मिडिल्टन को उन भविष्यद्वक्त्री स्त्रियों की भविष्यद्वाणी भी यदा कदा याद आ जाती थी, और वह सोचती थी कि मिष्टर जॉर्ज का उस पर इतना स्नेह दिखाना और उसको अपनी सम्पत्ति की स्वत्वाधिकारिणी बना देना अस्वाभाविक नहीं है, वरन् उनके उत्तम स्वभाव एवं गुणग्राहकता का परिचायक है। यद्यपि उसको उन स्त्रियों की बात का विश्वास नहीं था; परन्तु अब उन बातों की कुछ २ सत्यता पाई जाने के कारण उसको उनके सत्यवक्त्री होने का भी निश्चय होने लगा।

ठण्ड के दिन बीत गए और वसन्तऋतु का अधिकार हुआ। वृक्षों की नवीन पत्तियों पर पक्षी सुरीली तानें उड़ाने लगे। पेड़ों ने अपना २ पुराना पहिनावा फेंककर नवीन वस्त्र धारण किया। हृदय मे उमङ्ग और शरीर मे उत्तेजना की उत्पत्ति हुई और संसार भर के यावत् जीवों के मुख-कमल उत्फुल्ल हो उठे। मिष्टर जॉर्ज

को दानपत्र लिखे भी छः महीने हो गए, परन्तु इस बीच मे कर्नल बिलासिस और न्यूशम्प एप्सूली—कोर्ट मे न बुलाए गए। हां, कभी २ मिष्टर जॉर्ज उनके पास कुछ भेंट भेज दिया करते थे, जिनके उत्तर मे वे दोनों चापलूसी भरी बड़ी २ चीठियां भेजा करते थे।

मिष्टर जॉर्ज ने अब मिस—मिडिल्टन को मना किया कि गृहस्थी की सामग्री खरीदने के लिए वह स्वयं किङ्गस् गेट न जाया करे; और उससे कहा कि उसको जिस वस्तु की आवश्यकता हुआ करे, आदमी भेजकर मँगवा लिया करे; क्योंकि अब उसके घर में बहुत से नौकर चाकर तय्यार रहते थे। इसके अतिरिक्त मिष्टर जॉर्ज ने अपने भाई से अनुमति लेकर मिस-मिडिल्टन के लिए बहुत अच्छे कपड़े तय्यार कराए, और अच्छे से अच्छे जोड़े बनवाए। इन सब बातों से उसकी दशा बहुत बदल गई, अर्थात् अब वह एक किसान की बेटी से एक प्रतिष्ठित लेडी बन गई; परन्तु इतना परिवर्त्तन होने पर भी उसका स्वभाव पूर्व्ववत् नम्र और दयालु था।

एक दिन मिष्टर जॉर्ज ने अपने भाई और उनकी बेटी "मे" की दावत की। भोजन के अनन्तर मिष्टर जॉन दूसरे कमरे मे गए; केवल मिस मिडिल्टन और और मिष्टर जॉर्ज अकेले रह गए; उस समय दोनों में इस प्रकार बातें होने लगीं,—

मि० जॉर्ज। बेटी! आज का दिन तुम्हें याद है?

मिस मि०। जी हां, मैं भी इस समय यही सोच रही थी कि उस दिन को आज पूरा एक वर्ष हुआ, जिस दिन मुझको पहले पहल आपके दर्शनों का सौभाग्य हुआ था।

मि० जॉर्ज। हां, पूरा एक वर्ष हुआ। ("मे" को वह

चन्दन का बक्स, जिसके लेने से उसने इनकार किया था, दिखाकर) यह भी तुम्हें याद है ?

मिस मि० । जी हां, खूब अच्छी तरह से याद है।

मि० जार्ज । (सस्नेह) बेटी ! अब तुम इसके लेने योग्य प्रमाणित हो गई हो, और ले सकती हो। यदि उस समय तुम इसे ले लेतीं, तो इस समय हमारी जिह्वा से यह वाक्य कदापि न सुनती। (रुककर) प्यारी भतीजी ! हमारे बाद इस मकान और जमीन्दारी की मालिकिन भी तुम्हीं होगी; केवल इतना ही नहीं, बरन् बहुतसा नकद रुपया भी तुमको मिलेगा।

मिस मि० । चचाजी ! आप धन्य हैं, परन्तु मैं इस योग्य नहीं हूं; धन के बोझ से मैं दब जाऊंगी। चचाजी ! मेरा हृदय काँप २ उठता है; मैं सोचती हूं कि इतना धन पाकर मैं किसी संकट में न फँस जाऊँ !

मि० जॉर्ज । (साहस दिलाने वाले शब्दों में) बेटी मे ! ऐसा नहीं होता। यदि धन अच्छे कामों में लगाया जाय और उचित मार्ग से उसका व्यय हो तो कदापि किसी प्रकार का दुःख नहीं उपस्थित हो सकता, बरन् उससे अपना और दूसरों का बड़ा * उपकार हो सकता है। तुम अपने हृदय में उन भलाइयों

---

* लार्ड बेकन ने कहा है कि, " धन, व्यय करनेही के लिए है; परन्तु हां, सत्कार्य्य और यशःप्रदकृत्यों में व्यय करना चाहिए; अन्यत्र नहीं। विशेष व्यय करने का प्रसङ्ग आने से कार्य्य के महत्व का विचार करके तदनुसार व्यय करना चाहिए, क्योंकि योग्य प्रसङ्ग पड़ने पर यदि अपनी समस्त सम्पत्ति भी व्यय कर दी जाय तो वह व्यय दोनों लोकों में बराबर श्रेयस्कर होता है। परन्तु सामान्य व्यय मनुष्य को अपनी शक्ति के अनुसार करना चाहिए,

का ध्यान करो, जो धन के मिलने से तुम कर सकती हो। भिक्षुकों को दान, वस्त्रहीनों को वस्त्र, बीमारों की चिकित्सा, निस्सहाय सती स्त्रियों की सहायता आदि, तुम इन बातों पर ध्यान दो। तुम अपने मन में दृढ़ संकल्प कर लो कि कभी अपने धन को बुरे कामों में न खर्च करोगी, वरन् अच्छे कामों लगाओगी। फिर देखो कि तुम्हारा मन कैसा स्वस्थ एवं शान्त रहता है।

उस अनुभवी बुड्ढे ने जिस समय ये प्रभावोत्पादक बातें कहीं, उस समय मे-मिडिल्टन के नेत्रों से आँसुओं की धारा बह रही थी, और अन्त में वह अपने चचा के पाँवों पर गिरकर कहने लगी, " चचाजी ! मैं आपकी आज्ञा अवश्य पालन करूंगी; आप निश्चय रक्खें।"

और उसकी ओर सदैव ध्यान रखना चाहिए कि प्राप्ति से अधिक तो नहीं होता। नौकर चाकरों पर भी दृष्टि रखनी चाहिए जिसमें वे अनुचित व्यय न करें और छल से स्वार्थसाधन भी न कर सकें। प्रबन्ध ऐसा करना चाहिए जिसमें अपने घर का यथार्थ व्यय लोगों के अनुमान की अपेक्षा कमही रहे; बढ़ने न पावे। यदि किसी की यह इच्छा हो कि उसे धन सम्बन्धी कोई असुविधा न हो तो उसको अपनी प्राप्ति का आधा भाग व्यय करना चाहिए और यदि धनी होने की इच्छा हो तो केवल एक तृतीयांश व्यय करना चाहिए। बड़े २ श्रीमान् लोगों को भी अपने आयव्यय का विचार करना और अपनी सम्पत्ति पर दृष्टि रखना उचित है। ऐसा करने में कोई मानहानि नहीं है। कोई २ लोग अपने आय व्यय की व्यवस्था नहीं देखते; इसका कारण केवल उनकी अलसताही नहीं है किन्तु हिसाब करके धन की क्षीणता को जानकर वे दुःखित होते

मि० जॉर्ज। मैं जानता हूं कि तुम ऐसा ही करोगी; और निश्चय जानो कि तुम सदैव प्रसन्न रहोगी। मेरी इस बात को स्मरण रखना, यह मेरा आशीर्वाद है।

मिष्टर जॉर्ज यह कहते जाते थे और "मे" के अश्रुपूरित नेत्रों को, जो इस समय और भी सुन्दर प्रतीत होते थे, देखते जाते थे। उन्होंने पुनः कहा, "बेटी! क्या पहले तुमको इन बातों की आशा थी?"

मिष्टर जॉर्ज की इन बातों से मे-मिडिल्टन को उन हाथ-देखने-वाली स्त्रियों के वाक्य याद आ गए, और उसने अपना शिर झुका लिया। मिष्टर जॉर्ज कहने लगे, "प्यारी भतीजी! उठो, अभी मुझको तुमसे कुछ और भी कहना है।"

यह सुनकर "मे" उठी और अपने चचा के पास

है, यह भी है। परन्तु ऐसा करना कदापि समुचित नहीं। घाव कहां है, यह जब तक नहीं जाना जायगा तब तक उसका प्रतीकार कैसे हो सकेगा? जो मनुष्य अपनी सम्पत्ति की व्यवस्था को भली भाँति नहीं देख सकता उसको प्रामाणिक नौकर रखने चाहिएँ और वे समय २ पर बदलने भी चाहिएँ, क्योंकि नवीन नौकर विशेष डरते हैं, अतएव वे कपट-व्यवहार भी नहीं करते। जिसे अपनी सम्पत्ति के निरीक्षण करने का अवकाश कम मिलता है, उसे अपने आय और व्यय का निश्चय कर डालना चाहिए, अर्थात् क्या मिलता है और क्या देना पड़ता है, इसका ठीक ठीक हिसाब समझ लेना चाहिए। जिसको एक विषय में विशेष व्यय करना पड़ता हो उसे उचित है कि वह किसी अन्य विषय में कम व्यय करे; जैसे यदि खाने पीने में अधिक पैसा उठता हो तो कपड़े लत्ते बनाने में कमी करनी चाहिए। इष्ट मित्रों के सम्मान में यदि विशेष व्यय

जाकर बैठ गई। मिष्टर जॉर्ज ने एक मुहर किया हुआ पुलिन्दा निकाला, और उसे " मे " के हाथ में देते समय वह कहने लगे, " बेटी ! ठीक २ प्रतिज्ञा करो कि जो मैं कहूंगा, उसे अवश्य पूरा करोगी। "

मे०। चाचाजी ! मैं अवश्य पूरा करूंगी, कारण कि आज तक आपकी किसी बात को करके मुझे पश्चात्ताप नहीं करना पड़ा है।

मि० जॉर्ज। मैं इतनी ही प्रतिज्ञा कराना चाहता हूं कि इस पुलिन्दे को तुम उस समय तक खोलने का इरादा न करोगी, जब तक तुम्हारी उम्र पूरी इक्कीस वर्ष की न हो जाय। इसे तुम ऐसे सुरक्षित स्थान में छिपा कर रखना कि तुम्हारे पिता को भी इसका हाल न मालूम हो। अब अपने कमरे में जाओ और इस पुलिन्दे को सावधानी से रक्खो।

करने की आवश्यकता पड़ती हो तो गाड़ी घोड़े रखने में कम व्यय करना चाहिए; इत्यादि। कारण यह है कि जो पुरुष सभी कामों में बेहिसाब व्यय करता है वह अवश्यमेव कुछ दिनों में निर्धन होने से नहीं बचता।

जिसे अपनी सम्पत्ति ऋण से मुक्त करानी हो उसे न तो बहुत शीघ्रता करनी चाहिए और न बहुत विलम्ब ही करना चाहिए; क्योंकि शीघ्रता से उतनी ही हानि की सम्भावना रहती है जितनी विलम्ब करने से रहती है अर्थात् बेचने में त्वरा करने से जो आधा तिहाई मूल्य मिलेगा उसे ले लेना और देर करके ब्याज बढ़ने देना दोनों बातें समान हानिकारक है। इसके अतिरिक्त जो झटपट ऋण-मुक्त हो जाता है उसे फिर भी ऋणग्रस्त होने का डर रहता है; क्योंकि ऋण हो जाने से उसे पूर्ववत् अनिष्ट-व्यवहार करने का

"मैं आपकी आज्ञा अवश्य पालूंगी।" इतना कहकर मे-मिडिल्टन चली गई।

बीते हुए छः महीने में मिष्टर जॉन्सन एटर्नी के पत्र बराबर मिष्टर जार्ज के पास आते रहे, जिनमें विल्फ्रिड के विषय में यह लिखा था कि "अब उसकी चालचलन बहुत अच्छी है, अब वह अपने काम काज पर दृष्टि रखता है, और ऐसी अवस्था में उन्नति की बहुत कुछ आशा की जा सकती है।"

इस पत्र के उत्तर में मिष्टर जार्ज ने अपने एटर्नी को लिखा कि वह एक हजार रुपया विल्फ्रिड को और दे दें; और बराबर उसकी चालचलन की सावधानता पूर्वक जाँच करते रहें। इसके बाद मिष्टर जान्सन ने लिखा कि "जान पड़ता है कि विल्फ्रिड को अपनी पिछली बातों पर बहुत पश्चात्ताप है, क्योंकि उसने आपके एक सहस्त्र रुपये को बहुत आगापीछा

साहस आ जाता है। परन्तु जो मनुष्य क्रम क्रम से अपना ऋण चुकाता है, समझ बूझकर व्यय करना उसका स्वाभाविक धर्म्म हो जाता है,जिससे उसके मन और सम्पत्ति दोनों को लाभ पहुँचता है।

गई हुई सम्पत्ति को पुनरपि प्राप्त करने की जिसे इच्छा हैं उसे छोटी २ बातों की ओर भी दृष्टि देनी चाहिए। सत्य तो यह है कि, थोड़े लाभ के लिए हाथ उठाने की अपेक्षा छोटे मोटे व्यय के कम देने में विशेष भूषण है। एक बार आरम्भ हो जाने से जो सदैव व्यय करना पड़ता है उसके विषय में मनुष्य को अधिक सचेत रहना चाहिए। परन्तु एक बार करके जिस व्यय को पुनः करने की आवश्यकता नहीं पड़ती उसमें उदारता भी दिखाई जाय तो चिन्ता नहीं।" देखिए "Lord Bacon's Essays" अथवा बेकन-विचार—रत्नावली" (अनुवादक)

करके तब लेना स्वीकार किया। अब वह बहुत कम व्यय करता है, और सब काम समझ बूझकर बुद्धिमानी के साथ करता है। जब मैंने उससे यह कहा कि मिष्टर जार्ज ने उसके लिए एक हजार रुपये भेजे हैं, तब पहले तो उसने लेने से इनकार किया, परन्तु मैंने उसे यह समझाकर कि वह उन रुपयों को लेकर अपना कारबार बढ़ावे, उसे वे रुपये दे दिए। उसने मुझसे पूछा कि वह इसपर आपके पास एक धन्यवाद पत्र भेजे या नहीं किन्तु मैंने यह कर दिया कि उसको जो कुछ कहना हो मैं ही उसकी ओर से कह दूंगा। अस्तु, मुझको बड़ा हर्ष है कि अब आपका भतीजा सीधा होगया।"

मिष्टर जार्ज ने यह पत्र अपने भाई मिष्टर जॉन को दिखाया। उन्होंने उस पत्र को पढ़ा तो उनके चेहरे से गम्भीरता और दुःख प्रगट होने लगा। अन्ततोगत्वा उन्होंने अपने भाई से कहा कि, "वह दानपत्र जो आपने लिखकर

हमारी भी यही सम्मति है कि धन व्यय करनेही के लिए है, परन्तु धन को वेश्यागमन, मद्यपान, द्यूतादि में व्यय न करके उत्तम कार्यों में व्यय करना चाहिए। "सुभाषित रत्नाकर" में भी कहा कि,—

"यदर्ज्यते परिक्लेशैरर्जितं यन्न भुज्यते।
विभज्यते यदन्तेऽन्यैः कस्य चिन्माऽस्तु तद्धनम्।"

अर्थात् जिसके उपार्जन करने में अत्यन्त कष्ट सहन करना पड़ता है, परन्तु कष्ट सहन करके भी जिसका उपभोग नहीं किया जाता, अतएव अन्त में जिसे दूसरे ही ले जाते हैं, ऐसे धन के होने से न होने ही में अच्छा है। (अनुवादक)

मुझे दिया था, उसके विषय में छः महीने तक मैंने कुछ नहीं कहा। इस बार जब आपके एटर्नी ने विल्फ्रिड के बारे में रिपोर्ट की और आपने मुझसे कहा, तो विल्फ्रिड के सम्बन्ध में मुझको भी कुछ कहने की आवश्यकता जान पड़ती है। आप मुझे क्षमा करें, मैं अब चुप नहीं रह सकता। देखिए, विल्फ्रिड हमारे बड़े भाई की निशानी है। उसने सब बुरे कामों से हाथ खैंच लिया है, अतएव क्षमा करने योग्य है। मैं स्पष्टतया कह देता हूं कि उसे आपकी सम्पत्ति के एक बड़े भाग का भागी होना चाहिए। मैं आपसे प्रार्थना करता हूं और यह चाहता हूं, वरन् शपथ दिलाता हूं कि अपनी सम्पत्ति का अधिक भाग आप उसी को दें। जो धन सम्पत्ति आप हमें देना चाहते हैं, उसमें कमी होने से, मैं सत्य कहता हूं कि, न मुझको दुःख होगा न "मे" को।"

मि० जॉर्ज। (बात काट कर) नहीं मिष्टर जॉन! मैं इस विषय में एक शब्द भी नहीं सुनना चाहता। यदि विल्फ्रिड को सुमार्ग का अवलम्बन किए दो चार वर्ष व्यतीत हुए होते, तो और बात थी। कोई कुमार्गगामी भी इतनी जल्दी अपने को सुमार्गावलम्बी नहीं बना सकता। मैं तो विल्फ्रिड की इस चाल को केवल एक ढकोसला और काट फाँस की चाल समझता हूं। मेरे विषय में तुम्हारा यह समझना कि मैं अपने इरादे से बदल जाऊंगा, तुम्हारी भूल है। मेरा इरादा अब नहीं बदल सकता। मिष्टर जॉन! इस बात को याद रक्खो कि तुम इस दानपत्र के अनुसार कार्य्य करने की प्रतिज्ञा कर चुके हो। मैं तुमसे पुनः कहता हूं कि यदि आज मैं मर जाऊँ तो तुम अपनी सम्पत्ति में से विल्फ्रिड को एक पैसा क्या एक कौड़ी भी न देना। यदि

वास्तव में विल्फ्रिड सीधा होगाया है, तो स्वयं बहुत धन पैदा कर सकेगा; ऐसा करने से उसको सुख भी मिलेगा। यदि उसका अपने को सुमार्गावलम्बी प्रसिद्ध करना केवल जाल और धूर्त्तता हो, तो ऐसे को दुःख देना भलाई का काम है; बुराई का नहीं।

इस तर्क वितर्क और बातचीत को एक सप्ताह बीत गया। एक दिन आधीरात का समय था; सब ओर सन्नाटा छाया हुआ था; द्वारों के कपाट बन्द थे और मिष्टर जॉन अपनी पुत्री के साथ अपने घर में सो रहे थे कि इतने में किसी द्वार के खड़कने की आवाज सुनकर दोनों चौंक पड़े और घबराई हुई दृष्टि से द्वार खोलकर बाहर देखनेलगे, तो विदित हुआ कि एप्सली-कोर्ट से एक नौकर घोड़ा दौड़ाता हुआ यह संदेसा लेकर आया है कि मिष्टर जॉर्ज की बीमारी (हृद्रोग) बढ़ गई है; और कदाचित् शीघ्रही उनकी मृत्यु होनेवाली है॥

चौथा प्रकरण।

यह सम्वाद सुनतेही मिष्टर जॉन और उनकी पुत्री दोनों ने झटपट कपड़े पहने। जब तक कपड़े पहनते रहे, तबतक गाड़ी तय्यार हो कर आगई। "मे" और मिष्टर जॉन में कोई बात-चीत भी न होने पाई थी कि गाड़ी एप्सली-कोर्ट में पहुँच गई। वहां जाने पर ज्ञात हुआ कि डाक्टर आ चुका है, और मिष्टर जॉर्ज का चित्त कुछ सम्हला हुआ है, परन्तु उनके देर तक जीवित रहने की आशा नहीं है। दोनों जल्दी २ पांव बढ़ाते हुए उनके कमरे में गए और उनको चैतन्य पाया। मिष्टर जॉर्ज ने उन दोनों को गले से लगाया, और धीमे किन्तु साहस-

पूर्ण शब्दों में कहा, 'मेरा समय आ गया है, मैं मरने के लिए प्रस्तुत हूं। मानों मेरे कानों में कोई कह रहा है कि जगत्पिता परमेश्वर ने तेरे सब अपराधों को क्षमा कर दिया; और इस समय तुम दोनों को देखकर मेरा हृदय असीम आनन्द से उत्फुल्ल हो गया।"

मिष्टर जॉन के मुख से एक शब्द भी न निकल सका, परन्तु उन्होंने अपने भाई का हाथ अपने थरथराते हुए हाथ में लिया। "मे" के नेत्रों से आँसू बह रहे थे, और वह बार २ ठण्डी २ साँस लेती थी। दो डाक्टर तय्यार थे, जो पासही के गांव से बुलाए गए थे। मिष्टर जार्ज ने अपने आपको चारपाई से कुछ उठाया, और उन डाक्टरों की ओर देखकर वह कहने लगे, "महाशय! मेरे सम्बन्धियों के सामने, मेरे इस प्यारे भाई और भोली भतीजी के सामने आप स्पष्ट और सत्य २ बता दें कि अब मेरे कितनी देर तक जीवित रहने की आशा की जा सकती है?"

दोनों डाक्टरों में से एक ने, जो वृद्ध था और जिसके चेहरे से बड़ी गम्भीरता टपकती थी, कुछ सोच समझ कर जवाब दिया, "आप जानते हैं कि आपकी बीमारी इस तरह की है कि दम भर में आपके प्राण निकल सकते हैं; अतएव मेरा धर्म है कि मैं आपसे सत्य २ कह दूं कि आपको जो कुछ सांसारिक काम करने हों, उन्हें यथाशक्य अति शीघ्र कर डालें। हम दोनों अब दूसरे कमरे में जाते हैं, परन्तु यदि कुछ भी दर्द मालूम हो, तो हमें तुरन्त बुला लें।"

दोनों डाक्टर उठकर चले गए और एम्ली-कोर्ट का

मालिक रुग्नावस्था में अपने भाई और भतीजी के साथ अकेला रह गया।

मि० जॉर्ज। (दोनों का एक २ हाथ पकड़ कर) प्यारे मिष्टर जॉन ! मेरे लिए न रोओ; और न मेरी प्यारी "मे" ! तुम दुःखित हो। जो आया है वह अवश्य जायगा; इसका शोकही क्या ! मैं इससे अच्छी दुनियां में जाता हूं, और यद्यपि तुम्हें छोड़े जाता हूं, तथापि थाड़ेही दिनों के लिए; थोड़े दिन बाद हम तुम स्वर्ग के महलों में अवश्य मिलेंगे। (रघुवंश में) कहा है कि,–

"मरणं प्रकृतिः शरीरिणां विकृतिर्जीवनमुच्यते बुधैः।"

मिष्टर जॉन ने घुटनों के बल झुककर कहा, और उसमें "मे" ने भी उनका साथ दिया, "मिष्टर जॉर्ज ! मैं आपको उस जगत्पालक परमेश्वर का शपथ दिलाकर कहता हूं कि आप एक न्याय का काम करते जायँ, जिसको अभी आप कर सकते हैं।"

मि० जॉर्ज। एक न्याय का काम !!

मिष्टर जॉर्ज ने इतना कहा, और शोकचिन्ह उनके मुख पर अङ्कित हो गए। मानों वह अपने भाई का मतलब बिल्कुल समझ गए थे।

मि० जॉन। हां भैया! न्यायही का काम। मैं देखता हूं कि आप मेरा मतलब समझ गए। स्वर्गवासी ज्येष्ठ भाई के पुत्र विलिफ़ूड को अलग करके जो आपने अपनी सम्पत्ति हमको दी है, उसके अन्याय का हाल कहने में, "मे" भी मेरा साथ देगी। विलिफ़ूड से अपराध हुआ है; यह मैं मानता हूं कि उसने बड़ा खराब काम किया है; परन्तु आशा करनी चाहिए कि उसकी चालचलन सचमुच सुधर गई है। और यह अनुमान करना कि वह दुष्ट है और उसकी सब बातें बनावटी हैं, अनु-

चित है। मेरी प्रार्थना आप स्वीकार करें, और कृपया विलिफ्रड ही को अपनी सम्पत्ति का एक बड़ा भाग अर्पण करें; चाहे वह भला हो अथवा बुरा।

मि० जॉर्ज। (रोकर) तो क्या मैं अपनी भतीजी को कुछ न दूं? और दी हुई वस्तु फिर उससे ले लूं?

मे०। हां चचाजी! मुझको उस समय अत्यन्त हर्ष होगा जब आप सब सम्पत्ति विलिफ्रड को देंगे।

मि० जॉन। यदि आपने हमारे कहने के अनुसार न किया तो हमें आजीवन इसका बड़ा शोक रहेगा।

मि० जॉर्ज। भाई! जो कुछ हो; यह तो न होगा कि जो जायदाद मैं तुमको दे चुका हूं, उसको फिर ले लूं और दूसरे के सुपुर्द कर दूं।

मि० जॉन। अच्छा यही सही; परन्तु मकान, इलाका और नकद जो कुछ "मे" को दिया है, उसे तो विलिफ्रड को अवश्य दे दीजिए।

मि० जॉर्ज। (विवश होकर) लाचारी है। अस्तु; जैसी तुम्हारी इच्छा, परन्तु (अपनी ओर इङ्गित करके) इस बूढ़े की बात याद रखना कि अन्त में विलिफ्रड झूठा और बदमाश ही प्रमाणित होगा! ("मे" की ओर देखकर) आह! उस दुनियां में यह सोचकर मेरी आत्मा को दुःख होगा कि तुम्हें मेरी सम्पत्ति में से कुछ भी नहीं मिला।

मे०। चचाजी! आप ऐसा न सोचें। मैं उस समय बहुत प्रसन्न होऊंगी जब विलिफ्रड को इस धन और सम्पत्ति का अधिकारी देखूंगी; क्योंकि वही इन सब का हकदार कहा जा सकता है।

अब मिष्टर जॉन और उनकी पुत्री " मे "–दोनों मिष्टर जॉर्ज को पकड़ कर बहुत रोए । इस के बाद यह निश्चिय हुआ कि दोनों डाक्टर बुलाए जायँ और दूसरा दानपत्र विल्फ्रिड के नाम लिखा जाय । अतः दोनों डाक्टर बुलाए गए, और मिष्टर जॉन अपने मरते हुए भाई के पास कुर्सी पर बैठ गए, और डाक्टर से कहा कि " जो यह कहें, वह आप लिखते जायँ " डाक्टर ने कागज कलम ठीक कर के लिखना आरम्भ किया, और मिष्टर जॉर्ज नूतन दानपत्र लिखाने लगे ।

दानपत्र

" हम अपनी भाञ्जी करोलिन और बर्था दोनों में से प्रत्येक को अपनी सम्पत्ति में से पाँच २ सहस्र रुपये देते हैं और अपनी दोनों भाञ्जियों एमिली और लूसी में से हरएक को दश २ सहस्र । अपने प्यारे भाई मिष्टर जॉन को पचास सहस्र, और अपने भतीजे विल्फ्रिड को सब जमीन्दारी मय एप्मूली-कोर्ट और एक लाख रुपये नकद के देते हैं । परन्तु हमारे भाई मिष्टर जॉन के हाथ में अब से इन सब बातों का प्रबन्ध रहेगा । "

मिष्टर जॉनने इस लेख को साफ कर दिया और उस पर मिष्टर जॉर्ज ने हस्ताक्षर किए, और उन दोनों डाक्टरों से गवाही के हस्ताक्षर कराए गए । इसके बाद मिष्टर जॉर्ज ने डाक्टरों से दूसरे कमरे में जाने की प्रार्थना की । जब वे दोनों चले गए तो वह अपने भाई से कहने लगे " तुम दोनों को जो

हमारे साथ स्नेह है वह स्वाभाविक है। हम नहीं जानते थे कि तुम दोनों के हृदय में इतनी दया और परोपकार विद्यमान है। ईश्वर तुम्हें इस भलाई का भला बदला देगा। अन्त में हम इस बात का निवेदन करते हैं कि हमारे गाड़े जाने के समय तुम दोनों यहीं रहो; और खबरदार हमारे वास्ते वृथा धूमधाम न करना। अब हमारा समय बहुत निकट आ गया है। तुम दोनों हमारे दोनों ओर बैठ जाओ, और उस करुणावरुणालय के चरणकमलों का ध्यान करो।"

दोनों, दो ओर बैठ गए और मिष्टर जॉन उच्च स्वर से जगत्पिता परमेश्वर का भजन करने लगे। "मे" ने भी उनका साथ दिया, और मिष्टर जॉर्ज थोड़ी देर तक उन्ही शब्दों को जो उनके भाई मिष्टर जॉन के मुंह से बहिर्गत हुए थे दुहराते रहे; पश्चात् यम का दुत आ पहुँचा, और उनकी आत्मा शरीर से पयान कर गई! आह! देखो! यह वही मिष्टर जॉर्ज हैं जो आज से बारह वर्ष पहले एक साधारण मनुष्य थे; जो कुछ दिनों के पश्चात् धनवान् होकर प्रसिद्ध होगए; जिन्हों ने अपनी उम्र परोपकार में बिताई और जो सर्वप्रिय थे। यह वही मिष्टर जॉर्ज हैं जिनके पास लाखों रुपये वर्त्तमान थे; सहस्रों मनुष्य सेवा करने के लिए प्रस्तुत रहते थे; उत्तम २ गाड़ी घोड़े तैयार रहते थे; केवल प्राण के न रहने से सब कुछ व्यर्थ हो गया! हा! संसार की ऐसीही गति है। किसी कवि ने सत्य कहा है—

" रुस्तम रहा जमीं पै न वह साम रह गया।
मर्दों का आसमाँ के तले नाम रह गया॥ "

कोई भी यह नहीं जानता कि कब हमारा नाता इस

संसार से छूटेगा; किसी को भी यह बात विदित नहीं है कि हमारी मृत्यु कब होगी। जो लोग अपना समय उत्तम कार्य्यों में व्यतीत करते हैं वेही स्वर्गसुख उपभोग करते हैं, परन्त जिनका समय निकृष्ट कामों में नष्ट होता है, उनको कहीं भी सुख नहीं मिलता; अतएव कहा है कि,–

वाद विवाद विरोध विकार विसार पसार सनेह सगाई।
गैल गहो गुरु लोगन की सतसंग–विहीन रहो मत भाई॥
पौरुष प्राण धरो परमारथ के हित पाय प्रताप बड़ाई।
मान भली सिख "शङ्कर" की जग में सबसे करि लेहु भलाई॥

(और भी)

त्यागि के दोष औ दम्भ महाछल प्रीति करो सबसों दृढ़ताई।
पक्षी पशू नर हो चहै नारि करो कबहूँ न किसी से ढिठाई॥
"गङ्गप्रसाद" बनो उपकारक दीनन की हरिके कठिनाई।
नेह लगाय के ईश्वर सों जगमें सबसे करि लेहु भलाई॥

मिष्टर जॉन ने अपने भाई की मृत्यु का वृत्तान्त कर्नल विलासिस, ब्यूशम्प, विलिफूड और मिष्टर जॉन्सन एटर्नी को लिख भेजा। तीसरे दिन गाड़ियों पर गाड़ियाँ आने लगीं। कर्नल विलासिस और ब्यूशम्प ने असीम शोक प्रगट किया, परन्तु मनही मन वे यह उपाय सोचने लगे कि किसी प्रकार मिष्टर जॉर्ज के दानपत्र का हाल जानना चाहिए कि उन्होंने हम लोगों के वास्ते कितना रुपया लिखा है, किन्तु अनेक बार चेष्टा करने पर भी कुछ पता नहीं लगा।

मिष्टर जॉन ने दानपत्र के लिखे जाने का वृत्तान्त किसी के आगे प्रगट नहीं किया, किन्तु नूतन दानपत्र का हाल एटर्नी महाशय से कह देना अत्यन्त आवश्यक था, अतएव

मिष्टर जॉन उनको लेकर किसी एकान्त स्थान में गए और नया दानपत्र उन्होंने एटर्नी महोदय के सामने पढ़कर सुना दिया। एटर्नी ने एक दूसरे कागज पर उसकी नकल की और पूछा, "इस दानपत्र को आप कहां रखते हैं?"

मि० जॉन०। मैंने इसे एक सुरक्षित सन्दूक में बन्द करके रख दिया है; और उस बक्स की कुञ्जी मेरेही पास रहती है। जिस जगह मिष्टर जॉर्ज की लाश रक्खी है, वहीं वह सन्दूक भी रक्खा है।

मिष्टर जॉन जिस समय एटर्नी को अपने साथ इस कमरे में लाए थे, विल्फ्रिड ने देख लिया था। वह छिपकर दूसरे कमरे स ये सब बाते सुनने लगा, और सब बातें सुन लेने के पश्चात् मारे हर्ष के मरे कुत्ते के समान फूला न समाकर उस गुप्त स्थान से निकला चला गया, और मन में सोचने लगा कि, अब तो इतनी बडी जमीन्दारी और ऐसा सुन्दर महल और इतना नक़्द रुपया सब हमाराही तो है! वाह रे हम! अब क्या है, अब तो चैनही चैन है!" वह कभी तो खूब हँसता था, कभी आनन्दाश्रु बहाने लगता था और कभी ताली बजा २ कर कूदने और मटकने लगता था, परन्तु बहुत देर तक सब लोगों से पृथक् रहना उचित न समझकर उसने अपने आप को सम्हाला, और जहां सब लोग बैठे थे वहां चुपचाप चला गया। परन्तु थोड़ी देर के बाद फिर आपही आप कहने लगा कि, "यदि मैं इस दानपत्र को गायब कर दूं तो मिष्टर जॉर्ज के बड़े भाई का पुत्र होने के कारण न्यायानुसार सब माल मुझेही मिलेगा; मिष्टर जॉन आदि एक फूटी कौड़ी भी न पा

सकेंगे।" अतएव इस बात का निश्चय करके वह, दानपत्र के गायब कर देने का सुअवसर ढूँढ़ने लगा।

पांचवां प्रकरण।

रात्रि में सब लोग अपने २ कमरे में जाकर सो रहे, परन्तु मिष्टर जॉन को नींद न आई। मिष्टर जॉर्ज का मिष्टर डार्नले बनकर आना और चार महीने अपरिचित अतिथि के समान उनके घर में रहना;—फिर इतने दिनों तक जॉर्ज मिडिल्टन बनकर रहना; ये सब बातें उनकी आँखों के सामने फिर रही थीं। वह लेटे २ आपही आप कहने लगा, "जगदीश्वर! तुम्हारी महिमा को कौन जान सकता है। अहह! देखो, यही हमारे भाई जिन्होंने न मालूम कितने परिश्रम और उद्योग से इतना धन कमाया; जो कैसे २ कष्ट और कैसी २ वेदना सहकर अपनी जन्मभूमि में आए; थोडे दिन भी आराम से न रहने पाए थे कि हमको उनसे पृथक् होना पड़ा। हा मातः वसुन्धरे! तेरी कोख से कैसे २ जीव उत्पन्न हुए और नष्ट हो गए! इसी निमित्त कहा है कि,—

(सवैया)

क्यों नर मूढ़ अरे इतरात बिना प्रभु के कोउ काम न आई।
पुत्र कलत्र पिता प्रियबन्धु सबै निज स्वारथ को है मिताई॥
"गङ्गप्रसाद" धरै हरि ध्यान यहै भवसागर पार लगाई।
है मरना इक रोज सही जग में सबसे करि लेहु भलाई॥

इस सवैया को दुहराते २ बारह बज गए परन्तु मिष्टर जॉन की आँखों में नींद न आई। इतने में हठात् ऐसा जान

पड़ा कि मानों कोई वस्तु उनके पास से होकर निकल गई! वह तत्काल घबराकर उठ बैठे और विस्मित हो चारो ओर देखने लगे, परन्तु कोई चीज न मालूम हुई। तब वह पलंग से उठ कर नौकरों से इस विषय में कुछ पूछने के लिए पहले तो उद्यत हुए, फिर साथही रुक गए कि नहीं, ऐसा करने से लोग उपहास करेंगे। यह सोचकर उन्होंने फिर सो रहने का इरादा किया।

थोड़ी देर में उनका वह संशय दूर हो गया, और कुछ २ आँखें नींद से बन्द होने लगीं कि इतने में फिर कुछ ऐसी आहट मालूम हुई कि मानो कोई व्यक्ति उनके कमरे का द्वार खोलकर गया और फिर आया। इस बार मिष्टर जॉन उठ खड़े हुए, और रौशनी जला के धीरे से द्वार खोलकर बाहर निकले, परन्तु वहां किसी को न देखा। तब वह उस कमरे की ओर जिसमें भाई की लाश रक्खी थी, धीरे २ बढ़ने लगे। उन्होंने मन में सोचा कि कदाचित् भाई साहब की आत्मा उनके कमरे में आई हो, फिर आपही आप बोले कि "नहीं, भाई साहब ऐसे नहीं थे कि उनकी आत्मा भूत बनकर इधर उधर मारी २ फिरे; अस्तु, चलो जो कुछ हो, उनके मृतशरीर के निकट चलकर ईश्वर की वन्दना करें।"

इस इरादे से वह द्वार खोलकर उस कमरे के अन्दर गए। लाश के पास किसी व्यक्ति को बैठा देखकर घबराए कि एँ! यह कौन है? ध्यान देकर देखा तो मालूम हुआ कि क्लिफ़र्ड लाश के पास बैठा यह कह रहा है, "चचाजी! हाय! मेरे अपराधों को क्षमा कीजिए। यद्यपि मैं पापी हूं, यद्यपी मैं आपके निकट अपराधी हूं, यद्यपि मैंने बड़े २ पापकर्म्म किए हैं, यद्यपि मैं छल से मिसमिडिल्टन के साथ विवाह करना चाहता था,

यद्यपि मैंने उस प्रथम विवाह का भेद आपसे छिपा रक्खा था; सारांश यह कि यद्यपि मैंने ऐसे २ बुरे कर्म्म किए हैं जिनके कारण नरक का द्वार पिशाच के मुंह के समान मेरे लिए अभी से खुला है, तथापि आप बड़े हैं, बुद्धिमान् हैं, दयालु हैं; आप मेरे अपराधों को अवश्य क्षमा करेंगे—"

मि० जॉन। (पास जाकर) शाबाश विल्फिड! शाबाश! ऐसाही करना उचित था।

यह सुनकर विल्फिड चौंक उठा; मानो उसने मिष्टर जॉन को देखाही न था।

मि० जॉन। विल्फिड! आओ, हम तुम दोनों मिलकर ईश्वर की प्रार्थना करें।

यह कहकर उन्होंने प्रदीप को हाथ से रख दिया। पश्चात् दोनों बैठकर एक साथही जगत्पिता परमेश्वर के ध्यान में निमग्न हुए। प्रार्थना समाप्त होने पर मिष्टर जॉन, विल्फिड को लेकर अपने कमरे में गए और कहने लगे, " विल्फ्रिड! आज तुम्हारी इस बात से मैं अतीव प्रसन्न हुआ। ईश्वर तुम्हें सुबुद्धि और सुकीर्त्ति दे।"

विल्फ्रिड०। मेरी तो केवल इस शोच से किसी प्रकार आँखही नहीं लगती थी कि हाय! मृत चचाजी से मैंने अपने अपराध भी न क्षमा कराए, और वह मर गए। अन्ततोगत्वा मैंने यही निश्चय किया कि उनके पास जाकर क्षमा के लिए प्रार्थना करूं। बस इसी कारण मैं वहां गया था कि इतने में आप भी पहुँच गए।

मि० जॉन। (उसकी सब बातों को सत्य समझकर) क्या तुम मेरे कमरे में भी आए थे?

विल्फ्रिड। (आश्चर्यान्वित होकर) नहीं तो, लेकिन क्यों? क्या हुआ क्या?

मि० जॉन। नहीं २, कुछ नहीं।

विल्फ्रिड। हां २, अब मुझे याद आया,—जब मैं उधर जाने लगा तो आपके कमरे के दरवाजे की टोकर लगी थी, और मैं गिर पड़ा था।

मि० जॉन। कदाचित मैंने वही आवाज सुनी हो, और समझा हो कि जैसे कोई मेरे ही कमरे से निकलकर चला गया हो।

विल्फ्रिड। अच्छा अब आप आराम से पलंग पर लेटें; मैं आपके पास बैठकर आपसे बातें करूंगा।

मिष्टर जॉन लेट गए और विल्फ्रिड उनके सामने एक कुर्सी पर बैठ गया। अब मिष्टर जॉन उसको उत्तमोत्तम शिक्षा देने लगे, परन्तु दानपत्र के विषय में उससे कुछ नहीं कहा।

आध घंटे तक दोनों बातें करते रहे; बाद विल्फ्रिड चला गया और मिष्टर जॉन सो रहे। प्रातःकाल एटर्नी और मिष्टर जॉन से मुलाकात हुई। एटर्नी ने उनसे कहा, " आपके भाई ने जो पहला दानपत्र लिखा है, उसे बहुतही सावधानी से रखिएगा; उसका काम पड़ेगा, क्योंकि सम्भव है कि कर्नल विलासिस और ब्यूशम्प स्वयं कुछ नहीं और लड़कियों को भी बहुत थोड़े २ रुपये पाते देखकर कुछ तर्कवितर्क करें; परन्तु यदि उन्होंने ऐसा किया तो हम वह पहला दानपत्र जिसमें उनकी दुष्टता का हाल लिखा है, दिखाकर उन्हें चुप कर देंगे। "

मि० जॉन। दानपत्र तो मेरे घर पर है, परन्तु यदि आप कहते हैं तो मैं जाकर उसे भी ले आऊंगा, किन्तु जब तक

उसकी बड़ी ही आवश्यकता न हो तब तक मैं उसे किसी को दिखाना कदापि पसन्द न करूंगा।

मि० जॉन्सन। उस दानपत्र के लिखे जाने का हाल सिवा मेरे और आप के, दूसरे किसी को मालूम नहीं है; आप निश्चिन्त रहें; कोई उसका वृत्तान्त न जानेगा। जिस समय मैं अत्यन्त आवश्यकता देखूंगा उसी समय आप से कहूंगा कि उस प्रथम दानपत्र को भी जरा दिखला दीजिए।

इस बातचीत के पश्चात् मिष्टर जान गाड़ी पर सवार होकर अपने गांववाले घर को गए, और थोड़ी देर में दानपत्र लेकर लौट आए।

(इस स्थल पर हम यह बात भी कह देना बहुत ही आवश्यक समझते हैं कि योरप् में यह नियम है कि मरने के बादही लाश नहीं गाड़ी जाती वरन ५ अथवा ६ दिन तक रक्खी रहती है, पश्चात् गाड़ी जाती है। गाड़े जाने के अनन्तर सब सम्बन्धी एकत्र होते हैं और पूछते हैं कि मरे हुए पुरुष अथवा स्त्री ने कोई दानपत्र लिखा है या नहीं। यदि लिखा होता है तो प्रार्थना करते हैं कि वह पत्र इस समाज में लाकर दिखाया जाय और पढ़कर सब को सुनाया जाय)

मिष्टर जॉर्ज की लाश उनके मरने के छठें दिन बिना किसी प्रकार की धूमधाम के, एडिङ्गटन् गिर्जे में गाड़ी गई। इसके बाद सब लोग एक कमरे में आकर बैठने लगे। जब सब लोग एकत्र हो गए तो मिष्टर जॉन्सन एटर्नी अपनी जगह से उठ खड़े हुए और कहने लगे,—

" साहबो और बीबियो! अब मैं स्वर्गवासी मिष्टर जॉर्ज का दानपत्र निकालता हूं। उस दानपत्र के मैनेजर मिष्टर

जॉन हैं और उन्हीं के पास वह है भी। परलोकवासी मिष्टर जॉर्ज के कमरे में एक लोहे का सन्दूक है; उसकी चाबी मिष्टर जॉन के पास रहती है।"

मि० जॉन। (चाबी निकाल कर) लीजिए।

एटर्नी। (कुञ्जी लेकर) मैं दानपत्र सन्दूक में से निकालने जाता हूं, जो महाशय चाहें वह मेरे साथ चलें।

यह सुनतेही ब्यूशम्प झपटकर उठा और मिष्टर जान्सन के साथ चला, क्योंकि वह यह बात जानने के लिए बहुतही उत्कण्ठित था कि दानपत्र में क्या लिखा है।

मिष्टर जॉन, मिष्टर जान्सन और ब्यूशम्प, दानपत्र निकालने के लिए दूसरे कमरे में गए। वहां जाकर मिष्टर जॉन ने सन्दूक खोला, परन्तु हठात् घबराकर कहा, "ऐं! यह क्या बात है!"

ब्यूशम्प। कुशल तो है? क्या हुआ क्या?

मि० जॉन। (दाँत के नीचे उंगली दबा कर) दानपत्र का पता नहीं है!

मि० जान्सन। (आश्चर्य्य से) क्या! पता नहीं है!!

मि० जॉन। (एक क्षण तक कुछ सोच कर) आह! मैं उस दुष्ट को पहचान गया।

यह कहते हुए वह उस कमरे की ओर झपटे जिसमें सब लोग बैठे थे, परन्तु ब्यूशम्प उनसे पहलेही वहां पहुंच गया और सब से उसने कह दिया कि दानपत्र गायब हो गया।

कर्नल बिलासिस। क्या!

विल्फ्रेड। (चौंककर) क्या दानपत्र का पता नहीं है?

इतने में मिष्टर जॉन क्रोध में भरे हुए आ पहुँचे और त्रि-

लिफ़्ड के निकट जाकर उसकी गर्दन जोर से पकड़ के कहने लगे, " दुष्ट ! यह काम तेराही है। "

ब्यूशम्प। (विलिफ़्ड से) क्यों वे पाजी ! चाण्डाल मूर्ख !

कर्नल, विला०। इसको जो कुछ कहा जाय ठीक है।

मि० जॉन। आप सब लोग जरा चुप रहें। (विलिफ़्ड से) देखो विलिफ़्ड ! मैं कहे देता हूं कि यदि तुम अपनी भलाई चाहते हो तो दानपत्र निकाल कर दे दो।

विलिफ़्ड। (चचा के हाथ को झटके से छुड़ा कर) आप को इतने आदमियों के सामने हमारे साथ ऐसा वर्ताव करना उचित न था। आपके पास क्या प्रमाण है कि दानपत्र मैंनेही लिया है ?

मि० जॉन। (बहुतही क्रोधित होकर) विलिफ़्ड ! मुझे निश्चय है कि यह काम तुम्हीं ने किया है।

विलिफ़्ड०। बिल्कुल झूठ।

मि० जॉन। अब तुम मुझे उस बात के कह देने पर लाचार करते हो जो मैं जानता हूं। वह केवल मेरा सन्देह और संशयही न था कि कोई आदमी मेरे कमरे में आया और चला गया; अब मुझे विश्वास हो गया कि मेरे कमरे में तुम्हीं आए थे और मेरे कोट की जेब से कुञ्जी निकाल कर दानपत्र को तुम्हीं ने चुराया था, और जब मैं लाश के कमरे में गया तो मुझे धोखा देने के लिए तुम मरे हुए मिष्टर जॉर्ज की प्रार्थना करने लगे; जब मेरे साथ मेरे कमरे में आए तो मेरे कोट के पास बैठकर तुमने जेब में कुञ्जी डाल दी।

ब्यूशम्प। दुष्ट ! बेईमान ! यह तेराही काम है।

एटर्नी०। निस्सन्देह यह इसी का काम है। दुःख की

बात है कि यह अपनी दुष्टता नहीं छोड़ता है।

क्लिफ़ूड। (अकड़कर) आप लोग व्यर्थ की बकवाद जाने दीजिए। यदि आपके पास कोई दानपत्र हो तो दिखलाइए, नहीं तो यह कहिए कि कानून के अनुसार इस सम्पत्ति का अधिकारी कौन होगा।

मि० जॉन। तब तो सच्चे को हर्ष और झूठे को दण्ड अवश्य मिलेगा।

यह कहतेही मिष्टर जॉन ने पहला दानपत्र निकालकर टेबुल पर फेंक दिया। मिष्टर जान्सन ने उसको तुरन्त उठा लिया। क्लिफ़ूड ने यह देखतेही एक चीख मारी और चाहता था कि दानपत्र को लेकर फाड़ डाले, परन्तु वह कुछभी न कर सका।

छठां प्रकरण।

इस दूसरे दानपत्र के प्रगट होतेही सब दर्शकों पर एक प्रकार का सन्नाटा छा गया, और जब क्लिफ़ूड उसको पा न सका तो उसने एक लम्बी साँस खींची और चुप होकर वह बैठ गया, और आपही आप निराश होकर कहने लगा, "हाय! मैंने उस दानपत्र को चुराया था तो उसे जला क्यों डाला......निस्सन्देह लालची लोग ऐसेही कष्ट भोगते हैं।"

बेचारी "मे" ने जो चचा की मृत्यु से बहुतही उदास बैठी थी, जब यह बात सुनी तो उसकी आँखों में आँसू भर आए। मिष्टर जॉन बहुत ही उदास और दुःखित होकर कहने लगे, "ईश्वर! मुझे क्षमाकर। हाय! मैंने क्यों ऐसा बुरा भला कहा, और क्यों यह दानपत्र दिखा दिया।"

मि० जॉन्सन। आप दुःखित न हों। ईश्वर ने उचित

न्याय कर दिया है, सच्चे को सच्चा और झूठे को झूठा कर दिखाया है।

थोड़ी देर तक विल्फ़्रेड चुपचाप बैठा रहा, इसके बाद सहसा खड़ा होगया और कहने लगा, "सब बातों में मुझको दुष्टता दिखाई देती है। मैं शपथ खाकर कहता हूं कि अपना हिस्सा अवश्य लूंगा।"

एटर्नी। मैं आपको सावधान किए देता हूं कि आप चुप रहिए। यदि आपने फिर ऐसी कोई बात मुंह से निकाली तो पुलिस में खबर करके मैं आपको बड़े घर भिजवा दूंगा।

विल्फ़्रेड। (पागलों की तरह उद्दण्डता से) मालूम होता है कि चचाजी के मरने के बाद यह जाली दानपत्र बनाया गया है।

एटर्नी। बस चुप रहो; यदि अपना हिस्सा लेना चाहते हो तो दानपत्र लाकर शीघ्र दिखाओ; नहीं तो जो दानपत्र इस समय हमारे हाथ में है उसी के अनुसार सब काम होंगे।

यह सुनकर व्यूशम्प कुछ कहने को था कि कर्नल विल्सिस ने झुककर उसके कान में कहा, "पहले सुनलो कि इस दानपत्र के अनुसार हिस्सा लगने से कुछ हम लोगों का भी लाभ है या नहीं। यह बात मालूम हो जाने के बाद जो कुछ उचित होगा, किया जायगा।"

व्यूशम्प। बहुत अच्छा।

कर्नल विल्स०। (सबका ध्यान दिलाकर) मैं चाहता हूं कि मिष्टर जॉन्सन एटर्नी इस समय सबके सामने इस दानपत्र को पढ़कर सुना दें (विल्फ़्रेड से) आप थोड़ी देर के वास्ते चुप रहिए। सब काम सर्कारी कानून के अनुसार किए जायँगे।

सब चुप होगए और एटर्नी महोदय ने दानपत्र को पढ़ना

आरम्भ किया।

" साहबो और बीबियो ! छः महीने हुए कि मैंने इस दानपत्र को मृत मिष्टर जॉर्ज के आज्ञानुसार लिखा था। किङ्गमूगेट और एडिङ्गटन, इन दोनों गिर्जों के पादरी इस बात के साक्षी हैं। उन दोनों महाशयों को अच्छी तरह समझा दिया गया था कि इस दानपत्र की बात किसी के आगे न खोलें, और उन्होंने ऐसाही किया। अब मैं दानपत्र पढ़ता हूं; आप सब महाशय ध्यान देकर सुनें। " इतना कह कर मिष्टर जॉन्सन ने दानपत्र पढ़ना आरम्भ किया।

जब कर्नल विलासिस और न्यूशम्प ने स्वयं कुछ नहीं और अपनी लड़कियों को बहुत थोड़े २ रुपए का अधिकारिणी पाया तो वे बहुत क्रुद्ध हुए और मन में कहने लगे, " इस बुड्ढे ने हमको बहुत धोका दिया। अब तो दुष्ट मर गया; यदि सामने होता तो अच्छी तरह उसकी खबर ली जाती। "

जब दानपत्र समाप्त हुआ तो कर्नल विलासिस ने मिष्टर जॉन्सन से दूसरे दानपत्र का विषय भी सुनाने के लिए कहा, और मिष्टर जॉन्सन ने यह बता दिया कि दूसरे दानपत्र में क्या लिखा था।

कर्नल विलासिस और न्यूशम्प ने देखा कि दोनों दानपत्रों में उनके नाम नहीं है, और लड़कियों के वास्ते भी दोनों में बहुत कम रुपया लिखा है, तब तो कुछ सोच समझ कर कहने लगे कि " यही दानपत्र ठीक है; " और दोनों ने विलिफ्रूड की ओर से मुंह फेर लिया।

जब पहला दानपत्र जिसको विलिफ्रूड ने चुराकर जला डाला था, न निकला तो यही पुराना दानपत्र जिसमें मे-मिडिल्टन

सब सम्पत्ति और जमीन्दारी की अधिकारिणी बनाई गई थी, ठीक माना गया।

सातवां प्रकरण।

अब तो चारो ओर से बधाई की बौछाड़ आने लगी, और जिस ओर देखिए उसी ओर मे-मिडिल्टन की प्रशंसा हो रही है। यद्यपि कर्नल बिलासिस और ट्यूशम्प बड़े सोच में थे और इतने झल्लाए हुए थे कि मनही मन बेचारे मिष्टर जॉर्ज को सैकड़ों गालियाँ दे रहे थे, परन्तु अवसर देख कर वे भी मिस मिडिल्टन के पास आए और बनावट के साथ उसको बधाई देने तथा उसकी चापलूसी करने लगे। मिष्टर जॉन्सन एटर्नी ने भी उसको बधाई दी और आशीर्बाद दिया।

पाठकों को स्मरण होगा, दानपत्र में लिख था कि मिष्टर जॉर्ज के मरने के बादही से मे-मिडिल्टन को एप्सली कोर्ट की बड़ी कोठी में रहना चाहिए। यही सोचकर वह अपने पिता को दूसरे कमरे में ले गई और बोली, "क्या अब सचमुचही सब काम इसी दानपत्र के अनुसार होंगे?"

मि० जॉन। हां बेटी! और हम भी तुमको बधाई देते हैं, क्योंकि बिल्फ्रिड ने ऐसी दुष्टता की है कि उसको कुछ न देना चाहिए।

मे०। पिताजी! यह तो ठीक है, परन्तु आपही कहें कि हम लोगों का क्या इरादा था। क्या हम सब की यह इच्छा थी कि दूसरा दानपत्र नष्ट हो जाय और हम यह सब धन सम्पत्ति पावें? नहीं, कदापि नहीं, बल्कि हमारेही कहने से स्वर्गवासी चचाजी ने दूसरा पानपत्र लिखवाया था; अतएव उसी

दूसरे दानपत्र के अनुसार सब काम होने चाहिएँ, और विल्फ्रिड ही को इस सम्पूर्ण सम्पत्ति का स्वामी बनाना चाहिए।

मि० जॉन। (लड़की को सिर से पैर तक देखकर) बेटी! सच बता, क्या तू अब भी विल्फ्रिड को प्यार करती है!

मे०। पिताजी! वह तो एक स्वप्न था जो भङ्ग हो गया, और अब उसका ध्यान भी मेरे हृदय में नहीं है।

मि० जॉन। (आशीर्वाद देकर) तुम्हारा यह उत्तर सुनकर मैं बहुतही सन्तुष्ट हुआ, परन्तु यदि तुम इसके विरुद्ध कहतीं तो निश्चय जानो कि मुझे बहुत दुःख होता। विल्फ्रिड चोर है, पाजी है, दुष्ट है, बेईमान है, नालायक है, निर्लज्ज है। उसकी रग २ में बदमाशी कूट २ कर भरी है। वह भले-आदमियों के समाज में बैठने के योग्य नहीं है। ऐसे मनुष्य को इतना धन दे देना बिल्कुल बुद्धि के विपरीत है। हमने जो उस समय भाई मिष्टर जॉर्ज से बहुत कुछ कहा, वह यह सोच कर कहा था कि अब उसने सीधा मार्ग पकड़ा है और बुरे से भला बन गया है, परन्तु वह हमारी भूल थी। सत्य है कि दुष्ट कभी अपने दुष्टपने को नहीं त्यागता। मुझे विश्वास है कि यदि उसको यह सब धन दे दिया जायगा तो चार दिन के बाद उसके पास एक पैसा भी न रहेगा।

मे०। निस्सन्देह, आप सत्य कहते हैं।

मि० जॉन। अब तो बेटी, तुम्हें धीरज धरना चाहिए। अब मैं जाता हूं और विल्फ्रिड से कहता हूं कि कल सुबह तक वह यहां से चला जाय; नहीं तो निकाला जायगा।

यह कहकर मिष्टर जॉन चले गए और "मे" अकेली रह गई, उस समय वह आपही आप कहने लगी, "जगदीश्वर! तेरी

माया अपरम्पार है! तू किसी को क्षण में राज्यासन से उतार कर भिखारी बना दे सकता है और एकही पल में किसी भिखारी को राज्य दे सकता है। तुझसे बढ़कर बना २ कर बिगाड़ने और बिगाड़ २ कर बनानेवाला दूसरा कोई नहीं है। तू धन्य है!"

सोचते २ मे-मिडिलन को उन भविष्यद्वक्त्री स्त्रियों की भविष्यद्वाणी भी याद आगई और वह सिर झुकाकर आपही आप कहने लगी, "अब मुझको भी कुछ २ विश्वास हो चला कि यह विद्या निस्सन्देह सत्य है। देखिए, उनका यह कहना कि मैं बहुत धन की स्वामिनी होऊंगी, सत्य निकला।"

थोड़ी देर तक वह इसी प्रकार मनही मन बातें करती रही और अपने ध्यान में डूबी हुई थी। इसके पश्चात् उस कमरे से उठकर वहीं जा बैठी जहां सब लोग बैठे थे। मिष्टर जॉन ने धीरे से उससे कहा, "सुना बेटी! हमें विल्फ्रिड से स्वयं कुछ कहना नहीं पड़ा, वह आपही चला गया और जाते समय कहता गया कि पाँच हजार रुपये जो इस दानपत्र में मेरे वास्ते लिखे हैं, उन्हें आप लन्दन में किसी महाजन के नाम हुण्डी कर दीजिएगा। इससे जान पड़ता है कि वह अब किसी तरह का झगड़ा न करेगा और हर्ष है कि हम कचहरी तक दौड़ने और वकीलों की चापलूसी करने से बच गए। तुम अब जाकर बगीचे की सैर करो। मुझे तुम बहुतही घबराई हुई जान पड़ती हो, कदाचित् बाग की ठण्ढी हवा से चित्त प्रसन्न होगा।"

यह राय "मे" को बहुत पसन्द आई, और घरसे निकल कर वह बगीचे की ओर चली गई; बगीचे में पहुंचकर वह इधर उधर टहलने लगी। जिस भाँति वह बाग की पटरियों पर घूमती रही उसी भाँति उसका ध्यान भी दूर २ का चक्कर लगा रहा

था। सहसा वह देखती क्या है कि विल्फ्रिड सामने खड़ा है और बड़ी नम्रता से हाथ जोड़कर कह रहा है कि "मुझ अभागे के मुंह से केवल एक शब्द सुन लो। तुम्हारे सामने एक पापी, अपराधी, अभागा और बुद्धिहीन मनुष्य खड़ा है। कृपया, जो कुछ मैं कहता हूं उसे एक बार सुन लो।"

"मे" को उसके रो २ कर प्रार्थना करने पर दया आ गई, और वह उसकी वर्त्तमान अवस्था पर दुःख प्रगट करती हुई कहने लगी, "सुनो विल्फ्रिड ! मैं केवल एक मिनिट के लिए मैं ठहर सकती हूं; तुम्हारी इस अवस्था पर मुझे दया आती है।"

विल्फ्रिड। एस्मूली-कोर्ट से मैं यही सोचकर यहां चला आया कि तुम अवश्यही इस समय यहां आओगी। मैं यहां से जाकर पास के एक गांव में उतरा और एक किराए के घोड़े को एक पेड़ से बाँधकर तुम्हारी बाट जोहने लगा। ईश्वर का सहस्र २ धन्यवाद है कि तुम भी यहां आ गई। ईश्वर के वास्ते मुझसे रुष्ट न हो जाना। तुम्हें अपनीही शपथ दिलाकर कहता हूं कि प्यारी "मे" ! जो कुछ मैं कहूं उसे सुनकर चली मत जाना।

मे०। विल्फ्रिड ! यदि तुम्हारा यही मतलब है तो मैं स्पष्ट कहे देती हूं कि तुम्हारा कहना मैं कदापि न सुनूंगी।

विल्फ्रिड। मुझे कहना अवश्य है और उसी प्रकार तुम्हें भी उचित है कि सुन लो। यदि तुम मुझे कभी भी प्यार करती थीं तो अवश्य सुन लोगी, क्योंकि तुम्हारे हृदय में मेरा प्रेम था।

मे०। (क्रोध से) देखो, दूसरा शब्द मैं नहीं सुनना चाहती; तुम इसी समय यहां से चले जाओ।

विल्फ्रिड। (रोकर) मैं तुम्हारे पांव पकड़कर और हाथ जोड़कर कहता हूं कि थोड़ी देर ठहर कर सुन लो।

मे०। नहीं, २ बस मैंने कह दिया है कि चले जाओ। क्या मुझे अप्रतिष्ठित करोगे या मेरा सतीत्व नष्ट करना चाहते हो?

विल्फ्रिड। एक बात का तो तुम्हें अवश्यही उत्तर देना पड़ेगा। क्या वह प्रेम जो पहले तुमको मेरे साथ था एक-बारही तुम्हारे हृदय से दूर हो गया?

मे०। हां २ एकबारही दूर हो गया; अब उसका चिन्ह भी नहीं बाकी है।

विल्फ्रिड। तब तो मैं ईश्वर की शपथ दिलाकर कहता हूं कि तुम्हें अवश्य सुनना होगा। अब निश्चय जानो कि मैं तुम्हारे प्राण का शत्रु हो गया हूं; मैं जैसेही तुम्हें पहले प्यार करता था, वैसेही अब तुमसे घृणा करता हूं।

मे०। (और क्रोध से) बस २, बहुत कह चुके; अब मैं नहीं सुन सकती।

विल्फ्रिड। ("मे" का हाथ जोर से पकड़कर) नहीं २, मैं जो कुछ कहूं वह सब सुनना होगा। ऐं! तुम जोर लगाती हो! भला यह तो समझो कि मुझसे जीत सकती हो? और चिल्लाने से क्या लाभ? क्या यहां कोई बैठा है जो तुम्हारी सहायता को दौड़ा आवेगा?

मे०। बहुतही क्रोध से) उंह, देखो मुझे छोड़ दो; नहीं मानते हो?

विल्फ्रिड। नहीं, अब तो मैं बिना अपनी इच्छा पूर्ण किए नहीं छोडूंगा।

दोनों में हाथाबाहीं होने लगी। "मे" तो भागने की चेष्टा करने लगी और विल्फ्रिड उसे रोककर चाहता था कि अपनी इच्छा पूर्ण करे। अन्त मे—मिडिल्टन अचेत होकर गिर

पड़ी। इतने में हठात् कोई आदमी पीछे से आया और उसने आतेही विल्फ्रिड की पीठ पर इस जोर से एक घूंसा मारा कि वह औंधे मुंह घास पर गिर पड़ा। उस व्यक्ति ने तुरन्त "मे" को, जो अचेत पड़ी थी, गोद में उठा लिया और एप्सूली-कोर्ट में पहुँचा दिया।

मे-मिडिल्टन जब होश में आई तो उसने अपने को एक पलँग पर पड़ी पाया और देखा कि उसके पूज्यपाद पिता मिष्टर जॉन और कई नौकर चाकर उसको चारो ओर से घेरे खड़े हैं। थोड़ी देर के पश्चात् जब उसका जी कुछ ठहरा तो उसने सारा हाल अपने पिता के आगे कहा, और अन्त में वह पूछने लगी, "मुझे यहां कौन उठा लाया और आप लोगों को मेरा हाल कैसे मालूम हुआ?"

मिष्टर जॉन ने पहले तो उसे धीरज धराया, फिर कहा कि "एक नौकर किसी काम के वास्ते बगीचे के पीछे की ओर जो द्वार है, उस रास्ते से जा रहा था तो उसने देखा कि एक आदमी किसी औरत को गोद में लिए चला आता है। जब वह पास पहुँचा तो उसने नौकर को देख कर कहा कि 'यह बेहोश हो गई थीं। मैंने इन्हें उठाकर तुम्हारे पास पहुँचा दिया, अब जो कुछ तुम उचित जानो, करो।' नौकर तुम्हारा मुंह देखतेही घबरा उठा और उसने आकर कोठी के कमरे का द्वार खोल दिया तो वह व्यक्ति तुम्हें यहां लिटाकर चला गया। घबराहट में नौकर ने उसे पहचाना भी नहीं कि वह कौन था।

आठवां प्रकरण

विल्फ्रिड, वह चोट खाकर वहां पर देर तक पड़ा रहा । कुछ देर के पश्चात् जब वह सचेत हुआ तो उसने सोचा कि अब इस जगह ठहरना किसी प्रकार उचित नहीं है; अतः गिरता पड़ता वहां पहुँचा जहां घोड़ा बांध आया था । जल्दी से घोड़े पर सवार हुआ और उस गांव की सरा की ओर चला जहां से घोड़ा भाड़े पर लाया था ।

इस समय रात है; दस बज गए है और सारे जगत् में सन्नाटा छाया हुआ है । हां, गीदड़ों की चिल्लाहट और उनके चिल्लाने पर कुत्तों के भौंकने का शब्द अवश्यही दूर २ तक सुनाई देता है । दूकानों के दीए बिल्कुल बुझ गए हैं और सड़कों पर अचानक कोई इक्का दुक्का आदमी दिखाई दे जाता है । चतुर्दशी का चन्द्रमा संसार भर पर अपनी उज्ज्वल उजियाली डाले हुए है; जिसके तेज के आगे छोटे २ तारे ऐसे फीके जान पड़ते हैं कि मानो वे लज्जित होकर अपनी आखें बन्द किए लेते हैं।

ऐसे समय में बिल्फ्रिड सरा में पहुँचा; घोड़े से उतरा और जिस कमरे को भाड़े पर लिया था उसकी ओर चला। मार्ग में सरा का एक भठियारा (inn-keeper) आकर मिला और वड़े अदब से कहने लगा, "आपही विल्फ्रिड-मिडिल्टन है न ?"

विल्फ्रिड । (घबराकर) हां, हूं तो मैंही, लेकिन तुम क्यों पूछते हो ?

भठियारा । इससे पहले कि आप अपने कमरे में जायँ, कृपया आप एक मेम-साहिबा से मिललें जो आप से कुछ कहना चाहती है ।

विल्फ्रिड तुरन्त समझ गया कि वह मेम-साहिबा कौन है;

जी में बहुत घबराया, परन्तु लाचार था, क्या करता; कहने लगा, "तुम चलो, मैं आता हूं।" परन्तु नौकर ने उसको उस कमरे के द्वार तक जिसमें वह मेम-साहिबा बैठी थीं, पहुँचा कर तभी उसका पीछा छोड़ा।

कमरे के भीतर एक स्त्री कुर्सी पर सिर झुकाए बैठी थी। विल्फ्रिड को आते देखकर वह मुस्कुराई और कहने लगी, "अब तो आप की सब आशाएँ टूट गईं और सब उपाय निरर्थक हुए ?"

विल्फ्रिड। तो क्या इससे तुम्हें हर्ष हुआ ? क्या तुम नहीं जानती हो कि हमारी हानि से तुम्हारी भी हानि है ?

औरत। यह तुम सच कहते हो, परन्तु मैं उतनी निराश नहीं हो गई हूं जितने तुम हुए हो, क्योंकि मुझे पहलेही से निश्चय था कि तुम्हारे किए कुछ न होगा।

विल्फ्रिड। अस्तु जो हुआ सो हुआ, अब कहो तुम यहां किस कारण आई हो और मुझको तुमने क्यों बुलाया है ?

औरत। जब से मेरे मरने की बात प्रसिद्ध हुई और मुर्दों में मेरी गणना होने लगी, उस समय से मैंने यहां पासही के एक गांव में रहना आरम्भ किया है और तबसे प्रति दिन मैं मिष्टर जॉन के घर की बातें मालूम किया करती हूं। आज तीसरे पहर को समाचार मिला है कि मे-मिडिल्टन, मिष्टर जॉर्ज की सम्पूर्ण सम्पत्ति की स्वामिनी मानी गई है और तुमने भी कुछ थोड़ासा पा लिया है। यह सुनतेही मुझे विश्वास हो गया कि तुम एप्सली कोर्ट से विदा होकर इस सराय में अवश्य ठहरोगे। यह सोचकर मैं तुरन्त यहां आई और तुम्हारे वास्ते ठहरी रही। तुम्हारा सब उद्योग नष्ट हो गया तो अब मैं अपने को जीवित प्रसिद्ध कर सकती हूं या नहीं ?

बिल्फ्रिड । निस्सन्देह मैं कृतकार्य्य नहीं हुआ परन्तु (झुंझला कर) देखो रोसालिण्ड! यदि तुम मुझे इस तरह सताओगी तो मैं भी तुम्हारे साथ बुरा बर्ताव करूंगा ।

रोसालिण्ड । (मस्कुराकर) मुझे इस बात पर आश्चर्य्य होता है कि इस प्रकार काम न बनने पर भी हमलोग परस्पर लड़ मरते हैं । देखो, तुमने जो कहा मैंने वही किया; तुम्हारा काम बनाने के लिए मैंने बड़े २ उद्योग किए हैं ।

विल्फ्रिड । (कुछ देर तक सोचकर) अच्छा अब हम दोनों एक हृदय और एक मुंह होकर बातें करें और दोनों की सम्मति से सब काम हों ।

रोसालिण्ड । आठ महीने होने को आए हमने और तुमने मिलकर मिष्टर जॉन के गांव वाले मकान में जो चालाकी * करने का उद्योग किया था वह न बनी, और तुम मिस मिडिल्टन के साथ ब्याह न करने पाए, फिर लन्दन जाकर तुमने हमसे सलाह करके दूसरी युक्ति की और मुझसे कहा कि तुम अपने मरजाने की बात प्रसिद्ध कर दो । इस बात में तुमने बड़ा उद्योग किया और लोगों को कुछ घूस देकर उनसे कहला भी दिया कि हां रोसालिण्ड मर गई हैं ।

बिल्फ्रिड । (घबरा कर) अच्छा तो इन बातों से अब क्या लाभ ?

रोसालिण्ड । मैं चाहती हूं कि पहले बीती हुई सब बातें कह लूं, तब उसके पश्चात् हम दोनों मिलकर कोई नई बात सोचेंगे ।

विल्फ्रिड । अच्छा तो कहो ।

रोसालिण्ड । उस समय तुम्हारे दो मतलब थे । एक तो

---

* देखिए " किसान की बेटी " प्रथम भाग का आठवाँ प्रकरण ।

यह कि तुम चाहते थे कि अपने पितृव्य (चचा) मिष्टर जॉर्ज को अपने ऊपर प्रसन्न करके उनकी सब सम्पत्ति के अधिकारी बनो। दूसरे यह कि वह अपनी जायदाद मे-मिडिल्टन को देंतो किसी प्रकार सबको धोका देकर तुम उससे अपना विवाह करो। तुमने हमसे प्रतिज्ञा की थी कि यदि पहला मतलब पूरा हुआ तो मै फिरसे अपने को जीवित प्रसिद्ध कर सकूंगी और तुम्हारे धन से लाभ उठाऊंगी और खर्च करुंगी, और यदि मतलब न पूरा हुआ तो उसी तरह अपने को मरी हुई प्रसिद्ध किए रहूंगी और तुम बराबर ७००) वार्षिक देते रहकर मेरी सहायता करते रहोगे; परन्तु मैंने सुन लिया कि दोनों में से तुम्हारा एक भी मतलब पूर्ण न हुआ। मे-मिडिल्टन मिष्टर जॉर्ज के धन की स्वामिनी होगई और तुम्हारे साथ विवाह करने का प्रस्ताव भी उसने अस्वीकृत कर दिया।

विल्फ्रिड। हां, और तुमने कुछ और भी सुना है कि दानपत्र पढ़ने के समय कोई नई बात हुई थी?

रोसालिण्ड। नहीं, मुझको जो मालूम था मैंने तुमसे कह दिया।

विल्फ्रिड। (आपही आप) कहीं ऐसा न हो कि दानपत्र के गायब हो जाने की बात भी प्रसिद्ध होजाय; इसमें मिडिल्टन खान्दान की अप्रतिष्ठा है (फिर रोसालिण्ड से) लेकिन जब यही ठहर गई कि हम दोनों मिलकर काम करें तो तुमसे सब हाल कह देना बहुतही आवश्यक है। आह! मेरे समान बुद्धिहीन और मूर्ख इस जगत में दूसरा कोई न होगा! आज हम लोग लाख रुपए और उस बड़े महल के मालिक होते; इलाके भर में हमारे नाम का डङ्का बजता होता, और हमारे ही नाम

की दुहाई दी जाती होती ! एक दानपत्र हमारे अनुकूल लिखा गया था, परन्तु हाय ! लालच कैसी बुरी बला है ! उसको हमने चुराकर जला डाला ।

रोसालिण्ड । (आश्चर्य से) क्या तुमने जला डाला ?

विल्फ्रिड । (रोकर) हां २, मैं ही ने जला डाला । हे भगवान् ! अब हम क्या करें, किधर जायँ ! (सिर पर दुहत्थड़ मारकर) हाय ! मैं तो लुट गया; कहीं का न रहा ।

रोसालिण्ड । सुनो, मैं भी किसी समय में थिएटर की एक्ट्रेस् थी, परन्तु यह समय " एक्ट " करने का नहीं है; तुम्हारे रोने या शिर पकड़ने से कुछ लाभ न होगा । तुम यह बताओ कि जब तुम मिस-मिडिल्टन से मिले तो उसने तुमसे क्या कहा ?

विल्फ्रिड । उसके सामने भी मैं दुर्भाग्यवश सिड़ी हो गया था । उससे अनुनय विनय और प्रार्थना न करके मैंने उसपर क्रोध दिखाया और डाँट डपट कर उसे और भी रुष्ट कर दिया (कोई बात याद करके) परन्तु वहां एक विचित्र बात हुई, जिस समय मैंने " मे " का हाथ पकड़ा और मुझ से उससे हाथावाहीं हो रही थी कि ठीक उसी समय किसी ने पीछे से आकर इस जोर से घूँसा मारा कि मैं अचेत होके गिर पड़ा ।

रोसालिण्ड । (विस्मय से) वह कौन था !

विल्फ्रिड । मैं बिलकुल न पहचान सका । यह बात ऐसी शीघ्रता से हुई कि मैं उस मनुष्य को किसी प्रकार देख न सका । अब मैंने तुमसे सब वृत्तान्त कह दिया; जो कुछ तुम्हारी

समझ में आवे तुम भी कहो। मारे दुःख के मुझको तो कोई बात सूझती नहीं।

रोसालिण्ड। मैंने सुना है कि तुम पांच हजार रुपया पाओगे। यह रुपया तुम्हें कब मिलेगा ?

विल्फ्रिड। कदाचित् दो एक दिन में मिल जाय। जब दानपत्र को सब लोगों ने स्वीकार कर लिया है तो सब काम शीघ्रही समाप्त होंगे।

रोसालिण्ड। मैं जानती हूं, लेकिन तुम्हारे उस कारखाने की क्या दशा है ?

विल्फ्रिड। तुम तो स्वयं जानती हो कि ऐसे कामों में कभी मेरा जी नहीं लगता। उस समय मैंने विवश हो कर नाम मात्र के लिए मिष्टर जॉर्ज को प्रसन्न करने के निमित्त यह बोझ अपने शिर पर ले लिया था। अब वही नहीं रहे तो इतना बखेड़ा कौन शिर पर ले। मैं तो अब लन्दन जाकर सब माल अस्बाब बेच के नकद रुपया बना लूंगा; परन्तु यह बताओ कि तुमने क्या उपाय सोचा है ?

रोसालिण्ड। मैं किसी बात की प्रतिज्ञा नहीं कर सकती, परन्तु हां इतना कहती हूं कि जहां तक बनेगा अवश्य उद्योग करूंगी। पहले तुम मिष्टर जॉन और उनकी पुत्री का हाल मुझसे कहो।

विल्फ्रिड। मिष्टर जॉन बड़ेही सीधे सादे और भलेआदमी हैं। उनमें एक विशेषता यह है कि वह अपनेही समान सब मनुष्यों को सरलचित्त समझते हैं; वह किसी को बुरी दृष्टि से नहीं देखते और न किसी की निन्दाही चाहते हैं। मिस-मिडिल्टन में भी उसके पिता के सब लक्षण वर्त्तमान हैं; क्योंकि देखो मिष्टर

जॉन ने उससे कहा कि " तुम रूबन बेलिस के साथ विवाह कर लो। " यद्यपि यह बात उसकी इच्छा के विरुद्ध थी, तथापि यही सोच कर कि यह पूज्यपाद पिताजी की आज्ञा है, उसने वह बात स्वीकार की।

रोसालिण्ड। मुझसे रूबन का हाल भी कहो कि वह कौन है और कैसा आदमी है।

इसपर विल्फ्रिड ने रूबन का " मे " पर आसक्त होना और अन्त में गायब हो जाना, यह सब हाल कह दिया।

रोसालिण्ड। (देर तक उन बातों को बड़े ध्यान से सुनकर) अच्छा, मैंने यह स्थिर कर लिया कि मुझे क्या करना चाहिए।

विल्फ्रिड। क्या स्थिर कर लिया ?

रोसालिण्ड। देखो, अभी मुझसे कुछ न पूछो, मैं अभी तुमसे कुछ न कहूंगी। अपनी मूर्खता से तुम स्वयं तो अपना काम करही न सके अब हमारे काम में हस्तक्षेप करके उसमें विघ्न डालना चाहते हो। थोड़े दिन अभी और मैं अपने को मरी हुई प्रसिद्ध किए रहूंगी, परन्तु हां तुम्हें मुझको कुछ रुपए देने पड़ेंगे और जब तक यह काम समाप्त न हो जाय तबतक समय २ पर मेरी सहायता करनी पड़ेगी। तुम तो इन पाँच सहस्र रुपयों को हवा के घोड़े पर सवार होकर थोड़ेही काल में उड़ा डालोगे और मुझे अन्त में चुप होना पड़ेगा, इसलिए उचित यही है कि मुझे पहलेही से एक हजार दे दो।

विल्फ्रिड। एक हजार ! ओह ! अपनी सम्पत्ति का पाँचवा हिस्सा !

रोसालिण्ड। जैसी तुम्हारी इच्छा। अच्छा यदि हो सके तो अपना काम आपही कर लो।

विलिफ्रिड। भला मैं यह तो जानूं कि इस रुपए को लेकर तुम क्या काररवाई करोगी।

रोसालिण्ड। अभी तो मैं कदापि न बताऊंगी; मेरे काम में विघ्न उपस्थित हो जायँगे, लेकिन सोचो कि यदि मेरा उद्योग सफल हुआ तो इस एक हजार रुपए के बदले में तुमको कितना लाभ होगा।

विलिफ्रिड। मैं इतना कहना भूल गया था कि उस दान-पत्र में यह भी लिखा है कि जबतक मे-मिडिल्टन इक्कीस वर्ष की (बालिग) न हो, तब तक उसको विवाह न करना चाहिए।

रोसालिण्ड। अभी वह कितनी बड़ी होगी ?

विलिफ्रिड। कदाचित् यह अठारहवाँ वर्ष है।

रोसालिण्ड। (प्रसन्न होकर) तो अभी बहुत समय है। मुझे विश्वास होगया कि मैं अवश्य सफलमनोरथ होऊंगी; परन्तु यह बताओ कि अब तुम्हारा क्या इरादा है ? मुझे हजार रुपया दोगे ?

विलिफ्रिड मन में सोचने लगा कि रोसालिण्ड धोका देकर तो रुपया नहीं लेना चाहती, और क्या आश्चर्य कि वह जैसा कहती है वैसाही करे।

रोसालिण्ड। (उसको चुप देखकर) मैं समझ गई कि इस समय तुम क्या सोच रहे हो। जो इरादा हो वह स्पष्ट बता दो; मुझे रुपया दोगे या नहीं ? क्या तुम इतना भी नहीं समझ सकते कि तुम्हारे लाभ से मेरा भी लाभ है ?

विल्फिड। (कुछ देर तक और सोचकर) अच्छा, लो मैं तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार करता हूं, लेकिन क्या तुम मुझे यह कदापि न बताओगी कि तुम यह रुपया लेकर क्या करोगी?

रोसालिण्ड। कदापि नहीं। सुनो, अभी मैं इसी सराय में रहूंगी और तुमको यहां से तुरन्त चला जाना पड़ेगा (हँसकर) यहां कोई भी नहीं जानता कि हम तुम पति पत्नी हैं।

रोसालिण्ड की इस बातचीत से विल्फिड का चित्त कुछ शान्त हुआ और उसके कहने के अनुसार उसने गाड़ी तय्यार करने की आज्ञा दे दी।

रात अधिक आ चुकी थी और बारह बज गए थे। चारो ओर गहरा सन्नाटा छाया हुआ था। चन्द्रदेव अस्त हो गए थे और संसार में उजियाली पहुँचाने वाले छोटे २ तारे भी डूब गए थे। हवा बहुत तेज चल रही थी और घनघोर घटाएँ छाई हुई थीं। गहरी अँधियारी में आने जाने वालों को रास्ता दिखाने के लिये रह २ कर बिजली भी चमक जाती थी। वह ऊँचा पेड़, जो अपने आस पास के छोटे २ वृक्षों को देखकर अपनी उँचाई के घमण्ड में इतराने लगता था, आज वह भी बादलों की गरज और बिजली की कड़कड़ाहट से चीख २ और काँप २ उठता है; परन्तु विल्फिड ने इन बातों पर कुछ भी लक्ष न किया। वह उस सराय से निकल कर अपने फूटे भाग्य पर आँसू बहता हुआ, गाड़ी के घोड़ों को दौड़ाकर चला गया॥

नौवां प्रकरण।

दो महीने बीत गए और मे-मिडिल्टन एप्प्लीकोर्ट में आकर रहने लगी, और उस गांव के धनी एवं प्रतिष्ठित लोग

उससे मिलने के लिए आने लगे। बड़े २ लॉर्डों और ड्यूक लोगों के लड़कों की दृष्टि प्यार से उसके मनोहर मुखड़े पर पड़ती थी, और सबकी यही इच्छा होती थी कि इस सुन्दरी को योंहीं देखा करें। कर्नल विलाविस और व्यूशम्प भी कुछ दिन ठहर कर अपने घर जाचुके थे, और जॉन्सन एटर्नी ने दानपत्र के अनुसार सब काम समाप्त कर दिए थे। मिष्टर जॉर्ज के मरने के बाद कोई विशेष धूमधाम नहीं की गई, परन्तु जो कोई मिलने आता वह मे-मिडिल्टन की मीठी २ बातोंही से प्रसन्न हो जाता था, क्योंकि उसके स्वर्गवासी चचा मिष्टर जॉर्ज उसे समझा गए थे कि किससे किस प्रकार मिलना चाहिए और किसके साथ कैसा वर्ताव करना चाहिए।

एप्सली-कोर्ट के कुछ अन्तर पर एक छोटा सा बंगला था जिसके चारो ओर खुला हुआ मैदान था और उस मैदान में प्रकृति ने नर्म २ हरी २ घास जमा दी थी, जिसके देखने से ऐसा जान पड़ता था कि मानों हरा कालीन बिछा हुआ है। कुछ फूलों के, और कुछ फलदार पेड़ एक ओर लगे हुए थे, जिनकी छाया में छोटे २ जानवर घूम २ कर घास चरा करते थे; परन्तु इस कारण कि बहुत दिनों से उस बंगले में कोई रहा नहीं था इसलिए उसमें कुछ मरम्मत की आवश्यकता पड़ गई थी। वह बंगला देखने में बहुतही पुराना जान पड़ता था और एप्सली-कोर्ट की मालिकिन अर्थात् मे-मिडिल्टन के अधिकार में था। मिष्टर जॉन ने उस बंगले की दशा देखकर "मे" से कहा था कि वह उसकी मरम्मत कराकर और चारो ओर से उसे अच्छी तरह से सजाकर उसे किसी व्यक्ति को भाड़े पर दे दे। अतएव उनकी आज्ञा के अनुसार उस बंगले की मरम्मत कराई गई और

सजावट की गई। उस बंगले का नाम "उडवर्न-काटेज" था। मरम्मत होजाने के पश्चात् इस बात की डुग्गी पिटवा दी गई थी कि "उडवर्न-काटेज" आजकल खाली है; जिसकी इच्छा हो आकर उसको भाड़े पर लेने की बातचीत करे।

एक दिन तीसरे पहर का समय था; मिष्टर जॉन अपने खेतवाले पुराने घर पर गए थे और मे-मिडिल्टन एप्सली-कोर्ट में अपने कमरे में अकेली बैठी थी, इतने में एक खानसामाँ ने आकर कहा, "एक औरत जिसका नाम मिसेज़ सेण्टजार्ज है उडवर्न-काटेज के बारे में कुछ पूछने आई है और कहती है कि वह उस बंगले को भाड़े पर लेने के लिए बहुत दूर से आई है ऐसा न हो कि लौट जाना पड़े।" यह सुनकर मे-मिडिल्टन ने सोचा कि जब वह बहुत दूर से आई है तो उसे लौटा देना उचित न होगा और नौकर से कहा कि "जाओ उसको मुलाकाती कमरे में ले जाकर बैठाओ; मैं अभी आती हूं।"

इसके पश्चात् मे-मिडिल्टन भी मुलाकाती कमरे में गई और उस औरत को ध्यान-पूर्वक देखने लगी। उसका चेहरा देखते ही मे-मिडिल्टन ने समझ लिया कि यह औरत बड़ी खूबसूरत और किसी की प्यारी स्त्री है। सचमुच वह स्त्री बड़ी ही रूपवती थी। उसकी भौंहें कमान की तरह तिरछी थीं; उसके गाल गुलाब के फूलों को परास्त करते थे; उसका माथा चौड़ा था और उसके काले २ बाल बहुतही शोभा देते थे। उसका पहनावा यद्यपि बहुत भड़कीला न था, परन्तु उसके सुडौल शरीर पर बहुत भला लगता था। इतना सब होने पर भी उसके चेहरे से बड़ी उदासी टपकती थी। उसने मे-मिडिल्टन के आतेही आँसू-भरे नेत्रों से उसकी ओर देखा और

फिर झुककर उसे सलाम किया और कहने लगी, " आपको बड़ा कष्ट हुआ, परन्तु आपने अपने नौकर से सुनाही होगा कि मैं भी बहुत लाचार हूं; अतएव आपसे निवेदन है कि आप मुझे क्षमा करें।"

मे०। क्षमा माँगने की कोई आवश्यकता नहीं है।

मिसेज़ सेण्ट जॉर्ज। आप शोकसूचक वस्त्र पहने हुए हैं! मैंने सुना है कि आपके चचा का देहान्त हो गया है; ऐसी अवस्था में मुझको यहां आना नहीं चाहिए था।

मे०। तुम कदाचित् " उडवर्न-काटेज " के विषय में मुझसे बातचीत करने आई हो ?

मि० से० जॉर्ज। जी हां।

मे-मिडिल्टन ने उस बंगले का भाड़ा बता दिया और कहा, " जब तुम्हें उस बंगले की बड़ी आवश्यकता है और तुम उसमें रहने के लिए आग्रह करती हो तो तुमसे और भी कम भाड़ा लिया जायगा।"

यह बात सुनकर मिसेज़ सेण्ट जॉर्ज ने धन्यवाद दिया और दुःख के साथ कहा, " अब तो दुनिया से जी हट गया। इस संसार में किसी को भी सुख नहीं मिलता।"

इस बात पर 'मे' को बड़ी दया आई और उसने सोचा कि यह बेचारी बहुत दूर से आई है, इसे कुछ खिला भी देना चाहिए; अतएव उसने नौकर को आज्ञा दी कि टेबुल पर भोजन चुना जाय।

जब तक टेबुल पर भोजन के पात्र सजाए गए तब तक " उडवर्न काटेज " का किराया भी तै हो गया। इसके पश्चात् मिसेज़ सेण्टजॉर्ज को भोजन कराया गया।

भोजन के उपरान्त वह कहने लगी, " आपने अभागिनी पर इतनी कृपा दिखाई है तो मैं अपना हाल भी आप से कहदेना आवश्यक समझती हूं । "

, यद्यपि " मे " ने बहुत टाला और कहा कि उसके कहने की कुछ आवश्यकता नहीं है, परन्तु मिसेज़ सेण्ट जॉर्ज ने, चाहे वह सुने या न सुने, अपनी कहानी छेड़ही दी ।

मि० से० जॉर्ज । मेरे पूज्य पिता लन्दन के एक व्यापारी थे और मैं उनकी एकमात्र अभागिनी बालिका हूं । जिस समय मेरी अवस्था सोहल वर्ष की हुई और मैं युवावस्था को प्राप्त हुई, उसी समय (रोकर) अकस्मात् मेरी माता की मृत्यु हुई । उनके स्नेह और उपकार का वृत्तान्त आपसे क्या कहूं ।

मे० । बीती हुई बातों को याद करके दुःखित होना व्यर्थ है । तुम अपने को वृथा हैरान करती हो ।

मि० से० जॉर्ज । नहीं, आप इसकी चिन्ता न करें; मुझे अपनी बेबसी और लाचारी का कुछ हाल अवश्य कहने दें । उनके अर्थात् मां के मरने का मुझे और साथही मेरे पिता को भी बहुत शोक हुआ । उसपर विशेषता यह हुई कि मेरी माता की मृत्यु के साथ २ मेरे पिता के व्यापार को भी बड़ा धक्का पहुँचा और सब कारखाना बिगड़ गया, परन्तु बेचारे ने अत्यन्त कष्ट सहन किया और सब वस्तु बेचकर लहनदारों का रुपया दे दिया । इस घटना के दो वर्ष के पश्चात् फ्रेडरिक सेण्ट जॉर्ज के साथ मेरा विवाह हुआ । वह एक व्यापारी के जहाज के कप्तान थे । उनके सम्बन्धियों में से केवल उनकी एक बूढ़ी मां थीं । विवाह को एक महीना भी न बीतने पाया होगा कि मेरे पति को विवश होकर अपने जहाज के साथ हिन्दुस्थान

जाना पड़ा (आँसू बहाकर) भगवान् जाने किस बुरी घड़ी में हम दोनों एक दूसरे से बिछुड़े कि आज तक जब याद करती हूं, कलेजा फटने लगता है।

मे०। (बहुत ही दुःखित होकर) अब यह बात जानेही दो; व्यर्थ रोने धोने से क्या लाभ।

मि० से० जॉर्ज। नहीं २, आप सुने तो जाइए। मेरे पति के जाने के पश्चात् उनकी मां मेरे पास रहने लगीं। इसके उपरान्त एक महीना भी न बीता होगा कि मेरे पिता बहुत बीमार हो गए और दोही चार दिन पीछे उनका भी देहान्त हुआ।

इतना कहकर मिसेज़ सेण्ट जॉर्ज रुक गईं, क्योंकि उनकी कहानी ने मिस-मिडिल्टन पर ऐसा प्रभाव डाला कि वह फूट २ रोने लगी।

मि० से० जॉर्ज। आह! मिस महाशया! केवल इतनाही नहीं हुआ, वरन दूसरे ही दिन खबर आई कि जिस जहाज पर मेरे प्यारे पति गए थे वह डूब गया (खूब रोकर) हाय! उन बेचारे को मछलियों और समुद्र के अन्यान्य जीवों ने खा डाला होगा। हाय! मैं अभागिनी एकही समय में पितृमातृ-विहीना और विधवा भी हुई! हे ईश्वर! क्या तूने जन्म भर दुःख-सागर में डुबाए रखनेही के लिए मुझे जन्म दिया था? (मे मिडिल्टन की ओर देखकर) मेरी सास यह सम्वाद सुनतेही छाती पीट २ कर रोने लगीं। हाय! जो पुत्र उसका एकमात्र पुत्र था; जिसको क्षणभर के लिए भी आँखों के सामने से दूर होने से उनको महान् कष्ट होता था, उस प्यारे पुत्र के डूब जाने का हाल सुनकर उनको जो कष्ट हुआ उसका हाल या तो मैं जानती हूं या वह जानती थीं। निदान इस समाचार ने

उस वृद्धा पर ऐसा असर पहुँचाया कि वह भी थोड़ेही दिनों में मर गई। अब मैं बेचारी अभागिनी अकेली रह गई; न मेरा कोई सहायक था न शुभचिन्तक। एक पैसा पास नहीं था कि कुछ लेकर अपना पेट भरती। विवश होकर उस समय मुझे सिलाई का काम करना पड़ा, परन्तु दुःख के कारण मेरी ऐसी दशा होगई कि सारा संसार मुझे अन्धकारमय दीखने लगा। ईश्वर की कृपा से एक लेडी महाशया ने मुझपर दया की और उन्होंने अपनी सेवा के लिए मुझे नियुक्त किया। मैं तीन वर्ष तक उनकी सेवा करती रही; इसके पश्चात् वह बेचारी भी अमर लोक को सिधार गईं, परन्तु मुझपर दया करके अपनी सम्पत्ति का आधा भाग मेरे नाम लिखती गईं, और आधी सम्पत्ति को भले कामों में व्यय करने का प्रबन्ध कर गईं (आँसू पोंछकर) अब मैं अपनी कहानी कह चुकी और मुझे हर्ष है कि मैंने आप ऐसी सरलहृदया देवी से अपना हाल कहा है।

मे-मिडिल्टन को मिसेज सेण्ट जार्ज का हाल सुनकर बहुत दुःख हुआ और उसने बहुत धीरज धराकर उन्हें बिदा किया।

इन बातों को मे-मिडिल्टन ने अपने पिता के सामने भी दुहराया, जिनको सुनकर उन्होंने भी बहुत शोक प्रगट किया और कहा, "उस बेचारी को केवल किरायेदार न जानना चाहिए, वरन उसपर दया करनी चाहिए, क्योंकि उसका हृदय दुःख के बोझ से दबा हुआ है और वह निस्सहाय है।"

दशवां प्रकरण।

मिसेज़ सेण्ट जार्ज "उडबर्न-काटेज" में आकर रहने

लगीं और एक मजदूर की लड़की को सब कामों के वास्ते उन्होंने नौकर रख लिया और उसके पिता से भी यह प्रतिज्ञा करवा ली कि वह सप्ताह में दो बार आकर बंगले के चारो ओर के जंगल और झाड़ी को साफ कर जाया करे।

मिसेज़ सेण्ट जॉर्ज बड़ी चतुरा थीं। वह कुछ बातें बनाकर और कुछ दे लेकर सब लोगों को अपने पर प्रसन्न कर लेती थीं, इसी कारण शीघ्रही उनका नाम प्रसिद्ध होगया कि यह वही हैं जो किङ्ग्स्-गेट गिर्जे के पास एक बुढ़िया के मकान में रहा करती थीं। तात्पर्य यह कि मिसेज़ सेण्ट जॉर्ज सुप्रसिद्ध होकर रहने लगीं।

मिष्टर जॉन ने मिस-मिडिल्टन से कह दिया था कि वह मिसेज़ सेण्ट जॉर्ज पर दयादृष्टि रक्खा करे और समय २ पर उसकी सहायता भी किया करे। यद्यपि "मे" अपने पिता की आज्ञा का पालन करती थी परन्तु मिसेज़ सेण्ट जॉर्ज की चालचलन उसे पसंद नहीं थी और वह रह २ कर अपने मन में सोचा करती थी कि यह मिसेज़ सेण्ट जॉर्ज कौन हैं और इनका सच्चा जीवनचरित क्या है, परन्तु कोई बात ठीक २ मालूम न होने के कारण वह अपनेही पर दोष लगाती थी कि, "मुझको ऐसी व्यर्थ की बातें न सोचनी चाहिएँ।" यदि मे-मिडिल्टन को कुछ अनुभव होता और सांसारिक छल कपट का हाल वह जानती होती तो अवश्य ही समझ जाती कि मिसेज़ सेण्ट जॉर्ज "भीतर सों कछु और है, उपर सों कछु और।"

मिष्टर जॉन बेचारे सीधे सादे आदमी थे; वे भला सांसारिक कपट-व्यवहार का हाल क्या जानें! मिसेज सेण्टजॉर्ज

के जाल में पहलेही फँस गए और मन में प्रसन्न हुए कि मिसेज सेण्ट जॉर्ज के समान सच्चरित्रा स्त्री से उनकी बेटी की मैत्री हुई।

मिसेज़ सेण्ट जॉर्ज को यहां आए तीन महीने हुए होंगे। इस बीच में कई बार मिस मिडिल्टन से और उनसे साक्षात्कार हुआ था। कभी वह मिस-मिडिल्टन के घर आतीं और कभी यह उनके बंगले की सैर करने जाती थी। एक दिन "मे" और मिसेज़ सेण्ट जॉर्ज बाग में सैर कर रही थीं। बुलबुल फूलों की सुन्दरता को भूलकर इन दोनों सुन्दरियों की ओर टकटकी बाध देख रहे थे। ठण्डी २ हवा चल रही थी! बड़े २ ऊंचे पेड़ इन दोनों सुन्दरियों को मानो प्यार की दृष्टि से देख २ कर झूम रहे थे। सूर्य भगवान् अस्ताचल की ओर चले जाते थे। पक्षी अपने खोंतों की ओर उड़े जाते थे और चमगादड़ रात का आगमन देखकर बाहर निकल आए थे। ऐसे समय में मिसेज सेण्ट जॉर्ज ने एक लम्बी सांस खींची और कहा, " अब थोड़े ही दिनों के बाद, मिस " मे " ! तुम्हारे मकान में दावत हुआ करेंगी और नाच-रंग मचा रहेगा।"

मे०। चचाजी के स्वर्गवास को छः महीने बीत गए हैं; अभी छः महीने तक एप्सली-कोर्ट में किसी प्रकार की धूम धाम नहीं की जा सकती।

मि० से० जॉर्ज। ये छः महीने शीघ्र ही बीत जायँगे, और फिर..........

इतना कहकर मिसेज सेण्ट जॉर्ज रुक गईं और एक दीर्घ सांस खैंचकर फिर कहने लगीं, " आप मेरे मतलब को

कदाचित् नहीं समझीं । वह दिन आपके वास्ते हर्ष का होगा, न कि हमारे वास्ते । ”

मे० । यह क्यों ?

मि० से० जॉर्ज । कारण कि ....प्यारी मिस ! क्या कहूं मेरा चित्त तो अब इस संसार में नहीं लगता । अब हर्ष और प्रसन्नता के समाज में योग देने की इच्छा नहीं होती । उस समय आप से मुलाकात कम हुआ करेगी; बस इसी बात की चिन्ता रह २ कर मुझे हुआ करती है ।

मे० । नहीं ऐसा कदापि न होगा । यदि तुम यह सोचती हो कि मैं इन धनवान् लाट साहबों और ड्यूक लोगों से मिलकर तुम्हें भूल जाऊंगी, तो ऐसा समझना तुम्हारी भूल है ।

मि० से० जॉर्ज । मिस “ मे ” ! ईश्वर के निमित्त क्षमा कीजिए । मैं लज्जित होती हूं कि ऐसी बात मैंने आपसे क्यों कही (“ मे ” का हाथ अपने हाथ में लेकर) मैं आपका हाल भली प्रकार जानती हूं । यहां आकर जो कुछ मैंने सुना है वह सत्य है; उसके अतिरिक्त एक बेचारे ने मुझ से बहुत कुछ कहा था ।

इतना कहकर वह रुक गई, जिसमे जान पड़ता था कि जैसे उन्हें कोई भूली हुई बात याद आगई; और साथही उनके मुखपर उदासी सी छा गई । इसके पश्चात उन्होंने दुःखभरी दृष्टिसे “मे” की ओर देखा और कहा, “मेरे मुंह से कुछ अधिक बात निकल गई ; अस्तु, अब मुझे स्पष्ट कह देना चाहिए, परन्तु मैं नहीं चाहती थी कि आपके सामने यह शोकवार्त्ता कहूँ ।”

मे० । (आश्चर्य्य से) कौन सी शोकवार्त्ता ?

मि० से० जॉर्ज । कोई एक वर्ष होनेको आया........परन्तु

हां पहिले मुझे इतना बतला दीजिए कि जो आपके साथ बाल्यावस्था में खेला करता था, जिसने आपके साथही शिक्षा पाई थी, वह आपसे अन्तिम बार क्या कह गया था?

मे०। आह! क्या तुम रूबन-बेक्लिस के बारे में कहती हो? परन्तु इस बात के पूछने से तुम्हारा क्या मतलब है?

मि० से० जॉर्ज। इसलिए कि मैंभी उसको जानती हूँ।

मे०। (आश्चर्य्य करके) क्या सचमुच जानती हो?

मि० से० जॉर्ज। हां, परन्तु प्यारी मिस! मुझसे आप यह अवश्य कह दीजिए कि क्या आप उसका कुछ हाल जानती हैं?

मे०। नहीं, परन्तु जान पड़ता है कि तुमने उसका हाल यहां किसीसे सुना है।

मि० से० जॉर्ज। नहीं, यहां आनेसे पहलेही मैं उस बेचारे का सब हाल सुन चुकी थी। पहले आप मेरे प्रश्न का उत्तर दीजिए तो मैं कहूँ।

मे०। तुम्हारे प्रश्न का केवल इतना ही उत्तर है कि उस बेचारे के गायब होजाने के बाद फिर उसका कुछ पता न लगा।

मि० से० जॉर्ज। तो अब इस बातचीत को जानेही दीजिए; कोई दूसरा विषय छेड़ा जाय।

मे०। नहीं २, तुम्हें उसके विषय में जो कुछ मालूम हो वह शीघ्र कहो।

मि० से० जॉर्ज। अफसोस! मुझे तो यह बात कहनी ही नहीं चाहिए थी; अब उस बेचारे का हाल कैसे कहूं।

मे०। (आँखों में आँसू भरकर) तुम्हारी बातों से और तुम्हारी आकृति से स्पष्ट प्रगट होता है कि उस बेचारे को कोई विशेष कष्ट हुआ है, जिसका हाल तुम जानती हो। तुम्हें मैं

ईश्वर की शपथ दिलाकर कहती हूं कि जो कुछ कहना हो तुम शीघ्र कहो।

मि० से० जॉर्ज। आप मुझे व्यर्थ ही उस बात के कहने पर विवश करती हैं। आपका जब इतना आग्रह है तो मैं स्पष्ट कहे देती हूं कि अब उस बेचारे से आपकी मुलाकात न होगी; अब वह जन्म भर के लिए अन्तर्धान हो गया।

मे-मिडिल्टन पर इस बात ने जादू का काम किया। वह इसे सुनते ही कठपुतली की तरह मानो निर्जीव होगई। यह दशा देखकर मिसेज़ सेण्ट जॉर्ज धीरज धराने और नर्म आवाज में कहने लगीं, "मेरी प्यारी "मे"! आप अपने को सम्हालिए; व्यर्थ शोक करने से क्या लाभ? यह तो ईश्वर की सृष्टि का नियम ही है। संसार में जो आता है वह मरने ही * के लिए आता है। बेचारे रूबन का हाल यह है कि जब मैं किराये

* लार्ड बेकन ने मृत्यु के विषय में लिखा है कि—" लड़कों को अँधेरे में जाने से जैसे डर लगता है, मनुष्य को वैसेही मृत्यु से डर लगता है। और जिस प्रकार लड़कों का यह स्वाभाविक डर कथा कहानी आदि के सुनने से बढ़ता है उसी प्रकार मनुष्यों का भी डर मृत्यु-विषयकवार्त्ता सुनकर बढ़ता है. यथार्थ में मृत्यु को ईश्वर ने किए हुए अपराधों से मुक्त होने के लिए स्वर्ग में जाने का पूरा रूप बनाया है; अतः उसे पवित्र और धर्म्य समझना चाहिए। परन्तु " आया है सो जायगा ' इस प्रकार की चिन्तना करके मृत्यु से डरना अविवेकता का लक्षण है। * * * * * जिसने यह कहा है कि " मरना एक नैसर्गिक नियम है " उसने बहुत ही ठीक कहा है। जन्म लेना जिस प्रकार स्वाभाविक है मरना भी उसी प्रकार स्वाभाविक है। अज्ञान बालक को मरना और जन्मलेना कदाचित् समान दुःखद होते होंगे। सत्कार्य्य में निमग्न रहते २ मर जाना अच्छा है। शस्त्रप्रहार सहन करके जैसे

पर मकान लेकर रही थी, उसी मकान की एक कोठरी में वह भी रहता था। एक दिन उसको खून बुखार चढ़ आया। कोई पानी तक देनेवाला नहीं था। मैंने उसे दवा खिलाई और उसकी सेवा की; फिर भी वेचारा दूसरे दिन मर गया। प्यारी मे! मैं क्या जानती थी कि आपसे मुझसे मुलाकात होगी और उस वेचारे का हाल मुझे आपके आगे कहना पड़ेगा?

यह वात सुनकर मिस-मिडिल्टन का गला भर आया और वह फूट२ कर रोने लगी; यहांतक कि मानो उसके नेत्रों से एक धारा वह निकली। अन्त में एक ठण्डी सांस भरकर उसने कहा, "मैं आपको अनेक धन्यवाद देती हूं कि ऐसी दशा में जबकि उसका कोई सहायक नहीं था आपने उसकी विशेष सहायता की।"

मि० से० जॉर्ज। मैंने वही किया जो करना उचित था; जहांतक वना उसकी सेवा की।

मे०। (बेचैन होकर) हाय! पिताजी जब यह हाल सुनेंगे तो उनकी क्या दशा होगी!

मि० से० जॉर्ज। परन्तु यह वात आप अपने पिता से खूब समझ कर कहिएगा। मुझे वड़ा दुःख है कि मैंने ऐसी शोक-

---

मनुष्य आवेश में आकर प्राण छोड़ता है और उस समय उसे विशेष कष्ट नहीं होता, वैसेही काम में लगे रहने से भी मृत्यु की यातना मनुष्य को अधिक नहीं भोग करनी पड़ती। मनुष्य के समस्त इच्छित कार्य फलीभूत और आशाएँ पूर्ण होने पर जो मृत्यु आती है वह अवसर सबसे बढ़कर है। ऐसी मृत्यु की सदैव अभिलाषा रखनी चाहिए। मृत्यु से एक यह अलभ्य लाभ है कि मरने के अनन्तर मनुष्य की कीर्ति विशेष फैलती है। मृतमनुष्य का लोग मत्सर करना छोड़ देते हैं। " देखो " लार्ड बेकन्स् एसेज़ " अथवा " बेकन-विचार रत्नावली। " (अनुवादक)

वार्ता आपके सामने क्यों कही। उस वेचारे ने तो मना करादिया था कि इसका हाल मैं किसी से न कहूं; वल्कि कहाथा कि मेरे वास्ते किसी और को दुःखित करने से क्या लाभ। हाय! मुझको क्या होगया था कि सारी कहानी मैंने स्वयं सुना दी!

मे०। नहीं, अपने को दोष मत दो।

मि० से० जॉर्ज। (बड़ी नर्म आवाज में) प्यारी मिस-मे! आपको मेरे शिर की कसम; सच सच कहिए, क्या आपको उसके साथ गाढ़ा प्रेम था?

मे०। हां, मै उसे वहुत चाहती थी।

इतना कहकर वह रुक गई, और मिसेज़ सेण्ट जॉर्ज का हाथ अपने हाथ में लेकर उसने उसे दवाया, जिससे मानो यह संकेत था कि अव यह वात रोक दी जाय, क्योंकि उस वचारे का हाल सुनकर दुःख होता है, या कदाचित यह मतलव हो कि यह वात ऐसी नहीं है जो हरएक के सामने कही जाय। मिसज़ सेण्ट जॉर्ज ने भी यही उचित समझा और वह चुप होगई और थोड़ी देर के वाद "मे" से विदा होकर अपने बंगले "उडबर्न-काटेज" को चली गई। मे-मिडिल्टन भी वगीचे से अपने घर की ओर लौटी॥
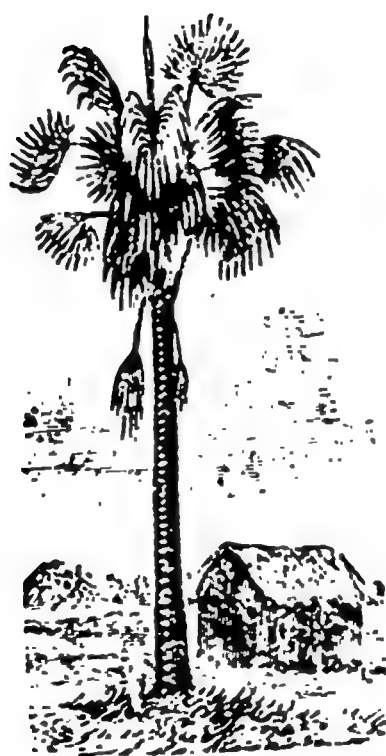
भाषा काव्य के अपूर्व ग्रन्थ !!!

अलकशतक और
तिलशतक =)
अलङ्कारदर्पण =)
अङ्गदर्पण =)
अन्योक्तिकल्पद्रुम |=)
अङ्गादर्श |)
अष्टयाम ≡)
इश्कनामा =)
उपालम्भशतक =)
कविकुलकण्ठाभरण =)
केशोदासकृत नखसिख =)
कुण्डलिया -)||
काशीकविसमाज का प्रथम वार्षिकोत्सव =)
काशी कविसमाज के प्रथम वार्षिकोत्सव की समस्यापूर्त्ति =)
काशीकविसमाज की समस्या पूर्त्तियां
प्रथमभाग ||)
दूसराभाग |||)
तीसराभाग |||)
चौथाभाग ||)
चारोंभाग इकट्ठे २||)
काशीकविमण्डल की समस्यापूर्त्तियां
प्रथमभाग |||)
दूसराभाग |)
कलियुगपच्चीसी और काशी मेला बत्तीसी =)
कर्णाभरण =)
कविकीर्तिकलानिधि =)
काव्यनिर्णय |||)
चरणचन्द्रिका =)
चेतचन्द्रिका |=)
छन्दोमञ्जरी ||≡)
जगतविनोद ||)
ददरीक्षेत्रमाहात्म्य =)
देवयानीकाव्य ≡)
दीपप्रकाश =)
दृष्टान्ततरङ्गिणी -)
दोखरकृतनखसिख =)
प्रेममाधुरी ≡)
प्रेमरत्नमाला -)
प्रेमवाटिका =)
प्रियाप्रीतमविलास |)
पावसपचासा =)
प्रबोधपचासा =)
पद्माभरण ≡)
पजनेसप्रकाश |)
प्रेमलतिका |=)
फागचरित्र |=)
बजरंगबत्तीसी -)
बलभद्र कृत नखसिख =)
बुढ़ियाबखान -)
बसन्तमञ्जरी ≡)
बिहारीसतसई हरिप्रकाशटीका सहित १||)
वृन्दविनोदसतसई |)
विरहा नायिकाभेद -)
वृन्दावनशतक -)
बुढ़ियाबखान -)
भड़ौआसंग्रह चारोंभाग ||=
भाषासत्यनारायण =)
भाषाभूषण =)
भावविलास |=)
भवानीविलास |=)
मनोजमंजरी चारोंभाग १=)
मानसविनोद |)
मानसरहस्य |)
रतनहजारा ||)
रसप्रबोध |=)
रसराज |)
रहस्योत्सव =)
रसविलास |)
रघुनाथशतक ≡)
रामचन्द्रभूषण ||=)
रसिकविनोद |=)
ललित ललाम ||)
लक्ष्मणशतक =)
लोकोक्ति रसकौमुदी |=)
विक्टोरियारानी =)
बृहत्व्यङ्ग्यार्थचंद्रिका |=)

किसान की बेटी ।

तीसरा भाग

रेनल्डूज [illegible]त " मे-मिडिल्टन " उपन्यास का
भाषानुवाद ।

काशीनिवासी

बाबू गङ्गाप्रसाद गुप्त कृत

भारतजीवन-सम्पादक बाबू रामकृष्णवर्म्मा
द्वारा प्रकाशित और विक्रीत ।

काशी ।

हितचिन्तक प्रेस में मुद्रित ।

सं० १९६१

किसान की बेटी ।

तीसरा भाग

रेनल्ड्ज् कृत " मे-मिडिल्टन " उपन्यास का भाषानुवाद ।

काशीनिवासी

बाबू गङ्गाप्रसादगुप्त-कृत

" भारतजीवन-सम्पादक " बाबू रामकृष्णवर्म्मा द्वारा प्रकाशित और विक्रीत ।

काशी ।

हितचिन्तक प्रेस में मुद्रित ।

सं० १९६१

प्रथमबार

मूल्य ।-)

पन्नाराज्य का इतिहास ।

ऊपर लिखी पुस्तक छपकर तय्यार हो गई है । हमारी इस पुस्तक को भी भारतजीवन के अध्यक्ष बाबू रामकृष्ण बर्म्मा ने प्रकाशित किया है । जिन महाशयों की इच्छा हो, वे " मैनेजर-भारतजीवन " के पते से इसे मंगा सकते हैं । ७२ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य केवल ≡) है ।

काशी ।
अप्रेल, १९०४ ई० । } गङ्गाप्रसाद गुप्त ।

किसान की बेटी।

तीसरा भाग।

पहला प्रकरण।

अब इस गांव के वृत्तान्त को थोड़ी देर के लिए बन्दकर, आइए पाठक! जरा हमलोग चलकर इङ्गलिस्तान की राजधानी "लन्दन" की सैर कर आवें। सन् १७८१ इसवी में इस नगर की बस्ती ऐसी नहीं थी जैसी कि अब है। उस समय लन्दन के चारो ओर बहुतायत से जङ्गल थे। उस समय प्रायः ऐसा होता था कि बेचारे उन भूखे लोगों को, जिनके पास रहने के लिए कोई घर द्वार नहीं था, जङ्गली पशु खा जाते थे। इन वनपशुओं को वहां से हटाने के लिए राज्य से प्रबन्ध भी हुआ करते थे। नगर के भीतर आजकल की तरह बड़ी बड़ी इमारतें और सुंदर मकान बहुत कम दीख पड़ते थे; हां दूर दूर पर पुराने ढङ्ग की इमारतें खड़ी खड़ी अपनी प्राचीनता दिखा रही थीं। उनके स्वामी उन्हीं को राज्य से बढ़कर जानते थे; परन्तु इस समय उन जंगलों में अधिकता से बस्ती हो गई है, और नगर के भीतर ऐसी ऐसी प्रचण्ड अट्टालिकाएँ बनी हैं कि समग्र संसार के लोग उनके देखने की इच्छा से भांति भांति के मनसूबे मन में बांधते हैं, और प्रायः लोग अनेक प्रयत्न से वहां जाते और अपना चित्त प्रसन्न करते हैं।

उस ज़माने में सड़कें बहुत कम चौड़ी थीं, और रोशनी का प्रबन्ध भी बहुत ही खराब था। प्रायः सड़कों पर तो एक भी दीया टिमटमाता हुआ दिखाई नहीं देता था; और जहां रोशनी होती भी थी, वह ऐसी धुंधली और सुस्त होती थी, जैसी कि कोई धनहीना स्त्री अपने घर में बालती होगी। परन्तु अब सड़कें खुले मैदानों की तरह चौड़ी हो गई हैं और प्रत्येक समय साफ रहती है; क्या मजाल कि एक तिनका भी कहीं दिखाई दे जाय। वर्त्तमान काल में ग्यास और बिजली की रोशनी से सब रास्ते जगमगाते रहते हैं। किन्तु उन दिनों पुलिस का प्रबन्ध बहुतही खराब था। चोरी डकैती अधिकता से होती रहती थी, और ऐसे बुरे कामों में पुलिस भी मिली रहती थी। रात को घर से बाहर निकलने की बात तो कौन चलावे, दिन दहाड़े राजपथों में मारपीट और खूनखराबी हो जाया करती थी।

अस्तु, अब हम अपनी कहानी आरम्भ करते हैं। अक्तूबर का महीना है, और रात के नौ बज गए हैं। हलकी हलकी बौछाड़ पड़ रही है। आकाश में घटाटोप बादल छाए हुए हैं। रह रह कर दामिनी दमक जाती है, और भूले भटके बटोहियों को थोड़ी देर के लिए रास्ते की एक झलक दिखा देती है। अन्धकार की यह दशा है कि हाथ को हाथ नहीं सूझता। सुनसान अन्धेरी गलियों में कहीं कहीं एक दो लेम्प टिमटिमा रहे हैं, और म्युनिसिपेलिटी के कुप्रबन्ध का दिग्दर्शन करा रहे हैं। नगर का साधारण कोलाहल शान्त पड़ गया है, और कामकाजी लोग दिनभर के परिश्रम से थक कर इस समय अपने अपने घर में आकर बैठे विश्राम कर रहे हैं।

परन्तु लुंगाड़े लोग इस अन्धेरी और भयानक रात में भी चैन नहीं लेते। उनमें से कोई तो किसी गुलाबी गालों वाली कुलटा कामिनी के लिए अपने द्वार की ओर मुँह किए बैठा है कि देखें वह कब आती है, और कोई किसी पतिघातिनी असती की बगल में लेटा न जाने क्या काम कर रहा है। इस समय और ऐसीही अवस्था में हमको विलिफ्रड की खबर लेने की आवश्यकता जान पड़ती है। वह देखिए! लन्दन की किसी गली से ओवरकोट डाँटे हुए, विलिफ्रड चला जाता है। उसके पाँव इस समय लड़खड़ा रहे हैं। यदि कोई इस दशा में उसे देखे, तो अवश्य जान ले कि आज उसने बहुतेरी बोतलें खाली कर डाली हैं। उसके मुख का रङ्ग लाल हो रहा है और उसके नेत्रों में लाल लाल डोरे पड़े हुए हैं। झूमता और नशे में गोते खाता हुआ वह निडर और अस्थिर चित्त से आगे बढ़ता चला जाता है।

कुछ दूर आगे बढ़कर, विलिफ्रड, दाहिने हाथ की एक गली की ओर मुड़ा, और वहाँ पहुँच तथा एक बड़े मकान के द्वार पर खड़े होकर उसने कुण्डी खड़काई। तुरन्तही द्वार खुल गया, और एक काला मुसण्डा भद्दा आदमी दृष्टिगत हुआ। विलिफ्रड की ओर देख और उसे पहचानकर उस बदसूरत आदमी ने उससे कुछ कहा, परन्तु विलिफ्रड ने उसकी बात का कोई उत्तर नहीं दिया, वरन् आगे बढ़कर एक बड़े से कमरे में पहुँचा; जिसमें एक टेबुल के चारो ओर कुछ लोग बैठे ताश खेल रहे थे। धनवान्, धनहीन, लॉर्ड, ड्यूक आदि सभी प्रकार के लोग उस स्थानपर एकत्रित थे; परन्तु किसी में कुछ प्रभेद नहीं था। वहाँ सबकी श्रेणी बराबर थी, और सबका रंग ढंग एकहीसा था। सब अपनी अपनी धुन में डूबे हुए थे। न किसी को किसी

की प्रतिष्ठा अथवा अप्रतिष्ठा का ध्यान था, न कोई किसी से भय खाता था।

विल्फ्रिड को आते देखकर सब प्रसन्न हुए बल्कि दो एक तो हाथ मिलाने की इच्छा से उठ खड़े भी हुए। विल्फ्रिड ने किसी से तो हाथ मिलाया, और किसी को केवल हाथ के संकेत से ही सलाम करके चुप हो गया। इसके पश्चात् उस टेबुल के पास आ बैठा, जहां दूसरे लोग बैठे थे। यहां आतेही जेब में से नोटो (Currency Notes) का पुलिन्दा निकालकर उसने टेबुल पर रख दिया, और तदुपरान्त कुछ सोचता हुआ मनही मन कहने लगा—" अब इतनाही रह गया। आज भी यदि भाग्य ने पलटा खाया, तो मैं कहीं का न रहूँगा। मान प्रतिष्ठा केवल ईश्वर के हाथ है; नहीं तो मुझे बड़ी कठिनाई देख पड़ती है।" इतना कहकर वह सुस्त हो गया; लेकिन उसने अति शीघ्र अपने को फिर सम्हाला, और खेलना आरम्भ कर दिया।

प्रिय पाठक! वे पाँच हजार रुपये जो मिष्टर जॉर्ज की मृत्युके पश्चात उसने पाए थे, और वह एक हजार रुपया जिसे उसने अपना माल असबाब बेंचकर इकट्ठा किया था, उनमें से एक हजार तो वह पहलेही अपनी उपपत्नी रोसालिण्ड को दे चुका था; इसलिए उस रुपये का तो कोई भरोसाही नहीं था। शेष पाँच हजार रुपयों में से अब विल्फ्रिड के पास केवल ६००) रु० बच गए थे। बाकी सब रुपये वह जुए में हार गया था। इसीलिए इस जुएखाने में आकर, जिसकी बात हमने ऊपर लिखी है, वह आज कहता है कि, " यदि आज भी सौभाग्य न हुआ तो मैं कहीं का न रहूंगा। इत्यादि।" परन्तु आज वास्तव में उसका भाग्य अच्छा निकला; क्योंकि

थोड़ी ही देर में उसने उन ६००) रु० के १२००) रु० बना लिए।

उस कमरे के दूसरी ओर दो और, आदमी बैठे परस्पर ताश खेल रहे थे, और वे बराबर ताबड़ तोड़ मदिरा पीते जाते थे। वे इस ढंग से बिना मुंह बनाए मदिरा के ग्लास खाली किए जाते थे कि मानो उसका स्वाद दूध से भी बढ़कर था। उनमें से एक व्यक्ति बलवान् और लम्बा चौड़ा था; परन्तु उसकी आँखें छोटी छोटी थीं और नाक चिपटी थी। उसके चेहरे से पाजीपन की झलक दिखाई देती थी। वह शिकारियों केसे वस्त्र पहिने हुए था। उसका थोड़ा सा परिचय दे देना हम आवश्यक समझते हैं। पाठकों को जानना चाहिए कि उसका नाम "नेड क्रेष्टन" था। उसने अपनी समग्र आयु और अपना सब धन अपव्यय और बुरे कर्मों में नष्ट कर डाला था, और अब वह जुआ खेलकर उसकी आय से अपने पेट की ज्वाला शान्त करता था। किसी को मार डालना उसके आगे कोई बड़ी बात नहीं थी। हाँ, इसमें कोई सन्देह नहीं कि साधारण मनुष्यों के साम्हने वह भींगी बिल्ली की तरह बहुत ही भोला बना बैठा रहता था। दूसरा व्यक्ति आकार में कुछ न्यून था, तथापि बल और पराक्रम में किसी प्रकार अपने लंबे साथी से कम नहीं था। यह सैनिक वस्त्र धारण किए हुए था और इसका नाम "ओ-हालोरन" था। कुछ काल पूर्व्व, यह किसी सेना में कप्तान के पदपर नियुक्त हुआ था; परन्तु किसी अपराध से अपने पदसे पृथक् कर दिया गया था। किन्तु यहां आकर इसने अपने को कप्तान ही के नाम से प्रसिद्ध किया था। नेड क्रेष्टन की भांति यह भी बड़े चञ्चल और उद्धत स्वभाव का

मनुष्य था। इसमें भी बदमाशी कूट कूटकर भरी थी। झूठ बोलना और कसम खाना इसकी समझ में एक साधारण बात थी। किसी को ठगने अथवा धोखा देकर उसका माल असबाब उड़ा ले जाने में बड़ा दक्ष था। जहां जो पाता था, उसे उड़ा लेता था!

प्रगट में तो दोनों अर्थात् नेड क्रेष्टर और ओ–हालोरन ताश खेल रहे थे, परन्तु कनखियों से वे दूसरे टेबुल का सब दृश्य देखते जाते थे। विल्फ्रिड ने जब नोट निकाल कर सामने रख दिए, तो ये दोनों एक दूसरे का मुंह देखकर मुस्कुराए और इशारेही इशारे में दोनों में न जाने जल्दी जल्दी क्या क्या बातें हुई। बड़े टेबुल पर जहां विल्फिड खेल रहा था, कुछ देर के लिए खेल बन्द हो गया; सब शराब पीने लगे; और इस प्रकार बातचीत आरम्भ हुई,—

एक०। सुना है कि कल रातको इस सड़क से कुछ आगे बढ़कर टाम हेमर को दो तीन आदमियों ने इतना मारा कि बेचारा देरतक बेहोश पड़ा रहा।

दूसरा। जी हां, ठीक है। आजमैं उसको देखने गया था; बेचारे के मुंह से बात तक नहीं निकलती।

एक जण्टिलमैन। क्या उससे इतना भी न हो सका कि उन दुष्टों को पहचान लेता।

दूसरा। अजी भला यह कैसे हो सकता था? इतना अवकाश कहाँ था? इसके सिवाय टाम कहता था कि उस जगह रौशनी भी नहीं थी और म्युनिसिपलिटी की लालटेनें भी बुझ गई थीं। किसी ने पीछे से आकर अकस्मात् पकड़ लिया, और दूसरे ने छुरा मारकर गिरा दिया।

एक और व्यक्ति। दुःख का विषय है। बेचारा कल्ही सात आठ सौ रुपया जीतकर यहाँ से गया था।

इसपर वह व्यक्ति, जो उनसे मिल आया था, बोला—"हाँ, परन्तु उन दुष्टों को रुपया नहीं मिलने पाया। क्योंकि ज्योंही कि वे गिराकर जेब में से रुपये निकालने लगे, उसी समय बदमाशों का एक झुण्ड एक ओर से आता हुआ दिखाई दिया। उन बदमाशों ने इन दोनों लुटेरों को पकड़ना चाहा; लेकिन वे भाग गए।"

नेड क्रप्टन। (इन बातों की ओर कुछ भी ध्यान न देकर) यह बाजी तुमने जीत ली। केप्टेन! आज तुम्हारे भाग्य ने अच्छा रङ्ग दिखाया है।

दोनों अपने खेल में इतने लगे हुए जान पड़ते थे कि मानों वे यह कुछ भी नहीं जानते कि दूसरे टेबुल पर क्या हो रहा है।

ओ-हालोरन। अच्छा अब दूसरी बाजी खेलो।

इतने में एक महाशय जो दूसरी मेज पर बैठे थे, बोल उठे, "सचमुच यह बहुत बुरी बात है। अब प्रत्येक व्यक्ति को अपने साथ एक एक तपञ्चा अवश्य रखना चाहिए।"

विल्फ्रिड। मैं तो सदैव एक तपञ्चा अपने साथ रखता हूं। रात के समय लन्दन की इन गलियों में बड़ा खटका रहता है।

ओ-हालोरन। (पहले की तरह अपने साथी से, बड़ी निश्चिन्तता के साथ) अजी चुरुट पीओ।

नेड क्रप्टन। (अट्टहास करके) हां, जब तुम्हारे मुंह में चुरुट रहता है तब तुम अवश्य जीत लेते हो।

एक व्यक्ति। (विल्फ्रिड से) विल्फ्रिड! तुम ठीक कहते हो। लेकिन पिस्तौल को तुम कहां रखते हो?

विलिफ्रड०। ऐसी जगह पर रखता हूं कि जब हाथ पड़े तो उसी पर पड़े (इसके अनन्तर उसने अपना कोट उठाकर जेब दिखाई, जिसमें पिस्तौल रक्खा था, फिर बोला) लेकिन अब खेल आरम्भ होना चाहिए। (फिर हँस कर) हम अपने रुपये से दूने कर चुके, और अब चाहते हैं कि तिगुने कर लें।

एक व्यक्ति। अजी तुम क्या सोचते हो! देखो अभी चुटकी बजाते में तो हम अपना सब का सब फेरे लेते हैं; और इसके साथ तुम्हारे रुपये भी न ले लिए तो कहना।

अब खेल आरम्भ हुआ। कुछ देर के बाद १२ बजने का शब्द नगर के गिर्जों में से गूंजने लगा और इधर विलिफ्रड मारे हर्ष के चिल्लाकर कहने लगा—"जो कहा था, वही कर दिखाया। तो हमने अपने रुपये के तिगुने कर लिये; अब आज हम न खेलेंगे।"

उधर दूसरे टेबुल पर से नेडक्रेष्टन के मुंह से यह बात निकलती हुई सुनाई दी, "कप्तान! क्या अब जाओगे?"

ओ-हालोरन। तुम क्या भूल गए? हमने नहीं कहा था कि आज एक लेडी के यहाँ हमारा निमन्त्रण है? उनका नाम मैं नहीं बता सकता; और रातके बारह बजे के सिवा वह कभी किसी से नहीं मिलतीं।

नेड क्रेष्टन। हाँ मैं भूल गया था। अच्छा, जाते हो तो जाओ।

इसके पश्चात् ओ-हालोरन सबसे विदा होकर चला गया। इस ओर सभों ने विलिफ्रड से पुनः खेलने के लिए आग्रह किया, परन्तु उसने बिलकुल अनिच्छा प्रकाश की, और कहा, "अच्छा आध घण्टे और ठहरकर इस नई शराब का भी स्वाद लेकर जाऊंगा।"

इतने में नेडक्रेट्टन उसके पास आकर कहने लगा, " कहिए, मिजाज कैसा है ? "

विलिफ्रड। अजी मिजाज भी अच्छा है और किसमत भी अच्छी है।

नेडक्रेट्टन। कैसे ?

विलिफ्रड। तुम तो अपने खेल में ऐसे डूबे थे कि दूसरी ओर आँख उठाकर देखना भी मानो पाप था।

नेडक्रेट्टन। हाँ, कहते तो सच हो। मैं आज केपूटेन् से दश अशर्फियाँ हार गया; और मेरी गरीबी पर ध्यान देते हुए यह हानि बहुत ही अधिक है। अब मैं थोड़ी सी शराब पी लूं तो जाऊं।

यह कहकर नेड क्रेट्टन ने मदिरा की बोतल उठाई, और एक घूँट के बदले पूरा एक ग्लास चढ़ा कर वहां से वह चला गया। उसके जाने के उपरान्त पुनः सब लोग विलिफ्रड से खेलने के लिए कहने लगे। परन्तु रात का एक बज गया था; इस कारण उसने किसी की बात नहीं सुनी; बल्कि कह सुनकर वहाँ से विदा हुआ, और बाकी लोग फिर जमकर खेलने लगे।

विलिफ्रड ने द्वार पर पहुँचकर जेब से एक रुपया निकाल के उस बदसूरत आदमी को दिया, जिसने द्वार खोला था; और गुलूबन्द से खूब कसकर सिर बांधके वह वहाँ से बाहर निकला; क्योंकि पानी बड़े जोर से बरस रहा था।

उस गली से निकलकर वह दूसरी गली में घुसा जो सेण्ट मार्टिन के गिर्जे को गई थी; परन्तु अभी वह दो चार पग भी न बढ़ा होगा कि दूर से उसे कुछ प्रकाश दीख पड़ा। उस प्रकाश को देखते ही मिष्टर हेमर की घटना उसे याद आई,

और वह आप ही आप कहने लगा, क्या लौट चलना चाहिए ? परन्तु फिर उसने अपने जी को कड़ा किया, और सावधानी से इधर उधर देखता हुआ आगे बढ़ा। परन्तु वह कुछ ही दूर गया होगा कि कोई व्यक्ति अकस्मात् पृष्ठ की ओर से आकर इस प्रकार उससे लिपट गया कि पिस्तौल उसके हाथ से छूट कर गिर पड़ा; और उससे कुछ भी करते न बन पड़ा। उस स्थान पर ऐसा अन्धकार छाया हुआ था कि विलिफ्रड उस व्यक्ति को बिल्कुल नहीं पहचान सका। अधिक विलम्ब नहीं हुआ था कि एक और व्यक्ति पहुँचा, जिसने आतेही अपने लट्ठ का एक भरपूर हाथ जमाया। परन्तु सिर पर गुलूबन्द के बंधे रहने के कारण विलिफ्रड को चोट नहीं लगी। किन्तु अब उसने विवश होकर चिल्लाना आरम्भ किया। वह विकट शब्दों में चिल्ला चिल्ला कर दुहाई तिहाई का कोलाहल मचाने लगा। वह तो कहिए कुशल होगया, नहीं तो उसी स्थान पर उसका प्राणान्त हो जाता। ठीक उसी समय ईश्वर ने दया की, और उसके पास सहायता पहुँच गई। उसके पीछे की ओर से कोई और मनुष्य आ गया; जो उस डाकू अथवा चोर के ऊपर जिसने विलिफ्रड पर वार किया था, इस वेग से झपटा कि वह घबरा कर भाग गया। उसके साथी ने जब यह दशा देखी तो वह भी छोड़ कर नौदो ग्यारह हुआ। वह व्यक्ति, जिसने विलिफ्रड के प्राण बचाए थे, निकट आकर कहने लगा, "बहुत चोट तो नहीं लगी? कहीं से रक्त तो नहीं निकला?"

विलिफ्रड। नहीं, अधिक चोट नहीं आई। केवल यहां तनिक छिल गया; किन्तु मैं आपको अनेक धन्यवाद देता हूं।

वह व्यक्ति। (आश्चर्य से) क्या यह सम्भव है! अहो!

मैं आज किसकी बोली सुन रहा हूं! (ठहर कर)-अब मैं पहचान गया । आप निस्सन्देह विल्फ्रेड मिडिल्टन हैं ।

विल्फ्रेड । वास्तव में आपका अनुमान सत्य है । मुझे भी ऐसा जान पड़ता है कि मैंने कहीं आपको देखा है । आपकी बोली मुझे पूर्व-परिचित प्रतीत होती है ।

वह व्यक्ति । अच्छा चलिए, चलिए ।

यह कहकर उस व्यक्ति ने विल्फ्रेड का एक हाथ पकड़ा, और इसके अनन्तर वह उसके घर की ओर चला, और एक लालटेन के पास पहुँच कर कहने लगा, "लो, देखो, पहचानो कि मैं कौन हूँ ।"

विल्फ्रेड कुछ काल तक अवाक् होकर उसके मुख की ओर देखता रहा; और अन्त में बहुत सोचकर बोला "मैं भी पहचान गया; परन्तु कैसे सुअवसर पर भेंट हुई ! "

विल्फ्रेड की बात अच्छी तरह पूरी भी न होने पाई थी, कि वह व्यक्ति हाथ छुड़ाकर चल दिया और कुछ दूर जाकर विल्फ्रेड की दृष्टि से लोप हो गया । पाठक! आप जानते हैं, वह व्यक्ति कौन था? यदि नहीं जानते तो धैर्य्य धरिए; अति शीघ्र जान जायँगे ।

दूसरा प्रकरण ।

इसके के अनंतर कुछ समय तक विल्फ्रेड वहीं खड़ा खड़ा आश्चर्य्य करता और साथही कुछ सोचता जाता था । निदान कुछ बड़बड़ाता हुआ वह एक ओर को चल दिया । इस समय भयानक रूप से वृष्टि हो रही थी । मारे सर्दी के शरीर का रक्त भी जमा जाता था । दम दम में दामिनी के दमकने और क्रम क्रम से बादलों

के गरजने से कलेजा दहल दहल कर रह जाता था। रात प्रायः समाप्त हो चली थी। सब ओर सन्नाटा छाया हुआ था। सारा संसार गहरी नींद में सोया हुआ है। उन स्थानों में भी, जहाँ थोड़ी देर पहले रह रह कर बोतलों के काग खोले जाते थे, सन्नाटे ने अधिकार जमा लिया है। सब लोग नशे में ऐसे बेसुध पड़े हैं कि उनका पतलून तक खुल गया है, परन्तु उनको चेत नहीं है। थिएटरों के द्वार बन्द हो गए हैं, और तमाशे के प्रेमी स्वप्न में भी उसी तमाशे का आनन्द अनुभव कर रहे हैं, जिसके देखने को वे थिएटर में गए थे। सड़कों पर पहरा देने वाले सिपाही ऊंघ रहे हैं, और जो जागते भी हैं, वे स्वयं चोरों से मिले हुए हैं। परन्तु विल्फ्रिड ने इन बातों की ओर कुछ भी विचार नहीं किया; बल्कि बराबर आगे बढ़ता ही चला गया। इधर उधर झूमता हुआ थोड़ी देर में वह अपने घर पहुँचा, और वहाँ पहुँचते ही जाकर पलंग पर सो रहा।

विल्फ्रिड के पास अब प्रायः अट्ठारह सौ रुपए वर्त्तमान थे। जब प्रातःकाल उसकी आँख खुली तो वह आपही आप हँसकर कहने लगा—"इतने दिन पीछे मेरा भाग्य—नक्षत्र उदय हुआ।" जुआरिओं को सदा इसी की चिन्ता रहती है, और वे लालच में पड़कर अपना धन, मान, प्रतिष्ठा आदि सब गँवा बैठते हैं। देखिए! यह कैसा बुरा खेल है! न तो जुआरियों में तनिक लज्जा रह जाती है, न उनको किसी बात का भय रहता है। प्रायः देखा गया है कि एक पैसा नहीं, स्त्री रो रही है, छोटे छोटे अबोध बालक चिल्ला रहे हैं, सब प्रकार की यातना और दुर्दशा हो रही है, परन्तु दुष्ट जुआरी नहीं चेतता है। वह तो बालकों को डाँट और स्त्री को डपट कर सीधा जुएखाने में जा पहुँचता

है। यदि मार्ग में उसे सुयोग प्राप्त होता है तो वह किसी की जेब काट लेने अथवा कहीं चोरी करने में तनिक भी संकुचित नहीं होता है। यही दशा बिल्फिड की भी थी। १८००) रु० जुए में जीतकर वह अतीव प्रसन्न हुआ; और दूसरे दिन की रात को फिर जुएखाने में जाने को प्रस्तुत हुआ। आज भी वह अपने साथ बहुत रुपये ले गया; क्योंकि वह सोचता था कि जितना भारी दाँव लगाकर खेलूंगा, उतने ही अधिक रुपये जीतूंगा। जब वह जुएखाने में पहुँचा, तो उसने देखा कि सब लोग नियमानुसार खेल रहे हैं। आज वहाँ एक नवीन महाशय भी आए थे, जिनका नाम अर्ल आफ नॉर्मिनटन था। यह महाशय बड़े ही स्वरूपवान् और धनाढ्य थे। गोल गोल चेहरा, सुडौल शरीर देखने ही योग्य था। इनकी अवस्था ४० वर्ष के लगभग होगी। बहुमूल्य कपड़े पहने हुए थे; परन्तु अधिक रात्रि तक नित्य प्रति जागते रहने का अभ्यास होने के कारण इनका चेहरा कुछ सूखा सा था। परन्तु इनकी दशा ऐसी विलक्षण थी कि मानो जुआ खेलने के ये बड़े प्रेमी थे। न जीतने से इनको हर्ष होता था, न हारने से दुःख; केवल खेलते रहने में यह प्रसन्न रहते थे। लाभ अथवा हानि की इनको कोई चिन्ता नहीं थी।

विल्फिड इन नवीन महाशय को देखकर अतीव प्रसन्न हुआ। उसकी प्रसन्नता का विशेष कारण यह था कि वह महाशय अर्थात् अर्ल आफ नार्मिनटन जुआ खेलने में बड़े अभागे प्रसिद्ध थे। खेल आरम्भ होने के पश्चात् ही, कुछ ही काल में, विल्फिड ने बहुत कुछ जीत लिया; और अर्ल महाशय नियमानुसार हारते गए। नेड क्रेट्न और ओ-हालोरन गत रात्रि की भाँति आज

भी वही अपने ताश के टेबुल पर बैठे परस्पर खेल रहे थे, और चुरुट पी पी कर जहाज के इञ्जिन की नाईं बराबर धुएँ पर धुआँ उड़ाते जाते थे। विलिफ्रूड जब प्रथम बार कमरे में प्रविष्ट हुआ था, तो उसने उन दोनों को सन्देह की दृष्टि से देखा था। परन्तु वे दोनो रातकी घटना से पूर्णतया अपरिचित जान पड़ते थे। इसके अतिरिक्त विलिफ्रूड को खेल के आगे इतना अवकाश कहां था कि वह और बातों की ओर ध्यान देता। पहले तो विलिफ्रूड यहांतक जीता, यहांतक जीता कि उसके साम्हने रुपये और अशर्फियों के ढेर लग गए; परन्तु थोड़ीही देरके बाद पांसे ने पलटा खाया और तब उसने हारना आरम्भ किया। किन्तु उसको यह आशा बंधी हुई थी कि अब मैं अवश्य जीत लूंगा, और इसी आशा में वह बड़े बड़े दांव लगाकर हारता जाता था। तदनन्तर थोड़ी देर के लिए लोगों ने खेल से हाथ रोक लिया और सब मदिरा देवी की आराधना करने लगे। साथ साथ बातचीत भी होती जाती थी। इसी अवसर पर विलिफ्रूड ने रात की घटना भी कह दी; परन्तु यह नहीं बताया कि उसकी जान किस मनुष्य ने बचाई थी।

इसपर एक महाशय बोले, "यह बड़े भग की बात है। उस दिन मिष्टर हेगर भी ऐसीही दशा में फँस गए थे और कलह तुम मार खा गए!"

दूसरा। परन्तु मैं जानता हूँ कि तुम अपने साथ प्रत्येक समय पिस्तौल रखते है, और ऐसी जगह कि जब हाथ पड़े तो उसी पर पड़े।

विलिफ्रूड। मैं पहले ही कह चुका हूं कि किसी ने पीछे से आकर मेरे हाथ पकड़ लिए। यद्यपि मैं भी बल में किसी से

कुछ कम नहीं हूं; परन्तु जिसने मुझे पकड़ा था वह मुझसे भी बलवान् था।

नेड क्रेष्टन। यह बड़े आश्चर्य्य की बात है, किन्तु कल रात को जिस समय मैं जाने लगा, उस समय सड़क के बाईं ओर मैंने दो मनुष्यों को खड़े देखा था। जब मैं उनसे आगे बढ़ा तो वे मेरे पीछे आने लगे। जब मुझको कुछ सन्देह हुआ, तो मैंने पीछे फिरकर पूछा, "कौन"? इतना सुनना था कि दोनो भाग खड़े हुए, और दम के दम में मेरे नेत्रों से अदृश्य हो गए। उस समय मुझको घर जाने की बहुत जल्दी थी, इस कारण मैंने कुछ विशेष परिश्रम नहीं किया, न उन दोनों का पीछाही किया।

इन बातों में सबने अपना अपना ग्लास खाली कर दिया, और फिर खेल आरम्भ हुआ। विलिफ्रड अब तक उसी भांति हारता जाता था। रात अधिक आई; इधर एक बजा, और उधर विलिफ्रड ने जो देखा तो एक पैसा भी उसके पास नहीं था! आज अर्ल आफ नार्मिनटन सबसे अधिक जीते; वही अर्ल महाशय जो बराबर हारा करते थे! हम पहलेही कह चुके हैं कि आज विलिफ्रड अपनी पूंजी का अधिक भाग अपने साथ जुएखाने में लाया था। अब स्पष्ट सुनिए कि वह आज पन्द्रह सौ रुपए लेकर घर से निकला था; और अब उसके घर में ३००) रु० शेष थे। अन्त में यह कहता हुआ वह कुर्सी से उठा कि, "अर्ल महाशय! अभी बहुत रात बाकी है। यदि आप थोड़ी देर ठहरने की प्रतिज्ञा करें तो मैं घर जाकर और रुपए ले आऊँ।"

अर्ल। घर जाने की कोई आवश्यकता नहीं है, जितना

कहिए, मैं दे दूं। मैं हर्ष पूर्वक आपका कोषाध्यक्ष बनने को तय्यार हूं।

विल्फ्रिड उतनेही रुपए मांगने को था, जितने उसके घर में वर्त्तमान थे; परन्तु उसने सोचा कि "जितनाही अधिक लेकर खेलूंगा, उतनाही अधिक जीतूँगा।" अतएव उसने अर्ल आफ नॉर्मिनटन से कहा, "मैं आपका अत्यन्त कृतज्ञ होऊंगा, अर्ल महाशय! आप मुझे कृपया ५००) रु० दीजिए।"

केवल मुंह से बात निकलने की देर थी; अर्ल आफ नॉर्मिनटन ने चटपट पांच सौ रुपए गिन दिए; और फिर खेल आरम्भ हुआ। अबकी बार विल्फ्रिड मानों अपने प्रारब्ध से हाथ धोकर खेल रहा था। जब जीतता तो हर्ष से फूला नहीं समाता और उसका चेहरा चमक उठता, परन्तु जब हारता तो उसका मुँह सूख कर पीला पड़ जाता। पासा जिस समय फेंका जाता था, उस समय सब तो साधारण रीति पर बैठे रहते थे, परन्तु वह नेत्र फाड़फाड़ कर उन हड्डी के छोटे छोटे पासों को ताकने लगता था। मानों उसके सौभाग्य अथवा दुर्भाग्य की बात उन्हीं पासों पर निर्भर थी। कभी तो हर्ष के कारण उसके गाल पर गुलाबी रंग आ जाता था, कभी विषाद से उसका मुख मलिन हो जाता था, और कभी वह झुझला कर पासों को पटक देता था। इसी दशा में तीन बज गए; और भाग्य की बुराई देखिए कि विल्फ्रिड का हाथ फिर खाली था! वारबार उसके मन में यह बात आती थी कि वह शिर पटक कर जान दे दे; परन्तु कुछ सोच समझ कर चुप हो रहता था कि इतने मनुष्यों की सभा में अप्रतिष्ठा न हो। जी को सम्हाल कर और ज्यों त्यों करके उसने एक घूंट मदिरा पी और तत्प-

पश्चात् अर्ल आफ़ नॉर्मिनटन से कहा " अच्छा अब कल रात को आप से इसका बदला लेंगे।"

अर्ल। (बहुत प्रसन्न हो कर) परन्तु यहां नहीं कल मेरे यहां आपका निमन्त्रण है। मेरे अन्य कई मित्र भी कल आवेंगे; यदि आप अनुग्रह-पूर्वक वहां पधारें तो बड़ी कृपा हो।

विलिफ्रड ने निमन्त्रण स्वीकार किया और कहा, " परन्तु आप सावधानी से खेलिएगा, और बहुत से रुपए लेकर बैठिएगा।"

अर्ल। अच्छा, अब मैं जाता हूं। मेरी गाड़ी आ गई है।

सभा भङ्ग हुई। अर्ल आफ़ नॉर्मिनटन अपनी गाड़ी पर चढ़कर चल गए। नेड क्रेप्टन और कप्तान ओ-हालोरन कुछ देर तक ठहरे रहे कि कदाचित् कोई उनसे शराब पीने के लिए प्रार्थना करे; परन्तु किसी ने उनसे बात तक भी नहीं पूछी, अतएव वे आपसही में कुछ खटपट करके चलते बने। विलिफ्रड भी मनही मन कुछ सोचता, विचारता और चिन्ता करता हुआ अपने घर गया। उस दिन दुःख के कारण बड़ी देर में उसको नींद आई। प्रातःकाल जब वह सो कर उठा तो उसके शिर में बहुत पीड़ा जान पड़ी। उस समय उससे पलंग पर से उठा नहीं जाता था। वास्तव में उसकी दशा बहुत शोचनीय थी। वह सोचता था कि अर्ल आफ नार्मिनटन को ५००) रु० देना बहुत आवश्यक बात है; क्योंकि यदि न देंगे तो बड़ी नामहँसाई और अप्रतिष्ठा होगी। परन्तु केवल ३००) रु० वर्त्तमान है; बाकी आवे तो कहां से?

विलिफ्रड विचारने लगा कि किसी मित्र से रुपए उधार लेने चाहिएँ; परन्तु उसे कोई ऐसा सुहृद मित्र नहीं दिखाई

दिया, जो उसे इतने रुपए दे देता। इसके पश्चात् कुछ सोचकर और अपने ऊपर आपही बिगड़ कर वह कहने लगा, "हम कैसे मूर्ख हैं कि हमने हजार रुपए बैठे बैठाए रोसालिण्ड को दे दिए। मैं क्या जानूँ कि वह मेरे लाभ के लिए कोई काम कर रही है या नहीं! वह मुझको पत्र तक नहीं लिखती। (कोई बात स्मरण करके) परन्तु मैं भूल गया। वह नहीं लिखती तो न सही; किन्तु मुझे उसे सब बातें लिख भेजनी चाहिएं। यदि वह वास्तव में मेरी भलाई के लिए कुछ उद्योग कर रही है, तो अवश्य कुछ सहायता करेगी। (फिर अपने शिर पर हाथ मार कर) कहीं मिस "मे" मेरा वृत्तान्त सुन पावे तो रोसालिण्ड के सारे उद्योग निष्फल हो जाँय।"

विल्फ्रिड अपने मन में यही बातें कर रहा था और अपने आप को बुरा भला कह रहा था कि इतने में द्वारपाल ने आकर कहा, "दो मनुष्य मुलाकाती कमरे में ठहरे हुए हैं, और वे आपसे मिलना चाहते हैं।"

विल्फ्रिड। उनका नाम क्या है?

द्वारपाल। नेड क्रेष्टन और ओ-हालोरन।

विल्फ्रिड को आश्चर्य्य हुआ कि इन दोनों के यहां आने का क्या कारण है। अस्तु उसने जल्दी जल्दी कपड़े बदले और जाकर उनसे मिला।

नेड क्रेष्टन। (बन्दगी करके) प्रियवर! आज हमलोगों की यह इच्छा है कि तुम्हारे ही साथ भोजन करें। और एक आवश्यक विषय में कुछ बातें भी करनी हैं।

विल्फ्रिड। (आश्चर्य्यान्वित होकर) वह कौन सा ऐसा अत्यावश्यक विषय है?

नेड क्रेष्टन । (अट्टहास करके) पहले भोजनादि से निवृत्त हो लें, तब कहेंगे ।

बिल्फ्रिड । (बेचैन होकर) अच्छा यही सही ।

तत्काल नौकर को टेबुल पर भोजन के पात्र सजाने की आज्ञा दी गई । दोनों अर्थात् नेड क्रेष्टन और-हालोरन ने हाथ बढ़ा बढ़ाकर भोजन करना आरम्भ किया; मानो ज्यों ज्यों वे खाते जाते थे त्योंही त्यों उनकी भूख बढ़ती जाती थी । यद्यपि विल्फ्रिड को ये बातें अच्छी नहीं लगती थीं, तथापि किसी किसी तरह वह अपने जी को रोके रहा । भोजन के उपरान्त बातचीत आरम्भ हुई ।

तीसरा प्रकरण ।

पहले नेड क्रेष्टन बात छेड़ने के लिए प्रस्तुत हुआ । कुछ काल तक तो वह अपने साथी का मुंह देखता रहा; पश्चात् उसने इशारे में उससे कुछ कहा, जिसके जवाब में उसने भी वैसेही संकेत से उत्तर दिया । तदनन्तर नेड क्रेष्टन विल्फ्रिड की ओर देखकर कहने लगा—"मिष्टर विल्फ्रिड! हम दोनों, जो कुछ हमें कहना है, स्पष्ट कहने आए हैं; परन्तु इन बातों के विषय में ऐसा समझ लेना चाहिए कि मानो कभी हुई ही नहीं थीं । (फिर ओ हालोरन की ओर देखकर) क्यों ओ-हालोरन! ठीक है न?"

ओ-हालोरन । हां २, निस्सन्देह; लेकिन और?

नेड क्रेष्टन । मित्र विल्फ्रिड! अब बात छिपाने की क्या आवश्यकता है? तुम्हारे पास जो कुछ रुपए थे, वह समाप्त हो गए न?

विलिफ्रड। इन बातों से तुम्हारा क्या मतलब है? मैं कुछ नहीं समझा।

नेड क्रेप्टन। अजी हमारा मतलब तो वही है जो हम कहते हैं। (ओ-हालोरन से) क्यों केप्टेन?

ओ-हालोरन। हां २। (विलिफ्रड की ओर देखकर) नेट क्रेप्टन वही बात कहते हैं जो मुझसे इनसे सलाह हुई है। उन्होंने सत्य कहा है कि अब तुम अर्थहीन हो गए।

विलिफ्रड। मान लिया जाय कि मैं गरीब हो गया और मेरे पास एक पैसा नहीं रहा; तो क्या तुम लोग मेरी सहायता करने आए हो?

ओ-हालोरन। हां, इसी अभिप्राय से आए हैं। मेरे प्रिय मित्र नेड क्रेप्टन तुमसे सब हाल कहेंगे।

विलिफ्रड। अस्तु, जो कुछ कहना है उसे शीघ्र कहो। देखो, अब मेरे चित्त को उलझन होती है।

नेड क्रेप्टन। तनिक धैर्य्य धरो। तुम इस बात को अस्वीकार नहीं कर सकते कि तुम्हारे सब रुपए चले गए। हम और ओ-हालोरन चालाक और अनुभवी मनुष्य हैं। कल रात तुम्हारे मुखड़े को देखने से जान पड़ता था कि अब तुम्हारे पास कुछ नहीं है। हमें क्षमा करना; वह भी एक समय था, जब मारे हर्ष के तुम्हारा चेहरा चमक उठता था। क्यों ओ-हालोरन! चमक उठता था न?

ओ-हालोरन। निस्संदेह२, ऐसा चमकने लगता था जैसे मदिरा पीनेपर उसकी झलक गुलाबी गालों पर दिखाई देती है।

इन बातों को सुनकर विलिफ्रड मनही मन इतना क्रुद्ध हुआ कि उसकी यह इच्छा हुई कि वह दोनों को डाँट बतावे; परंतु

फिर यह सोच कर कि कदाचित् इन दोनों से कुछ काम निकले, वह चुप हो गया। कुछ देर ठहर कर बोला,—" क्या तुम मुझको विदूषक समझते हो जो ऐसी हँसी ठट्ठे की बातें करते हो? मैंने तुम दोनों के साथ सदा मित्रवत् व्यवहार रक्खा है; अब इन बातों को जाने दो और सीधी २ बातें करो।"

नेड क्रेष्टन। (अट्टहास के साथ) अब और भी स्पष्ट हो गया कि तुम्हारी दशा बहुतही शोचनीय है, और कदाचित् तुम को इसका उपाय नहीं मालूम कि धन कैसे उपार्जन करना चाहिये। हम देख देखकर समझ रहे थे कि पहली रात तुम कैसे प्रसन्न हो जाते थे, और उसी भांति दूसरी रात को तुम्हारे मुख पर क्रोध के चिन्ह अंकित हो जाते थे, और बारबार तुम उदास हो हो कर रह जाते थे। अब हमको पूर्ण-तया विश्वास हो गया कि उस बुड्ढे के दानपत्र के अनुसार तुमने जो पांच सहस्त्र रुपए पाए थे, उन सब को जुए में उड़ा दिया और अब तुम्हारे पास कुछ नहीं है। क्यों ठीक है न?

ओ-हालोरन। हां २, इनके पास कुछ नहीं है।

विल्फ्रेड। मान लिया जाय कि जो तुम कहते हो, वह सब सत्य है; तो इससे तुम्हारा क्या अभिप्राय है?

नेड क्रेष्टन। तो अब हम साफ साफ कहे देते हैं। परन्तु पहले यह बता दो कि गत रात्रि को तुमने अर्ल आफ नॉर्मिन-टन से ५००) रु० लिए थे, उनको चुका सकोगे या नहीं!

विल्फ्रेड। मान लो कि मैं नहीं चुका सकता, फिर तुम को क्या?

नेड क्रेष्टन। तब तो सचमुच तुम नहीं चुका सकते। क्यों ओ हालोरन! यह चुका सकते हैं?

ओ-हालोरन। कदापि नहीं। इनकी अवस्थाही बताए देती है कि यह नहीं चुका सकते।

नेड क्रेष्टन। विल्फ्रिड महाशय! बताइए, अब आप कितना रुपया दे सकते हैं? आपके पास ३०० रु० से अधिक नहीं है।

विल्फ्रिड को बड़ा आश्चर्य्य हुआ कि, इसको कैसे मालूम कि मेरे पास तीनही सौ रुपए है! परन्तु वह चुप रहा।

नेड क्रेष्टन। देखो, तुम्हारा चेहरा गवाही दे रहा है कि हमने जो कुछ कहा है वह सच है। हाँ, तो अब २००) रु० की कमी है। देखो मैंने केवल अनुमान से कहा था।

विल्फ्रिड। हाँ सच है कि २००) रु० की कमी है तो क्या तुम लोग मुझ को रुपए उधार देने आए हो? या कोई और उपाय बताओगे जिससे इतना रुपया मिल जाय?

नेड क्रेष्टन। हां, हमारा यही अभिप्राय है। क्यों ओ-हालोरन! हम लोग यही सलाह करके आए थे न?

इतना सुनना था कि विल्फ्रिड मारे हर्ष के डेढ़ इञ्च मोटा हो गया। परन्तु मन में सोचने लगा कि इन दोनों के पास क्या धरा है, और ये देंगे कहां से? विल्फ्रिड को सोचते देखकर नेड क्रेष्टन बोला—"तुम मन में कहते हो कि हम रुपया कहां से लाकर देंगे। तुम्हारा यह सोचना भी अनुचित नहीं है। क्यों ओ-हालोरन! ठीक है न?"

ओ—हालोरन। इसमें सन्देह ही क्या है; किन्तु अब मतलब की बात कहो। उस यहूदी का वृत्तान्त कहो।

नेड क्रेष्टन। अरे भाई विल्फ्रिड मिडिल्टन! एक बड़ा मोटा

और मालदार यहूदी है; उसको हम भली भांति जानते हैं। पन्द्रह रुपया सैकड़ा सूद लेता है। परन्तु हां, यदि नियत समय पर रुपया न दे दिया जाय तो कैदखाने का मजा भी खूब चखाता है। कप्तेन् और हम आज प्रातःकाल उसके घर पर गए थे। वहाँ हमने तुम्हारी बड़ी प्रशंसा की। जब मतलब पर आया तो हमने तुम्हारी ओर से २००) रु० की प्रार्थना की। उसने देने की प्रतिज्ञा तो की है; परन्तु सूद २० रु० फी सैकड़ा मांगता है। इतना समझ लो।

विलिफ्रड।(बहुत प्रसन्न होकर) बस हाँ, यह मतलब की बात कही। (कुछ सोचकर) परंतु तुम दोनों ने जो मुझपर इतनी कृपा की, इसका क्या कारण है ?

नेड क्रेष्टन। अजी इसी अभिप्राय से कि कुछ काम काज चले। हम तीनों मिलकर कुछ काम चलावेंगे।

विल्फ्रिड। मैं आपकी बात नहीं समझा।

नेड क्रेष्टन। उँह! तुम रुपये कर्ज लोगे या नहीं ?

विलिफ्रड। लेंगे क्या नहीं; अवश्य लेंगे।

नेड क्रेष्टन। अच्छी बात है।

ओ-हालोरन। हाँ २, अच्छी बात है, बहुत अच्छी बात है; अपूर्व बात है।

नेड क्रेष्टन। हाँ तो मित्र विलिफ्रड! आज तुम रुपए लेकर अर्ल महाशय के मकान पर निमन्त्रण में जाओगे और मैं समझता हूं कि भोजन के पश्चात् खेल अवश्य आरम्भ होगा। मान लो कि आज भी तुम बहुत सा हार गए, तो तुम्हारी क्या दशा होगी? सिवाय अपनी जान दे देने के तुम क्या करोगे? क्यों ओ-हालोरन!

ओ-हालोरन। हां, इसके अतिरिक्त यह करही क्या सकते हैं!

नेडक्रेष्टन। हम तो मन की बात कहकर तब मतलब पर चलते हैं। तो मित्र विल्फ्रिड! तुम समझ गए कि हारने से क्या होगा? और इस बात के कहने की तो हमें आवश्यकताही नहीं है कि जीतने से कैसा हर्ष प्राप्त होता है। और हां, यह भी समझ लो कि अर्ल आफ नॉर्मिनटन के पास बहुत सा रुपया है; उनको हारने का दुःख नहीं होता। तो खूब समझ लो कि यदि हम कोई ऐसा उपाय बता दें कि तुम्हीं जीतो, तो कैसा हो?

विल्फ्रिड। मैंही जीतूं? (कुछ सोचकर) ओह! मैं समझ गया। अच्छा बताओ, कैसे केवल हमीं जीत सकते हैं? यदि ऐसा हो तो अवश्यही तुम दोनों का भी नफ़ा है।

नेड क्रेष्टन। बस इसी बात का भरोसा मैं चाहता था।

यह कहकर नेड क्रेष्टन ने एक पासा निकाल के टेबुल पर रख दिया। विल्फ्रिड को अब मालूम हुआ कि ये दोनों किस अभिप्राय से आए हैं। एक ऐसा व्यक्ति जिसने अपनी जीती जागती पत्नी को मरी हुई प्रसिद्ध कर दिया था और मुर्दे की कोठरी में से दानपत्र चुराने के समय जिसको तनिक भी भय नहीं हुआ था, भला जाल के पासे से खेलने में क्यों आपत्ति करता? वह तो तुरन्त तय्यार हो गया, और उन दोनों से मन-समझौता भी हो गया। इसके पश्चात्, तीनों इज़राइल नामक यहूदी के पास गए, और उससे रुपया उधार ले आए।

इन दोनों बदमाशों के चले जाने के उपरान्त, विल्फ्रिड ने एक पत्र अपनी स्त्री के नाम लिखा। इन दिनों वह किसी व्यक्ति से मिला था; उससे मिलने का वृत्तान्त भी उसने उस पत्र में लिख दिया।

अर्ल आफ नॉर्मिनटन की कोठी रिचमण्ड नामक मोहल्ले में थी। यह कोठी बहुतही सुन्दर और बड़ी बनी थी। चारों ओर बगीचा लगा हुआ था; जिसमें अनेक प्रकार के पुष्पवाले पौधे लगे थे। यहां तक कि उसके चारो ओर टेम्स नदी से काट कर एक नहर भी लाई गई थी।

अर्ल आफ नॉर्मिनटन का वृत्तान्त पहले भी कुछ लिखा जा चुका है, और इस स्थान पर भी उनके विषय में कुछ लिखा जाता है। उनके पास धन बहुत था। परन्तु उन्होंने अभी तक अपना विवाह नहीं किया था; अतएव उनके धन का उपभोग करने वाला कोई नहीं था। उनका यह नियम था कि जब भोजन का समय होता था तो मित्र आत्मीय एकत्रित हो जाते थे। इसके अतिरिक्त दूसरों को भोजन देना वह बहुत अच्छी बात समझते थे।

सूर्य्य भगवान् के अस्त हो जाने के पश्चात् विल्फिड खूब साफ और सुथरे कपड़े पहनकर अपने घर से बाहर निकला, और गाड़ी पर चढ़कर अर्ल आफ नॉर्मिनटन की कोठी पर पहुँचा। लोगों ने उसे ले जाकर एक सजे सजाए कमरे में बैठा दिया। उस स्थानपर और भी १२ मनुष्य बैठे थे, जो निमन्त्रित किए गए थे। विल्फिड ने जब सब के अभिवादन से छुट्टी पाई, तो वह अर्ल महाशय को सब से अलग एक कोने में ले गया, और एकान्त में एक बन्द लिफाफा उनके हाथ में देकर कहने लगा— "इसमें वे रुपए हैं जिन्हें कल रात को आपने मुझे उधार दिए थे। इस समय मैं आपकी उस कृपा का धन्यवाद देता हूं।

अर्ल। (लिफाफा जेब में रख कर) यह कोई ऐसी बात

नहीं थी, जिसके लिए आप धन्यवाद के बोझ से मुझे दबाए देते हैं। (मुस्कुरा कर) मुझे याद है कि आज आप मुझसे बदला लेंगे।

विल्फ्रेड। सब मेहमान आ गए ?

अर्ल। जी हां; कदाचित् सब आ गए। (चारो ओर देख कर) एक महाशय अभी तक नहीं आए। दोही तीन दिन हुए कि उनसे मुझसे परिचय हुआ है।

इतने में नौकर ने आकर सूचना दी कि "मिष्टर पेलहम" आए है। अर्ल महाशय अगवानी के लिए आगे बढ़े। विल्फ्रिड इन नवागन्तुक महाशय का मुंह देखकर सन्नाटे में आ गया, और आश्चर्य्य की दृष्टि से उनकी ओर देखने लगा!

चौथा प्रकरण।

मिष्टर पेलहम कम-उमर थे। उनका मुखड़ा ऐसा नहीं था कि उनको सुन्दर कहा जाय; परन्तु वह सुशील और बुद्धिमान जान पड़ते थे। उनके वस्त्रों में किसी प्रकार का भड़कीलापन नहीं था; हां सफाई अवश्य थी। पाठक! यह वही महाशय हैं जिन्होंने उस अन्धेरी रात में चोरों अथवा नेड क्रेष्टन और ओ-हालोरन के हाथ से विल्फ्रिड के प्राणों की रक्षा की थी, और जिनको देखकर विल्फ्रिड ने कहा था कि मैं पहचान गया।

विल्फ्रिड इन महाशय को इस जगह देखकर बहुत घबराया; परन्तु उसने तुरंतही अपने मुख पर से घबराहट के चिन्ह दूरकर दिए, और अपने मन में निश्चय कर लिया कि उनके साथ कैसा वर्त्ताव करना चाहिए। अर्ल महाशय ने पहले अपने अल्पवयस्क अतिथि अर्थात् मिष्टर पेलहम का सब लोगों को परिचय दिया

पश्चात् विलिफ्रूड की ओर देखकर कहने लगे—"आपही मेरे मित्र मिष्टर पेलहम हैं।"

विलिफ्रूड। मैं आप से पहले भी मिल चुका हूं; परन्तु इस समय मिलकर मुझको अधिक हर्ष हुआ। मैं आपको पुनर्वार धन्यवाद देता हूं; क्योंकि आपही ने चोरों के हाथों से मेरी प्राणरक्षा की थी।

अर्ल। हैं! क्या मिष्टर पेलहमही ने उस रात आपको बचाया था?

विलिफ्रूड। जी हां।

विलिफ्रूड ने इतना कहकर अपना हाथ मिष्टर पेलहम से मिलाने के लिए बढ़ाया; परन्तु उन्होंने केवल शिर हिलाकर सलाम का उत्तर दे दिया। कदाचित उन्होंने विलिफ्रूड के हाथ बढ़ाने को नहीं देखा; या कदाचित् वह विलिफ्रूड से अधिक मेल जोल नहीं बढ़ाना चाहते थे, अथवा कोई और कारण था। परन्तु हां, उन्होंने इतना अवश्य कहा कि, "वह बात केवल अचानक हुई थी। आपके धन्यवाद की कोई आवश्यकता नहीं है।"

मिष्टर पेलहम की इस बात पर विलिफ्रूड को बहुत क्रोध चढ़ आया; परन्तु उसने अपने को सम्हाला और कहा,-"नहीं; मैं आपका अत्यन्त कृतज्ञ हूं। आपने मेरे प्राण बचाए और उन दुष्टों को मेरा रुपया छीनने नहीं दिया।"

विलिफ्रूड और मिष्टर पेलहम में योंही बातें हो रही थीं, कि इतने में नौकर ने आकर कहा कि भोजन तय्यार है।

सब मेहमान टेबुल पर जा बैठे। सौभाग्यवश, विलिफ्रूड को मिष्टर पेलहम की बगल में बैठने को स्थान मिला। यह

महाशय अर्थात् मिष्टर पेलहम बहुतही चुप्पे थे। परन्तु जब ये कुछ बातें करते अथवा किसी की प्रशंसा करने लगते, तो इनकी योग्यता स्पष्ट झलकने लगती। इनकी प्रत्येक बात सावधानी और बुद्धिमानी से होती थी। इन बातों से विल्फ्रिड को कई बार ईर्षा हुई और उसने अपने मन में सोचा कि कदाचित् यह वह व्यक्ति नहीं है, जिसपर उसका सन्देह है। अन्त में, बहुत सोच विचार के उपरान्त, विल्फ्रिड आपही आप कहने लगा,—"निस्सन्देह यह वही मनुष्य है जिसपर मेरा सन्देह है; क्योंकि यदि यह वह व्यक्ति न होता, तो उस रात को, जब कि दुष्टों के हाथ से इसने मेरे प्राणों की रक्षा की थी, बिना कुछ कहे सुने चला क्यों जाता। अस्तु; जो हो, इस समय मौनावलम्ब ही एकमात्र उपाय है; क्योंकि यदि मैं इसके विषय में कुछ कहूँ तो कदाचित् यह भी मेरे रहस्य खोलने लग जाय।"

भोजन समाप्त हुआ, और सब लोग मदिरा पी पी कर मत्त होने लगे। अर्ल महाशय मदिरा पीने के बड़े अभ्यस्त थे। आज भी बहुत मदिरा पी जाने के कारण उनका मुख लाल हो आया था, और नेत्रों में गुलाबी डोरे पड़ गए थे; परन्तु उनकी बात चीत में कोई अन्तर नहीं पड़ा था। पाठक! हमारे अर्ल महाशय सदैव उदास और दुःखित दीख पड़ते थे। ऐसा जान पड़ता था कि मानो उनके हृदय-क्षेत्र में प्रेम का बीज बोया गया था, और उस प्रेमाग्नि को वह मदिरा रूपी जल से सींच सींच कर बुझाना चाहते थे। अस्तु; इस सभा में दो मनुष्यों ने बहुत कम मदिरा पी। अर्थात् एक तो मिष्टर पेलहम और दूसरे विल्फ्रिड। पहले महाशय तो इसके अभ्यस्त नहीं थे, और दूसरे अथवा विल्फ्रिड ने जान बूझकर आज किसी विशेष कारण से मदिरा पीना अनु-

चित समझा। उसने सोचा कि मदिरा पी कर पागल बन जाने से काम नहीं बनेगा; कारण कि आज उसने जाली पासे से जुआ खेलना निश्चय किया था।

उन दिनों यह नियम था कि भोजन के उपरान्त कुछ देर लों, लोग वहीं बैठे रहते थे; फिर वहाँ से उठ कर दूसरे कमरे में जाके चाय और कहुआ पीते थे। मिष्टर पेलहम और दो तीन अन्य महाशय चायवाले कमरे में गए। बिल्फिड यह सोच कर वहीं ठहरा था कि अर्ल महाशय खेल आरम्भ करने की अनुमति दें।

जब मिष्टर पेलहम आदि कई महाशय दूसरे कमरे में चले गए, तो विल्फिड उठ कर अर्ल ऑफ नार्मिनटन के निकट जा बैठा, और उनसे कहने लगा,—"आप के नवीन अतिथि मिष्टर पेलहम बहुत भद्र आदमी हैं।"

अर्ल। हाँ, मैं भी उनको ऐसाही समझता हूँ। उन्होंने संसार का अनुभव बहुत कम प्राप्त किया है; कदाचित् इसी कारण से विशेष वार्त्तालाप में उनका मन नहीं लगता।

विल्फिड। आपसे उनसे कहाँ का परिचय है?

अर्ल। दो तीन सप्ताह हुए, जनरल रथविन ने मुझको उनसे मिलाया था। आपतो जानते होंगे कि जनरल रथविन मेरे सबसे अच्छे मित्रों में से हैं। उन्होंने मिष्टर पेलहम की मुझसे बड़ी प्रशंसा की, और इसी कारण मैंने उनको निमंत्रित कर दिया।

विल्फिड। क्या जनरल रथविन से और उनसे कुछ सम्बन्ध है!

अर्ल। नहीं; परन्तु सुनिए,— मैं आपसे कहता हूँ कि जनरल से और उनसे क्योंकर साक्षात्कार हुआ और जनरल

रथबिन उनपर इतने प्रसन्न क्यों हो गए।– कई महीने हुए, जनरल महाशय गाड़ी पर चढ़कर कहीं जा रहे थे। इतने में दो डाकुओं के आकर गाड़ी को रोक लिया और कोचवान् को मार कर बेहोश कर दिया। जनरल महाशय का खानसामाँ बड़ा ही बोदा और छोटे "दिल" का आदमी था। मारे भय के पिस्तौल मारने का तो उसको साहस हुआ नहीं; उलटे कहने लगा कि यदि मैं कुछ करूँगा तो वे मुझको भी मार कर गिरा देंगे। स्वयं जनरल रथबिन ने पिस्तौल की बाढ़ मारी, परन्तु निशाना चूक गए। डाकुओं ने दोनों के पकड़ लेने का विचार किया, कि अकस्मात् एक ओर से किसी दौड़ते हुए आनेवाले घोड़े के टापों का शब्द सुन पड़ा। परन्तु उन दोनों डाकुओं ने इस बात पर कुछ ध्यान नहीं दिया, क्योंकि टापों के शब्द से उनको मालूम हो गया कि आनेवाला एकही व्यक्ति है। उस सवार ने कोलाहल सुनकर अपने घोड़े को और भी तेज किया। जब वह बहुत पास पहुँच गया, तो दोनों दुष्ट डाकुओं ने उसपर गोली मारी; परन्तु ईश्वर की कृपा से इतना कुशल हुआ कि उसको बिल्कुल चोट नहीं लगी। जब दोनों डाकुओं के पिस्तौल खाली हो गए, तो वे बड़ी हैरानी और घबराहट से अपने चारो ओर देखने लगे। इस बीच में नवागन्तुक सवार ने बड़ा साहस किया, और दोनों में से एक को लट्ठ मारकर गिरा दिया, और फुर्ती के साथ घोड़े से कूदकर दूसरे को पकड़ लिया। जनरल महाशय ने जब यह दृश्य देखा तो मानो उन के गए हुए प्राण बहुर आए, और वह तुरन्त उठ खड़े हुए, और अपने खानसामाँ को भी समझा बुझा कर उठाया। फिर तो तीनों ने मिलकर दोनों डाकुओं को बांधा और गाड़ी पर चढ़ा कर घर ले गए। वहाँ

उनको एक कोठरी में बन्द कर दिया; परन्तु प्रातःकाल दोनों भाग गए और अबतक कहीं उनका पता नहीं लगा। सुनिए; वह सवार यही मिष्टर पेलहम थे।

विलिफूड। मैं समझता हूँ कि यह किसी उच्चकुल के रत्न हैं।

अर्ल। मैं ठीक नहीं जानता; परन्तु खाने पीने से यह प्रसन्न जान पड़ते हैं; अर्थात् मध्यम श्रेणी के मनुष्य हैं।

विलिफूड। (मुस्कुरा कर) जनरल महाशय की एक कन्या भी तो है; क्या आश्चर्य्य है कि वह उसका विवाह मिष्टर पेलहम के साथ कर दें।

अर्ल। हाँ इस बात का होना सम्भव है,..........परन्तु (रुक कर) अब खेलने का समय आ गया।

विलिफूड। तथास्तु। तो खेल आरम्भ हो। परन्तु मुझको आते समय बिल्कुल ध्यान नहीं था; इस कारण आपके ५००) रु० के अतिरिक्त मैं अधिक रुपए नहीं लाया।

अर्ल। कोई चिन्ता नहीं। आपको जितने रुपए चाहिएँ, आप मुझसे लें। मैं एक कागज पर हिसाब करके आपको देता चलूंगा।

इसके उपरान्त नौकर को ताश और पासे लाने की आज्ञा दी गई। तत्काल आज्ञा पूरी हुई। कुछ लोग ताश की ओर झुके और कुछ पासों से अपना जी बहलाने लगे। अर्ल आर्फ नॉर्मिनटन तथा विलिफूड पासा खेल रहे थे। पहले विलिफूड कुछ हारा। उस समय वह कृत्रिम अर्थात् बनावटी पासा उसकी जेब में था और उसके बाहर निकालने का वह सुयोग ढूँढ़ रहा था। ईश्वरेच्छा से उसको पासा बदलने का अवसर भी बहुत शीघ्र मिल गया। कुछ काल के पश्चात् मिष्टर पेलहम अर्ल

महाशय से बिदा होने के लिए उनके पास आए।

यद्यपि अर्ल ऑफ नॉर्मिनटन स्वयं (मदिरा पीना, जुआ खेलना आदि) बुरे काम करते थे, परन्तु वे दूसरे की प्रवृत्ति इन कामों की ओर बहुधा नहीं होने देते थे। मिष्टर पेलहम से हाथ मिलाते समय वह कहने लगे,—"अब आप यहाँ एक बार आकर इस स्थानको पवित्र कर चुके तो इसे अपनाही घर समझ कर यदा कदा यहाँ आते रहने की कृपा दिखाइएगा।"

मिष्टर पेलहम ने अर्ल महाशय को धन्यावाद दिया। जिस समय अर्ल ऑफ नॉर्मिनटन मिष्टर पेलहम से बातें कर रहे थे, उस समय विलिफ्रूड को सुयोग मिल गया, और उसने चट बनावटी पासा निकाल कर बदल लिया। परन्तु अकस्मात मिष्टर पेलहम ने उसकी यह कारखाई देख ली, और विलिफ्रूड भी जान गया कि मिष्टर पेलहम ने उसे पासा बदलते देख लिया। यह देखते ही विलिफ्रूड की नाड़ी सूख गई; उसका हृदय धड़कने लगा; परन्तु इतना कुशल हुआ कि मिष्टर पेलहम ने कुछ कहा नहीं, वरन् वह उसी समय उस कमरे से बाहर चले गए। अर्ल ऑफ नॉर्मिनटन ने अपने अल्पवयस्क अतिथि को बिदा किया, और फिर आकर खेल में लग गए। अब सौभाग्य ने (यदि इसे वास्तविक सौभाग्य कहा जाय) विलिफ्रूड की सहायता की। पलक झपकते में विलिफ्रूड के आगे रुपए और आशर्फियों का ढेर लग गया। परन्तु हारने से अर्ल ऑफ नॉर्मिनटन को कुछ भी दुःख नहीं होता था।

रात अधिक आई। उपस्थित अतिथिगण नींद में चूर हो रहे थे। विलिफ्रूड पाँच सहस्र के लगभग जीत चुका था; और अन्त में सबकी आँख बचा कर उस जाली पासे को उसने फिर

अपनी जेब में रख लिया और असली पासे से खेलने लगा। अर्ल महाशय का किसी प्रकार इस खेल से जी नहीं भरता था। जितनाही वह खेलते थे, उतनी ही उनको अभिलाषा बढ़ती जाती थी। परन्तु बिल्फ्रिड ने खेलना बन्द ि या, और पौ फटते समय (चार बजने के लगभग) वह पूर्ण प्रसन्नता के साथ अपने घर गया। आज बिल्फ्रिड की बिचित्र अवस्था थी। मारे हर्ष के वह पृथिवी पर पाँव भी नहीं धरता था।

पाँचवां प्रकरण।

एक बहुतही सुन्दर और सजे सजाए कमरे में एक वृद्ध मनुष्य बैठे हैं, और उनके निकटही एक भोलीभाली खूबसूरत लड़की वर्त्तमान है। वृद्ध की अवस्था साठ वर्ष के लगभग होगी, परन्तु उनके सुगठित शरीर की ओर दृष्टिपात करने से बोध होता है कि, अभी उनमें बहुत बल है। यद्यपि उनके वस्त्र सादे हैं, तथापि उनको देखने से ऐसा सन्देह होता है कि कदाचित् वह किसी सेना के नायक होंगे। इन वृद्ध महाशय काही नाम जनरल रथविन है, और वह खूबसूरत लड़की इनकी पुत्री है; जो कि इनकी वृद्धावस्था का एकमात्र अवलम्ब है।

उस रूपवती लड़की की अवस्था अभी सत्रह वर्ष से भी कुछ कम होगी। यद्यपि उसके विषय में ऐसा तो नहीं कहा जा सकता कि वह योरोप भर में अद्वितीया सुन्दरी थी; तथापि इतना अवश्य कहेंगे कि बालक, वृद्ध, युवा, युवती, स्त्री, पुरुष सभी की दृष्टि उसपर प्रेम से पड़ती थी और सब का मन अनायासही उसकी ओर आकृष्ट होता था। बालिका का नाम जोज़फिन था। दो वर्ष हुए, इसकी स्नेहमयी जननी लोकान्तरित

हो गई, थी। परन्तु यह उसको अबतक भूली नहीं थी। जब से इसकी माता का देहान्त हुआ था, तब से यह दुःख में डूबी रहती थी, और इसके भोलेभाले मुखचन्द्र पर शोक के जलदजाल छाए रहते थे।

हम कह चुके हैं कि जनरल रथविन और मिष्टर पेलहम में परस्पर कैसे परिचय हुआ था। यद्यपि मिष्टर पेलहम स्वरूपवान् नहीं थे, तथापि उनके सुगुणों को देखकर सभी का मन उनकी और आकर्षित होजाता था। सुतरां जनरल रथविन की रूप-लावण्यमयी पुत्री भी उनकी युवावस्था और उत्तमोत्तम गुणों के कारण एकबारही उनपर आसक्त हो गई थी।

इस भोली बालिका के चित्त पर उस युवक अर्थात् मिष्टर पेलहम के रूपगुण ने पहले तो अधिक प्रभाव नहीं डाला था; किन्तु क्रमशः वह प्रभाव अधिक से अधिकतर और फिर उससे अधिकतम की सीमा को भी डाँक गया था। आह! बेचारी बालिका ऐसी भोली भाली और सरलहृदया थी कि पहले उसने उस प्रेम अथवा "इश्क" के प्रभाव को केवल प्रगाढ़ मित्रताही समझा था; परन्तु हाय-हाय! अन्त में उसके कोमल हृदय ने उसको धोखा दिया, और वह एकबारही अपने आपे से बाहर हो गई! सत्य है कि—

"अब जो देखा तो यह कि क़यामत है इश्क़।
क़हर है, ज़ुल्म है, बेदाद है, आफ़त है इश्क़॥"

पाठक! जिस दिन की बात हम आपको सुना रहे हैं, वह उस दिन के प्रातःकाल की बात है, जिसकी रात को अर्ल आफ नॉर्मिनटन के यहां उनके मित्रों का निमन्त्रण था। रात को निमन्त्रण का दृश्य दिखा कर, इस समय अर्थात् प्रातःकाल में

हम आपको जनरल रथबिन के घर की सैर कराने ले आए हैं।

जनरल महाशय के हाथ में एक समाचार-पत्र है, और उनकी पुत्री कोई कपड़ा सी कर अपना जी बहला रही है। अन्य दिनों की अपेक्षा आज मिस जोज़ाफिन का चित्त अधिकतर उदास दीख पड़ता है। इतने में उसके पिता की दृष्टि, अखबार देखते देखते स्नेह के सहित सहसा उसके मुखड़े पर जा पड़ी।

इस बालिका के आज अधिकतर उदास दिखाई देने का एक विशेष कारण है। आज यह प्रथमही दिवस है कि उसने उन शोक-सूचक वस्त्रों को उतारा है, जिनको इसने अपनी स्नेह-मयी जननी की मृत्यु के पश्चात् पहना था। इस समय वह अपनी स्वर्गवासिनी माता की प्यारी २ बातें स्मरण कर रही है। इसी कारण उसके मुखड़े पर उदासी छाई हुई है। उसका बृद्धपिता भी मनही मन इसी बात को सोच रहा था।

अन्त में जनरल महाशय ने उस देर से छाई हुई निस्तब्धता को भङ्ग किया। चित्त ठिकाने न रहने के कारण समाचारपत्र भी उनके हाथ से छूट कर भूमि पर गिर पड़ा, और एकदम उनके नेत्रों में आँसू भर आए। निदान वह रो रो कर कहने लगे—"मेरी प्राणप्रिया भार्य्या मरते समय कह गई थी कि जोज़ाफिन का विवाह किसी ऐसे व्यक्ति के साथ किया जाय जिसमें पूर्ण योग्यता और सद्गुण हों; कदापि किसी धनवान् के साथ नहीं।" इतना कहकर वह देर तक कुछ सोचते रहे, और अन्त में उठकर अपने निज के कमरे में चले गए। मार्ग में जब नौकर मिला, तो उससे कहते गए कि मिष्टर पेलहम जब आवें तो उनको हमारे पास भेज देना।

कुछ देर के बाद मिष्टर पेलहम आए। नौकर, उनको

अपने साथ लेजाकर, जनरल रथविन के कमरे में पहुँचा आया। जनरल महाशय नियमानुसार उनसे मिलने के लिए कुर्सी पर से उठ खड़े हुए और हाथ मिलाकर कहने लगे–" आइए इधर बैठिए। कहिए कल रात को अर्ल ऑफ नॉर्मिनटन के यहाँ जाकर आप प्रसन्न हुए या नहीं ?"

मिः पेलहम। महाशय! आप तो जानते ही हैं कि ऐसे स्थानों से मेरा विशेष सम्बन्ध नहीं रहता; और मुझको इस बात के प्रकाशित करने में किञ्चिन्मात्र भी लज्जा नहीं है कि ऐसे स्थानों अथवा ऐसी सभाकी रीति नीति मैं अभीतक भली भाँति नहीं जानता।

जनरल। हाँ, मुझको स्मरण है कि आपने पहले भी यही बात कही थी, इसी कारण मैंने अर्ल महाशय से आपका परिचय करा दिया। उनके पिता से भी मेरा परिचय है; परन्तु उनके (पिता के) आचार व्यवहार मुझे पसन्द नहीं हैं; इसलिए मैं आपको भी उनसे विशेष सम्बन्ध रखने के लिये मना करता हूँ। परन्तु अर्ल महाशय सज्जन व्यक्ति हैं।

मिः पेलहम। हाँ उनकी सज्जनता में कोई सन्देह नहीं है। कल उन्होंने मेरे साथ बहुत अच्छा बर्त्ताव किया। और उनके यहाँ आए हुए अन्य सज्जनों से मिलकर भी मैं अतीव प्रसन्न हुआ।

जनरल। मुझे विश्वास हो गया कि अब आप सभा सोसाइटियों के नियमादि समझ गए।

मिः पेलहम। जी हाँ, केवल आपकी कृपा से। मैं आपका इसके लिए अत्यन्त कृतज्ञ हूं।

जनरल। मुझको चापलूसी और खुशामद नहीं आती, तुम विश्वास मानो कि मैं तुमको अपने पुत्र की नाईं समझता हूं।

कारण, कि तुम्हारे आचार—व्यवहार मुझको बहुत ही भले प्रतीत होते हैं; परन्तु मुझे खेद है कि अबतक मैं तुम्हारे विषय में पूरी पूरी बातें न जान सका । क्या तुम कृपा करके अपना पूर्ण परिचय मुझको दोगे ?

मिः पेलहम । निस्संदेह, मेरा धर्म्म है और मुझको उचित है कि मैं अपना समस्त वृत्तान्त आपसे कह दूँ । परन्तु मुझे आप क्षमा करें; क्योंकि मेरे एक रक्षक ने अपना भेद खोलने को मुझे मना कर दिया है; और झूठ बोलना मैं पाप समझता हूं ।

जनरल । तो आप भी मुझे क्षमा करें कि मैंने क्यों ऐसा प्रश्न आप से किया । मुझे आपकी बात पर पूरा विश्वास है ।

इतने में द्वार खुला और नौकर ने आकर कहा—" अर्ल ऑफ नार्मिनटन आते हैं । " जनरल रथविन और मिष्टर पेलहम उनकी अगवानी के लिए उठ खड़े हुए । अर्ल ऑफ नॉर्मिनटन आते ही दोनों से हाथ मिलाकर बैठ गए । पश्चात्, मिष्टर पेलहम की ओर मुड़कर कहने लगे—" मैंने कल आपसे अधिक ठहरने का अनुरोध नहीं किया; क्योंकि मैंने विल्फ्रिड से खेलने की प्रतिज्ञा की थी । जब आपको इसका व्यसनही नहीं है, तब आपको व्यर्थ कष्ट देने का मुझे कोई प्रयोजन नहीं था।

जनरल । युवावस्था में प्रायः मुझको भी जुआ खेलने का अवसर प्राप्त हुआ है । परन्तु हाय ! अब न तो वह समय रहा, न हमही " वह " रहे—

" वह ज़माना न रहा, हम न रहे । "

अर्ल । मैं तो सदा खेलनेवाला खिलाड़ी हूं । परन्तु कल की तो बात ही विचित्र है । मिष्टर पेलहम ! आपको तो स्मरण होगा कि मैं विल्फ्रिड से खेल रहा था । पहले तो मैं कुछ जीता

थी; परन्तु पीछे जब पासा पड़ा तो उलटाही पड़ा।

जनरल। ओह ! वह तो बड़ा चालाक निकला ! कल रात को आप कितना हारे ?

अर्ल। (बड़ी निश्चिन्तता से) तीन हजार के लगभग,

मिः पेलहम। (आश्चर्य्य से) तीन हजार! इतना अधिक!!

अर्ल। इतना हारने पर आपको आश्चर्य्य होता है; परन्तु कभी कभी मैं इसका भी दूना चौगुना हार जाता हूं।

यह सुनकर मिष्टर पेलहम चुप होगए, और थोड़ी देर के बाद कुछ बहाना करके वहां से चले गए।

छठाँ प्रकरण।

विल्फ्रिड अपने कमरे में प्रसन्नता-पूर्व्वक बैठा नेड क्रेष्टन और ओ-हालोरन की बाट जोह रहा था कि वे दोनों आवें तो उनका हिस्सा भी बाँटा जाय। वह इतना प्रसन्न था कि उसको किसी बात की चिन्ता नहीं थी। समय बिताने के लिए उसने अपनी जेब में से पासा निकाला और आपही आप खेलना आरम्भ किया। वह खेल में इतना आपे से बाहर हो गया कि उसको कुछ भी ध्यान न रहा कि कोई उसके पास आ रहा है। यहां तक कि नौकर ने आकर कहा— "मिष्टर पेलहम आते हैं।" इतना सुनतेही विल्फ्रिड चौंक पड़ा, और साथही मिष्टर पेलहम भी आ गए। विल्फ्रिड ने घबराहट के साथ पासे को टेबुल पर पटक दिया, और सलाम करके कहा— "यद्यपि आप बिना कहे सुने आ गए, तथापि आपसे मिलकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ।"

मिष्टर पेलहम ने केवल सलाम का उत्तर दिया, और कुछ

नहीं कहा। इस बात से विल्फ्रिड मनही मन उनपर बहुत क्रुद्ध हुआ; परन्तु कुछ समझ कर चुप हो रहा। मिष्टर पेलहम कुर्सी बढ़ाकर उस पासे के निकट जा बैठे। इससे विल्फ्रिड और भी घबराया; परन्तु सिवाय चुप रहने के, कोई अन्य उपाय नहीं था।

मिः पेलहम। विल्फ्रिड! मैं तुम्हारे पास एक आवश्यक काम के लिए आया हूँ।

विल्फ्रिड।(आश्चर्य्यान्वित होकर) आवश्यक काम! आश्चर्य्य है! आपका कौन ऐसा काम हो सकता है जो मुझसे सम्बन्ध रखता हो!

मिः पेलहम। न यह सुनकर तुमको आश्चर्य्य करना चाहिए, न तुम्हारी चालचलन से असल बात का पता लगा लेनाही कठिन है। मैं तुम्हारे यहां देर तक ठहरने और व्यर्थ बकवाद करने नहीं आया हूँ। स्पष्ट बात यह है कि कल रात को तुमने अर्ल ऑफ नॉमिनटन को खूब ठगा, और तीन हजार रुपया बड़ी प्रसन्नता से उड़ा लाए।

विल्फ्रिड। (यद्यपि रुष्ट होकर तथापि अपने को बहुत सम्हाल कर) झूठ! बिल्कुल झूठ!

मिः पेलहम। सत्य और बिल्कुल सत्य। झूठ का नाम नहीं।

विल्फ्रिड। (डर के मारे कांपते हुए) सरासर झूठ है। ठीक वैसेही जैसे कोई दिन को रात कहे।

मिः पेलहम। अब अधिक बातें मत बनाओ। तुम्हारा चेहरा आपही गवाही देता है।

विल्फ्रिड। तुम झूठे हो।

इतना कहकर विल्फ्रिड ने पासा उठाने के लिए हाथ बढ़ाया; परन्तु मिः पेलहम ने उसको रोककर शीघ्रता-पूर्व्वक स्वयं पासा उठा लिया।

विल्फ्रिड । आज तुमको क्या हो गया है!

यद्यपि क्रोध के मारे विल्फ्रिड काँप रहा था, तथापि मिष्टर पेलहम पर उसने आक्रमण किया । एक हाथ से उसने गरदन पकड़ी,और दूसरे हाथ से चाहता था कि उनको भूमि पर गिरा दे; परन्तु अपने जोर में वह आपही गिर पड़ा । मिष्टर पेलहम ने उसको पटक कर और पासे को उससे छीन कर अपनी जेब में रख लिया । इसके पश्चात् कहा–मैं "मिडिल्टन" वंश की प्रतिष्ठा को समझ कर तुमको एकबारही बरबाद नहीं करूंगा ।" यद्यपि इस बात से विल्फ्रिड को कुछ भरोसा हो गया, तथापि उसने किसी प्रकार अपना दोष नहीं स्वीकार किया । फिर मिष्टर पेलहम कहने लगे–"अर्ल महाशय के यहां से जो रुपया लाए थे, उसको तुमने खर्च कर डाला या नहीं ?"

विल्फ्रिड । अभी किसी प्रश्न का उत्तर न दूंगा, जब तक आप यह न बतावेंगे कि मेरे साथ कैसा बर्त्ताव करेंगे ।

मिः पेलहम । अर्ल ऑफ नॉर्मिनटन को यह पासा दिखाऊंगा, और सब रहस्य उनसे कह दूंगा । इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह तुरन्तही तुमको फौजदारी सपुर्द कर देंगे ।

विल्फ्रिड । अभी आप कह चुके हैं कि आप एकबारही मेरी दुर्दशा न होने देंगे । तब ऐसा क्यों कहते हैं ?

मिः पेलहम । हां २, मैंने अपनी प्रतिज्ञा पर प्रथमही विचार कर लिया है । तुमको अर्ल ऑफ नॉर्मिनटन के आगे समस्त अपराध स्वीकार करने पड़ेंगे ।

विल्फ्रिड । क्या ! सचमुच ?

मिः पेलहम । निस्सन्देह । परन्तु मुझे विश्वास है कि वह तुमको क्षमा कर देंगे । मैं उनके स्वभाव से पूर्णतया परिचित हूँ ।

विल्फ्रिड। ऐसी दशा में तो मेरी बड़ी बदनामी होगी?

मिः पेलहम। क्या उससे भी अधिक होगी कि अर्ल ऑफ नॉर्मिनटन तुमको जेलखाने भेज दें?

विल्फ्रिड। मान लिया जाय कि वह मुझको क्षमा कर देंगे, और कृपया इस बात को गुप्त रक्खेंगे, तौभी उनके सामने मुझको कितना लज्जित होना पड़ेगा!

मिः पेलहम। मैं पूछता हूँ कि एक आदमी के सामने लज्जित होना अच्छा है या समग्र संसार के सामने?

विल्फ्रिड। अच्छा तो फिर इसके बाद वह मुझ से बात भी न करेंगे, और मुझको नीच समझ कर घृणा की दृष्टि से देखेंगे।

मिः पेलहम। हाँ, ऐसाही करेंगे; परन्तु इस बात न करने का कारण तो किसी को न बतावेंगे। फिर तुमको भी उचित होगा कि जहाँ जहाँ वह जाते हों, वहाँ तुम जाना छोड़ दो। देखो विल्फ्रिड! मैं तुमसे प्रतिज्ञा करता हूँ कि यथासाध्य मैं ऐसा उद्योग करूंगा कि वह तुमको क्षमा कर दें। परन्तु जो मैं कहूँ, तुम वही काम करो। मेरी बात मान लो।

विल्फ्रिड मन में सोचने लगा, "यदि मिष्टर पेलहम की बात मानता हूँ, तो क्षण भर में इतने रुपये चले जाते हैं, इसके सिवाय फिर जुएखाने में मुंह दिखाने योग्य भी न रहूंगा। थोड़ी देर में नेड क्रेष्टन और ओ-हालोरन यमराज की नाईं आ धमकैंगे; तो उनको क्या उत्तर दूंगा?" बड़ी देर तक विल्फ्रिड यही सोचता रहा, फिर निरुत्तर होकर बोला, "मैं आपकी बात स्वीकार करता हूँ। परन्तु रुपये तो मैं उस महाजन को दे चुका, जिससे मैंने उधार लिए थे। कृपया इतना और क्षमा करा दीजिए कि मुझको रुपये न देने पड़ें।"

मिः पेलहम। तुम असत्य कहते हो। मैंने आतेही साव-धानी से तुम्हारे नौकर से पूछ लिया था कि तुम आज कहीं बाहर तो नहीं गए थे, या कोई मुलाकाती तो तुम्हारे पास नहीं आया था। नौकर ने स्पष्ट कह दिया, कि न तो कोई तुम्हारे पास आया था; न तुम्हीं घर के बाहर कहीं गए थे।

विल्फ्रिड। (विवश होकर) अस्तु जैसा आप कहते हैं, मैं वैसाही करूंगा। तो किस तरह सफाई करनी चाहिए?

मिः पेलहम। मैं इतना चाहता हूं कि तुम अपना अपराध उनके सामने स्वीकार करो। (एक द्वार की ओर देखकर) यह द्वार किधर जाने का है?

विल्फ्रिड। (दरवाजा खोलकर) यह द्वार भोजना-गार का है।

मिः पेलहम। अच्छी बात है। तुम अर्ल ऑफ नार्मिन-टन के नाम एक पत्र लिखो कि किसी आवश्यक विषय में आपसे बातचीत करनी है; आज रात को आठ बजे कृपया मेरे घर पर पधारिए। मैं उससे कुछ पूर्वही आ जाऊँगा, और इसी कमरे में छिपकर बैठ रहूंगा। किन्तु देखो! इतना स्मरण रखना, कि यहाँ उस समय तुम्हारे सिवाय दूसरा कोई न हो। मेरे वर्त्तमान रहने से दो लाभ होंगे। प्रथम यह कि मैं प्रत्यक्ष देख लूंगा कि तुमने अपराध स्वीकार कर लिया, और जो कुछ अर्ल महाशय से लाए थे, वह सब उनको दे दिया। दूसरे कि यदि मैं तय्यार रहूंगा, तो वह भविष्यत् में तुम्हारे लिए किसी प्रकार के दण्ड की व्यवस्था न करेंगे। विल्फ्रिड! बस तुम्हारे बचने का यही एक उपाय है।

इसके अनन्तर मिष्टर पेलहम जानेही को थे, कि इतने में सहसा द्वार खुला, और द्वारपाल ने आकर कहा कि नेड क्रेष्टन और ओ-हालोरन आए हैं। इसके साथही वे दोनों भी आ गए।

सातवाँ प्रकरण।

उन दोनों के आतेही विलिफ़ूड ने मिष्टर पेलहम की ओर देखा, और कहा, "ये दोनों मेरे मित्र हैं। कदाचित् आपने इनके नाम सुनें होंगे।"

नेड क्रेष्टन और ओ-हालोरन ने मिष्टर पेलहम को सलाम किया, और फिर वे चुप हो रहे।

मिष्टर पेलहम सलाम का उत्तर देकर चाहते थे कि उठकर चले जायँ; इतने में नेड क्रेष्टन और ओ-हालोरन ने परस्पर चुपके चुपके कुछ कहा; जिस पर मिष्टर पेलहम को कुछ सन्देह हुआ। परन्तु जब उन्होंने अपने सन्देह का कोई कारण नहीं देखा, तब वह वहाँ से चले गए।

मिष्टर पेलहम के जाने के पश्चात् कुछ काल तक दोनों चुपचाप बैठे रहे। तत्पश्चात् नेड क्रेष्टन ने पूछा, "कहो जी! यह कौन बेवकूफ था?"

विलिफ़ूड। हाँ, है तो बेवकूफ; बिलकुल उल्लू। तुम क्या जानो कि यह कौन है। अब यहाँ मिष्टर पेलहम के नाम से पुकारा जाता है।

नेड क्रेष्टन। क्या पेलहम! अहो! यह नाम तो कदाचित् पहले भी सुना था।

विलिफ़ूड। अजी मुझसे पूछो। जनरल रथविन से और इस लौंडे से गहरी मित्रता है।

नेड क्रेष्टन। मिष्टर पेलहम और रथविन को जहन्नुम में डालो; अब आओ मतलब की बातें करें। कहो रातको क्या दशा रही? कितने रुपये जीते?

इस प्रश्न का उत्तर देना विल्फ्रिड को बहुत बुरा मालूम हुआ। वह आपही आप कहने लगा, "यदि ये दुष्ट असल हाल सुनेंगे, तो बड़ा कोलाहल मचावेंगे।"

जब विल्फ्रिड की ओर से उत्तर देने में विलम्ब हुआ, तो नेड क्रेष्टन बड़ी बड़ी आँखें दिखाकर कहने लगा,—"देखो हमारे साम्हने तुम्हारी कोई चालाकी नहीं चलेगी। यह न समझना कि हमें धोखा देकर तुम बच जाओगे (ओ-हालोरन से) क्यों जी! क्या यह हो सकता है कि यह हमको धोखा दें, और हम इनके धोखे में आ जायँ?"

ओ-हालोरन। क्या मजाल! अजी हम तो भूत बनकर इनके सिर पर सवार हो जायँगे।

विल्फ्रिड। अब बहुत व्यर्थ की बातें न करो। मैं झूठ कदापि न बोलूंगा।

नेड क्रेष्टन। अच्छा तो फिर इतनी चिन्ता करने और चुप रहने का क्या कारण? और हमारे प्रश्न का उत्तर देने में विलम्ब क्यों?

विल्फ्रिड। जो मैं कहता हूं, पहले उसे चुपचाप सुन लो। इसमें मेरा कोई अपराध नहीं है। मुझपर रुष्ट होने और हाथ पैर पटकने से क्या लाभ? यदि कोई उपाय समझ में आवै, तो तुम्हीं बताओ।

नेड क्रेष्टन। मैं समझा नहीं कि तुम क्या कहते हो। अब पहेली न बुझवाओ; जो कुछ कहना है, स्पष्ट कहो। (ओ-

हालोरन से) क्यों ओ हालोरन ! अब विल्फ्रिड को साफ साफ कह देना चाहिए न ?

विल्फ्रिड। तो लो;—जो बात है, मैं एकही शब्द में कहे देता हूँ। कल रात तीन हजार रुपए जीते।

नेड क्रेष्टन। तुम्हें पाँच हजार जीतना उचित था। खैर, फिर देखा जायगा। हां, तो अब प्रतिज्ञानुसार आधा तुमको मिलना चाहिए, और आधा हमको।

विल्फ्रिड। पहले सुन तो लो। दुष्ट पेलहम ने सब हाल जान लिया, और धोखा देकर वह पासा भी उसने मुझसे ले लिया। अब विवश करता है कि मैं अर्ल ऑफ नॉर्मिनटन के सामने अपना अपराध स्वीकार कर लूं।

नेड क्रेष्टन। अभी तक तो तुमने किसी दूसरे से यह बात नहीं कही ?

विल्फ्रिड। नहीं, किसी से नहीं। आज रात की प्रतिज्ञा है। अर्ल महाशय मेरे घर पर आवेंगे।

इसके बाद विल्फ्रिड ने उन बातों को पूरा पूरा कह दिया, जो उसमें और मिष्टर पेलहम में हुई थीं। विल्फ्रिड के मुंह से ये बातें सुनकर दोनों बहुत क्रुद्ध हुए, और निराश होकर नेड क्रेष्टन पूछने लगा,—" तो क्या इतना रुपया हाथ से गँवा दोगे ? "

ओ-हालोरन। अजी नहीं। भला यह कहीं हो सकता है।

विल्फ्रिड। अब इन व्यर्थ बातों के करने का समय नहीं है। मै मिष्टर पेलहमके हाथ में फँस गया हूँ। कोई उपाय नहीं सूझता है।

नेड क्रेष्टन। अजी तो इङ्गलेण्ड ही के भीतर तक तुम उसके अधिकार में हो, या बाहर भी !

ओ-हालोरन। अजी बस रुपया बाँट बूँट कर आओ इङ्गलेण्डही को धता बतावें। इङ्गलेण्ड को जूती मारें और फ़ान्स या स्काट्लेण्ड में चलकर बस जायँ।

नेड क्रेष्टन। मेरी भी यही सम्मति है कि इङ्गलेण्ड को दूरही से प्रणाम कर, किसी और जगह निकल चलें। मुझे तो लण्डन से बहुत घृणा हो गई है।

विल्फ्रेड। तुम दोनों अपनीही कहे जाओगे या कुछ मेरी भी सुनोगे ? मैं अपने नाम को बदनाम नहीं कर सकता; और अपनी प्रतिष्ठा भङ्ग नहीं करा सकता। एक और बात की भी मुझे चिन्ता है; जिसे मैं नहीं भूल सकता।

नेड क्रेष्टन। वाह! मुंह धो रक्खो जो यह सोचते होओ कि मिस मिडिल्टन से तुम्हारा विवाह हो जायगा। यह कभी नहीं हो सकता। संसार भर जानता है, कि उसने तुम्हारे साथ विवाह करने से साफ इनकार कर दिया है। क्यों ओ-हालोरन! इनकार कर दिया है न?

ओ-हालोरन। हां २, भी। और मान लिया जाय कि नहीं इनकार किया, तो फिर हमको क्या? हम तो इतना नहीं ठहर सकते, कि जब यह अपनी शादी कर लें, तब चलें।

विल्फ्रेड। हां, तुमको इन बातों से क्या मतलब। लेकिन सुनो, मैं सच कहता हूँ। मैं भी यह नहीं चाहता कि रुपये लौटा दूं। पर कोई उपाय तो बताओ। दो बातों में से एक बात है;—या तो रुपये दे दिए जायँ, या सब कोई मिलकर मिष्टर पेलहम को झूठा ठहरा दें।

नेड क्रेष्टन। अजी हमें इन बातों से क्या मतलब। लाओ, हमारा हिस्सा लाओ।

ओ-हालोरन। (विल्फिड की पीठ ठोंक कर) लाओ यार लाओ। बस अब लाओ!

विल्फिड। नहीं यह नहीं होगा। मैं अपनी बिल्कुल दुर्दशा नहीं करा सकता।

नेड क्रेट्टन। अजी तुम क्या हो, हम तो बड़े हैकड़ खाँ से ले लें। अजी, हम कसम खाकर कहते हैं कि तुम्हें रुपये देने ही पड़ेंगे।

विल्फिड। देखो, मैं कहे देता हूं कि मुंह सम्हाल कर बातें करो; नहीं तो फिर मैं भी जवाब देना आरम्भ करूँगा।

नेड क्रेट्टन। क्या कहा!

विल्फिड। जो तुम मेरी बुराई सोचोगे, तो मैं भी कोई बात उठा नहीं रक्खूंगा। इसमें चाहे जो हो जाय।

नेड क्रेट्टन। (घबरा कर) भले आदमियों की तरह बात चीत करो। हमारे जैसे जेण्टिलमैनों के सामने ऐसी बात?

विल्फिड। हाँ तुम जैसे जेण्टिलमैन हो, वह मैं भली भाँति जानता हूं। अभी जरा एक आवाज दूं तो और कुछ नहीं, बस इसी समय तुम दोनों पुलीस के हाथों में पड़ जाओ। तुम्हीं दोनों ने उस रात मुझे घायल किया था।

नेड क्रेट्टन। अच्छा तो अब उससे क्या मतलब। परन्तु तुम हमारे विरुद्ध हो कर बच नहीं सकते।

विल्फिड। यह उस समय है, जब तक हम तीनों मिले रहें। परन्तु निश्चय जानो कि यदि तुम दोनों ने मुझसे मुंह फेरा, तो मैं तुम्हारे पीछे पड़ जाऊंगा, और तब तुम उचित दण्ड पाओगे।

नेड क्रेट्टन। अच्छा तो आओ हम तीनों आपस में मेल रक्खें। यह तो तुम भी कहते हो कि रुपया लौटाने को तुम्हारा भी जी

नहीं चाहता; इसलिए, रात को जब मिष्टर पेलहम यहां आकर छिप रहेंगे; उस समय हमें अच्छा सुयोग मिलेगा। क्यों ओ हालोरन! ठीक है न!

ओ–हालोरन। (अपने हाथ से अपना गला दबा कर) हां, खूब मौका मिलेगा। रोकता कौन है!

विलिफ्रड। (काँप कर) कहीं ऐसा करना भी नहीं।

ओ–हालोरन। (विलिफ्रड की घबराहट देख कर) ऐसा मत समझो कि हम सचमुच ऐसाही करेंगे।

नेड क्रेष्टन। (देर तक सोच कर) अब एक बात मेरी समझ में आई, और बेशक वह ठीक है।

विलिफ्रड। यह निश्चय जानो कि मैं अच्छी तरह विलिफ्रड के हाथ में फँस गया हूं। केवल यही नहीं, एक और भी बात है।

नेड क्रेष्टन। यदि उसकी बदनामी हो जाय तो कैसा? क्या फिर भी लोग उस की बात का विश्वास करेंगे?

विलिफ्रड। नहीं, फिर तो कोई उसपर विश्वास नहीं करेगा; लेकिन उसकी बदनामी का उपाय क्या है?

नेड क्रेष्टन ने उपाय बतलाया; जिसके साथ ओ–हालोरन हाँ में हाँ और ना में ना मिलाता गया। विलिफ्रड को भी वह राय पसन्द आई; और फिर उसी बात के अनुसार कार्य्य होना स्थिर हुआ।

इस बातचीत के बाद नेड क्रेष्टन और ओ–हालोरन चले गए, और विलिफ्रड ने अर्ल ऑफ नॉर्मिनटन के नाम पत्र लिखा।

—ooo—

आठवां प्रकरण।

पाठकों को स्मरण होगा कि अर्ल ऑफ नॉर्मिनटन, जेनरल

रथबिन से बैठे बातें कर रहे थे, और मिष्टर पेलहम उन दोनों को उसी प्रकार बैठा छोड़ कर चले आए थे। अतएव, उनकी बातें भी सुन लेनी चाहिएँ। बातें करते करते अर्ल ऑफ नॉर्मिनटन ने एक पुस्तक के विषय में पूछा कि कहाँ है? जिसके उत्तर में जनरल रथबिन बोले, "हाँ, वह मेरे पास है।"

थोड़ी देर के बाद अर्ल ऑफ नॉर्मिनटन विदा हो कर आपने घर गए और जनरल रथबिन उस पुस्तक को अपने पुस्तकालय में ढूंढ़ने लगे; और अन्त में उसे खोजकर उन्होंने निकाल लिया। उस समय जनरल रथबिन को कोई काम नहीं करना था; अतएव मन में सोचने लगे कि चलो इस पुस्तक ही को अर्ल ऑफ नॉर्मिनटन को दे आवें। यह सोचकर वह अर्ल महाशय के मकान की ओर चले। वहाँ पहुँचे, तो उनको द्वारपाल के द्वारा विदित हुआ कि अर्ल ऑफ नॉर्मिनटन इस समय अपने पुस्तकालय में हैं। जनरल रथबिन उनके पुस्तकालय का मार्ग जानते थे, और अर्ल ऑफ नॉर्मिनटन से उनसे गहरी मित्रता थी, एवं दोनों में किसी प्रकार का पर्दा अथवा संकोच नहीं था; इस कारण, उन्होंने अनुमति लेने की कोई आवश्यकता नहीं देखी, वरन् वह बिना पूछे ही वहाँ जा पहुँचे। पुस्तकालय के द्वार पर पहुँच कर उन्होंने देखा कि अर्ल ऑफ नॉर्मिनटन एक टेबुल के पास द्वार की ओर मुंह किए बैठे हैं; टेबुल का एक खाना खुला है, और कोई वस्तु उनके हाथ में है, जिसको वह बहुत सूक्ष्म दृष्टि से देख रहे हैं। अर्ल महाशय उसके देखने में इतने मुग्ध थे कि जनरल रथबिन के आने का हाल उनको बिल्कुल नहीं मालूम हुआ। इतने में सहसा उनके मुख से एक "आह" निकली; जिसको सुनकर जनरल रथबिन ने अनुमान

किया कि कदाचित बिना पूछे मेरे चले आने पर वह रुष्ट हो गए। यह सोचकर, वह, लौटनेही को थे, कि सहसा घूम कर अर्ल ऑफ नार्मिनटन ने उनको देख लिया। जनरल रथ-बिन को देखकर वह घबरा गए, और चाहते थे कि उस वस्तु को, जिसको वह देख रहे थे, कहीं छिपा दें, परन्तु फिर आपही कहने लगे–" आह ! छिपाने की कोई आवश्यकता नहीं है !"

यह सुनकर जनरल रथबिन बहुत हैरान हुए, और अपनेही को बुरा भला कहने लगे, कि बिना पूछे क्यों चले आए। फिर उन्होंने अर्ल ऑफ नॉर्मिनटन से कहा–" अर्ल महाशय ! मुझको इस बात का पश्चात्ताप है कि मैं बिना पूछे क्यों चला आया। क्या अब चला जाऊं ?"

अर्ल। नहीं २ पश्चात्ताप की कोई बात नहीं है। जब आप पिताजी के मित्र थे, तब इसमें कोई सन्देह नहीं कि आप मेरे भी हितू हैं। अतएव मैं अपना सब बृत्तान्त आपसे अवश्य कहूंगा।

जनरल रथबिन ने देखा कि अर्ल ऑफ नॉर्मिनटन के हाथ में एक अंगूठी है। अर्ल महाशय कुछ कालतक तो चुप रहे; पश्चात् बड़ी नम्रता से दुःखभरे शब्दों में कहने लगे–" आह ! अब उसकी यही एक " निशानी " रह गई ! किसकी ? उसकी जिसको मैं अपने प्राणों से भी अधिक चाहता था, जो मेरे लिए संसारभर की बहुमूल्य वस्तुओं से भी बढ़कर थी।"

जनरल र०। अर्ल महाशय। मैं पुनः क्षमा मांगता हूँ, और खेद के सहित कहता हूं कि बिना पूछे क्यों चला आया।

अर्ल। महाशय ! यह आप क्या कहते हैं। मैं आपको फिर विश्वास दिलाता हूं कि आपके पूछने की कोई आवश्यकता न

तो थीं, न इसी समय है, न भविष्यत् में ही रहेगी।

जनरल र०। (वह पुस्तक अर्ल आफ नॉर्मिनटन के हाथ में देकर) मैं केवल इस पुस्तक को देने आया था; अतएव अब जाता हूं।

अर्ल। नहीं; यह अंगूठी मेरे सुख दुःख का एक अद्भुत स्मारक है। इसको आप देखही चुके (आंखों में आंसू भरकर) आह! जब इस पर मेरी दृष्टि पड़ जाती है, तो सारी पिछली घटना मुझे स्मरण हो आती है। यदि आप कृपया एक घण्टा यहां ठहरना स्वीकार करें, तो मैं अपनी कहानी आपसे कहूं, और थोड़ी देर रो लूं।

इसपर जनरल रथविन यह कहकर, कि मैं प्रस्तुत हूं, पास में बिछी हुई एक कुर्सी को खींचकर उसपर बैठ गए।

अर्ल ऑफ नॉर्मिनटन ने अंगूठी को फिर टेबुल के खाने में रखकर बन्द कर दिया, और सावधानी से जरा सम्हलकर कुर्सी पर बैठ गए, और अपनी दुःखकथा इसप्रकार कहने लगे।

"प्रिय जनरल महाशय! आप यह न समझे होंगे कि आपसे बिदा होकर यहां आतेही मैंने यह अंगूठी क्यों निकाली, और इस समय इसे देखकर मैं क्यों रो रहा हूं; और यद्यपि मैं बराबर रो चुका हूं, परन्तु अभी तक रोने की इच्छा क्यों होती है? सुनिए,—सम्भवतः आपको स्मरण होगा, कि बातें करते करते मैंने आपके यहां कहा था कि तीन हजार हार जाना कोई बड़ी बात नहीं है। यद्यपि मैं जुआड़ियों की भांति बाजी लगाकर खेलता हूं; परन्तु उनलोगों की तरह इस खेल को मैंने अपनी जीविका का उपाय नहीं बना लिया है। प्रायः मेरी यह दशा रहती है कि यदि एक दिन ३००) रु० जीता, तो दूसरे

दिन ३०००) हार जाता हूं। मैं जो खेलता हूं तो केवल जी बहलाने और समय बिताने के लिए। मदिरा भी जो अधिक पीता हूँ, उसका भी यही कारण है। जब मैं मदिरा पी कर मत्त हो जाता हूँ, उस समय मेरी वह चिन्ता कुछ काल के लिए दूर हो जाती है। प्रिय जनरल महाशय! आप जानते हैं कि मैं इन बुरे कामों में क्यों फँसता हूँ? सुनिए केवल यही कारण है कि मेरा चित्त कुछ शान्त रहे। हाय! मेरे हृदय में जो घाव हो गया है, उसे कोई वैद्य, हकीम अथवा डाक्टर अच्छा नहीं कर सकता। क्या करूं—

(शेर)

" इलाज दर्द का अपने किया मगर न गया।
तबीयत ने मुझे क्या कुछ दिया मगर न गया॥"

जनरल रथविन महाशय चुपचाप बैठे ये सब बातें सुन रहे थे, और आपही आप कहते जाते थे,—कदाचित् अर्ल ऑफ नॉर्मिनटन कभी प्रेम के फांस में फँसे थे। इसके पश्चात् कुछ कालतक अर्ल महाशय चुप रहे। फिर बोले,—"जनरल रथविन! मैं आपसे एक कहानी कहता हूँ। आप विश्वास मानिए, कि आज से पहले मैंने कभी यह बात मुंह से नहीं निकाली थी। यह एक ऐसी कहानी है, जिसे सुन कर पहले तो आप प्रसन्न होंगे; परन्तु हाय! अन्त में यह सम्भव नहीं, कि आप रोने न लग जायँ, और एकबारही आपके मुंह 'आह' न निकल जाय।

" आपको स्मरण होगा, मेरे पिता के दो लड़के थे; जिनमें से छोटा मैंही था। जब मैं चौदह वर्ष का हुआ, तब मेरे पिता ने मुझको एक दूसरे शहर में ले जाकर स्कूल में भर्ती करा

दिया। मैं जिस पाठशाला में पढ़ने के लिये बैठाया गया था, वहाँ दो तीन अन्य लार्डों के प्रतिष्ठित बालक भी शिक्षा पाते थे। स्कूल का यह नियम था, कि वहाँ अमीर गरीब सब बराबर समझे जाते थे। अतएव स्कूल में मुझको कोई मेरे वास्तविक नाम से नहीं पुकारता था; वरन लोग मुझे केवल मिष्टर "डरवेण्ट" कहते थे।

मेरे गुरु एक धर्म्मनिष्ठ शिक्षक थे; अतएव उनकी इच्छा से सब छात्रों के साथ मुझको भी ईश्वर की प्रार्थना करने गिर्जाघर में जाना पड़ता था। परन्तु गिर्जाघर में मेरा जाना माष्टर साहब अथवा गुरुजी के डर से नहीं होता था, किन्तु मैं वहाँ वह वस्तु देखने जाता था जिसके देखने से मेरा जी भरता ही नहीं था, और इच्छा होती थी कि दिन भर उसे देखाही करूँ। हाय! वह वस्तु एक लड़की थी, जो देखने में तो मनुष्य थी, किन्तु सुन्दरता में अप्सरा से भी बढ़कर थी। उसकी मनमोहिनी मूर्त्ति का वर्णन मैं आपसे क्या करूं। उसे देखकर यही कहते बनता था कि—"हूर में ऐसो न नूर लख्यो, नहिं देखी कोई ऐसी हसीन परी है!"

"उस लड़की की एक वृद्धा मां थी। उस वृद्धा का पति किसी लड़ाई में अपूर्व्व वीरता दिखाकर आहत हुआ था। वृद्धा का नाम था–मिसेज़ मार्कलेण्ड। पति की मृत्यु के पश्चात से उसने संसार के यावत् ऐश्वर्य्य की सामग्रियों की ओर से मुख फेर लिया था। तबसे वह केवल अपनी पुत्री ऐगनेस की प्यारी प्यारी बातों को सुनकर और उसकी भोली भोली सूरत को देखकर आश्वासित होती थी। नगर से दो मील के अन्तर पर एक गांव था। उसी गांव में वह वृद्धा अपनी पुत्री के साथ

रहती थीं, और प्रति रविवार को ईश्वर-वन्दना के निमित्त गिर्जे में आती थीं। गिर्जे में दोनों आकर अगले टेबुल पर बैठ जाया करती थीं, और पिछली पंक्ति में स्कूल के बालक बैठते थे। इस कारण कई सप्ताह तक तो दूरही दूर से उस प्रेम प्रतिमा के देखते रहने का सुयोग मुझे प्राप्त हुआ; परन्तु सौभाग्य ने शीघ्र ही सहायता की। हम लोगों के बैठने का टेबुल बनाया जाने लगा; जिस कारण हम सब छात्रों को आगे बढ़कर बैठने की आज्ञा मिली। अतएव मैं अपनी प्यारी एगनेस के बहुत समीप बैठकर उसे देख सकता था। आह! कैसे बताऊं कि उसकी मूर्ति कैसी मनोहारिणी थी; उसके नेत्र कैसे रसीले थे; उसके बाल कैसे घुंघराले थे, जो स्वप्न में कदाचित किसी को कभी न दिखाई दिए होंगे। हाय! वह ऐसी थी, कि यदि कोई दृढ़प्रतिज्ञ ब्रह्मचारी भी उसे देख लेता, तो तत्काल आपे से बाहर होकर तन मन धन सब उसे समर्पण कर देने को उद्यत हो जाता!

नौवाँ प्रकरण।

अर्ल ऑफ नॉर्मिनटन ने इतना कह कर, किञ्चित् विश्राम करके पुनः कहना आरम्भ किया। वह बोलेः—

"प्यारी एगनेस का पता पूछने के लिए मुझे अधिक काल तक ठहरना नहीं पड़ा। बाल्यावस्था में मैं इतना निडर था कि स्कूल के नियमादि पर मैं जरा भी विचार नहीं करता था। एक दिन की बात है। तीसरे पहर का समय था। पक्षी चतुर्दिक् चहचहा रहे थे, और कुछ अपने बसेरों की ओर पंख फैलाए उड़े चले जाते थे। मैं भी टहलता हुआ उस प्यारी के

घर की ओर चल निकला। ईश्वर का अनुग्रह देखिए, कि मुझ को बहुत सुन्दर सुयोग मिल गया। जाकर देखता क्या हूँ, कि प्यारी एगनेस पर एक बुल्डाक कुत्ता झपट पड़ा है, और उस कोमलाङ्गी को काटना चाहता है। कुत्ते को ढेला मारकर निर्जीव कर देना मेरे बाएँ हाथ का खेल था। हाय जनरल महाशय! मैं आपसे क्या कहूँ! मेरे मारने पर कुत्ते के भागतेही उस प्रेममयी सुन्दरी का बारंबार मुझे धन्यवाद देना, और फिर लज्जावश नीची गरदन कर लेना, और फिर तुरन्तही कनखियों से मेरी ओर उसका देख लेना, और उसका लज्जायुक्त स्वरों में गला दबा दबाकर कुछ कहना, मुझे भली प्रकार स्मरण है,—और ऐसा स्मरण है, कि मानो उस समय का मानचित्र मेरे नेत्रों के सम्मुख रक्खा हुआ है। अस्तु, अन्त में उसने लज्जा को दूर किया, और मेरी ओर देखकर कहा—"तो अब जरा आप घर पर चलकर माताजी से मिल लीजिए। वह भी आपको धन्यवाद देंगी।"

"मेरे मन में खटका हुआ कि कदाचित् वह बुढ़िया मेरे वहां जाने से किसी प्रकार का सन्देह वा आशङ्का करे, और मेरे मन की बात मनमें ही विलीन हो जाय, अतएव मैंने उस सरलहृदया सुन्दरी को समझा बुझाकर राजी किया कि वह इस बात को अपनी मां से न कहे। यह कोई बड़ी बात नहीं थी। वह भोली लड़की मेरे कहने में आ गई, और उसने इस बात को अपनी मां से छिपाने की प्रतिज्ञा की। इसके पश्चात्, अपने भाग्य की सराहना करता हुआ, मैं घर आया। वास्तव में वह ईश्वर की कृपा थी कि हम दोनों का परिचय हो गया। फिर तो मैं नित्य उससे एकान्त में मिलने लगा। यद्यपि वह

जानती थी कि मैं स्कूल में पढ़ता हूं, परन्तु उसने कभी यह नहीं पूछा कि प्रायः मेरे पास आते रहने का क्या कारण है। पहले तो उसने इस बात पर ध्यान भी नहीं दिया, और कुछ नहीं समझा कि मैं मनही मन उसे प्यार करता हूँ; परन्तु थोड़े ही दिनों में मेरे चित्तका उस पर भी असर पड़ा, और उसका मन कुछ कुछ मेरी ओर खिचने लगा। सत्य है, जो जिसको चाहता है, वह उसे अवश्य प्राप्त होता है। अस्तु।

"इस मेलजोल और परिचय को एक महीना बीत गया। उस भोली, सरलहृदया सुन्दरी ने, मेरे आने जाने का हाल अब तक अपनी माता से नहीं कहा था। कोई यह न समझे कि उसका यह वृत्तान्त छिपाना किसी असद् अभिप्राय से था। नहीं २, कदापि नहीं।—हाँ, इसमें सन्देह नहीं कि उसको इस बात का भय था कि उसकी वृद्ध माता कहीं उससे रुष्ट न हो जाय, और उस पर किसी प्रकार का संदेह न करने लग जाय कि इतने दिनों तक यह भेद क्यों छिपा रक्खा था। यद्यपि मैंने बहुत समझा बुझा कर यह भय उसके चित्त से दूर कर देने का बहुत प्रयत्न किया, तथापि मैं कृतकार्य्य न हो सका।

"हाय! वह ऐसी भोली थी, कि मुझे एक साधारण बालक समझती थी। वह नहीं जानती थी कि मेरे पिता बड़े भारी ज़मींदार, धनवान् और काउण्ट अथवा राजा पदवीधारी मनुष्य हैं। छुट्टी के दिनो में जब मैं घर जाता था तो पिता जी के भय से उसको पत्र भी नहीं लिखता था। इसी लज्जा और भय में मेरी उमर सोलह वर्ष की हो गई। उस समय मुझे स्कूल छोड़ना पड़ा। कारण, कि मेरे ज्येष्ठ भाई की कुचरित्रता का समाचार सुनकर मेरे पिता को स्कूल की पढ़ाई से घृणा हो गई थी। उनको यह

बात स्वीकार नहीं थी कि उनके लड़के स्कूल में पढ़कर खराब हों। जब मैंने सुना, कि मै स्कूल से पृथक् कर दिया जाऊंगा, और साथही जब मुझे यह ध्यान हुआ कि यदि सचमुच यह बात होगी तो मुझे प्यारी एगनेस से पुनः साक्षात् करने का सौभाग्य न प्राप्त होगा, तो उस समय मेरी दशा ठीक वैसीही हुई, जैसी कि किसी मनुष्य की उस समय होती होगी, जब वह उस अवसर पर सहसा सोते से जगा दिया गया होगा, जिस अवसर पर कि वह कोई बहुतही उत्तम स्वप्न देख रहा होगा।

" अस्तु। घबराकर मिस एगनेस के पास मैं दौड़ा हुआ गया, और रो रोकर उससे कहने लगा,—" आह ! अब कदाचित् हम दोनों एक दूसरे से न मिलेंगे। यदि इतनी कृपा करो कि बराबर पत्र-व्यवहार होता रहे, तो बहुत उत्तम बात हो, और इस भग्न हृदय को कुछ शान्ति भी मिलती रहे। यदि तुमने अनुग्रह-पूर्वक मेरी यह बात स्वीकार न की, तो निश्चय जानो, कि मेरे प्राण न बचेंगे।"

" इस समाचार को सुनकर उसका हृदय भी चूर चूर हो गया। वह बड़े जोर से रो रो कर कहने लगी,–" हाय ! अब तो माताजी से सब वृतान्त स्पष्टतया कह देना अत्यन्त आवश्यक जान पड़ता है।" मुझे भी यह बात पसंद आई। अतएव हम दोनों जाकर उस वृद्धा के पांवों पर गिर पड़े, और रो रो कर दोनों ने अपनी कहानी उसे कह सुनाई। पहले तो उस अनुभव-प्राप्त वृद्धा ने बहुत रोष और क्रोध प्रगट किया, परन्तु पीछे हम दोनों में सच्चा प्रेम देखकर उसे दया आ गई। अतएव उसने कुछ सोच समझ कर दोनों के अपराध क्षमा करदिए।

" नासमझी के कारण मैंने उसी समय उसे अपने पिता

का परिचय भी दे दिया। यह सुनकर वह फिर पलट गई, और कहने लगी, कि 'तुम्हारे पिता की अनुमति के बिना एगनेस तुमसे पत्र-व्यवहार नहीं कर सकती।' मैंने भी सोचा कि बुढ़िया यथार्थ कहती है। पिताजी से अनुमति ले लेना कोई अत्यन्त कठिन कार्य्य नहीं है। निदान आशा और निराशा के समुद्र में गोते खाता हुआ मैं लन्दन पहुँचा, और पिताजी के पांवों पर मस्तक रखकर, मैंने सब वृतान्त उनसे कह सुनाया। हाय! इसके उत्तर में उन्होंने जो कुछ कहा, उसका वर्णन करने में मेरा कलेजा टुकड़े टुकड़े हुआ जाता है। वह बहुत रुष्ट होकर घण्टोंतक मुझे घुड़कते रहे। मुझे स्मरण है कि उन्होंने यह भी कहा था—कि, "यदि तुम मेरे पुत्र और उत्तराधिकारी न होते, तो मैं तुमको उचित दण्ड देता। परन्तु इतना कहे देता हूं, कि यदि दूसरी बार कभी यह बात तुम्हारी जिह्वा से निकली, तो मैं तुम्हारा मुंह देखना छोड़ दूंगा। मैं अभी मिसेज मार्कलेण्ड (वृद्धा) को लिख भेजता हूं, कि यदि तुम उसके नाम कोई पत्र भी लिखो तो वह उत्तर न दे, वरन् बिना पढ़ेही लौटा दे।"

अर्ल ऑफ नार्मिनटन इतना कहकर चुप हो गए। उनकी आँखों से आँसुओं की दो चार बूंदे एकबार ही टपक पड़ीं। परन्तु उन्होंने आँसू पोंछकर पुनः कहना आरम्भ किया—"प्रिय जनरल महाशय! इसी अवस्था में दो वर्ष बीत गए। इन दो वर्षों में एक लेखक के अधीन, जिसे मेरे पिता ने नियुक्त कर दिया था, मुझे रहना पड़ा। इस बीच में मैंने अनेक पत्र मिस एगनेस के नाम भेजे, किन्तु किसी का उत्तर मुझको नहीं मिला। तथापि मैं निराश नहीं हुआ; क्योंकि मुझे विश्वास था कि मिस एगनेस मेरा कम आदर नहीं करती।

"जनरल महाशय! आपको स्मरण होगा, कि उन दो वर्षों के बीच में मेरे भाई की गोली, आखेट करते समय छूटकर अचानक उन्हीं बेचारे पर आ पड़ी थी; जिसके कारण थोड़ेही दिनों में वह लोकान्तरित होगए थे। यद्यपि इस घटना का मुझको बहुत शोक हुआ तथापि झूठ बोलने से क्या लाभ? मैं सत्य कहता हूं कि तब मुझे अपनी आशा के सफल होने की दृढ़ आशा होगई। मैं रात दिन उसी प्यारी एगनेस का भजन किया करता था। भाई साहब की मृत्यु के बाद, एक दिन पिताजी ने मुझे अपने पास बुलाया, और कहा—" यूजिन * अब उस समय से, जब कि तुम स्कूल में पढ़ते थे, अब से बड़ा अन्तर है। अब तुम्हारे विचार उस समय जैसे नहीं है, जब कि तुमने एक वाहियत बात की प्रार्थना मुझसे की थी। मुझे विश्वास है, कि अब तुम में वह पहले जैसा लड़कपन नहीं है। उस जगत्पिता परमेश्वर की कृपा से अब तुम अपना बुरा भला आपही अच्छी तरह समझ सकते हो। मैं आशा करता हूं, कि तुम खूब विचार कर अपने कार्य्य करोगे। सुन लो यूजिन! तुम यह न समझना कि भाई के मरतेही तुम स्वतन्त्र हो गए। न्यायानुसार अभी तुम्हारे बालिग होने में तीन वर्ष बाकी हैं। यद्यपि मैं तुम्हारा पिता हूं, तथापि मैं तुमसे प्रार्थना करता हूं—तुमसे निवेदन करता हूं—तुमसे विनीत भाव से कहता हूं, कि इस तीन वर्ष के जमाने में तुम मिस एगनेस से न मिलना। फिर इस समय के बाद जैसी तुम्हारी इच्छा हो, वैसाही करना। तब मैं कुछ नहीं करूंगा। यूजिन! मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं, कि तुम्हारे चित्त से यह बात दूर हो, और तुमको सुबुद्धि मिले। अब तुम्हारी शिक्षा समाप्त हो चुकी, अब तुमको भले लोगों में

* यह भी अर्लआफ नार्मिनटन का एक नाम था।

का परिचय भी दे दिया। यह सुनकर वह फिर पलट गई, और कहने लगी, कि 'तुम्हारे पिता की अनुमति के बिना एगनेस तुमसे पत्र-व्यवहार नहीं कर सकती।' मैंने भी सोचा कि बुढ़िया यथार्थ कहती है। पिताजी से अनुमति ले लेना कोई अत्यन्त कठिन कार्य्य नहीं है। निदान आशा और निराशा के समुद्र में गोते खाता हुआ मैं लन्दन पहुँचा, और पिताजी के पांवों पर मस्तक रखकर, मैंने सब वृतान्त उनसे कह सुनाया। हाय! इसके उत्तर में उन्होंने जो कुछ कहा, उसका वर्णन करने में मेरा कलेजा टुकड़े टुकड़े हुआ जाता है। वह बहुत रुष्ट होकर घण्टोंतक मुझे घुड़कते रहे। मुझे स्मरण है कि उन्होंने यह भी कहा था—कि, "यदि तुम मेरे पुत्र और उत्तराधिकारी न होते, तो मैं तुमको उचित दण्ड देता। परन्तु इतना कहे देता हूं, कि यदि दूसरी बार कभी यह बात तुम्हारी जिह्वा से निकली, तो मैं तुम्हारा मुंह देखना छोड़ दूंगा। मैं अभी मिसेज मार्कलेण्ड (वृद्धा) को लिख भेजता हूं, कि यदि तुम उसके नाम कोई पत्र भी लिखो तो वह उत्तर न दे, वरन् बिना पढ़ेही लौटा दे।"

अर्ल ऑफ नार्मिनटन इतना कहकर चुप हो गए। उनकी आँखों से आँसुओं की दो चार बूंदे एकबार ही टपक पड़ीं। परन्तु उन्होंने आँसू पोंछकर पुनः कहना आरम्भ किया—"प्रिय जनरल महाशय! इसी अवस्था में दो वर्ष बीत गए। इन दो वर्षों में एक लेखक के अधीन, जिसे मेरे पिता ने नियुक्त कर दिया था, मुझे रहना पड़ा। इस बीच में मैंने अनेक पत्र मिस एगनेस के नाम भेजे, किन्तु किसी का उत्तर मुझको नहीं मिला। तथापि मैं निराश नहीं हुआ; क्योंकि मुझे विश्वास था कि मिस एगनेस मेरा कम आदर नहीं करती।

"जनरल महाशय! आपको स्मरण होगा, कि उन दो वर्षों के बीच में मेरे भाई की गोली, आखेट करते समय छूटकर अचानक उन्हीं बेचारे पर आ पड़ी थी; जिसके कारण थोड़ेही दिनों में वह लोकान्तरित होगए थे। यद्यपि इस घटना का मुझको बहुत शोक हुआ तथापि झूठ बोलने से क्या लाभ? मैं सत्य कहता हूं कि तब मुझे अपनी आशा के सफल होने की दृढ़ आशा होगई। मैं रात दिन उसी प्यारी एगनेस का भजन किया करता था। भाई साहब की मृत्यु के बाद, एक दिन पिताजी ने मुझे अपने पास बुलाया, और कहा—" यूजिन * अब उस समय से, जब कि तुम स्कूल में पढ़ते थे, अब से बड़ा अन्तर है। अब तुम्हारे विचार उस समय जैसे नहीं है, जब कि तुमने एक वाहियत बात की प्रार्थना मुझसे की थी। मुझे विश्वास है, कि अब तुम में वह पहले जैसा लड़कपन नहीं है। उस जगतपिता परमेश्वर की कृपा से अब तुम अपना बुरा भला आपही अच्छी तरह समझ सकते हो। मैं आशा करता हूं, कि तुम खूब विचार कर अपने कार्य्य करोगे। सुन लो यूजिन! तुम यह न समझना कि भाई के मरतेही तुम स्वतन्त्र हो गए। न्यायानुसार अभी तुम्हारे बालिग होने में तीन वर्ष बाकी हैं। यद्यपि मैं तुम्हारा पिता हूं, तथापि मैं तुमसे प्रार्थना करता हूं—तुमसे निवेदन करता हूं—तुमसे विनीत भाव से कहता हूं, कि इस तीन वर्ष के जमाने में तुम मिस एगनेस से न मिलना। फिर इस समय के बाद जैसी तुम्हारी इच्छा हो, वैसाही करना। तब मैं कुछ नहीं करुंगा। यूजिन! मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं, कि तुम्हारे चित्त से यह बात दूर हो, और तुमको सुबुद्धि मिले। अब तुम्हारी शिक्षा समाप्त हो चुकी, अब तुमको भले लोगों में

* यह भी अर्लआफ नार्मिनटन का एक नाम था।

बैठना उठना चाहिए, और सुसंगति से सुशिक्षा और अनुभव प्राप्त करना चाहिए। मुझे निश्चय है कि अब तुम मेरी आज्ञा के अनुसार देश देशान्तर मे भ्रमण करोगे, और सदैव बुरी बातों से पृथक् रहकर, उत्तमोत्तम कार्य्य करते रहोगे"

"पिता जी इतना कहकर रोने लगे। कारण, कि भाई की मृत्यु का उनको बहुत दुःख हुआ था। विशेष दुःख का कारण यह था, कि माता जी हम दोनों भाइयों को बहुत छोटी उमर में छोड़कर मरी थीं, और पिताजी ने बड़े आदर से हमको पाल पोस कर बड़ा किया था।"

जनरल रथविन। हां, मुझे स्मरण है कि जब तुम्हारी माता की मृत्यु हुई थी, उस समय तुम दोनों भाइयों की उमर बहुतही छोटी थी।

अर्ल ऑफ नॉर्मिनटन बोले—" सुने जाइए और देखिए कि पिताजी की आज्ञा का पालन मैंने कहां तक किया। मैंने उनकी शिक्षापूर्ण बातों को सुनकर मनही मन कहा कि भला इस समझाने से क्या लाभ ? अस्तु, दो चार दिन के पश्चात मैंने पिताजी से एक बहाना किया और उस गांव की ओर चला, जहां प्राणप्रिया एगनेस रहती थी। जब गाड़ी वहां पहुंची और मैं उस पर से उतरा, उस समय की घबराहट और जल्दी की दशा नहीं कही जा सकती। कुछ दुःख, कुछ रंज; कुछ आशा, कुछ निराशा, मतलब यह कि इसी दशामें जाकर, मैंने उसके झोपड़े का द्वार खटखटा दिया। प्यारी एगनेस काले शोकसूचक वस्त्र पहने हुए बाहर निकली! एक दूसरे को देखते ही हम दोनों को शोक और प्रसन्नता दोनों बातें हुईं। दौड़कर हम दोनों परस्पर लिपट गए; और इस प्रकार लिपट गए कि

पृथक् होने की कदापि इच्छाही नहीं होती थी। हम दोनों के नेत्रों से आनन्दाश्रु बहने लगे। देर के बाद जब हम अलग हुए, तब उस प्रेममयी सुन्दरी ने यों कहना आरम्भ किया कि—'आठ महीने बीते कि मेरी माताजी स्वर्गधाम को सिधार गईं। मेरा कोई आत्मीय वा सम्बन्धी न होने के कारण, मैंने एक वृद्धा को जो कई वर्ष से माताजी की सेवा करती थी, अपने पास रख लिया है।' वह यह भी कहने लगी कि, मैंने तुम्हारे सब पत्र पढ़े; परन्तु मां के सामने शपथ खा चुकी थी, इसी कारण मैंने किसी का उत्तर नहीं दिया। जनरल महाशय! उसकी बातों से मालूम हुआ कि मरते समय मां ने उसे बहुत समझाया कि वह मेरे साथ प्रेम करना छोड़ दे; परन्तु क्या यह कभी सम्भव था! कहा है, कि—प्रेम पयोनिधि में फँसि के, हँसि के कढ़िबो नाहिं खेल हँसी है।' वह सदैव मुझे स्मरण किया करती थी, और उसका प्रेम कभी मुझपर से कम नहीं हुआ। कुछ दिनोंतक मैं उस गांव में रहा, और यह समझकर कि कदाचित् पिताजी मेरे यहां रहने का हाल जान लें, मैंने अपना नाम बदल दिया। सारांश यह, कि वह एक सप्ताह (क्योंकि सातही दिन तक मैं उस गांव में रहा था) बड़े हर्ष और प्रसन्नताके सहित व्यतीत हुआ। अन्त में मैंने यह संकल्प किया, कि चुपचाप उसके साथ विवाह कर लूं। मिस एगनेस का प्रेम मुझपर ऐसा नहीं था कि वह किसी बात से इनकार करती। उसने झटपट विवाह करना स्वीकार कर लिया; परन्तु बड़ी कठिनता इस बात की उपस्थित हुई, कि न्यायानुसार मैं अभीतक बालिग नहीं हुआ था, और बिना बालिग हुए विवाह नहीं हो सकता था। इसके अतिरिक्त इसकी आशङ्का हुई कि पिताजी को यह सब हाल मालूम हो

जायगा। सोचते सोचते निदान मैंने यह निश्चय किया कि स्काट्लेण्ड में जाकर विवाह कर लूं; क्योंकि वहां की रीति के अनुसार यह कार्य्य सुगमता से संपन्न हो सकता था। अस्तु, दोही तीन दिन में यात्रा की सब तय्यारियां कर ली गईं; और उस बुढ़िया को वहीं छोड़ मैं, मेरी प्यारी एगनेस; और एक दूसरी मजदूरनी—तीनों स्काटलेण्ड में जा पहुँचे। वहां की रीति के अनुसार प्यारी एगनेस के साथ मेरा विवाह हो गया। थोड़े दिनों तक वहां ठहरकर हमलोग किम्बरलेण्ड की ओर चले। वहां पहुँचते ही मैंने पिताजी का पत्र पाया, जिसके देखने से विदित हुआ कि वह बहुत बीमार हैं, और चाहते हैं कि एक बार मैं उनसे मिलूं; क्योंकि उनके जीवन की आशा कम थी।

"मैंने वह पत्र मिस एगनेस को दिखाया और उसकी इच्छा के अनुसार, उसे साथ में लेकर तुरन्त घर की ओर लौटा। मैं चाहता था कि प्यारी एगनेस के लिए कोई सुन्दर मकान भाड़े पर लेलूं, परन्तु उसको यह बात स्वीकार नहीं हुई। वह चाहती थी कि अभी विवाह की बात अप्रगटित रहे; अतएव मेरी प्राणप्रिया ने वही मिस एगनेस मार्कलण्ड के नाम से ही अपने को प्रसिद्ध किया। मैंने विवश होकर उसको उसकी मां के गांव में छोड़ दिया, और स्वयं उससे विदा होकर लन्दन चला आया। आह! यह वही अङ्गूठी है, जो विदा होते समय प्यारी एगनेस ने मुझे दी थी।

"घर पहुंचकर पिताजी से मैंने मुलाकात की। वह बेचारे बहुत बीमार थे और उनके बचने की कोई आशा नहीं थी। वह अपने निकट बैठे हुए लोगों को पहचान नहीं सकते थे। मेरे पितृव्य (चचा) लॉर्ड टिल्डन जिनको आप भली भाँति

जानते हैं, वहां विद्यमान थे। उन्होंने मेरे साथ बहुत स्नेह का व्यवहार किया। युवावस्था की तरंग में, उनका अधिक स्नेह देखकर, मैंने अपना और मिस एगनेस का सम्पूर्ण वृत्तान्त उनसे कह दिया।

" उन्होंने मुझको बधाई दी, और हार्दिक सहानुभूति प्रकट की। उनकी मीठी मीठी बातों पर मैं और भी मरे कुत्ते की भांति फूल उठा। फिर उन्होंने जो कुछ कहा, मैंने वैसाही किया। उनके इच्छानुसार मैंने अपने यहां के अनेक नौकरोंको इसलिये उनके घर भेजदिया कि जिसमें पिताजी के पास अधिक कोलाहल न हो ! अब सुनिए, कि जिस दिन मैं लन्दन पहुँचा हूं, उसके चौथे दिन सहसा छः सात मुटल्ले मेरे कमरे में घुस आए। उन सभों ने आते ही चारो ओर से मुझे घेर लिया। उनमें से एक ने मुझपर ऐसा वार किया कि मैं चक्कर खाकर भूमि पर गिर पड़ा। फिर तो मुझको कुछ भी चेत नहीं रहा कि क्या हुआ। आह जनरल महाशय ! जब मैं सचेत हुआ, तो मैंने अपने को एक पागलखाने में बन्द पाया। मैं अपने मन में अत्यन्त चकित था, कि यह क्या बात है; और क्यों लोगों ने मुझको पकड़कर पागलखाने में डाल दिया है ! परन्तु कोई कारण मेरी समझ में न आया। "

दशवां प्रकरण।

यह वृत्तान्त सुनकर जनरल रथविन को बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने क्रोध के साथ टेबुल पर हाथ पटक कर कहा— " अत्याचार ! अत्याचार !! भयानक अत्याचार !!! "

अर्ल। आपको केवल इतनाही सुनकर क्रोध चढ़ आया ?

सोचिए तो कि स्वयं जिसकी ऐसी दशा हुई होगी, उसके कितना क्रोध हुआ होगा ? मैंने अनेक उद्योग किए; औ जेलरों से रो रोकर अपना वृत्तान्त कहना आरम्भ किया। बुद्धिमानी की अनेक बातें कीं; परन्तु किसी ने भी मेरे कहने पर ध्यान नहीं दिया।

इसके पश्चात्, कुछ कालतक ठहर कर, अर्ल ऑफ नॉर्मिनटन ने पुनः कहना आरम्भ किया—"मैं उस स्थान में नहीं रक्खा गया, जहां साधारण कैदी रक्खे जाते हैं। मेरे रहने के लिये वहां जगह दी गई, जहां बड़े बड़े धनाढ्य व्यक्ति, जो किसी कारणवश पागल हो जाते हैं, रक्खे जाते हैं। विशेषतया मैं यहां इस कारण से रक्खा गया, कि जिसमें यह मालूम हो कि वह महाशय जिन्होंने मुझे यहां रखवाया है, मुझपर बहुत स्नेह रखते हैं; और उनको मेरे लिये रुपया खर्च करने में किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है।

"यद्यपि मैं सांसारिक छल कपट से पूर्णतया अनभिज्ञ था; तथापि सोचते सोचते मैंने समझ लिया कि पागलखाने में मेरे बन्द किए जाने का क्या कारण है; और किसने मेरी ऐसी दुर्दशा की है। मैंने निश्चय कर लिया कि यह सब कार्य्यवाही मेरे चचा की है; जिन्होंने समझा कि पिताजी की मृत्यु के पश्चात् सम्पूर्ण सम्पत्ति का स्वत्वाधिकारी मैंही होऊँगा; अतएव यदि वह मुझे पागल प्रसिद्ध कर सकेंगे, तो सब धन उन्हींको मिलेगा।

"जिस कोठरी में मैं रहता था, उसमें और भी पागल रहते थे; परन्तु उनमें भी दो तीन अच्छे थे। मेरी तरह उनपर भी अत्याचार किया गया था। प्रिय जनरल ! एक बात

सुनकर आपको अधिक क्रोध आवेगा, और आप मेरी दशापर अधिक दुःख प्रकाशित करेंगे। मुझे १८ मास तक उस पागलखाने में रहना पड़ा, और इसी संसार में मुझे नरक का आनन्द मिल गया!"

जनरल। (आश्चर्य से) अट्ठारह मास! तुमको एक ऐसे आदमी ने कैद कर रक्खा, जो तुम्हारे पिताके तुल्य थे!!

अर्ल। आप स्वयं समझ सकते हैं, कि ये १८ महीने कैसे कष्ट के साथ बीते होंगे; विशेषकर प्यारी एगनेस से पृथक् होनें का मुझे असीम दुःख हुआ। इस अवधि में मैं संसार की चहल पहल से एकबार ही अलग था। हां, पागलखाने के दारोगा से इतना मुझे मालूम हो गया कि पिताजी अब कुछ अच्छे हैं; और अब उनके बचजाने की आशा की जा सकती है। यह बात जानकर मैं मनही मन कहने लगा—क्या पिताजी को मेरे कैद होने का हाल मालूम है? और यदि है तो वह चुप क्यों बैठे हैं? क्या अब संसार की गति ऐसी हो गई कि पिता पुत्र में ऐसा वैमनस्य होता है? अस्तु, जबतक हो सके, धैर्य्य धरना चाहिए। जनरल महाशय! मैं अपना दुखड़ा कहांतक रोऊं, और अपनी कहानी कबतक कहता जाऊं—सारांश यह कि किसी किसी तरह मैं उस पागलखाने में दिन बिताने लगा। कुछ दिनों के बाद, एकदिन पागलखानें के दारोगा ने मुझे अपनें पास बुलाया। फिर उसने कहा, "मुझे क्षमा कीजिए, मैं निरपराध हूं। मैंने सब कार्य्य किसी की आज्ञा के अनुसार किए हैं। अब आपको छुट्टी है, अर्थात् अब आपको इस पागलखाने में नहीं रहना पड़ेगा।"

"जनरल महाशय! आप समझते होंगे कि यह समाचार

सुनकर मुझको बड़ा हर्ष हुआ होगा; परन्तु नहीं;— वरन् मुझे भय होने लगा कि अवश्य कोई नया फूल खिला चाहता है। मैंने सोचा कि कदाचित् मेरी प्यारी की तबीयत कुछ खराब हुई होगी; अथवा उस पर कोई नई घटना घटी होगी; इसीसे अब मैं कैद से छुड़ाया जाता हूं।

“पागलखाना नगर से दो मील के अन्तर पर था। मैं वहां से निकल कर सीधा घर की ओर चला। वहां पहुंच कर मैंने सुना कि पिता जी अबतक बीमार हैं, परन्तु चल फिर नहीं सकते; न उनमें बातचीत ही करने की शक्ति है। लार्ड टिल्डन अर्थात् मेरे चचा भी वहां उपस्थित थे; किन्तु उनके शरीर में बड़ा भारी घाव लगा था, जिसकी पीड़ा से वह पड़े पड़े कराह रहे थे। जान पड़ता था कि वह किसी से लड़े थे। पहले मैं पिताजी के निकट गया। बहुत काल से मैं उनसे पृथक था, और तबसे वह बीमारही थे, इस कारण उन्होंने मुझे पहचाना नहीं। वह मेरा वृत्तान्त बिलकुल नहीं जानते थे। मैं पिताजी के पास बैठा था; इतने में एक नौकर ने आकर मुझसे कहा,—“लार्ड टिल्डन आप को बुलाते हैं और कहते हैं कि मरनेवाले की एक विनीत प्रार्थना स्वीकार कर लीजिए। मेरी इच्छा उनके पास जाने की नहीं होती थी; परन्तु यह सुनकर कि अब वह मरने ही वाले हैं, मैं उनके पास चला गया। मैंने वहां जाकर देखा कि सत्य सत्य ही उनका मृत्युकाल निकट है, और वह अपने किए हुए पापकर्म्मों पर पश्चात्ताप कर रहे हैं। मैं उनके पास जाकर बैठ गया। उन्होंने अपनी दुष्टता का सम्पूर्ण वृत्तान्त स्वयं कह डाला। तब यह रहस्य खुला कि जब मैंने उनसे गुप्तविवाह की बात कही थी, तो उन्होंने अपने मनमें

सोचा था कि अब लाभ उठाने का अच्छा सुयोग मिल गया है। अतएव उन्होंने मेरे गुप्त विवाह को प्रगट कर दिया, और दो डाक्टरों को साक्षी बनाकर और उनके सार्टिफिकेट लेकर मुझे पागलखाने भेज दिया। उन्होंने मन में यह भी सोचा कि भाई साहब अब मरनेवाले हैं;- न्यायानुसार सब धन मुझही को मिलेगा। इसमें वह कृतकार्य्य भी हुए; क्योंकि यद्यपि ईश्वरकी कृपा से पिताजी बचगए तथापि बीमारी के कारण वह किसी काम के करने योग्य नहीं थे; इसलिए वही उनके मनेजर बनाए गए।

"विशेष दुःखका विषय तो यह कि मेरे कैद होने के एक महीने के बाद प्यारी एगनेस ने एक पत्र लिखा था। उसने लिखा था, कि मेरी ओर से पत्रादि का भेजा जाना क्यों बन्द कर दिया गया। यद्यपि वह जानती थी कि इस पत्र से गुप्त विवाह का भेद खुल जायगा, तथापि आप जानते हैं कि-' इश्क और मुश्क की बू छिपाए नहीं छिप सकती '!"

"दुष्ट चचा ने सोचा कि यदि एगनेस मेरा वृत्तान्त जान लेगी तो अवश्यही मेरे छुड़ाने का उद्योग करेगी। अतएव इस विषय का एक पत्र उसने मेरी ओर से उसे लिख भेजा कि-'मेरे विवाह की बात पिताजी ने सुनली; जिससे उनको बहुत दुःख हुआ; और वह बहुत बीमार हो गए। मैंने पिताजी से अपने को क्षमा कराना चाहा; जिसपर उन्होंने कहा कि यदि तुम मिस एगनेस से कोई सम्बन्ध न रक्खो तो मैं तुम्हें क्षमा कर दूं। अतएव मैं अब दूसरे नगर में जाता हूं। तुमसे मुझसे अब कोई सम्बन्ध नही है, क्योंकि तुम्हारे साथ नियमानुसार मैंने विवाह भी नहीं किया है।' हाय! जनरल रथविन! दुष्ट चचाने यह

सब बात मरते समय मुझसे कह दी; और हाय ! मुझसे अपने को क्षमा करदेने की भी प्रार्थना की ! फिर जब मैंने उस दुष्ट (चचा) से पूछा कि इसके बाद मिस एगनेस का कोई पत्र आया था या नहीं, तो वह बोला कि, ' नहीं कोई पत्र नहीं आया था । ' इतना सुनकर मैं वहां से उठ आया, और उस पापी की आत्मा ने नरक का रास्ता लिया ! ! !

" सन्ध्या के समय, भाड़े की गाड़ी करके, मैं अपनी प्राणप्रिया के घर की ओर प्रस्थानित हुआ । मैंने कोचवान को गाड़ी बहुत शीघ्र ले चलने के लिये कहा, और उसको इनाम देने की भी प्रतिज्ञा की । निदान, दूसरे दिन प्रातःकाल, मैं उस गांव में जा पहुंचा, और प्यारी एगनेस के द्वार को खटखटाने लगा । उसी वृद्धाने, जिसे छोड़कर एगनेस मेरे साथ स्काटलेण्ड को गई थी, आकर द्वार खोला । उसने मुझको नहीं पहचाना; इस कारण–वह मुझको वारंवार घूर घूर कर देखने लगी । मैं जब घबराया हुआ भीतर गया, तो मैंने वहां एक दूसरे आदमी को बैठा देखा । उसके द्वारा विदित हुआ कि ' एगनेस वहां नहीं है; और यह भी कोई नहीं जानता कि अब वह कहां है ' । बुढ़िया के द्वारा इतना और ज्ञात हुआ कि लगभग एक वर्ष के हुआ, लन्दन से उसके नाम एक पत्र आया था; जिसके पातेही वह बहुत उदास हुई, और उसके दोही तीन दिन के पश्चात् सहसा अन्तर्धान हो गई । "

जलरल र० । (दुःखित स्वर में) क्या बस इतनाही मालूम हुआ ?

अर्ल । (रोकर) हाय ! बस इतनाही ! जब उस बुढ़िया को मैंने बहुत से पते दिए, और अपने को पहचनवाया,

तो वह मुझको पहचान गई; और सहस्रों गालियां देने लगी कि कि मैंने बेचारी एगनेस को क्यों छला। मैंने बहुत नम्रता से अपना सत्य सत्य वृत्तान्त उससे कह दिया; परन्तु उसने मेरी एक न सुनी;-अपनी ही वह कहे गई।

"उसके रंग ढंग से ऐसा सन्देह होता था कि कदाचित् वह प्यारी एगनेस के समाचार जानती है; परन्तु मुझे छलिया वा कपटहृदय समझकर मुझसे नहीं कहती। अस्तु, निराश होकर मैं वहां से लौट आया और प्यारी एगनेस की खोज में रात दिन हैरान और चिन्तित रहने लगा। उस के गांव के निकटस्थ सब स्थानों में, जहां तक सम्भव था, मैंने उसे खोजने में कोई बात उठा नहीं रक्खी; परन्तु उसका पता कहीं नहीं लगा। इस फेर में मुझे घरद्वार की सुधि भी न रही, न धन सम्पत्ति की चिन्ता रही; न मृतप्राय पिता की। बस यही धुन शिर में समाई थी कि जिस तरह बने, प्यारी एगनेस का पता लगे। दिन भर मुझे इसी बात की चिन्ता रहती थी; और इसी सोच में मैं समस्त रात्रि रोया करता था। अन्त में उसके झोपड़ेमें, मैं फिर इसलिये गया कि कदाचित् अब वह बुढ़िया दया करके प्यारी एगनेस का पता मुझे बता देगी। वहां जाकर सुना कि कई दिन हुए, उस बुढ़िया का देहान्त होगया। उस अपरिचित व्यक्ति से, जो एगनेस के बाद उसके झोपड़े में किराया देकर रहता था, इतना अवश्य मालूम हुआ, कि वृद्धा मरने से पहले अपना सब रहस्य इस गांव के पादरी से कह गई है। मैंने तुरन्त वहां जाकर उस पादरी को खोजा; परन्तु वहां भी दुर्भाग्यने पीछा नहीं छोड़ा। विदित हुआ कि 'पादरी सनक गया है, और ऐसा समझा जाता है कि, कदाचित् वह कैदखाने में भेज दिया जायगा। इसी भय से वह घर छोड़कर भाग गया

है!' अस्तु, मैं यह सोचकर अपने घर (लन्दन में) आया कि कदाचित् मुझको खोजते हुए पादरी साहब वहीं आवें। और ईश्वर की इच्छा से हुआ भी ऐसाही। जब मैं घर पर पहुंचा, तो मुझे मालूम हुआ कि एक व्यक्ति मुझसे मिलने के लिये आया था, जब उसने मुझको नहीं पाया और यह भी उसको नहीं मालूम हुआ कि मैं कहां हूं, तो वह निराश होकर लौट गया। मैंने तरंग में आ कर लन्दन की हरेक गली, और गुप्त स्थानों में उसे खोजवाया, परन्तु उसका पता नहीं लगा। आह! मैं अबतक नहीं जानता कि प्यारी एगनेस क्या हुई, कहां गई, अथवा कहां है? जनरल महाशय! इतना सुनकर आप अवश्यही समझ सकते हैं, कि मेरे चित्त की कैसी दशा रहा करती है; और दो एक बुरे कामों में मैं लिप्त क्यों रहता हूं?"

जनरल रथविन अपने मित्र की यह अद्भुत कहानी सुनकर उदास और दुःखित हुए। इसके बाद थोडी देरतक वहां ठहरकर, वह चले गए।

(शेष चौथे भाग में देखो)

ॐ ॐ

किसान की बेटी।

चौथा भाग

रैनल्ड्ज कृत "मे-मिडिल्टन" उपन्यास का
भाषानुवाद।

काशीनिवासी

बाबू गङ्गाप्रसाद गुप्त कृत

"भारतजीवन"-सम्पादक बाबू रामकृष्णवर्म्मा
द्वारा प्रकाशित और विक्रीत।

काशी।

हितचिन्तक प्रेस में मुद्रित।

सं० १९६१

प्रथमबार १००० मूल्य ।-)

कुलीकहानी।

यह कहानी बड़ीही विचित्र है। इसमें आसाम देश के चाय-बगीचे में दो आदमियों का कुली बनकर जाना, और फिर कष्ट पानेपर वहां से भागना, जङ्गल जङ्गल घूमना, शेरों और जङ्गली हाथियों का साम्हना करना इत्यादि अनेक विस्मयजनक और कौतूहलवर्द्धक बातें लिखी हैं। इस पुस्तक के पढ़ने से बहुतसी भौगोलिक बातें भी मालूम होती हैं। पुस्तक १२० पृष्ठ में समाप्त हुई है। मूल्य केवल ।) है।

पता—मैनेजर "भारतजीवन"

बनारस सिटी।

किसान की बेटी।

चौथा भाग।

पहला प्रकरण।

रातका समय है; अभी नौ नहीं बजे हैं। आकाश में चन्द्रदेव निकल आये हैं, और उनको चारो ओर से घेरे हुए असंख्य सितारे जगमगा रहे हैं। लन्दन के बाजारों की दूकानें खुली हैं; और दूकान्दार अपनी अपनी क्षमता के अनुसार उनको सजा कर बैठे हैं। बड़े'२ लार्ड और ड्यूक अपनी २ गाड़ी पर चढ़, हवाखाने चले जा रहे हैं। ऐसेही समय में अर्ल ऑफ नार्भिनटन् की गाड़ी दिखाई दी; जिसमें दो बलवान् घोड़े जुते हुए थे। गाड़ी आकर विल्फ्रिड के द्वार पर ठहरी, और अर्ल ऑफ नार्भिनटन उतरे। द्वारपाल उनको मुलाकाती कमरे में ले गया। विल्फ्रिड वहां अकेला बैठा था; अर्ल ऑफ नार्भिनटन को देखकर वह तुरन्त उठ खड़ा हुआ; और फिर विशेष आदर सत्कार के पश्चात् उनके सामने बैठकर कहने लगा,—" मैंने बड़ा अनुचित कर्म्म किया कि स्वयं न जाकर श्रीमान्‌को यहां आनेका कष्ट दिया।"

अर्ल। कोई चिन्ता नहीं; आपने मुझे किस कारण बुलवाया है? मैं प्रस्तुत हूं, कहिये।

विल्फ्रिड। (उदास भाव से) मुझे एक दुःखमय समाचार आपको सुनाना है; परन्तु क्षमा कीजिये,—मैं तुरन्तही वह

बात नहीं कह सकता । एक व्यक्ति आपके मित्रों में से है; जिसको कभी २ आप निमन्त्रित भी करते हैं और जिससे बहुत स्नेह भी रखते हैं; परन्तु वह आपका मित्र बनने के योग्य नहीं है ।

अर्ल । आप किस व्यक्ति के विषय में कहते हैं ?

विलिफ्रड । मैं अभी उसका नाम नहीं बताना चाहता; कारण यह कि उसका नाम सुनकर श्रीमान् बहुत आश्चर्य्य करेंगे। श्रीमान् उसे क्षमा करें; उसने आपके साथ अपराध किया है ।

अर्ल । मैं जानना चाहता हूं कि वह कौन व्यक्ति है । आश्चर्य्य तो यह है आप बिना नाम और अपराध के बताएही, उसके लिए क्षमा की प्रार्थना करते हैं !

विलिफ्रड । तनिक और धैर्य्य धरिए; फिर आप स्वयं समझ जायँगे कि मैं ऐसी भेदभरी बातें क्यों कर रहा हूं । उस दुष्ट व्यक्ति का अपराध यह है कि उसने आपको खेल में हराने के लिये जाली पासा बनाकर आपसे जुआ खेला था ।

अर्ल । (विलिफ्रड की ओर जाँचनेवाली दृष्टि डालकर) निस्संदेह, यदि उसने सचमुच ऐसा किया, तो बड़ी दुष्टता की । खैर, उसका नाम क्या है ?

विलिफ्रड । क्या आप उसे क्षमा कर देंगे ?

अर्ल । जब तक मैं समस्त वृत्तान्त न सुनलूंगा; तब तक इस विषय में मुझ से कुछ न कहा जायगा ।

विलिफ्रड । अस्तु, सुनिए मैं साफ २ कहे देता हूं.........

इतने में द्वार खुला, और नेड क्रेष्टन तथा ओ-हालोरन आ उपस्थित हुए । वे दोनों आतेही, अर्ल महाशय और विलिफ्रड से यथा योग्य कहकर बैठ गये ।

विलिफ्रड । (अर्ल से) यह बात मैंने इन दोनों से भी कह

ही थी । अच्छा तो अब विशेष न कहकर उस दुष्ट को पकड़ही
लाता हूं; क्योंकि मैंने उसे कैद कर रक्खा है ।

यह कह कर विल्फिड ने सामने की कोठरी का द्वार खोल
दिया । वहां मिष्टर पेलहम दिखाई दिए । यह देखकर अर्ल ऑफ
नार्मिनटनको अत्यन्त आश्चर्य्य हुआ ।

दूसरा प्रकरण ।

मिष्टर पेलहम को विल्फिड की बातचीत के अन्त तक विश्वास
था कि वह अपना अपराध स्वीकार कर लेगा; परन्तु अकस्मात्
अपनीही अप्रतिष्ठा देखकर, क्रोध के मारे वह थर थर काँपने लगे ।

विल्फिड ने प्रसन्नता के साथ द्वार खोलकर कहा—" इस
दुष्ट को पकड़ो; और देखो कि इसके पास जाली पासा है या
नहीं । " ओ-हालोरन और नेडक्रेष्टन मिष्टर पेलहम को पकड़ने
चले । मिः पेलहम ने डपटकर कहा—" दुष्टो ! मुझसे अलग रहना;
नहीं तो परिणाम अच्छा न होगा । "

विल्फिड । (बिगड़ कर) अजी पकड़ो इस दुष्ट को और
पासा इससे छीन लो ।

नेड क्रेष्टन और ओ-हालोरन चाहते थे कि झपटकर मिष्टर
पेलहमको पकड़ लें, परन्तु उन्होंने दोनों में से एक को ऐसा धक्का
मारा कि वह मुंहके बल भूमि पर गिर पड़ा । दूसरे को ऐसा
डपटा कि वह जहाँ का तहाँ खड़ा रह गया । इसके पश्चात् मिष्टर
पेलहम स्वयं अर्ल ऑफ नार्मिनटन के सामने जाकर कहने लगे—
" वह पासा जिसके विषय में अभी आपने सुना है, लीजिए यह
तय्यार है । (पासा देकर) मैं आशा करता हूं, कि आप जो
कार्य्य करेंगे, उसे भली भाँति सोच विचार करही करेंगे । "

अर्ल। अच्छा इस पासे को मैं अपने पास रखता हूं।

नेडक्रेष्टन। (खड़े होकर) मैं शपथपूर्व्वक कहता हूं कि मैं इस दुष्ट से अपना बदला अवश्य लूंगा।

अर्ल। (घुरक कर) चुप रहो, बस अब दूसरा शब्द मुँह से बाहर न निकले।

इसके अनन्तर टेबुल के निकट जाकर अर्ल ऑफ नार्मिनटन ने दो पत्र लिखे, और उन पत्रोंको अपने नौकर के हाथ में देकर कहा कि "इनपर जिन महाशयों के नाम लिखे हैं, उनको दे आओ।"

नौकर चला गया। इधर अर्ल महाशय ने कहा—"आप लोग कुछ समय तक शान्त रहें। जिन लोगों को मैंने बुलाया है, वे आ लें, तो फिर आपकी बातें सुनी जायँ।"

इतना सुनकर मिष्टर पेलहम हर्षपूर्वक एक कुर्सी पर जा बैठे; क्योंकि उनको बिश्वास था, कि अन्त में सत्य बोलनेवाले का ही जय होता है। विल्फ्रिड समझे हुए था, कि अर्ल महाशय उसकी बातका तुरन्त विश्वास कर लेंगे, और मिष्टर पेलहम घबरा जायँगे। इधर मिष्टर पेलहम बारंबार नेड क्रेष्टन और ओ-हालोरन की ओर देखने लगे; मानों उनको किसी बात का सन्देह था। एक घण्टे के उपरान्त द्वार खुला, और नगर के चीफ़-मजिष्ट्रेट् सर टामस उपस्थित हुए। यह बड़े न्यायवान् और बुद्धिमान् पुरुष थे। अर्ल महाशय से इनकी बड़ी मित्रता थी; इसी से उनके बुलाने के साथही चले आए।

सर टामस को देखतेही नेड क्रेष्टन और ओ हालोरन चिन्तित और व्यथित हुए। दोनों एक दूसरे का मुंह देखने लगे। विल्फ्रिड का चित्त भी अशान्त था; किन्तु सत्यप्रिय

ष्टर पेलहम गम्भीरता के सहित बैठे थे ।

अर्ल ऑफ नॉर्मिनटन ने नवागन्तुक का स्वागत किया, ार कहा—" क्षमा कीजियेगा; मैने आपको बहुत कष्ट दिया।"

सर टामस (हाथ मिलाकर) जी नहीं; मै आपके लिये त्येक समय प्रस्तुत हूं ।

विल्फ्रिड । (अपने को सम्हाल कर) यह इस सेवक की ापड़ी है । श्रीमान् आराम से बैठें ।

मजिष्ट्रेट साहब ने विल्फ्रिड को धन्यवाद दिया; पश्चात् ड क्रेष्टन और ओ-हालोरन की ओर देखकर वह मुस्कुराए; योंकि ये दोनों दुष्ट एक बार पहले भी किसी अपराध में जलास पर उनके सामने लाए गए थे। इसके अनन्तर वह ष्टर पेलहम की ओर देखने लगे; क्योंकि उनको वह बिलकुल हीं जानते थे ।

सर टामस । (अर्ल महाशय से) अब आपकी आज्ञा मानने लिये मैं तय्यार हूं।

यह सुनकर विल्फिड ने मजिस्ट्रेट् से भी वही बातें कह जो उसने अर्ल ऑफ नार्मिनटन से कही थीं। फिर बहुत ाध दिखाते हुए उसने कहा—"मैं इस दुष्ट को अर्ल महाशय प्रार्थना करके क्षमा इसलिए कराना चाहता था, कि इसने क बार डाकुओं के हाथों से मेरे प्राणों की रक्षा की थी।"

मजिष्ट्रेट् । विल्फिड! कदाचित् तुम यह बताना भूल गए कि मिष्टर पेलहम इस कोठरी में छिपे क्यों बैठे थे ।

विल्फिड । हां, मैं यह बात भी अभी कहने को था । इस ुष्ट ने तो मेरे प्राण एक बार बचाए थे, और नेड क्रेष्टन तथा ा-हालोरन से भी मेरा परिचय था । एक रात जब यह जाली

पासे से खेल रहा था तो मैंने इसे ऐसा करते देख लिया था इसीलिए अब यह मेरे यहां यह प्रार्थना करने आया कि जिस में उस बात को छिपा रक्खूं। जब इससे मुझसे बातें हो रही थीं, तो इतने में अर्ल महाशय भी आ गए और यह इस कोठरी में उनका नाम सुनतेही छिप गया।

यद्यपि ऊपर लिखी झूठी बातों से मिष्टर पेलहम को बहुत क्रोध आया, तथापि वह बड़े गम्भीर भाव से चुपचाप बैठे रहे। मजिस्ट्रेट साहब ने विलिफ्रूड का इजहार सुनकर कहा—"क्या नेड क्रेप्टन और ओ-हालोरन तुम्हारी ओर से गवाही देने आए हैं?"

विलिफ्रूड। जी हां।

नेड क्रेप्टन। श्रीमान्! मैं अपने दादा, परदादा बल्कि लकड़दादे के परदादा की कसम खाता हूं, कि विलिफ्रुड की बातें आद्योपान्त सत्य है।

ओ-हलोरन। इसमे कोई सन्देह नहीं, मैं समग्र संसार की शपथ लेकर कहता हूं, कि यह सब सत्य है।

मजिष्ट्रेट। मिष्टर पेलहम! अब आप कहिए।

विलिफ्रूड। (अर्ल ऑफ नार्मिनटन के कान में) आपने दो पत्र लिखे थे; दूसरे महाशय कहां हैं?

अर्ल। (धीरे से) हां मेरी तो यही इच्छा थी कि वह भी आजाएँ; परन्तु जब मजिष्ट्रेट् साहब आ गए, तो उनकी कोई विशेष आवश्यकता न रही।

विलिफ्रूड। वह हैं कौन?

यह बात अभी समाप्त भी न हुई थी, कि साम्हने का द्वार खुला, और जनरल रथविन भी आ गए।

तीसरा प्रकरण।

अर्ल ऑफ नार्मिनटन ने जनरल रथविन को केवल इतना लिखा था कि मिष्टर पेलहम के विषय में एक आवश्यक बात कहनी है; आप शीघ्र विल्फ्रिड के घर पर आइए। यद्यपि जनरल रथविन ने इस बुलाने का कोई कारण न समझा, तथापि मिष्टर पेलहम का नाम सुनकर वह तुरन्त चले आए। आतेही उन्होंने सर टामस से हाथ मिलाया, और अर्ल महाशय से पूछा, "क्या हुआ क्या ?" इसके उत्तर में उन्होंने सब बातें संक्षेप में कह दीं। जनरल रथविन ने कहा—"यदि मेरी सम्पत्ति भी चली जाय, तौ भी मैं अपने प्राण रहते तक मिष्टर पेलहम के लिये मुकद्दमा लडूंगा। (मिः पेलहम से) ऐं! तुम रोते क्यों हो ? चुप रहो; तुम अवश्य निरपराध हो।"

यह दृश्य देखकर सबकी विचित्र दशा हो गई। सर टामस भी दुःखित हुए। हां विल्फ्रिड और दोनों बदमाश अपने चित्त में बहुत प्रसन्न हुए और मुस्कुराने लगे।

जनरल रथविन। (मिष्टर पेलहम को गले लगा कर) मुझे निश्चय है कि तुम निरपराध हो। रोओ मत, चुप हो जाओ।

विल्फ्रिड। जनरल महाशय! आप सुन चुके हैं कि मैंने इसके छुटकारे के लिए अर्ल ऑफ नार्मिनटन से कितनी प्रार्थना की। अब यह अत्यन्त अनुचित है कि आप मुझको झुठलाना चाहते हैं!

मजिष्ट्रेट। सब चुप रहैं। जनरल रथविन महाशय! आप भी ज़रा बैठ जाइए। (मिष्टर पेलहम से) कहिये, आप को क्या कहना है ?

मिः पेलहम। (नेत्रों से आँसू पोंछ कर) श्रीमन्!

विल्फ्रिड बिलकुल झूठ बक रहा है। मैं इतना भूखा नहीं हूं कि पेट पालने के निमित्त जुआ खेलूं। मैं एक प्रतिष्ठित सालष्टर के द्वारा ४००) रु० मासिक पाता हूं। मैं कभी जुआ नहीं खेलता। बात यह है, कि उस रात अर्ल ऑफ़ नार्मिनटन के यहाँ निमन्त्रण था। वहाँ मैंने बिल्फ्रिड को खेलते देखकर सन्देह किया कि सहसा इसने पासा बदल लिया; परन्तु उस दिन मैंने इस बात की विशेष जाँच नहीं की। दूसरे दिन अर्ल महाशय ने बतलाया, कि वह विल्फ्रिड से ३०००) रु० हार गए। यह सुनतेही मुझे निश्चय हो गया कि अवश्य विल्फ्रिड ने पासा बदला है। एक विशेष कारण है, जिससे मैं यह नहीं चाहता कि बिल्फ्रिड एकबारही दुर्दशा-ग्रस्त हो; यही सोचकर मैं इसके पास आया और इससे जाली पासा छीनकर बहुत समझाया कि यह काम बुरा है। फिर मैंने इससे कहा कि तू अर्ल महाशय से अपना दोष स्वीकार करके क्षमा मांग ले। और जो आप यह पूछें कि तू उस कोठरी में छिपा क्यों बैठा था, तो सुनिए,—मैंने यह सोचा कि यदि अर्ल महाशय क्षमा न कर देंगे, तो मैं बाहर निकल कर इसकी ओर से सिफारिश करूंगा। (सक्रोध) और ये दोनों जो गवाही देने आए हैं, बिलकुल झूठे हैं।

मिष्टर पेलहम कुछ और कहने को थे; परन्तु विल्फ्रिड बढ़ २ कर कसमें खाने लगा। मजिष्ट्रेट ने सबको चुप किया और कहा—" अभी सब बातें स्पष्ट हो जाती हैं। किसी के कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है।

विल्फ्रिड। श्रीमन्! मुझपर झूठा दोष लगाया जाता है, और मैं चुपका बैठा सुना करूं?

मजिष्ट्रेट। मैं तुमको आज्ञा देता हूं कि तुम चुप होकर

बैठो। (मिः पेलहम से) तुमको कुछ कहना है ?

मिः पेलहम। जी हां, (कुछ सोचकर) परन्तु अब मैं कुछ नहीं कहूंगा।

विलिफूड। (मजिष्ट्रेट से) मिष्टर पेल्हम को इतना अवश्य बताना होगा कि वह ४००) रु० कहां से पाते हैं।

मिः पेलहम। नहीं, मैं यह न बताऊंगा।

विलिफूड। परन्तु इतना अवश्य बताना पड़ेगा कि वह प्रातिष्ठित सालस्टर कौन है, जिसके द्वारा इनको ४००) रु० मासिक मिलता है।

मिः पेलहम। नहीं, यह मैं नहीं बता सकता।

मजिष्ट्रेट। मिष्टर पेलहम! इन दोनों बातों के उत्तर में चुप रहना कदाचित् तुम्हारे लिए अहितकर होगा; इसलिए बता दो।

यह सुनतेही जनरल रथविन के नेत्रों में जल भर आया, और अर्ल ऑफ नार्मिनटन भी सन्देह की दृष्टि से मिः पेलहम की ओर देखने लगे। नेडक्रेष्टन, ओ-हालोरन और विलिफूड तीनों प्रसन्न हुए। विलिफूड ने कहा, " मिः पेलहम! इतना और बताना होगा कि तुम्हारा नाम मिष्टर पेलहम कब से हुआ।"

मिः पेलहम। हाँ, इसके बताने में मुझे कोई आपत्ति नहीं। यह मेरा असली नाम नहीं है।

यह जवाब सुनतेही, विलिफूड के हर्ष की कोई सीमा न रही। सर टामस कहने लगे—" मिष्टर पेलहम! तुमने ऊपर के दो प्रश्नों का उत्तर न देकर, अपने हक में अच्छा नहीं किया।"

जनरल र०। सर टामस महाशय! मुझे क्षमा कीजिए; आप किस नियम से एक व्यक्ति को विवश करके उसका रहस्य जानना चाहते हैं ?

बिल्फ्रिड। (बात काट कर) जनरल महाशय ! ठहर जाइए। मजिष्ट्रेट् साहब अभी कह चुके हैं, कि जो बात सत्य है, वह आपही प्रगट हो जायगी।

मजिष्ट्रेट्। हां, ठीक है। जनरल रथविन महाशय ! मैं आपको समझाए देता हूं कि मिष्टर पेलहम पर जो दोष लगाया गया है उसका बड़ा भारी प्रमाण उनकी आय का पता न लगना है। इससे स्पष्ट है कि उन्होंने अपना पेट पालन करने के निमित्त यह जघन्य कार्य्य करना चाहा था। यदि वह वास्तव में ४००) रु० पाते होते, तो न तो उनको जुआ खेलने की अवश्यकता थी, न बात छिपाने की।

इतने में द्वार खुला, और द्वारपाल ने सर टामस के हाथ में एक पत्र लाकर दिया और कहा, " हुजूर, दो कानिष्टबल् दरवाजे पर खड़े हैं। इस वारण्ट पर हस्ताक्षर कर दीजिये, ताकि इसकी तामील की जाय। "

मजिष्ट्रेट्। (पत्र को टेबुल पर रख कर) कानिष्टबल् से कहो खड़े रहें। मुझे अभी फुरसत नहीं है।

यद्यपि मजिष्ट्रेट् साहब ने यह नहीं प्रगट किया कि कानिष्टबल् क्यों ठहराए गए हैं, तथापि सबको निश्चय हो गया कि अब अपराधी (?) नहीं छूटता।

जनरल र०। प्यारे पेलहम ! अब साफ २ बता दो कि यह क्या मामला है।

मि: पेलहम। कुछ नहीं।

बेचारे जनरल रथविन विवश होकर कुर्सी पर बैठ गए। बिल्फ्रिड ने प्रसन्न होकर कहा, " बन्दगी, अब तो सब बातों का निश्चय हो गया ! "

नेड क्रेप्टन। निस्सन्देह, अब तो कोई बात बाकी न रही।

जनरल रथबिन के आने के बाद से ओ-हालोरन चुप था, परन्तु इस समय बोल उठा—"क्या अब भी कुछ सन्देह है?" नेड क्रेप्टन और ओ-हालोरन की बोली सुनते ही जनरल रथबिन चौंक पड़े, और उन दोनों की ओर निर्निमेष दृष्टि से देखने लगे।

मिः पेलहम। (कुर्सी पर से उठ कर) ये दोनों वही हैं जिनपर मुझको सन्देह था। (दोनों से) दुष्टो! तुम दोनों डाकू हो।

नेड क्रेप्टन। देख झूठे! फिर ऐसी बात मुँह से न निकले।

इधर तो ये बातें हो रही थीं, उधर सर टामस ने वह पत्र पढ़ा और हँस कर कहा—"तुम्हीं दोनों ने हेमर को घायल किया था।" इसके उपरान्त उन्होंने सबको चुप करके द्वार खोला और कहा—"कानिष्टबल्! कानिष्टबल्! ऊपर आओ।"

दोनों कानिष्टबल् ऊपर आए। मजिष्ट्रेट् ने वारण्ट पर हस्ताक्षर करके उनको दे दिया और कहा—"अपराधियों को पकड़ लो।" इतना कहना था कि कानिष्टबलों ने वारण्ट हाथ में लेकर देखा, और झपट कर नेड क्रेप्टन तथा ओ-हालोरन को पकड़ लिया।

नेड क्रेप्टन। (विवश होकर) लो, अब सब बातों का अन्त हो गया। यह सब विल्फ्रिड का किया है। यह दुष्ट यदि अर्ल आफ नार्मिनटन के तीन सहस्र रुपये बाँट लेता तो यह दिन न देखने में आता। अबतक हमलोग स्काट्लेण्ड में होते।

जनरल रथबिन ने उठकर मिष्टर पेलहम को गले लगाया, और कहा सच है—"सत्ये नास्ति भयं क्वचित्।"

अर्ल। (आगे बढ़कर) प्यारे पेलहम! आपको बधाई देता हूं।

मजिष्ट्रेट्। विल्फ्रिड को भी पकड़ लो, और ले जाओ।

"धर्म्म जित जय तित निश्चय।"

चौथा प्रकरण।

हमारे माननीय पाठकगण इधर बहुत दिनों से लन्दन नगर में घूम रहे हैं; आज चलिए जरा मिस मिडिल्टन से भी मिल लें, जिसकी सुधि बहुत काल से नहीं ली है। यह तो आपको स्मरण होगा कि रूबन की मृत्यु का सम्बाद सुनकर वह बेचारी बहुत व्यथित, चिन्तित, पीड़ित और दुःखित हुई थी; अस्तु तीसरे दिन मिसेज सेण्ट जार्ज ने फिर उससे साक्षात् किया। मिस मिडिल्टन ने यद्यपि आपने को बहुत सम्हाला, तथापि रूबन के दुःख में उसके मुँह से एक आह निकलही गई।

मिसेज़ सेण्ट जॉर्ज ने कुछ काल लों विश्राम करने के उपरान्त कहा—"चलिए, जरा बगीचे की सैर कर आवें; कदाचित् वहाँ जी बहल जाय।"

मिस मिडिल्टन को भी यह बात पसन्द आई। दोनों कोठी से निकल कर धीरे २ बगीचे की ओर चली। ठण्डी ठण्डी हवा चल रही थी; फूलों की सुगन्धि चारों ओर से आ रही थी; पक्षी इधर उधर फुदक २ कर अपनी स्वाभाविक चञ्चलता का परिचय दे रहे थे। यह सब कुछ था; परन्तु मिस मिडिल्टन अपने आपे में नहीं थी। फिर उसके मुँह से एक आह निकल गई।!

मिसेज़ सेण्ट जॉर्ज। प्यारी मिस! क्या तुम अब लों उसी दुःख से दुखी हो?

मे०। हां, उस शोक-सम्वाद ने मुझको और साथही मेरे पिता को भी शोक-सागर में डाल दिया। हा! मैं बाल्यकाल से उसके साथ रही और खेली थी!

मिसेज़ से०जॉ०। क्या तुम वास्तव में उसे प्यार करती थीं?

इस प्रश्न से मिस मिडिल्टन चौंक पड़ी; मिसेज़ सेण्ट जॉर्ज की ओर सन्दिग्ध दृष्टि से देखने लगी। फिर मनमें कहने लगी—"यह बारंबार उसी बात को पूछती है; इसका क्या कारण? (भोलेपन से) कदाचित् मेरे दुःख से दुखी होकर पूछती है। अस्तु।"

मिसेज से० जॉ०। तुम बोलती क्यों नहीं? प्यारी मिस! मैं तुमसे केवल मित्रभाव से पूछ रही हूं। मुझे क्षमा करना। तुम्हारे मुखड़े से जान पड़ता है कि तुम उसे प्यार.........

मे०। (बात काट कर) नहीं, कुछ नहीं।

मिसेज से०। तुम मुझको चाहे न बताओ, पर मैं सुन चुकी हूं कि तुम्हारा विवाह विल्फ्रिड.........

मे०। (चौंककर) क्या २, तुमने क्या सुना?

मिसेज़ से०। मै बात को छिपाना नहीं चाहती। मैंने सुना है कि विल्फ्रिड ने तुम्हारे साथ विवाह की प्रार्थना की थी, परन्तु तुम रूबन वेलिस.........

मे०। (बाधा देकर) मेरी प्रार्थना है कि आप इन बातों को फिर न छेड़ें; कारण यह कि ये घराऊ घटनाएँ हैं।

मिसेज़ से०। खैर, परन्तु आप विश्वास मानें कि मैं किसी दूसरे विचार से ये बातें नहीं पूछती थी; बल्कि इस कारण से कि यदि सम्भव हो तो मैं भी अपनी क्षुद्र बुद्धि के अनुसार सम्मति प्रदान करूं। बताओ तो मिस "मे"! क्या विल्फ्रिड तुमको बिलकुल नहीं भाता?

मे०। बिलकुल नहीं।

मिसेज से०। अच्छा, एक बात बताओ; फिर मैं इस बात को बन्द कर दूंगी।

मे०। वह कौन बात है, और तुम क्यों पूछती हो?

मिसेज से०। केवल इस कारण कि मैं तुम्हारे वृत्तान्त से भली भांति अवगत हो जाऊंगी। तुम अभी सांसारिक व्यवहार बहुत कम जानती हो। विपरीत इसके, मैं अच्छी तरह संसार का रंग ढंग देख चुकी हूं। तुम कृपया यह बतलाओ, कि यदि विलिफ्रड मिडिलटन अपने सब अपराधों के लिए तुमसे क्षमा मांगे, सदैव के लिए तुम्हारा हो जाय, तो क्या यह हो सकता है कि.........

मे०। (बाधा देकर) बस मुझे क्षमा करो। मैं फिर ऐसी बातें नहीं सुनना चाहती। तुम विलिफ्रड को जानती नहीं हो। अब तुम मुझपर केवल इतनी कृपा करो कि उसका नाम मेरे सामने न लो।

मिसेज सेण्ट जॉर्ज को फिर कुछ कहने का साहस नहीं हुआ। निदान वह अपने घर चली गईं। जब मिसेज़ सेण्ट जॉर्ज जा चुकीं तो "मे" भी बगीचे से लौट और एकान्त में बैठकर उनकी बातों पर सूक्ष्म रूप से विचार करने लगी। सोचते २ उसने अपने मन में कहा कि, "मिसेज़ सेण्ट जॉर्ज के मेरे साथ इतनी सहानुभूति दिखाने और विलिफ्रड की बारम्बार सिफा-रिश करने का अवश्य कोई कारण है।" परन्तु विलिफ्रड के साथ मिसेज़ सेण्ट जॉर्ज का क्या सम्बन्ध है और उनकी मीठी २ बातों का क्या कारण है, यह बात उसकी समझ में न आई; और वह रात दिन इसी चिन्ता में रहने लगी।

इसी दशा में चार पाँच दिन बीत गए। एक दिन प्रातः-काल, " मे " अपने पिता (मिष्टर जॉन) के साथ चाय पी रही थी, कि डाकिया उनके नाम एक पत्र लाया। मिष्टर जॉन ने पत्र को ले लिया, और पढ़ने लगे। उसको पढ़ते २ वह बहुत विस्मित हुए। अन्त में उन्होंने दुःख-विजड़ित शब्दों में कहा—" बेटी " मे"! यह पत्र जान्सन एटर्नी ने लिखा है। उन्होंने बिल्फ्रिड के विषय में लिखा है, कि उसने अपनी दुष्टता का उपयुक्त फल पा लिया। "

मे०। क्या कोई नवीन घटना हुई ?

मिः जॉन। बेटी " मे "! तुम इस पत्र का विषय सुनकर बहुत दुःखित होओगी। हा! दुष्ट विल्फ्रिड ने मृत भाई साहब के नाम में खूब बट्टा लगाया। अभागा इस समय पकड़कर जेलखाने में भेजा गया है। एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के साथ जाली पासे से जुआ खेलने के अपराध में ही उसको कारागार का दण्ड मिला है।

मे०। अभी थोड़ेही दिन हुए, कि उसको ५०००) रु० मिले थे। उसने सब कुकर्म्मों में उड़ा दिये!

मि० जॉन। (दुःख भरे शब्दों में) हा! आज प्रतिष्ठित और माननीय शब्द—' मिडिल्टन ' में बड़ा भारी धब्बा लग गया! आज पूर्व्व पुरुषों की आत्माएं अवश्य प्रसन्न होंगी!—" ओह! दुष्ट विल्फ्रिड ने, अर्ल ऑफ ऑर्मिनटन को जाली पासे से धोखा देकर, उनसे ३०००) रु० जीत लिए, और तिस पर विशेषता यह है कि मिष्टर फ्रान्सिस् पेलहम नामक एक व्यक्ति को उसने अपने बदले फँसाना चाहा; और इस बात के लिए दो डांकुओं को उसने अपने साथ मिलाया; जिनके कारण अन्त में वह भी बड़े घर भेजा गया।

मे० । (भयातुर हो) अहह! कैसी लज्जा, कैसी अप्रतिष्ठा, कैसे अपमान की बात है ! (ठहर कर) अस्तु, तो अब वह किसी तरह छूट नहीं सकता ?

मि० जॉन । नहीं २, बेटी "मे" ! अब उसके छुड़ाने का उद्योग न करना चाहिए । उसने एक सरलहृदय दयावान् व्यक्ति को, जिसने उसको बहुत बचाना चाहा, धोखा दिया । उसने उन्हीं पर सब अपराध डाल दिये । अतएव, अब उसके लिये दयार्द्र होना अनुचित है । (कुछ रुक कर) मिष्टर जॉन्सन एटर्नी ने एक और भी विस्मयजनक बात लिखी है; जो मेरी समझ में नहीं आती । कुछ दिन हुए, डांकुओं ने जनरल रथबिन को उनकी गाड़ी रोककर पकड़ लिया था । सौभाग्यवश एक सवार उस ओर से जा रहा था । उसने बड़ी बीरता से डाकुओं को पकड़ कर पुलिस के हवाले किया । वह बीर आश्वारोही यही मिष्टर पेलहम थे । दूसरे दिन सुनने में आया कि दोनों डाकू भाग गए । परन्तु ईश्वर को उनका भागना स्वीकार न था । वही दोनों विल्फिड के सहायक निकले । जनरल रथबिन और मिष्टर पेलहम ने उनकी बोली से पहचान कर उनको फिर कैद करा दिया ।

मे० । तब तो अवश्य बिल्फिड को उसके किए का फल भोगने देना चाहिए ।

पांचवां प्रकरण ।

दूसरे दिन मिष्टर जॉन तो अपने खेतवाले पुराने घर को चले गए, और मिस मिडिल्टन एकान्त में बैठकर अपने जीवन की पिछली घटनाओं को स्मरण करने लगी । वह बिल्फ्रिड

का बनठन कर आना, वह मिस मिडिल्टन का पहले उसे भला-मानुस समझकर उससे भाई की तरह स्नेह करना, फिर उसकी दुष्टता देखकर उससे घृणा करने लगना, स्वयं रूबन के भगाने का कारण होना, और फिर उसकी दशा पर बारंबार पश्चात्ताप करना—इत्यादि पूर्व घटनाएं एक २ करके मिस "मे" के हृदय-दर्पण पर प्रतिफलित होने लगीं। निदान वह अधीर होकर रोने लगी, कि इतने में किसी के आने की आहट मालूम हुई। उसने चटपट रूमाल से अपना मुँह पोंछ लिया। मिसेज़ सेण्ट जॉर्ज आईं, और उसे दुःखित देखकर कहने लगीं, "कदाचित् मेरा आना आपको बुरा लगा। परन्तु मुझको तो केवल आपका स्नेह खींच लाता है।"

मे०। मिसेज सेण्ट जॉर्ज ! यह क्या कह रही हो ! तुम्हारे आने से तो मेरा जी बहलता है।

मि० से० जॉ०। तुम्हारी यह बात सुनकर मैं बहुत सन्तुष्ट हुई; किन्तु प्रिय "मे" ! आज तुम्हारा चेहरा उदास क्यों दीखता है ? मैं यह सोच २ कर पछतावा करती हूं, कि मैंने बेचारे रूबन का वृत्तान्त तुमसे कहकर तुम्हें चिन्तासागर मे क्यों डाल दिया। वास्तव में, ऐसा कौन व्यक्ति होगा, जो उस बेचारे की दुःखकथा सुनकर व्यथित न हो; और विशेषकर तुमसी सदयहृदया सुन्दरी तो ... !

मे०। (बात काटकर) मिसेज़ सेण्ट जॉर्ज ! अब ऐसी बातें मेरे सामने न किया करो; कोई दूसरी बात कहो। (देर तक सोच कर) तुम्हें अपना मित्र समझकर कहती हूं, कि मैं विल्फ्रिड को अपने भाई की तरह मानती थी; परन्तु पीछे उसकी कुचरित्रता देखकर, मेरा जी उसकी ओर से हट गया।

अब मैंने उसके विषय में अन्यान्य कई निन्दनीय बातें सुनी हैं यह बातें मैं तुमसे इसलिये कहती हूं, कि तुम अब आगे से उसक नाम मेरे सामने न लो ।

मि० से० जॉ० । मैं तुम्हारा धन्यवाद करती हूं कि तुम सच्चे हृदय से सब बातें स्पष्ट कह दीं । हां आगे और कहो

मे० । मैं बीती बातों को कहना उचित नहीं समझती; आजह कल की बात सुनो; क्योंकि यद्यपि मैं विल्फ्रिड के विषय में कु कहना नहीं चाहती, तथापि इस बात के कहने में कोई हर्ज नहीं यह बात समाचारपत्रों में बहुत शीघ्र प्रकाशित होगी ।

मि० से० जॉ० । (सब बातें ध्यान से सुनकर) प्यार "मे"! तुम क्या कर रही हो ?

मे० । अच्छा तो सुनो, मैं कहती हूं,—विल्फ्रिड कैदखा की हवा खा रहा है ।

मि० से० जॉ० । (घबरा कर) क्यों ? किस अपराध में

मे० । उसने एक भलेआदमी को जाली पास से धोख दिया, दो डाकुओं का साथ किया, और मिष्टर फ्रान्सिस् पेलह नामक एक व्यक्ति को नीचा दिखाना चाहा ।

मि० से० जॉ० । (अधीर होकर) आह ! मिष्टर पेलहम फ्रान्सिस् पेलहम !

मे० । हां २, यही नाम है । परन्तु तुम क्यों घबरा गई क्या तुम मिः पेलहम को जानती हो ?

मि० से० जॉ० । हां—नहीं—हां, उसका नाम सुना है ।

मे मिडिल्टन को इन बातों से आश्चर्य्य हुआ । वह ध्यानपूर्व मिसेज सेण्ट जॉर्ज का मुखड़ा देखने लगी । मिसेज़ महाशय ने यह देखकर जोर से खाँसना आरम्भ किया; जिसमें कि को

उनके मनका भाव न समझ सके। "मे" ने सोचा, कहीं इसका श्वास न रुक जाय। अन्त में उसने पूछा—" क्यों, पानी मँगवाऊं ?"

मि० से० जॉ०। नहीं, कोई आवश्यकता नहीं। लो, मैं अच्छी हो गई; परन्तु इस समय मुझे क्षमा करो; एक आवश्यक काम याद आ गया है; मैं अपने घर जाती हूं। थोड़ी देर में आ जाऊंगी।

इतना कहके मिसेज सेण्ट जॉज घबराहट के साथ चली गई। " मे " चुपचाप बैठी सोचती रही, कि उनके घबराने का क्या कारण ? इतने में सहसा उसकी दृष्टि एक कागज जा पड़ी, जो वहीं पड़ा था जहां कि मिसेज सेण्ट जॉर्ज बैठी थीं। " मे " ने उस कागज को उठाकर खोला, उसके आरम्भ मेंही लिखा था, " माई डियर रोसालिण्ड ! " यह देखकर मिस " मे " सब बातें समझ गई; परन्तु उसने यह सोचकर कि कदाचित् यह पत्र पुराना हो, उसकी तारीख देखी, तो मालूम हुआ कि नहीं अभी १०-१५ दिन का ही लिखा हुआ है। वह उस पत्र को टुकड़े २ करके फेंकनेही को थी, कि इतने में मिसेज सेण्ट जॉर्ज फिर आई, और नाक भौं सिकोड़ कहने लगी—" आपने इस पत्र को पढ़ लिया ? "

मे०। नहीं, मैंने कदापि नहीं पढ़ा; हां, नाम और तारीख अवश्य देख लिया। वाह ! कैसी चतुराई है ! बस अब जाओ; मेरे सामने से दूर हो।

रोसालिण्ड। अब मैं आपही तुम्हारे यहां रहना नहीं चाहती। तुम जैसी जलमुँही के पास किसको पड़ी है, जो ठहरे।

मे०। (झल्लाकर) जाना हो तो जाओ, नहीं तो मैं आदमी को बुलाती हूं।

रोसालिण्ड । तुम्हें इतना कष्ट करने की कोई आवश्यकता नहीं, मैं आपही चली जाऊंगी; परन्तु जब तक सब माल अस्बाब न ले लूं, तब तक "उड्बिन् कोटेज" कैसे छोड़ सकती हूं ? दो तीन दिन के लिए क्षमा करो, और यह बात किसी से न कहो ।

मे० । बस अब चली जाओ, मैं प्रतिज्ञा नहीं कर सकती ।

मि०से०जॉ० । अच्छा, जैसी तुम्हारी इच्छा । कोई हर्ज नहीं ।

मे० । (कोई बात सोच कर) परन्तु हां यदि तुम सच सच कह दो कि रूबन के विषय में तुमने जो कुछ कहा, वह सच था या झूठ, तो मैं तुम्हारी बात किसी से न कहूंगी ।

रोसालिण्ड । मैंने झूठ नहीं कहा; वह बात सत्य है ।

यह सुनकर " मे " ने एक " आह " खींची, और बेहोश होकर वह भूमिपर गिर पड़ी । इधर रोसालिण्ड मनही मन यह कहती हुई शीघ्रता-पूर्व्वक बाहर चली गई कि, " ठहरो इस दुःख में, मैं तुमको जन्मभर रुलाऊंगी ।

छठाँ प्रकरण ।

ऊपर लिखी घटना को दो वर्ष बीत गए । इस बीच में जो घटनाएँ हुईं, उनको भी हम संक्षेप में लिखे देते हैं ।

मिष्टर जॉर्ज मिडिल्टन को मरे जब एक वर्ष बीत गया, तब मिस मिडिल्टन ने काले शोकसूचक वस्त्र उतार दिये । तदुपरान्त वह अपने गांव के निकट रहनेवाले सज्जनों और रईसों से मिलने, तथा उनको निमन्त्रित भी करने लगी । यद्यपि बड़े बड़े लार्ड और ड्यूक के लड़के उसे प्रेमदृष्टि से देखते थे; यद्यपि वे अपनी ओर " मे " मिडिल्टन का ध्यान आकृष्ट करना चाहते थे; तथापि किसीका जादू उस पर न चलता था;

उनमें से किसी को भी वह चाहत की दृष्टि से नहीं देखती थी। परन्तु अब उसको एक भूली हुई बात स्मरण हो आई थी;— अब उसके हृदय में एक पुराने प्रेमी का स्नेह उमड़ आया था।

इस दो वर्ष की अवधि में, कर्नल विलासिस और ड्यूशम्प दो बार मिस मिडिल्टन के द्वारा निमन्त्रित होकर एप्मूली कोर्ट में अपनी लड़कियों के साथ आए, परन्तु उनके बुरे स्वभाव के कारण मिष्टर जॉन ने फिर उनको नहीं बुलाया। यद्यपि करोलिन और बर्था ने, जब तक कि वे एप्मूली कोर्ट में थीं, अनेक बार बनठन कर लार्ड और ड्यूक के लड़कों को अपने ऊपर विमोहित करना चाहा; परन्तु वे कृतकार्य्य न हो सकीं।

इन दो वर्षों के बीच में ड्यूशम्प की मृत्यु हुई और यह खबर एप्मूली कोर्ट में पहुँची। "मे" मिडिल्टन ने उनकी दोनों लड़कियों को अपने यहाँ बुलवा भेजा। पिता की अन्त्येष्टि क्रिया के उपरान्त, दोनों आकर मे-मिडिल्टन के साथ रहने लगीं। "मे" ने एमिली और लूसी अर्थात् उन दोनों के साथ बहुत उत्तम व्यवहार किया। उन दोनों ने भी पिता की मृत्यु के साथ ही अपना बनाव चुनाव छोड़ दिया, और "मे" के साथ सरलतापूर्वक रहने लगीं। .... सत्य है, —"सत्संगात् भवति साधुता।"

इसी प्रकार दिन बीतने लगे। निदान एमिली और लूसी का शोक-समय भी समाप्त हुआ, वे दोनों भी लोगों से मिलने जुलने और सोसायटी मे योग देने लगीं। कई युवक उनसे विवाह करने की इच्छा प्रगट करने लगे। अनेकों ने अनेक प्रकार से उनको विवाह के लिये राजी करना चाहा। अन्त में एक धनवान् युवक—आनरेब्ल हेनरी काल्विन् के साथ बड़ी बहिन

का, और फ्रेडरिक मारडेण्ट नामक एक दूसरे प्रतिष्ठित व्या के साथ छोटी बहिन का बिवाह हो गया । बिबाह के पश्च मिष्टर काल्बिन प्रसन्नतापूर्व्वक अपने घर को चले गये, एप्सूली कोर्ट से केवल १५ मील पर था। लूसी भी एक महीने लिए अपनी बहिन के साथ वहीं चली गई, और "मे" मिडिल फिर अकेली रह गई ।

मे मिडिल्टन को रोसालिण्ड की बात का किसी प्रक विश्वास न होता था; परन्तु उसके पिता मिष्टर जॉन को बिल्कु निश्चय हो गया था, कि रूबन अब इस संसार में नहीं है । इ दुःख में उनकी जैसी दशा हुई, उसका वर्णन करना बहुतही कठि है । मे मिडिल्टन प्रत्येक समय रूबन के आने अथवा कहीं उस समाचार मिलने के लिये ईश्वर से प्रार्थना किया करती थी वह कहती थी—" हे सर्वव्यापी परमेश्वर ! मैंने रूबन को बहु सताया, और उसका उपयुक्त फल पाया। अब मुझपर कृपाक और उस बेचारे का पता शीघ्र लगवा दे । "

मे मिडिल्टन के बालिग होने में अब केवल तीन मा बाकी रह गए थे । एक दिन वह अपने पिता के साथ बैठी थ कि डाकिया एक पत्र देकर चला गया। यह पत्र जॉन्सन एटन का लिखा हुआ था, जिसके द्वारा उन्होंने मिष्टर जॉन और मिडिल्टन को तीन मास के लिये अपने यहां बुलाया था, औ यह भी लिखा था कि, " यदि आप दोनों कृपया तीन मही के लिये यहां पधारें, तो मिष्टर जॉर्ज के दानपत्र के सम्बन्ध जो काम बाकी रह गए हैं, वे भी समाप्त हो जायँ, और मे मिडिल्टन वह लाख रुपया भी पा जायँ, जिसको वह तब पा सकेंगी, जब बालिग हो जायँगी । "

मिष्टर जॉन यह पत्र पाकर बहुत प्रसन्न हुए; कारण यह, कि वह स्वयं अपनी पुत्री को लण्डन की सैर कराना चाहते थे। इसके अतिरिक्त वह बहुत ही वृद्ध और निर्बल हो गए थे; इस लिए उनका यह भी विचार था कि लन्दन में जाकर किसी "सिविल सर्जन" से अपने स्वास्थ्य के विषय में बातचीत करें। निदान जॉन्सन एटर्नी का निवेदन स्वीकृत हुआ; और मिष्टर जॉन शीघ्रही यात्रा की तय्यारी करके लन्दन की ओर प्रस्थानित हुए।

मिष्टर जॉन्सन की आय कम नहीं थी। उनका मकान लन्दन के "वेष्ट एण्ड" में था। प्रसिद्ध एटर्नी होने के कारण, लन्दन के प्रतिष्ठित व्यक्तियों से भली भाँति उनका परिचय था। उनकी एक स्त्री थी; परन्तु उनके कोई सन्तान नहीं था। मिष्टर जॉन्सन एटर्नी अपनी पत्नी को बहुत चाहते थे।

लन्दन में पहुँचकर मिष्टर जॉन अपनी पुत्री के सहित एटर्नी महाशय के घर में रहने लगे। प्रथम सप्ताह तो नगर के प्रसिद्ध प्रसिद्ध दर्शनीय स्थानों के अवलोकन में बीत गया। इस अवधि में मिष्टर जॉन ने किसी को निमन्त्रित नहीं किया। उन्हों ने सोचा, वरन् मिष्टर जॉन्सन ने भी यही सम्मति दी, कि अभी कुछ दिनों तक लन्दन की सैर करली जाय, तब किसी को निमन्त्रित करने अथवा किसी से मिलने जुलने के विषय में देखा जायगा।

एक दिन प्रसङ्गवश मिष्टर जॉन ने मिष्टर जॉन्सन से पूछा, "इन दिनों कुछ विल्फ्रिड का हाल मालूम हुआ या नहीं?"

एटर्नी। अहा, उसने तो विचित्र रीति से धोखा देने का उपक्रम किया था, रोसलिण्ड के मरने की जो बात प्रसिद्ध की

गई थी, वह निर्मूल थी,—उसमें कुछ भी सत्ता नहीं ! मैं स कहता हूं, कि यद्यपि मैं कानूनदाँ हूं; परन्तु यह बात मेरी समझ में भी नहीं आई थी। आप समझ सकते हैं कि आप पत्र से रोसालिण्ड—विषयक समस्त समाचार सुनकर मुझे कितन आश्चर्य हुआ होगा।

मिः जॉन। फिर क्या हुआ ?

एटर्नी। जब वह जेलखाने से छूटकर गया, तबसे उसके विषय में कुछ नहीं मालूम हुआ। मुझे जब उसके सम्बन्ध की कोई बात मालूम होगी, तो मैं आपसे कहूंगा।

मिः जॉन। यह आपकी कृपा है; परन्तु यह तो कहिये कि वह दुष्ट जेलखाने में कैसे रहा।

एटर्नी। मेरे पत्रों से आपको सब हाल मालूम हो गया होगा। परन्तु वास्तव में मिष्टर पेलहम प्रशंसा के योग्य हैं। इस धोखे का रहस्य खुलने पर विल्फ्रिड दो मास तक दरिद्र रहा, और मिष्टर पेलहम ने उसपर दया दिखाकर दो मास तक उसके लिये भोजन भेजा। उसके पास एक पैसा भी नहीं था। तीन सहस्र रुपये, जो वह अर्ल ऑफ नॉर्मिनटन से धोखा देकर लाया था, सब छीन लिये गए।

मिः जॉन। क्या मिष्टर पेलहम ने विल्फ्रिड से जेलखाने में जाकर मुलाकात की थी ?

एटर्नी। नहीं, मैंने उन्हें जाने से रोक रक्खा। मैं मिष्टर पेलहम का सालिष्टर हूं।

मिष्टर जॉन। मिष्टर पेलहम ने उसके लिए भोजन कब भेजा ? क्या यह बात उस समय की है, जब वह कैदखाने से छूटकर आया ?

एटर्नी। उसके हाथ में २००) रु० दिए गए। ये रुपये मिष्टर पेलहम ने दिए। यद्यपि मैंने ही अपने हाथ से विलिफ्रड को रुपये दिए; परन्तु मिष्टर पेलहम की ओर से।

मिः जॉन। इन्हीं बातों से योग्यता और दयालुता प्रकट होती है। भला दुष्ट विलिफ्रड को ऐसे सज्जन के साथ ऐसा बर्ताव करना उचित था! अस्तु, क्या आप रोसालिण्ड के विषय में कुछ कह सकते हैं?

एटर्नी। जब विलिफ्रड दरिद्रावस्था में था, तब कई बार उसने जाकर उससे साक्षात्कार किया था, और जब विलिफ्रड जेल से निकला था, तब भी वह उसकी अगवानी के लिए गई थी। मैं भी बाहर खड़ा विलिफ्रड की बाट जोह रहा था। जब वह बाहर आया, तो मैंने २००) रु० देकर चाहा कि उससे कुछ कहूं; परन्तु कैसे दुःख का विषय है कि रुपया लेते ही उसने मेरी ओर फिर कर देखा भी नहीं; सीधा अपनी जोरू के पास चला गया; और फिर उसके बाद दोनों का क्या हाल हुआ—यह मैं नहीं जानता।

मिः जॉन। हां, अच्छा याद आया!—आपने उन दो डाकुओं के बारे में क्या लिखा था। उन दोनों का नाम क्या था? हां, नेडक्रेष्टन और ओ-हालोरन।

एटर्नी। (मुस्कुरा कर) आप लोग देहात के रहने वाले हैं; सांसारिक झंझटों और धोखों के विषय में आप लोगों को कम अनुभव है। मैंने लिखा था कि दोनों को फाँसी होनेवाली है; परन्तु फाँसी नहीं हुई; कालेपानी का हुक्म हुआ। उन दोनों पर दो नालिशें हुई थीं। एक तो गवाह न होने के कारण डिसमिस् हो गई; वह मिष्टर हेमर के सम्बन्ध में थी। परन्तु

जेनरल रथबिन की बात प्रमाणित हो गई, कारण यह, कि यह निश्चय हो गया कि नेडूक्रेष्टन और ओ-हालोरन वेही दोनों डाकू हैं, जो हवालात से भाग आए थे; परन्तु जनरल रथविन ने बड़ी योग्यता का कार्य्य किया। उन्होंने दोनों बदमाशों को सिफारिश करके बचा दिया होता; परन्तु यह अपराध ही बहुत गुरु था; इसलिए कोई प्रयन्त सफल नहीं हुआ। इस दया के निदान भी दयावान् मिष्टर पेलहम ही हैं; कारण यह, कि उन्हीं के कहने से जनरल रथविन के हृदय में दया का सञ्चार हुआ।

मि० जॉन। आपने मिष्टर पेलहम के इतने गुणों का मेरे आगे बर्णन किया कि उनसे मिलने की मेरी बड़ी इच्छा होती है। मैं चाहता हूं, कि शीघ्र उनके दर्शनों का मुझे सौभाग्य हो। उनकी योग्यता, कार्य्यपटुता, सदयता और सरलता के लिये मैं अवश्य उनका धन्यवाद करूंगा।

एटर्नी। मिष्टर पेलहम अभी लन्दन में नहीं हैं। वह दो वर्ष से यात्रा कर रहे हैं। उन्होंने फ्रान्स, जर्मन, इटली आदि अनेक देशों में प्रवास किया है। कई दिन हुए, मुझे उनका एक पत्र मिला था; जिसमें उन्होंने प्रकट किया था कि वह बहुत शीघ्र लन्दन में आने वाले हैं। जब वह आवें, तो मैं निश्चय आपसे उनको मिलाऊंगा। लन्दन पहुँच कर वह पहले मेरे ही घर में आवेंगे। हां, यदि जनरल रथविन के यहां न चले जायँ तो। आपने सुना होगा, कि जनरल रथविन की एक अत्यन्त रूपवती कन्या है, जिसका प्यारा नाम मिस जोजफिन है। मिष्टर पेलहम भी कम-उमर हैं, और मिस जोजफिन तो अप्सराही के तुल्य है।

मि० जॉन। (मुस्कुराकर) तो यह कहिए। कदाचित् दोनों का विवाह भी हो जायगा।

एटर्नी । जी हां, यदि ऐसा हुआ, तो हम "मे" को उसकी सहेली बनावेंगे । आप कृपया यह बात अपनी पुत्री से भी कह दीजियेगा; परन्तु अभी नहीं, जब मिष्टर पेलहम आलें तब; कारण यह कि मैं अभी ठीक ठीक नहीं कह सकता कि उन दोनों में विवाह होगा या नहीं ।

मि० जॉन । बहुत अच्छा । आपने जो कुछ कहा, मैं उसके विरुद्ध कोई कार्य्य न करूंगा ।

सातवां प्रकरण ।

पन्द्रह दिन बीत गए । एक दिन मिष्टर जॉन्सन ने जलपान के समय एक पत्र पढ़कर कहा—"कल रात मिष्टर पेलहम नगर मे आ गए; और कल हमारेही साथ भोजन करेंगे ।"

मिः जॉन । मुझे यह सुनकर बहुत प्रसन्नता हुई । मैं उनसे मिलने के लिए बहुत व्यग्र हूं ।

मिः जॉन्सन । (अपनी स्त्री से) मैं चाहता हूं कि और भी दो एक मित्रों को निमन्त्रित करूं; क्यों उचित है न ? मेरी समझ में पहलेही से यह बात आ गई थी कि मिष्टर पेलहम जनरल रथविन के यहां से पहले मेरे यहां आवेंगे । मैं इस विषय में उनका कृतज्ञ हूं; अतएव मैं चाहता हूं कि जनरल रथविन और उनकी पुत्री को भी निमन्त्रित कर दूं । हां, बताओ और किस किस को बुलाओगी ?

मिः जॉ० की स्त्री । अर्ल आफ नॉमिनटन को भी अवश्य बुलाना चाहिए । आजही वह भी नगर में पहुंचने वाले हैं ।

मिः जॉन्सन । हां २ अवश्य—अर्ल आफ नॉमिनटन को अवश्य बुलाना चाहिए । वह मिष्टर पेलहम से बहुत स्नेह रखते

हैं। मैं यह बात कि आजही वह भी लन्दन में आने वाले हैं भूल गया था। वह मुझे एक काम सौंप गए थे। उसीके लिए मैंने उनको लिखा था, कि जहां तक हो सके बहुत शीघ्र लन्दन में चले आइए। (मुस्कुरा कर) कोई छिपी हुई बात नहीं है पादरी हॉगसन नामक कोई व्यक्ति है, उसी का पता लगाने को कहा था; परन्तु समय के हेर फेर से अब वह पादरी बहुत शोचनीय दशा को प्राप्त हो गया है।

मिः जॉ० की स्त्री। क्यों, उन पादरी को अर्ल महाशय क्यों खोजते हैं?

मिः जॉन्सन। यह मैं अभी नहीं बता सकता। अस्तु, वह पादरी दीवानी जेल में हैं; यही समाचार सुनकर अर्ल आफ नार्मिनटन आ रहे हैं।

स्त्री। मेरी समझ में अब और किसी के बुलाने का प्रयोजन नहीं है।

मिः जॉन्सन। अच्छी बात है। मैं भी यही चाहता हूं।

अन्त में यही निश्चय हुआ; और फिर अन्यान्य विषयों पर वार्त्तालाप होने लगा। निमन्त्रण के लिए ८ बजे का समय नियत किया गया। अतएव जॉन्सन एटर्नी की स्त्री मिष्टर जॉन और मे मिडिल्टन को लेकर मुलाकात के कमरे में गई, और सबके साथ बैठकर निमन्त्रित व्यक्तियों की प्रतीक्षा करने लगीं। मिष्टर जॉन्सन एटर्नी किसी काम को गए थे; परन्तु अब आयाही चाहते थे।

आह! आज प्यारी "मे" के मनोहर मुखड़े ने कुछ औरही विलक्षणता धारण की है। इस (पिछले) चार वर्ष की अवधि ने उसके गोरे गोरे गालों को कुछ औरही रङ्गत से रङ्ग

दिया है। अब उस बाल्यावस्था के भोले भोले चेहरे पर, ऊपरी चमड़े के नीचे, यौवन-लहरी लहरें ले रही थी। उसके काले बाल, अब घने और बहुत बड़े हो गए थे। उसके सुडौल हाथ पांव अब ऐसे हो गए थे, कि सहजही दर्शकों के मनों को मुग्ध कर लेते थे। परन्तु अबतक उसका बचपन का स्वभाव दूर नहीं हुआ था। अब तक उसमें वही सादगी, वही नम्रता, वही दयालुता बाकी थी। अब भी उसमें, पहले की भांति, बड़ों का भय था। अब भी वह अपने से अधिक वय वालों की प्रतिष्ठा करती थी। अब भी अपने से छोटों के साथ वह स्नेह का वर्ताव करती थी। परन्तु अब उसके चेहरे पर प्रसन्नता नहीं, उदासी थी। यह क्यों? क्या उसे रुपये पैसे की कुछ कमी थी? या किसी ऐसी वस्तु के लिये उसके मुँह में पानी भर आता था, जो उसे नहीं मिल सकती थी? क्या वह किसी के ईर्ष्यादि द्वेष में जलती थी? या किसी लार्ड अथवा ड्यूक के प्रेम फाँस में फँस कर फटफटा रही थी? नहीं २, कदापि नहीं;—इन बातों में से कोई भी नहीं। वह, और ऐसे बुरे—निन्दनीय विचार! क्या यह कभी सम्भव है? अच्छा तो फिर वह उदास क्यों दीख पड़ती थी? क्यों उसके चेहरे से प्रसन्नता की झलक दूर हो गई थी? क्यों उसका हृदय किसी गहरी चिन्ता की अग्नि से रात दिन जला करता था? सुनिए, वह अब तक रूबन की चिन्ता किया करती थी। अबतक रूबन का प्रेमस्तोत्र उसके हृदय में उमड़ रहा था। अबतक वह रूबन से मिलने के लिये ईश्वर से प्रार्थना किया करती थी!

पहले ही कहा जा चुका है कि मिष्टर जॉन्सन घर में नहीं थे। उनकी स्त्री, मिष्टर जॉन और मे-मिडिल्टन को लेकर,

मुलाकाती कमरे में बैठी थीं । इतने में सहसा द्वार खुला और जेनरल रथबिन अपनी पुत्र मिस जोजफिन के साथ उसके कमरे में प्रविष्ट हुए ।

मिष्टर जॉन्सन एटर्नी की भार्य्या ने उन दोनों को मिष्टर जॉन और मिस "मे" से मिलाया । जनरल रथबिन मिष्टर जॉन का सरल स्वभाव देखकर बहुत प्रसन्न और सन्तुष्ट हुए । उनकी लड़की भी मिस "मे" का बर्त्ताव देखकर उसको बहिन कहकर पुकारने लगी; और दोनों लड़कियों ने परस्पर बहिनापा जोड़ लिया ।

कुछ देर के बाद अर्ल ऑफ नॉर्मिनटन आए । मिष्टर जॉन्सन की स्त्री ने उनसे भी अपने गवैयें मेहमानों से मुलाकात कराई । वह भी मिष्टर जॉन आदि से मिलकर बहुत सन्तुष्ट हुए । अन्त में उन्होंने पूछा, "मिष्टर जॉन्सन कहां हैं ? क्या वह अभी न आवेंगे ?"

जॉन्सन की स्त्री । अब आते ही होंगे ।

अर्ल । (जनरल रथबिन के कान में) आज पूरे दो वर्ष हुए, मैंने आपसे अपनी पुरानी कहानी कहके, अपने दुःख की निशानी दिखाई थी, और आपको पादरी हौगसन का नाम भी बताया था; जिसको मेरी प्राणप्रिया एगूनेस् का हाल मालूम है ।

ज० रथबिन । भला उस बातको मैं भूल सकता हूं ! उस कहानी का एक एक अक्षर मुझे अच्छी तरह याद है ।

अर्ल । अच्छा तो अब सुनिए । ईश्वर का अनेक धन्यवाद है, कि हौगसन का पता लग गया । कुछ दिन हुए मिष्टर जॉन्सन मुझसे "बव स्ट्रीट्" की पुलिस की प्रशंसा कर रहे थे । मैंने उनसे पादरी हौगसन के विषय में कहा । तब वह बोले कि मैं अवश्य

उसका पता लगाऊंगा; परन्तु मुझे उनकी बातों का विश्वास नहीं हुआ। अब हर्ष है कि बड़े परिश्रम से उन्होंने उक्त पादरी को खोज निकाला।

ज० रथविन। क्या हौगसन मिल गया? आपने उससे बातें कीं?

अर्ल। नहीं; मिष्टर जॉन्सन के पत्र से विदित हुआ, कि वह अभी दीवानी जेल में है। उसी के छुड़ाने के लिये मैं आया हूं। मैंने तो चाहा था कि हौगसन से इसी समय जाकर मिलूं, और सारा हाल एग्नेस् का उससे पूछ लूं; परन्तु मिष्टर जॉन्सन ने मना किया और कहा कि मिष्टर हौगसन की दशा ऐसी बिगड़ गई है कि उससे मिलने के लिये इतनी जल्दी करना उचित नहीं होगा। मैं अनुमान करता हूं कि कदाचित् मिष्टर जॉन्सन हौगसन पादरी को लेकर आते होंगे।

इतने में द्वार खुला, और मिष्टर पेलहम आए। मिष्टर जॉन्सन की स्त्री ने मिष्टर पेलहम से हाथ मिलाया, और मिष्टर जॉन तथा उनकी बेटी को भी उनका परिचय दिया। मिष्टर पेलहम ने दोनों को केवल सलाम किया, और फिर वह चुपचाप खड़े होकर कुछ सोचने लगे; कुछ देर के बाद अर्ल ऑफ नॉर्मिनटन आदि से बातें करने लगे। जान पड़ता था कि उनमें जनरल रथविन और मिस जोजाफिन से बहुत मेलजोल है, क्योंकि जनरल रथविन उनको "माई डियर बॉय" अर्थात् 'प्यारे लड़के' कहकर पुकारा करते थे; और अपनी पुत्री को क्रिश्चियन् (खृष्टान) के नाम से पुकारते थे।

मिस मिडिल्टन को विश्वास था कि मिष्टर पेलहम पहले उसके पिता और फिर स्वयं उससे बड़े स्नेह के साथ मिलकर

बातचीत करेंगे; परन्तु जब उसने उनको दोनों में से किसी से विशेष बोलते नहीं पाया, तब वह बहुत आश्चर्य करने लगी; किन्तु मिष्टर पेलहम का बर्त्ताव ऐसा नहीं था, कि कोई उनसे असन्तुष्ट अथवा रुष्ट होता।

यही बात मिष्टर जॉन ने भी सोची। उन्होंने धीरे से "मे" के कान में कहा, "मुझे सन्देह है कि मिष्टर फेलहम हमलोगों से मिलकर अप्रसन्न तो नहीं हो गए। कदाचित् वह हम लोगों को विलिफ्रेड का सम्बन्धी जानकर हमसे मिलने से हिचकते हैं।"

"मे" इसका कुछ उत्तर देनेही को थी कि सहसा द्वार खुला, और मिष्टर जॉन्सन एटर्नी आ पहुंचे। मिष्टर जॉन्सन ने आतेही पहले सबसे हाथ मिलाया; इसके उपरान्त अर्ल ऑफ नॉर्मिनटन को एक ओर किनारे लेजाकर कहा, "आपकी आज्ञा के अनुसार मैंने सब काम समाप्त कर दिए। पादरी हॉगसन को कैद से छुट्टी मिल गई। उसके महाजनों का अनुसन्धान करने में मेरा इतना समय लग गया। अस्तु, काम हो गया। मैंने हॉगसन को अपने नौकर के हवाले कर दिया है।"

अर्ल। (बहुत बेचैनी से) ईश्वर के लिए यह तो बतलाइए, कि उससे मुलाकात कब होगी?

मि: जॉन्सन। मेरा नौकर उसके कपड़े बदलवाने को ले गया है; ठीक नौ बजे लावेगा, जिसमें कि आप उससे मिलकर पूछ लें। मैंने उससे केवल इतना पूछा था, कि वह आपको एग्नेस् का हाल बतला सकता है या नहीं; इसके उत्तर में उसने कहा—'हां।' बस अब ईश्वर चाहेगा तो सब काम हो जायँगे। आप घबरायँ नहीं; नौ बजते बजते २ वह अवश्य यहां पहुँच जायगा।

मिष्टर पेलहम मिस जोजफिन को अपनी बगल में लिये,

भोजन के टेबुल पर मिस "मे" के ठीक सामने बैठे थे। "मे" की दृष्टि बारम्बार आपही उठ उठ कर उनपर पड़ जाती थी; और फिर वह हर बार लज्जित होकर शिर झुका लेती थी। यदि मिष्टर पेलहम मिस जोजफिन से कुछ कहते, तो उनकी आवाज मिस "मे" के कानों में बंसी की ध्वनि से भी अधिक मधुर जान पड़ती, और वह सहसा चौंक उठती!

जितने लोग वहां उपस्थित थे सब अपनी अपनी बातों में लगे हुए थे, अथवा स्वादिष्ट भोजन के चखने में लवलीन थे; परन्तु मिष्टर पेलहम की कुछ औरही दशा थी।—वह कनखियों से रह रह कर मिस"मे"को देख लेते थे, और जब दोनों की चार आंखें हो जाती थीं, तो अपना शिर नीचा करलेते थे; मिस "मे" भी लज्जित होकर गर्दन झुका लेती थी। अस्तु, इसी अवस्था में भोजन समाप्त हुआ। मिष्टर जॉन्सन की स्त्री टेबुल से उठीं। उन्हींके साथ "मे" और जोजफिन ये दोनों भी उठकर दूसरे कमरे में चली गईं; केवल पुरुष-मण्डली वहां रह गई। मिष्टर जॉनसन ने सुयोग देखकर मिष्टर पेलहम के पास जाके कहा, "मिष्टर पेलहम! मुझको इसबात का बहुत खेद है कि बिलफ्रिड ने आपके साथ बहुत दुष्टता, चपलता, अयोग्यता और कमीनेपन का काम किया, और आपके उत्तम व्यवहार का उसने कुछ धन्यवाद नहीं प्रकाशित किया।" इसके उत्तर में मानो मिष्टर पेलहम कुछ कहना चाहते थे; परन्तु बात मुँह तक आकर रुक जाती थी। फिर उन्होंने उनके हाथ को अपने हाथ में लेकर दबाया। इससे मिष्टर जॉनसन बहुत प्रसन्न हुए। वह चाहते थे कि कोई बात मिष्टर पेलहम से कहें; परन्तु बारबार कुछ सोचकर रुक जाते थे।

इतने में एक नौकर आया, और मिष्टर जॉनसन के का: में उसने कुछ कहा। मिष्टर जॉन्सन अर्ल ऑफ कार्मिनटन वे निकट आकर कहने लगे, "लीजिए, हौगसन आ गया चलिए।" (अन्य उपस्थित सज्जनों से) अब लेडियां आ सब लोगों की प्रतीक्षा कर रही हैं। मुझे अर्ल ऑफ नार्मिनटन से एकान्त में कुछ बातें करनी हैं। आप लोग तबसे चलक ड्राइङ्गरूम में स्त्रियों के पास बैठें। मैं भी अभी आता हूं।

आठवां प्रकरण।

अर्ल ऑफ नार्मिनटन और मिष्टर जॉन्सन एटर्नी उस कमरे में गए, जहां हौगसन पादरी बैठा था। अर्ल महाशय को देखते ही हौगसन अपने स्थान से उठ खड़ा हुआ। उसने झुककर अर्ल को सलाम किया। अर्ल ऑफ नॉर्मिनटन ने बड़े स्नेह से उससे हाथ मिलाया, और कहा, "मैं समझता हूं कि मेरी प्राणप्रिया एगूनेस् का थोड़ा बहुत हाल आप जानते हैं।"

हौगसन। श्रीमान्, यदि वह इस समय होती तो आज कौन्टेस् ऑफ नॉर्मिनटन (अर्ल की स्त्री) कहलाती।

अर्ल। (घबरा कर) तो तुम निस्संदेह उसके विषय में बहुत कुछ जानते हो; परन्तु तुमने कहा कि यदि वह होती! क्या तुम जानते हो कि अब वह नहीं है? बताओ, ईश्वर के लिए शीघ्र बतलाओ।

हौगसन। श्रीमान्! यह तो मैं निश्चित रूप में नहीं कह सकता कि वह हैही नहीं।

अर्ल। अच्छा तो जितना तुम जानते हो, उतनाही कहो।

बस, अब जो कुछ कहना हो, वह शीघ्र कहो । मेरा जी बहुत घबरा रहा है ।

हौगसन । मैं श्रीमान् से सब वृत्तान्त संक्षेप में कहे देता हूं । यह तो श्रीमान् जानते ही हैं कि मैं पादरी हूं ?

अर्ल । यह तो मैं उस समय से जानता हूं, जब मैं स्कूल में पढ़ता था । अस्तु आगे कहो ।

हौगसन । एक रात की बात है । मैं सोने को जा रहा था, कि इतने में एक आदमी ने आकर बड़ी नम्रता और विनय से कहा, कि " मेरी एक वृद्धा लौंडी है, आप चलकर उसे देख लीजिए । कारण यह, कि अब उसका जीवन-प्रदीप बुझाही चाहता है । " यह सुनते ही मैं उसके साथ हो लिया । श्रीमान् समझ गए होंगे कि वह वृद्धा कौन थी, और मैं कहां बुलाया गया था ।

अर्ल । हां २, मैं समझ गया, बल्कि अच्छी तरह समझ गया । अस्तु, आगे का वृत्तान्त कहो ।

हौगसन । मैं उस व्यक्ति के साथ चल पड़ा । रास्ते में उसने कहा कि मैं थोड़े दिनों से इस गांव में रहता हूं, और जब से यहां रहता हूं—तबसे वह वृद्धा मेरे यहां नौकर है । वृद्धा बीमार होने से पहले सनक गई थी, परन्तु अब फिर उसका पागलपन दूर हो गया है । मैं उस कमरे में गया जिसमें वह पड़ी थी । उस व्यक्ति नें सोचा कि कदाचित् वह वृद्धा मुझसे (पादरी जानकर) एकान्त में कुछ कहेगी; यह सोचकर, वह वहाँ से हट गया ।

यहां तक सुनकर अर्ल ऑफ नार्मिनटन से चुप नहीं रहा गया । उन्होंने बाधा देकर कहा—" हां २, आगे कहो । "

हौगसन। मैं वहां वृद्धा के पास अकेला रह गया। मुझे उसने शपथ दिलाई कि मैं उसकी बातें श्रीमान् के अतिरिक्त, अथवा श्रीमान जिसे आज्ञा दें उसके अतिरिक्त, किसी अन्य मनुष्य से न कहूं।

अर्ल। मिष्टर जॉन्सन मेरे मित्र हैं। मैं आज्ञा देता हूं, कि तुम उनके सामने कहो; कोई हर्ज नहीं है।

हौगसन०। वह वृद्धा कहने लगी कि किस प्रकार एक १६। १७ वर्ष का बालक उसकी मिस एग्नेस् मार्कलेण्ड पर आशक्त हुआ ....

अर्ल। उंह! ये बातें जाने दो। वहां से कहो, जब कि मैं प्यारी एग्नेस् के साथ स्काट्लैण्ड से वापस आया था, और उसे उसके घर छोड़कर, पिता जी से मिलने के लिए यहां आया था।

हौगसन। वह बुद्धिमती और अनुभव-प्राप्ता वृद्धा कहने लगी, कि पहले तो एग्नेस् को विश्वास था कि श्रीमान् अवश्य आवेंगे। थोड़े दिन तो इसी आशा में बीते; अन्त निराश होकर उसने श्रीमान् को पत्र लिखा।

अर्ल। आह! उस पत्र का आशय मैं भली भांति जानता हूं। उस पत्र का उत्तर मेरे दुष्ट और निर्दयी चचा ने दिया था।

हौगसन। श्रीमान्! मुझे इस वृत्तान्त के कहते समय बहुत ही दुःख और शोक होता है; परन्तु क्या करूं, इसका कहना अत्यन्त आवश्यक है। मानों बेचारी एग्नेस् पत्रके पाते ही पगली हो गई! परन्तु उसने शिकायत का एक शब्द भी मुँह से न निकाला। उसे श्रीमान् के साथ अगाध प्रेम था। वह

केवल यही कहती और रोती थी, कि श्रीमान् को बहुत दुःख होता होगा।

अर्ल। हाय!—एग्नेस्! एग्नेस्?

हौगसन। जिन दिनों आपके चचा के हाथ का लिखा पत्र उसको मिला था, उन दिनों उसे लड़का होनेवाला था।

इतना सुनतेही अर्ल ऑफ नार्मिनटन की विचित्र दशा हो गई। ऐसा जान पड़ा, कि मानों पृथिवी से एक प्रकार की चिनगारी निकल कर उनके शरीर को जलाती हुई आकाश की ओर उड़ गई! उनके नेत्र लाल हो आए, और आँसुओं के बदले मानों खून निकलने लगा। अपने हाथों से अपना शिर पीटकर वह बोले—"नहीं २, यह मत कहो। यह कहना मानों मुझ उतराते हुए को अनन्त काल के लिए दुःखसागर में डुबो देना है।"

हौगसन अर्ल ऑफ नॉर्मिनठन की यह दशा देखकर सन्न हो गया, और मारे भय के काँपने लगा। परन्तु मिष्टर जॉन्सन ने आगे बढ़कर कहा—"श्रीमान् को पूरी पूरी बातें सुन लेनी चाहिएँ। घबराने से क्या लाभ? ईश्वर की बातों में कोई हस्त-क्षेप नहीं कर सकता।"

अर्ल। आप ठीक कहते हैं (आँसू पोछकर) मिष्टर हौगसन! तुम्हें और जो कुछ कहना हो, कहो।

हौगसन। इस वृत्तान्त को उस वृद्धा के अतिरिक्त और कोई नहीं जानता था; परन्तु अब छिपाने का समय नहीं था। संसार में अप्रतिष्ठित और असम्मानित होने का समय निकट होता आता था। वह बेचारी अपने मुंह से यह नहीं कह सकती थी, कि वह किसकी स्त्री है; कारण यह, कि ऐसा करने से

पति का नाम बताना पड़ता। परन्तु आपकी आज्ञा के अनुसा वह इस बात को इतना अप्रकाशित रखना चाहती थी, ि चाहे जो कुछ हो जाता, किन्तु वह अपना नाम न बताती वह यह समझती थी, कि यदि अब वह श्रीमान् का नाम लेग तो श्रीमान् उससे रुष्ट हो जायँगे। उसकी दशा देख देख व बुड्ढी लौंडी रोती पीटती; परन्तु एग्नेस् बहुत धीरता औ गम्भीरता से समय व्यतीत करती। निदान प्रसव का समय आ गया। लाचार होकर जो कुछ रुपया पैसा उसके पास था, उसको उसने उस वृद्धा को दे दिया, और आप वहां से चली गई।

अर्ल। (रो कर) आह एग्नेस्? प्रिये एग्नेस्? यदि दुष्ट चचा इस समय यहां होता, तो मैं उसको उसकी दुष्टता का फल चखा देता।

मिः जान्सन। अब मृत पुरुष को गाली देने से क्या लाभ?

अर्ल। यह तो निस्संदेह सच है; पर क्या करूं, उसने कामही ऐसा किया। (हाॅगसन से) क्या तुम इतनाही वृत्तान्त जानते हो?

हाॅगसन। नहीं श्रीमान्, अभी मैं और हाल जानता हूं।

अर्ल। (चौंककर) क्या? कुछ और भी जानते हो? अच्छा, जितना जानते हो, उतना शीघ्र कह डालो।

हाॅगसन। श्रीमान्! अभी एक अत्यन्त आवश्यक बात कहनी बाकी है। एग्नेस् को गए आठ मास बीत गए, और वह वृद्धा अकेली रहने लगी। एक दिन तीसरे पहर को वह बुढ़िया बाजार से घर को आरही थी। अपने घर के पास वह पहुँची ही थी, कि सहसा अचेत होकर गिर पड़ी। इसका यह कारण था कि उसने देखा कि एग्नेस सामने खड़ी है! जब उसे चेतनता आई, तब उसने देखा कि एग्नेस उसके शिर को

अपनी गोद में लिए बैठी है । एग्नेस् तो वही थी; परन्तु अब उसमें वह लावण्य–वह सुन्दरता नहीं थी । उसके मुख पर पिलाई छाई हुई थी । उसका कोमल और गदराया हुआ शरीर सूख कर काँटा हो गया था । उसकी आंखों में गड्ढे पड़ गए थे । (रुक कर) अर्ल महाशय क्षमा कीजिएगा; इन बातों के सुनने से आपको दुःख होता होगा ।

अर्ल । (शिर धुन कर) ये बातें ऐसी है, कि मनुष्य चाहे कैसा ही अच्छा क्यों न हो, परन्तु पागल हो जाय ।

हौगसन । श्रीमन्! आप अपने को सम्हालें । उस बुढ़िया से एग्नेस् ने कहा कि छः महीने हुए मेरे गर्भ से एक पुत्र उत्पन्न हुआ है । मैं एक गांव में अपने को एक दूसरे नाम से प्रसिद्ध करके रहती हूं ।

अर्ल । और वह लड़का–वही लड़का ! क्या हुआ ?

हौगसन । श्रीमन् ! वह अभी जीवित है ।

अर्ल । आह मेरा लड़का, मेरा प्यारा, मेरी आंखों का सितारा, मेरा उत्तराधिकारी कहां है ?

हौगसन । आह श्रीमान्, यह मैं अभी नहीं बतला सकता ।

अर्ल । क्या वह मर गया ? स्पष्ट कहो–वह मर गया ?

हौगसन । नहीं श्रीमान् ! मैं झूठ नहीं बोलूंगा, और श्रीमान् ने मुझे झूठ बोलने के लिये नहीं बुलाया है । मैं हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूं, कि तनिक धैर्य धरिए, और धीरता को हाथ से न जाने दीजिए ।

अर्ल । हां–हां अच्छा कहो ।

हौगसन । एग्नेस् कहती थी, कि पुत्र के उत्पन्न होने के छः महीने बाद, उसका नाम यूजिन रख के उसने उसकी रजिष्टरी करा दी ।

अर्ल । आह ! मेराही नाम !

हौगसन । परन्तु उस गांव के गिर्जे में नाम रजिष्टरी कर समय पिता का नाम नहीं लिखवाया गया था; और एग्नेे उस वृद्धा से यह भी कहती थी, कि उसने केवल छः मास त उस लड़के का लालन पालन किया; परन्तु फिर वह घबर गई, और दुःख के मारे उसकी ऐसी दशा हो गई कि वह उस लड़के को मार डालने का बिचार करने लगी ।

अर्ल । (घबरा कर) तो क्या उसने उसको मार डाला ?

हौगसन । नहीं श्रीमान्, उसने लड़के को अपने पास से अलग कर दिया ।

अर्ल । (बड़ी घबराहट के साथ) आह ! मैं क्या करूं ! (हौगसन से) हां हां, बताओ; उसने उस लड़के को अपने पास से कैसे जुदा किया ? वह उसे कहां छोड़ आई ?

हौगसन । श्रीमन्, यह मैं नहीं जानता । एग्नेस् ने इस विषय में उस बृद्धा से कुछ नहीं कहा था । बस, उसने केवल इतनाही बतलाया था, कि "मैं उस लड़के को कहीं रख आई हूं, और प्रातःकाल वहां रख कर बराबर पैदल चली आई हूं । रास्ते में मुझे यह भी नहीं मालूम था, कि मैं कहां जा रही हूं, कहां पांव डालती हूं, और कहां वे पड़ते हैं । ईश्वर की कृपा से सकुशल तुम्हारे पास पहुँच गई हूं ।" इतना कहकर, वह लड़के की प्रशंसा करने लगी, कि "जिस समय मैं उसे छोड़ कर आई हूं, उस समय वह गहरी नींद में सोया हुआ था ।" उसकी सुन्दरता की भी बहुत प्रशंसा करती थी । प्रशंसा के साथ साथ एक विशेष बात यह भी कहती थी, कि उस बालक के मोढ़े पर तीन ऐसे तिल हैं, जो तारों की भांति चमका करते हैं ।

अर्ल। मेरे मोढ़े पर भी ऐसेही तिल मौजूद हैं। (मोढ़ा दिखलाकर) यह देखिए ! आह ! मेरा प्यारा बच्चा कहां है ! और प्राणप्रिय एगनेस ! तेरा पता कैसे लगे ? हाय ! उस छोटे निर्दोष बच्चे की दुःखिनी मां कहां गई !

हौगसन। श्रीमन्, एग्नेस् प्रायः एक घण्टे तक उस वृद्धाके पास बैठी रही। यद्यपि वृद्धाने विशेष वृत्तान्त जानना चाहा, किन्तु एग्नेस् ने इस से अधिक कुछ नहीं बतलाया। बस बात करतेही करते तुरन्त उठ खड़ी हुई, और कहती गई, कि कल फिर आऊंगी।

अर्ल। तो क्या वह दूसरे दिन फिर आई थी ?

हौगसन। नहीं श्रीमन्, उस वृद्धाने एक मास तक उसकी प्रतीक्षा की, पर व्यर्थ। अस्तु, फिर बुढ़िया ने यह बात किसी से नहीं कही। यद्यपि श्रीमान् वहां गए थे और श्रीमान् ने उस से बहुत पूछा भी था, किन्तु उसने श्रीमान् को भी कुछ नहीं बतलाया। भाग्य का दोष देखिए, कि उसे श्रीमान् की बातों का विश्वास नहीं हुआ। परन्तु जब वह चैतन्य हुई, तब वह श्रीमान् की बातों को याद कर, पश्चात्ताप करने लगी। जितनी बातें उसे मालूम थीं, उसने सब मुझसे कह दीं, और सवेरा होते होते उसके प्राण पखेरू उड़ गए !

अर्ल। अच्छा, तो तुम इतने दिनों तक मेरे पास क्यों नहीं आए ?

हौगसन। श्रीमन्, मैं आपके यहां गया था, परन्तु आपको न पाकर लौट आया था। फिर स्काट्लैण्ड चला गया था। कुछ दिन हुए, वहां से आया हूं। मैं समझता था, कि आप उन पिछली बातों को अब भूल गए होंगे। इसके अतिरिक्त, थोड़े

दिन हुए, कि मुझे कैदखाने की हवा भी खानी पड़ी थी।

अर्ल। खैर, जो भाग्य में लिखा था, वह होगया। तुम उस गांव का नाम बतला सकते हो, जहां लड़के के नाम की रजिष्टरी हुई थी?

हौगसन। नहीं श्रीमन्, यह मैं नहीं जानता। परन्तु वह गांव एगनेस के मकान से बहुत दूर नहीं होगा; क्योंकि वह उसी जगह लड़के को छोड़कर पैदल ही वहां से चली आई थी।

अर्ल ऑफ नॉर्मिनटन ये बातें सुनकर इधर उधर कमरे में टहलने लगे। कुछ देर के बाद मिष्टर जॉन्सन से बोले—"आपने जो कुछ सुना, उसे और किसी से न कहिएगा। और मिष्टर हौगसन! तुम भी किसी तीसरे के आगे यह बात न बयान करना। यदि लड़का न मिला, तो दूसरों को अपनी कहानी सुनाना व्यर्थ है। (मिष्टर जॉन्सन से) आप हौगसन पादरी को अपने पास रखिए। इनको किसी प्रकार का कष्ट न हो, और ये लोग जो आपके यहां मेहमान आए हैं, इनसे कहिए कि अर्ल ऑफ नॉर्मिनटन को एक आवश्यक काम है, इसीसे वह आज की दावत में साथ नहीं दे सकते, (कुछ याद करके) परन्तु जनरल रथविन से इतना कह दीजिएगा, कि हौगसन से बातचीत हो गई; विशेष मैं स्वयं कह लूंगा।"

नौवां प्रकरण।

सभा भङ्ग हुई। मेहमानों ने अपने अपने घर का रास्ता लिया। मे मिडिल्टन अपने कमरे में गई। परन्तु पाठक! आज मे-मिडिल्टन का चित्त मिष्टर पेलहम की ओर क्यों खिंचा जाता था? आज मे-मिडिल्टन उनका ध्यान दूसरी ओर देखकर दुःखित

क्यों हुई जाती थी ? वह वह नहीं जानती थी, कि इसके बाद मिष्टर पेलहम और उसके पिता में कुछ बातचीत हुई है; इससे उसे विश्वास था, कि मिष्टर पेलहम उसके पिता से भी कुछ खिंचावट रखते हैं। जो हो, यह नहीं मालूम होता था, कि मिष्टर पेलहम को मिस जोजफिन से अधिक वार्तालाप करते देख मिस "मे" क्यों घबराई जाती थी ! तो क्या उसके हृदय मे ईर्षा और द्वेष का काँटा खटक रहा था ? क्या ऐसी निष्कपट बालिका के चित्त में कोई नवीन बुरी चिन्ता समा गई थी ? यदि नहीं, तो फिर मिष्टर पेलहम की चिन्ता बारबार उसे क्यों होती थी ? वह भोजन करते करते रह रहकर मिष्टर पेलहम की ओर प्रेमदृष्टि से क्यों देखने लगती थी ? अस्तु, देखिए, इस का कारण भी मालूम होजाता है।

मे-मिडिल्टन बहुतही घबराहट में थी। रह रह कर मिष्टर पेलहम का ध्यान आता और उसे चौंका देता था। यद्यपि वह इस ध्यान को अपने चित्त से दूर कर देने की बहुत चेष्टा करती थी; यद्यपि वह बारम्बार अपने दिल से पूछती थी कि क्या मैं प्यारे रूबन को भूलकर एक अपिरिचित विदेशी से प्रेम करूंगी; यद्यपि वह आपही कहती थी कि आजतक जिस रूबन वेलिस के लिए मैंने ईश्वर से अनेक बार प्रार्थना की—जिसे अपना जीवनसर्वस्व प्यारा पति मान लिया, क्या उसे धोखा दूंगी ? तथापि इन बातों का कोई उत्तर उसे अपने दिल की ओर से नहीं मिलता था। मिष्टर पेलहम का नाम "प्यारे" शब्द के साथ आपही उसके मुंह से लाख रोकने पर भी बारम्बार निकलही जाता था !!!

दूसरे दिन तीसरे पहर को मे-मिडिल्टन मुलाकाती कमरे

में मिष्टर जान्सन की स्त्री के पास बैठी थी, कि इतने में मिष्टर पेलहम भी आ गए। उनकी ओर देखतेही मे-मिडिल्टन के, मुखड़े की रङ्गत एकदम बदल गई। मिष्टर पेलहम ने पहले मिष्टर जान्सन की स्त्री से हाथ मिलाया; इसके बाद "मे" की ओर पलटे और उससे हाथ मिलाया। "मे" का हाथ मिष्टर पेलहम के हाथ से मिलतेही कांपने लगा। उसने बहुत चाहा पर वह उनसे आंख न मिला सकी।

मिष्टर पेलहम एक कुर्सी पर बैठ गए और बातें होने लगीं। मिष्टर पेलहम का प्रत्येक शब्द बराबर बर्छी की तरह मे मिडिल्टन के हृदय में घुसा जाता था। अन्त उसने एकबार अपने जी को बहुत कड़ा करके मिष्टर पेलहम के मुख की ओर देखा, तो उसे ठीक रूबन वेलिस का चेहरा दिखाई दिया। यद्यपि वह इस बात से प्रसन्न हुई; किन्तु मन में सोचने लगी, कि यह माजरा क्या है? कुछ देर के बाद मिष्टर पेलहम बिदा हुए, और जाते समय उन्होंने प्रतिज्ञा की, कि रात्रि के समय आप सब लोगों के साथ मैं भी थिएटर देखने चलूंगा।

रात को मिष्टर जॉन, उनकी प्यारी बेटी मे-मिडिल्टन और मिष्टर पेलहम थिएटर गए। अचानक उसी स्थान के निकट, जहां ये लोग बैठे थे, जेनरल रथविन भी अपनी लड़की मिस जोजफिन के साथ आकर बैठ गए। यह देखकर, "मे' के हृदय मे बहुत चोट पहुंची। जब मिस जोजफिन मिष्टर पेल हम को उनका नाम लेकर पुकारती, तो मिस "मे" को औ भी बुरा लगता; विशेष कर ऐसी अवस्था में जब कि मिष्ट पेलहम उसे मिस मिडिल्टन के नाम से पुकारते थे। परन्तु फि उसने आपही सोचा, कि अभी मिष्टर पेलहम से मुझसे दोही दिन कं

जान पहचान है; विपरीत इसके मिस जोजाफिन से मिलते उनको वर्षों बीत गए। अस्तु थिएटर से आने के बाद भी मिस " मे " यही बातें सोचती रही। इन्हीं बातों की चिन्तना करते करते उसे नींद आ गई; परन्तु स्वप्न में भी उसे मिष्टर पेलहम दिखाई दिए। अब उसे ५।६ दिन बीत गए। इस बीच में प्रति दिन मिष्टर-पेलहम मिष्टर जॉन्सन एटर्नी के मकान पर आते और मिस मिडिल्टन आदि से मिलते थे।

अब मिष्टर पेलहम स्वतन्त्रता पूर्व्वक मिस " मे " से मिलते थे; अर्थात् अब उनमें वह पहले जैसी झिझक बाकी नहीं थी। मिस " मे " जब उनको देखती, तो उसे ऐसा जान पड़ता, कि मानों रूबन बेलिस सामने खड़ा है; परन्तु फिर वह आपही कहती, कि भला मिष्टर फ्रान्सस पेलहम और रूबन बेलिस से क्या सम्बन्ध ? कहां यह, कहां वह !

एक दिन मिस " मे " मिष्टर जॉन के पास अकेली बैठी बात कर रही थी। बातों बातों में मिष्टर जॉन ने कहा—"मिष्टर पेलहम के बारे में बेटी, तुम्हारा क्या खयाल है ? "

" मे " इसका उत्तर देनाही चाहती थी, कि उसके हाथ का रूमाल छूटकर भूमि पर गिर पड़ा, जिसे उठाते हुए उसने कहा—" आपका क्या खयाल है ? "

मि: जॉन। मैं जितना उनसे मिलता हूं उतनाही अधिक मिलने की इच्छा होती है; परन्तु मुझसे मिलते हुए वह कुछ हिचकिचाते हैं; कारण यह कि मैंने कई बार उनका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना चाहा; किन्तु उन्होंने हर बार टाल सा दिया। यह मैं निस्सन्देह कह सकता हूं कि यह झिझक के कारण मुझसे रुष्ट नहीं हैं; क्योंकि

मैंने उनका धन्यवाद किया, तो उन्होंने मेरा हाथ लेकर अपने हाथों में जोर से दवाया। अस्तु, अब तुम यह बताओ कि उनके विषय में तुम्हारी क्या राय है ?

"मे"। (नीची दृष्टि करके) इतना तो जिससे पूछियेगा वही कह देगा कि उनके स्वभाव में दया बहुत है, और अनेक देशों की सैर करना उनको बहुत पसन्द है। इसके अतिरिक्त वह प्रतिष्ठित पुरुषों से मिलते जुलते भी रहते हैं।

मिः जॉन। इसमें तो सन्देह नहीं। मिष्टर जॉन्सन कहते थे कि जब जेनरल रथविन ने अर्ल ऑफ नार्मिनटन से उनका परिचय कराया, तो पहलेही साक्षात् में उन्होंने प्रत्येक नगर की प्रसिद्ध प्रसिद्ध बातों का वर्णन कर दिया। इससे प्रगट होता है, कि अनेक स्थानों के प्रतिष्ठित पुरुषों से वह मिल चुके हैं। परन्तु एक बात रह रह कर न जानें क्यों मेरे मन में उठती है ! मुझे ऐसा सन्देह होता है कि मैंने पहले भी कभी इनको कहीं देखा है।

मे। जी हां, आप ठीक कहते हैं; मुझे भी बारंबार ऐसाही धोखा होता है।

मिः जॉन। परन्तु यह तो सन्देह ही सन्देह जान पड़ता है; क्योंकि मैंने उनसे पूछा था कि आप कभी मेरे गांव की ओर गए हैं, तो वह यह सुनते ही मेरी ओर इस ढंग से देखने लगे कि जिससे मुझे भय हुआ कि कहीं रुष्ट तो नहीं हो गए। परन्तु इतने में जनरल रथविन आ गए, और मिष्टर पेलहम बिना मेरे प्रश्न का जवाब दिएही उनसे बातें करने लग गए।

मे। (नीची दृष्टि किए हुए) वह जनरल रथविन और

उनकी बेटी से निःसंकोच होकर बातें करते हैं ।

मिः जॉन । तो इसमें आश्चर्यही क्या है । तुम्हारी बुद्धि कहां चली गई ? इन बातों को तो स्त्रियां खूब समझती हैं । हैं ! यह क्या ! बैठे बैठे बारबार तुम्हारे हाथ से रूमाल छूटकर क्यों गिर पड़ता है ? लोग देखेंगे तो कहेंगे कि तुम बड़ी मूर्ख हो ।

मे । (घबराहट के साथ रूमाल उठाकर) जी ?

मिः जॉन । अब तुम्हें आप नहीं सूझता तो लो मैं समझाए देता हूं; अब छिपाने की कोई आवश्यकता नहीं है । मिष्टर जॉन्सन आज भोजन के बाद कहने को कहते थे । बात यह है कि एक विवाह बहुत शीघ्र होनेवाला है और मैंने प्रतिज्ञा की है कि तुम उसमें सहेली बनोगी । एं ! फिर रूमाल गिर पड़ा !

इस बार "मे" ने अपनी दृष्टि नीची नहीं की; इस बार उसके मुख का रंग भी नहीं बदला; इस बार उसका कलेजा भी नहीं धड़का; परन्तु उसे ऐसा जान पड़ा कि मानों उसके शिर पर बज्राघात हुआ जिसके नीचे दबकर वह चूर चूर हो गई ! पिता के मुख से किसी विवाह में सहेली बनने का प्रस्ताव सुनतेही, उसकी सब आशाएं टूट गईं; सब प्रसन्नता दूर हो गई और उसके सब मंसूबों पर पानी फिर गया । परन्तु अब यह भी स्पष्ट प्रगट हो गया कि वह मिष्टर पेलहम से प्रेम करती है ।

यहां ये बातें होही रही थीं कि द्वार खुला और मिष्टर पेलहम आए । मिष्टर जॉन उठे और उनसे मिलकर कहने लगे, " अभी आपही की बातें हो रही थीं, और मैं "मे" से आपका रहस्य कह रहा था । "

मि: पेलहम । कौन सा रहस्य ?

मि: जॉन । मैं यह कह रहा था कि आप बहुत शीघ्र दुलहा

बननेवाले हैं। मैं "मे" को मिस जोजफिन की सहेली बनाऊंगा। (रुककर) देखिए तो, यह गाड़ी किसकी चली आती है?।

इसके बाद दोनों झिलमिली में से बाहर देखने लगे। एक गाड़ी बहुत तेजी से दौड़ती हुई आकर द्वार पर खड़ी हुई, मिष्टर जॉन उसे देखते रहे; परन्तु वह यह नहीं जानते थे कि इधर बेचारी "मे" की क्या दशा हुई। मिष्टर पेलहम ने उसकी दुरवस्था देख ली, अतएव उसके पास जाकर वह कहने लगे, "मे! ईश्वर के लिये बताओ क्या हाल है?। तुम्हारी तबीयत कैसी है?"

मे०। (अपने को सम्हाल कर) नहीं, कुछ नहीं।

इतने में मिष्टर जॉनने उधर से लौट कर दोनों से कहा,— "अर्ल ऑफ नार्मिण्टन बहुत ही घबराए हुए गाड़ी से उतरे हैं, और (रुक कर) वह देखो! मिष्टर जॉन्सन से गले मिले रहे हैं। क्या बात है!"

अभी मिष्टर जॉनने इतनाही कहा था, कि नौकर आकर उनसे कहने लगा, कि चलिये, साहब और अर्ल ऑफ नार्मिनटन आपको बुलाते हैं।

मिष्टर जॉन। चलो चलते हैं।

मिष्टर जॉन चले गए। मे मिडिल्टन और मिष्टर पेलहम दोनों अपने ध्यान में डूबे हुए थे। खिदमतगार के आने और मिष्टर जॉन के जाने की आहट उनको बिल्कुल मालूम नहीं हुई। कुछ देर तक तो दोनों चुपरहे, किन्तु अन्त में मिष्टर पेल्हम ने निस्तब्धता भङ्ग की। उन्होंने कहा,—"मिस मिडिल्टन!

[illegible] तक [illegible] त कुछ [illegible] थी?"

मे०। नहीं तो।

मिः पेलहम। परन्तु मैं तुम्हारी चाल देखकर बहुत प्रसन्न हुआ और अब मुझे विश्वास है कि तुम असल वृत्तान्त अवश्य सुन लोगी।

मे-मिडिल्टन आश्चर्य्यपूर्ण नेत्रों से मिष्टर पेलहम की ओर देखने लगी। उसने मिष्टर पेलहम को अपने इतने निकट देखने की कभी आशा नहीं की थी; परन्तु अब जो उसने विचार-दृष्टि से देखा, तो उसे स्पष्ट जान पड़ा, कि उसकी प्रार्थना स्वीकृत हुई—उसका मनोरथ पूर्ण हुआ!

अब मिष्टर पेलहम ने "मे" का हाथ अपने हाथ में लिया और धैर्य्य धराते हुए कहा,—"मैं तुम्हारे आन्तरिक भाव को पूर्णतया समझ रहा हूं। आह मे! प्यारी मे! क्या तुमको विश्वास आ गया कि मैं किसी दूसरे से प्रेम करता हूं? क्या तुम यह नहीं जानतीं कि तुम्हारा प्रेम मेरे हृदय से कदापि दूर नहीं हो सकता! मिस मे! जोजफिन से मुझसे अभी तक कोई दूसरा सम्बन्ध नहीं है। मैं जिसका प्रेमी हूं, जो मुझे प्यारा है, जिसके पाने की मुझे आशा है—दृढ़ आशा है, वह प्यारी मे! केवल तुम्हीं हो।"

इतने ही में द्वार खुला और खिदमतगार ने आकर मिष्टर पेलहम से कहा,—"साहब हुजूर को बुलाते हैं।"

विवश हो, मिस "मे" से केवल इतना कहके कि अभी आया, मिष्टर पेलहम चले गए और "मे" अकेली रह गई। अब उसके मास्तिष्क के मैदान में ध्यान रूपी सैन्य ने आ आकर जमा होना आरम्भ किया। कभी उसके मस्तिष्क में आशा और निराशा में झगड़ा हो जाता; कभी भय और आतङ्क

आपस में लड़ जाते; कभी दुःख और क्षोभका उसपर आक्रमण होता; कभी प्रसन्नता और हर्ष से उसका मलिन मुख दमक उठता । अभी उसकी यही दशा थी, कि फिर कमरे का द्वार खुला । सबके आगे अर्ल ऑफ नार्मिनटन ने मिष्टर फ्रान्सिस के साथ कमरे में प्रवेश किया । उनके पीछे मिष्टर जॉन और मिष्टर जॉनसन की स्त्री भी थीं; सबके अन्त में जनरल रथविन थे ।

अर्ल ऑफ नार्मिनटन बड़ी ही प्रसन्नता से कहने लगे,—“ मिस “ मे ” ! मुझे बधाई दो । (मारे हर्ष के उनके मुख से अच्छी तरह बात भी नहीं निकलती थी) मुझे विश्वास है कि तुम मुझे अवश्य बधाई दोगी, जब कि तुम मेरे हर्ष का कारण सुनोगी । सुनो ! मैंने अपने प्रिय पुत्र को पाया है । उसी खोए हुए पुत्र को ! ”

यह कह कर अर्ल ऑफ नार्मिनटन ने मिष्टर पेलहम की तरफ इशारा किया, अर्थात् यह बतलाया कि यही मेरा खोया हुआ प्यारा पुत्र है । मे मिडिटलन को यह देख अत्यन्त आश्चर्य हुआ ।

अर्ल ऑफ नार्मिनटन के पुत्र (मिष्टर पेलहम) ने आगे बढ़ कर मिस मिडिल्टन से हाथ मिलाया और कहा,—“ लेकिन तुमको क्या ! तुम्हारे लिये तो वही ‘ रूबन बेलिस ’ है !!! ”

दशवां प्रकरण ।

अब हम संक्षेप में यह बतलाते हैं, कि अर्ल ऑफ नार्मिनटन को यह कैसे मालूम हुआ, कि रूबन बेलिस और फ्रान्सिस पेलहम एक ही व्यक्ति हैं और वही उनका खोया हुआ लड़का भी है ।

पाठकों को याद होगा कि हौगसन पादरी के द्वारा अपनी स्त्री का वृत्तान्त सुनकर अर्ल महाशय वहां से चले गए थे। वह इसी कारण चले गए थे, कि जैसे बने लड़के का पता लगाना चाहिए।

लैनचेष्टर में अर्ल ऑफ नॉमिनटन से और मिस एगनेस से मुलाकात हुई, जहां वह स्कूल में पढ़ते थे। एगनेस का मकान वहां से निकट ही था। हौगसन के द्वारा उनको मालूम हुआ, कि बच्चा होने के बाद छः महीने तक एगनेस वहां से थोड़ीही दूर पर कहीं रहती थी और यह भी विदित हुआ कि बच्चे के नाम की रजिष्टरी हो गई है। अतएव अर्ल महाशय तुरन्त लैनचेष्टर को गए और उसके निकटवर्त्ती सब गिर्जों के रजिष्टरों में उन्होंने लड़के का नाम ढूंढ़ा, और यह विज्ञप्ति दे दी कि जो मेरे लड़के का पता लगावेगा वह तत्कालही माला-माल कर दिया जायगा।

इसी अनुसन्धान में ४१९ दिन बीत गए। अन्त में ईश्वर ने कृपा की। अर्ल आफ नॉर्मिनटन को हौगसन पादरी के द्वारा लड़के नाम मालूम हो गया था; और रजिष्टर देखते २ और पता लगाते २ उनको मालूम हो गया कि उस गांव के गिर्जे में लड़के के नाम की रजिष्टरी हुई है, जहां मिष्टर जॉन मिडिल्टन रहते हैं।

रजिष्टर में लड़के का नाम देखकर अर्ल आफ नॉर्मिनटन के हर्ष की सीमा न रही। गिर्जे से बाहर आकर वह इस बात की खोज करने लगे कि आखिर अब वह लड़का है कहां। ढूंढ़ते २ मालूम हुआ, कि २९ वर्ष हुए, यहां एक लड़का पड़ा मिला था, जिसका नाम " रूबन बेलिस " रखा गया।

अर्ल ऑफ नॉर्मिनटन उस मजदूर के पास गए जिसने लड़के को पाया था। उससे कुछ बातें मालूम करके कि वह लड़का मिष्टर जॉन के पास रहता था, उन्होंने बाकी हाल मिष्टर जॉनही से पूछना निश्चय किया। अतएव वह फिर लन्दन आए और वहां आकर उन्होंने सब हाल मिष्टर जॉन्सन एटर्नी से कहा। इनके द्वारा ज्ञात हुआ कि रूबन वेलिस तो वही लड़का है जिसको अब हम फ्रान्सिस पेलहम कहते हैं। दोनों एकही हैं; कोई अन्तर नहीं है! यह सुनकर उन्होंने मिष्टर जॉन को बुलाया। मिष्टर पेलहम के मोंढ़े पर के चमकते हुए तीनों तिलों से सबका सन्देह दूर हो गया। अर्ल ऑफ नॉर्मिनटन ने अपने प्यारे पुत्र को पा लिया। जनरल रथविन भी वहां उपस्थित थे। सबने अर्ल महाशय को बधाई दी।

प्रिय पाठक! अब हम यह बतलाते हैं, कि रूबन वेलिस "मिष्टर पेलहम" कैसे बन गया। आपको याद होगा, कि एक दिन रूबन ने मिस मिडिल्टन से एक गुलाब का फूल मांगा था, जिसे वह फेंक कर विल्फ्रिड से मिलने चली गई थी। इससे बेचारे रूबन को बहुत दुःख हुआ था और फिर वह मिष्टर जान के टेबुल पर एक पत्र छोड़कर एकदम गायब हो गया था। अब सुनिए, कि मिस मिडिल्टन की ओर से निराश होकर वह मिष्टर जार्ज से मिला जो उन दिनों वृद्ध डार्नेल के नाम से मिष्टर जान के यहां रहते थे। मिष्टर जार्ज जानते थे, कि रूबन बहुत अच्छा आदमी है। अतएव उन्होंने उसे १००) रु० नकद और एक पत्र देकर कहा कि तुम लन्दन में जाकर यह पत्र मिष्टर जान्सन एटर्नी को देना और जैसा वह कहें वैसाही करना, तो आशा है कि तुम्हारी इच्छा पूर्ण होगी। अस्तु, रूबन

लन्दन में आकर मिष्टर जॉन्सन एटर्नी से मिला। मिष्टर जॉन्सन ने कहा कि मिष्टर हार्लेन्ड अथवा मिष्टर जॉर्ज को आप गरीब न समझें; वह बड़े धनाढ्य हैं। उन्हों ने आज्ञा दी है कि मैं उनकी ओर से ४००) रु० मासिक आपको दूं। आप अब अपना नाम बदलकर फ्रांसिस पेलहम रक्खें और दुनिया के भिन्न २ स्थानों की सैर करके अभिज्ञता और अनुभव प्राप्त करें और सभ्यता सीखें और यह भेद किसी से न खोलें। बीच २ में मुझे पत्र लिखा करें। मैं बराबर ४००) रु० महीना आपके पास भेजता रहूंगा। फिर जब मे मिडिल्टन बालिग अर्थात विवाह के योग्य होगी, तब आपको कुछ दूसरी सलाह दूंगा। आशा है, कि आपका मनोरथ पूर्ण होगा।

अब पाठक सब भेद अच्छी तरह समझ गए होंगे। ईश्वर की कृपा से अब मिस मिडिल्टन के बालिग होने में केवल दो मास बाकी थे। बातों बातों में मिष्टर जान्सन ने निश्चय कर लिया कि वह रूबन रेलिंस अथवा मिष्टर पेलहम को अवश्य प्यार करती है। पाठक! दोनों प्रेमी मिल गए; अब केवल विवाह होने की देर है। उस भविष्यद्वक्त्री स्त्री की बात भी पूरी हो गई, जिसने "मे" से कहा था, कि "एक" आदमी आपको प्राणों से अधिक प्यार करता है, वही अन्त में आपका स्वामी होगा।"

—o—

ग्यारहवां प्रकरण।

इस घटना को भी दो महीने बीत गए। मे मिडिल्टन के बालिग होने का समय आ गया। पाठक भूल न होंगे—कि मिष्टर जॉर्ज ने मरते समय "मे" को एक मुहरबन्द पत्र दे कर कहा

था, कि यह पत्र तुम उस दिन खोलना जिस दिन तुम बालिग होगी।

सो आज वही दिन है; आज वही दिन है जिस दिन उस पत्र का छिपा भेद प्रकट होगा। सबने "मे" को बधाई दी। उसने कॉपते हुए हाथों से वह पत्र खोला। उसमें नीचे लिखी बात लिखी थी,—

"प्यारी बेटी! मुझे विश्वास है कि आज तुम प्रतिज्ञानुसार इस पत्र को पढ़ रही होगी। अतएव मैं उन शब्दों में तुम से बातें करता हूं, कि मानो मैं स्वयं तुम्हारे पास वर्त्तमान हूं। मुझे दृढ़ विश्वास है, कि ईश्वर की शुभेच्छा से मेरे सब उपाय सार्थक हुए होंगे। मुझे निश्चय था, कि विल्फ्रिड अयोग्य है और केवल एकही व्यक्ति तुम्हारे लिये उपयुक्त है। वह कौन? रूबन।

"बेटी "मे"! मैं सच २ लिख रहा हूं कि मैंने तुम्हें सब बातों में भला पाया और रूबन को भी। यद्यपि बेचारे रूबन के बाप का नाम किसी को मालूम नहीं है; किन्तु मेरा जी गवाही देता है कि वह अवश्य किसी अर्ल या ड्यूक का लड़का होगा।

"बेटी! मैं तुमको आशीर्व्वाद देता हूं, कि तुम सदैव प्रसन्न रहो। आज के दिन तुम बालिग हुई हो। अतः अब तुम स्वतन्त्र हो। अन्त में ईश्वर से प्रार्थना कर, कि वह सदा तुमको सुखी रक्खे, मैं तुमसे विदा होता हूं।

तुम्हारा चचा—जॉर्ज़ मिडिल्टन।"

पत्र पढ़कर "मे" की आंखों में आंसू भर आया। उसके वृद्ध चचा ने जो जो बातें अपनी दूरदर्शिता के बल से कही थीं, वे सत्य हुईं।

अब पाठक! अन्तमें दो दो बातें करके हम भी आप से विदा होते हैं। हमको कुछ विशेष नहीं कहना है; केवल इतनाही बतलाना है, कि मे मिडिल्टन और रूबन वेलिस की शादी खुशी खुशी हो गई। अर्ल की स्त्री एगनेस का हाल मालूम नहीं हुआ। विल्फ्रिड भी मय अपनी स्त्री के कुछ दिनों बाद मर गया। नेह-क्रेष्टन और ओ हालोरन को कालेपानी का दण्ड मिला। जनरल रथविन की बेटी मिस जोजफिन का विवाह भी किसी धनवान युवक के साथ हो गया। कुछ दिन बाद मे-मिडिल्टन और जोजफिन दोनों की गोदी भरी पुरी हो गई।

एक रात की बात है, गर्मी पड़ रही थी। मे-मिडिल्टन ने अपने पति मिष्टर फ्रान्सिस पेलहम से कहा कि इस समय जी नहीं लगता है; कोई कहानी सुनाओ। तब मिष्टर फ्रान्सिस पेलहम नीचे लिखी मजेदार कहानी सुनाने लगे।

“ किसी सेना में डार्मन नामक एक कर्नेल था, जिसकी अधीनता में सेना का एक पूरा हिस्सा था। कर्नेल डार्मन बहुत ही भला आदमी था, लेकिन उसमें एक ऐब यह था, कि वह अपने उन साथियों से जो उहदे में उससे नीचे थे—बहुत कम मेल मुलाकात रखता था।

“ जिस समय कर्नेल डार्मन ने सैन्यदल में प्रवेश किया था, उस समय उसकी अवस्था २८ वर्ष की थी। कुछ ही दिनों में उसने कई ऐसे अच्छे कार्य्य किए कि छोटे बड़े सब अफसर उससे प्रसन्न हो गए। अस्तु, सैन्यदल में प्रवेश करने के दो वर्ष पश्चात् उसने एमिलिन नाम्नी एक अद्वितीया सुन्दरी से अपना विवाह किया। एमिलिन बड़ी जिद्दिन और गुस्सैल थी; फिर भी उसके अत्यन्त रूपवती होने के कारण सभी की

यही इच्छा होती थी कि वह मुझसे बोले या मेरी ओर देख ले,—चाहे क्रोधही से क्यों नहीं। कर्नल भी उसको इसी कारण अपने प्राणों से भी अधिक प्यार करता था। यह बात भी प्रसिद्ध थी कि एमिलिन के पिता ने उसका विवाह कर्नल के साथ जबर्दस्ती कर दिया था; क्योंकि वह स्वयं उनसे विवाह करना नहीं चाहती थी। उसकी इच्छा किसी और के साथ अपना विवाह करने की थी, जिसे वह पहले ही से प्यार करती थी। यद्यपि एमिलिन ने चाहा कि उसका बाप अपना इरादा बदल दे, परन्तु उसकी इच्छा पूर्ण नहीं हुई; बल्कि उसके पिता ने उसे कुछ दिन के लिये "फ्रान्स" भेज दिया। एमिलिन के जाने के बाद उस आदमी का हाल नहीं मालूम हुआ जिसको वह प्यार करती थी। आठ महीने के पश्चात् एमिलिन फ्रान्स से घर लौटी। उस समय उसकी इच्छा न होने पर भी उसके पिता ने कर्नल डार्मन के साथ उसका विवाह कर दिया।

"कर्नल की शादी के एक महीने बाद एक दिन एक नया आदमी फौज में आया और उसने नौकरी की इच्छा प्रगट की। उसके कपड़े मैले कुचैले थे, किन्तु उसका शरीर सुन्दर और सुगठित था। फौज के बड़े अफसर ने उसके लिये कर्नल डार्मन की सिफारिश चाही। कर्नल ने उसकी सिफारिश तो नहीं की; पर यह कहा कि भर्ती हो जाने के बाद मैं उसकी चालचलन जाँच लूंगा तब उसके बारे में कुछ कहूंगा।

"अस्तु वह आदमी फौज में रख लिया गया और रजिष्टर में उसने अपना नाम 'हार्वी' लिखाया। कुछ ही दिनों में उसने अपना काम अच्छी तरह सीख लिया और मेहनती तथा खुशमिजाज होने के कारण सबका दोस्त बन गया;

परन्तु हार्मों में एक विशेष बात थी जो बहुत गौर करने से मालूम होती थी, अर्थात् उसके मिजाज में बहुत बेचैनी थी और वह सदा उदास रहता था।

" अस्तु, धीरे धीरे दिन बीतते गए। सर्दी का मौसिम बीत गया और बसन्त-ऋतु ने अपना राज्य स्थापित किया। चारो ओर का दृश्य सुहावना सुहावना दीखने लगा। यह मकान जिसमें कर्नल की स्त्री एमिलिन रहती थी, उन मकानों से कुछ दूर था, जो फौजी लोगों को सरकार से मिले थे।

" एक दिन इसी मौसिम अर्थात् अप्रेल के महीने में शाम के वक्त अकेले बैठे रहने के कारण एमिलिन का जी बहुत घबरा उठा, क्योंकि उस समय कर्नल हार्मन हमेशः अपने फौजी दोस्तों के साथ रहा करता था। एमिलिन उस समय जी बहलाने के लिये अपने घर से अकेलेही चल खड़ी हुई। वह बड़ी देर तक उन बड़े बड़े मैदानों और हरे भरे खेतों की सैर करती रही, जिनकी लहलहाती हुई हरियाली पर उसकी निगाह रुक रुक कर बढ़ती और बढ़ बढ़ कर आनन्द लेती थी। इस सैर में बहुत देर हो गई। एमिलिन थोड़ी दूर आगे गई होगी कि उसे कुछ धुआँ दिखाई दिया जो एक घाटी में से उठ रहा था। उसने सोचा कि शायद वहां कुछ बस्ती होगी। वह अभी यही सोच रही थी कि उसे निकटही बहुत से लोगों के हँसने बोलने की आवाजें सुनाई दीं। उस समय एमिलिन ने सोचा कि सैर करने में बहुत देर लग गई है; क्योंकि सूरज डूब चुका था और अँधियारी चारो ओर से घुकी आती थी; इसलिये वह आगे न बढ़ी और जब उसने अन्दाजा किया तो उसे मालूम हुआ कि अभी घर तक पहुंचने में कम से कम एक घण्टा लगेगा। अस्तु वह

अपने घर की ओर मुड़ी; परन्तु थोड़ीही दूर आगे बढ़ी होगी कि उसे ऐसा जान पड़ा कि कोई उसके पीछे २ आ रहा है। यह देख वह डरी; किन्तु तुरन्तही एक छोटे बच्चे के हँसने का शब्द उसे सुन पड़ा। एमिलिन ने पीछे मुड़कर उससे कड़ी आवाज में पूछा,—क्यों! तू क्या चाहता है?" लड़का रोने लगा और बड़े अफसोस के साथ बोला, "देखो' तुम मुझपर नाराज न होओ। मैं तुमको हाथ जोड़ता हूं; मुझे एक पैसा दे दो; नहीं तो वे मारेंगे और कहेंगे कि मैं किसी काम का नहीं हूं।"

एमिलिन०। कौन मारेंगे?

लड़का०। (उस तरफ इशारा करके जिधर से धुआं उठ रहा था) वे * जिप्सी।

एमिलिन०। अहा, तो तुम जिप्सियों के साथ रहते हो! क्या वे तुम्हारे साथ मेहर्बानी का वर्ताव करते हैं या हमेशा तुम पर कड़ाई रखते हैं? वे तुम्हें क्यों मारते हैं? बड़े निर्दयी हैं! तुम्हें खाने पीने की तकलीफ तो नहीं होती? और हां, क्या वे हमेशा तुमसे भीख मँगवाया करते हैं?

लड़का०। तुम तो ऐसी जल्दी २ कह गई कि जरा भी मेरी समझ में न आया।

एमिलिन०। उंह! गधा है बिल्कुल। न मालूम कौन है; कोई चोर वोर होगा। (जोर से) अच्छा ले।

"यह कहते हुए उसने एक चवन्नी उस लड़के के हाथ में दी और फिर घर की ओर लौटी। रास्ते भर वह न मालूम क्या क्या बातें सोचती जाती थी। जिस समय वह अपने बंगले पर पहुंची उस समय उसने अपनी लौंडी को द्वार पर खड़े

* यह एक जङ्गली जाति का नाम है। (अनुवादक)

देखा । लौंडी ने उसे देखतेही घबराहट के साथ कहा,—" हाय ! आप इस समय पहुँचीं ! "

एमिलिन० । (घबराकर) क्या एञ्जिला ! क्या हुआ ! क्या कर्नल—मेरे पति घर में हैं ?

एञ्जिला० । जी हां, हैं; और ....

एमिलिन० । (बेचैनी से) और क्या ?

एञ्जिला० । और .... हाय !

एमिलिन० । कुछ कह भी तो कि क्या हुआ ?

एञ्जिला० । कर्नल .... !

एमिलिन० । (बहुत बेचैन होकर) बस जो कुछ कहना हो शीघ्र कह ।

एञ्जिला० । कर्नल घायल हो गए ।

एमिलिन० । घायल ! सो कैसे ?

वह जवाब के लिए न ठहरी; फौरन् अन्दर चली गई । सीढ़ियों का एक सिलसिला ते करके वह अपने पति के कमरे में पहुँच गई । कर्नल डार्मन पलंग पर लेटा हुआ था । उसके गाल पीले हो गए थे और उसके मुखड़े पर मुर्दनी छाई थी; किन्तु एमिलिन को देख कर वह कुछ मुस्कुराया !

एमिलिन० । तुम....

कर्नल० । नहीं, कुछ नहीं, बस थोड़े दिनों में अच्छा हो जाऊंगा ।

एमिलिन० । प्यारे डार्मन ! क्या तुम घायल नहीं हुए हो ! मुझसे छिपाते क्यों हो ? हाय ! तुम घायल हुए और मैं यहां मौजूद न थी ।

कर्नल० । खैर कुछ हर्ज नहीं, बल्कि मैं तो प्रसन्न हूं कि

उस समय तुम यहां वर्त्तमान न थीं, नहीं तो मेरा खून तुमसे न देखा जाता; अवश्यही तुमको दुःख होता ।

" एमिलिन कर्नल के पास बैठ गई । उसने देखा कि कर्नल के पांवों पर पट्टियां बँधी हुई हैं और वह बिलकुल कमजोर सा हो रहा है। एमिलिन का जी भर आया । यद्यपि उसका स्वभाव कड़ा था, तौभी वह ऐसी नहीं थी कि अपने चाहने वाले को भूल जाती । खैर, उसने कर्नल से घायल होने का सबब पूछा, तो कर्नल ने धीरे २ सब हाल कह डाला । "

इतनी कहानी कहकर मिष्टर फ्रान्सिस पेलहम रुक गए । मे मिडिल्टन अथवा मिसेज़ पेलहम ने उनसे पूछा,-" कर्नल के घायल होने का क्या कारण था ? "

मिः पेलहम,-" देखो, वह भी कहता हूं । तुम जानती हो कि प्रायः लोग ऐसे भी होते हैं, कि यदि खुद उनकी चाल चलन अच्छी नहीं होती तो वे अच्छी चालचलन वालों से डाह करने लगते हैं। सो जबसे हार्वी फौज में भर्ती हुआ तभी से कर्नल डार्मन उससे द्वेष रखने लगा और सोचने लगा कि किसी दिन सुयोग पाकर इसको नीचा दिखाना चाहिए । अस्तु जिस दिन एमिलिन सैर करने गई थी, उस दिन वह अपने बराबर वाले उहदेदारों के साथ बैठा खान पान कर रहा था । थोड़ी देर में अपने मित्रों के कमरे के बाहर आकर वह हवा में टहलने लगा । इतने में उसने देखा कि दो फौजी सिपाही उसके पास से बातें करते हुए चले गए । जब वे कुछ आगे बढ़ गए, तो कर्नल ने उनको पास बुलाकर पहचाना ।

कर्नल० । अहा, हार्वी ! तुम हो ! क्या मैं केवल यह समझूं कि तुमने मुझे देखाही नहीं इसलिये सलाम नहीं किया,

या यह कि तुम्हारी ऐसी आदतही है ?

हार्वी०। महाशय ! मैं आपसे माफी चाहता हूं। जान बूझकर तो मैं ऐसा नहीं कर सकता कि अपने अफसर को सलाम न करूं।

कर्नल०। मुझे तुम्हारी बातपर विश्वास नहीं होता। अच्छा यह तो बताओ, तुमने मुँह क्यों फेर लिया था ?

हार्वी०। जी नहीं। मुंह तो मैंने नहीं फेरा।

कर्नल०। (कुछ क्रोध से) तो क्या मैं झूठा हूं। अच्छा तुम अपने साथी से कहो कि वह चला जाय; मैं तुम से कुछ कहूंगा।

हार्वी का साथी चला गया। तब कर्नल बिगड़ कर कहने लगा,—"तुम्हारी चाल में कोई विशेष बात है, जो मुझे नापसन्द है। मैंने सुना है कि तुम कुछ फिलासोफी भी जानते हो और किताबें बहुत पढ़ा करते हो। यह खबर तुम्हारे अफसरों को भी लगी है। सो फौज में लड़ाके आदमियों का काम है, न कि पढ़ने लिखने वालों का !"

हार्वी०। (अपना ढंग बदल कर) महाशय ! मेरे अफसरों को केवल इतना अधिकार है कि वे मेरे उन कामों की जाँच करें, जिनके लिए मैं नौकर हूं। बाकी कामों में दखल क्यों देंगे ?

कर्नल०। तो तुमको अपने और अपने अफसरों में कुछ अन्तर नहीं जान पड़ता !....लेकिन नहीं; मैं एक अदने आदमी से अधिक बातें नहीं करना चाहता।

हार्वी०। क्या! अदना आदमी? महाशय! "मातहत" कहिए।

कर्नल०। नहीं, मै तुमको अदना आदमी कहूंगा। यह कहकर कर्नल क्रोधपूर्वक हार्वी की ओर बढ़ा, किन्तु फिर कुछ सोचकर रुक गया।

हार्वी० । अफ़सोस कर्नल डार्मन ! तुम्हारी चाल बिल्कुल नीचों की सी है !

कर्नल० । नीच ! बदमाश ! क्या तू मेरी इज्जत को नहीं जानता ?

" इतना सुनना था कि क्रोध में आकर हार्वी ने कर्नल के मुंह पर एक थप्पड़ मार दिया । कर्नल ने भी अपनी तलवार निकाल कर हार्वी पर वार किया । पर उसका वार खाली गया और उसने अपनेही को घायल पाया !

" यह तो कर्नल के घायल होने का वृत्तान्त है । आगे सुनो—कि इस घटना के कई सप्ताह के बाद एक दिन एमिलिन अपने कमरे में अकेली बैठी हुई अपनी जिन्दगी की पिछली बातें सोच रही थी । उस समय का जब नई नई उम्मीदों ने उसके दिल में घर किया था, वह वर्त्तमान समय से मिलान करती तो उसे बहुत दुःख होता । उसे अपनी उस मुहब्बत भी याद आई, जो उसे वाल्टर के साथ थी । उसे उन बातों का भी स्मरण हुआ कि उसके बाप ने पहले तो उसे फ्रान्स भेज दिया था, फिर जबर्दस्ती उसकी शादी कर्नल डार्मन के साथ कर दी थी । वह यही सोच रही थी, कि एक लौंडी उसके हाथ में एक चिट्ठी देकर चली गई । एमिलिन ने चिट्ठी खोली । उसमें निम्नलिखित बात लिखी थी,—

" एमिलिन !

" बहुतही मुशकिल से मुझको ये चीजें मिल सकीं कि मैं तुमको अपने दुर्भाग्य का हाल लिख रहा हूं । अगर तुम्हारे दिल में उस पुरानी मुहब्बत की जरा भी गर्मी बाकी हो, जो किसी

मय तुमको मेरे साथ थी, तो तुम उस आदमी की जान बचा
ो, जिसने केवल तुम्हारेही पास रहने के लिए यह तुच्छ नौ-
री स्वीकार की। एमिलिन! तुमसे उसी आदमी की जान
चाने की प्रार्थना करता हूं जिसके दिल में तुम्हारी तस्वीर ने
सवक्त से घर करलिया है-जब तुम्हारी शादी भी नहीं हुई थी।

"हार्वी के नाम से मैं फौज में नोकर हुआ। और यद्यपि
दिल नहीं मानता था, तौभी इस भय से कि कहीं भेद खुल न
जाय, मैं दूरही से तुमको देख२ कर अपना जी बहलाया करता
था। मैंने सुना है, कि कर्नल डार्मन कल लन्डन जानेवाला है।
वह अगर, तुम्हारे अनुनय विनय करने से, मेरे कैदखाने पर
पहरा देने वालों से कह दे, तो मैं रातके समय निकल जा सकूंगा।

"इस अन्धेरी कोठरी में, जहां मैं कैद हूं, यहां भी एमिलिन
की याद मेरे दिल में है, और यह याद उस समय तक न भू-
लेगी, जबतक मौत मुझको इस दुनिया से दूर न कर देगी।

"तुम्हारा—वाल्टर।"

"चिट्ठी एमिलिन के हाथ से गिर पड़ी और वह फूट फूट
कर रोने लगी। उस इश्क की आग—जो किसी समय उसके
दिल में पैठ चुकी थी, भभक उठी; उम्मीदों का वह फूल—जो
किसी समय में खिला हुआ था, किन्तु थोड़े दिनों से कुम्हला
गया था—वह भी फूल उठा। वह नाउम्मीदी—जो वाल्टर के
मरने का समाचार सुनकर उसके दिल में पैदा हो गई थी—थोड़ी
देरके लिए दूर हो गई। उसे निश्चय हो गया कि उसका सच्चा
चाहने वाला अभी तक जीता जागता है। एमिलिन ने अपने
जी को बहुत सम्हालना चाहा, पर वह न सम्हला। थोड़ी देर
के बाद उसने निश्चय कर लिया कि अब उसे क्या करना चा-

लिए, और अपने थरथराते हुए हाथ से चिट्ठी को अँगीठी में डाल दिया और जब तक उसका एक एक खण्ड जलकर स्याह न होगया तब तक वह घबराहट के साथ चारों ओर देखती रही।

"दूसरे दिन सुबह से शाम तक वह अपने पति कर्नल डार्मन को समझाती रही कि वह हार्वीको, जो अफसर को बुरा भला कहने और घायल करने के अपराध में पकड़ा गया था, छुड़वा दे। परन्तु उसने यह नहीं बतलाया कि हार्वी हकीकत में वह आदमी है जिसे वह प्राणों से भी अधिक प्यार करती है।

"अस्तु वह दिन भी आ गया जो हार्वी के कत्ल के लिये नियत किया गया था। सुबह का समय था। अभी हार्वी वधस्थान में लाया नहीं गया था। फौजी लोग हथियारों से सज्जित हो कतार बांधे खड़े थे। जल्लाद एक ओर चुपचाप खड़ा अपनी तलवार की चमक दमक देख रहा था, सब लोगों पर सन्नाटा छाया हुआ था। फौज का वह अफसर, जो कतल का हुक्म देने के लिये खड़ा था, भयानक आवाज में कहने लगा,—"हार्वी को कैदखाने से ले आओ।" उसी समय एक आदमी दौड़ता हुआ आया और उसने अफसर के कान में कुछ कहा; जिसे सुनकर पहले तो वह कुछ चौंका और फिर रूमाल मुँहपर रखकर मुस्कुराने लगा। और कई अफसरों ने भी एक दूसरे को मतलब भरी दृष्टि से देखा, और सब मनही मन कुछ सोच कर चुप हो रहे; किन्तु इन भेदपूर्ण बातों का मतलब थोड़ी ही देर में खुल गया। अर्थात् हार्वी कैदखाने से भाग गया था।"

मिसेज़ पेलहम० । भाग गया था?

मिष्टर पेलहम० । हां भाग गया था, क्योंकि मैं पहलेही ह चुका हूं कि कर्नेल डार्मन अपनी स्त्री को बहुत प्यार करता ा; इसलिए एमिलिन के कहने सुनने से कर्नेल के लन्दन जाने पहलेही कुछ फौजी अफ़सरों से चुपचाप कह दिया था, कि हार्वी को कैदखाने से निकल जाने दें।

"अस्तु इस घटना को एक सप्ताह बीता होगा कि एक दिन शाम के वक्त एमिलिन सैर की इच्छा से बाहर निकली। वह उन्हीं हरे भरे मैदानों की ओर जा रही थी, जिनकी वह प्रायः सैर किया करती थी। यद्यपि ये मैदान शहरों की सैरगाहों की तरह बराबर तो नहीं थे; तथापि यहां बड़ी बहार देखने में आती थी। निगाह बिना रोक टोक दूर दूर तक जाकर वहां के दृश्य अच्छी तरह देख सकती थी। कहीं कहीं कुछ झाड़ियों के झुण्ड थे, जिनमें पक्षी बसेरा लिया करते थे। एमिलिन बिलकुल अपने ध्यान में डूबी हुई थी, किन्तु वह देर तक चुप न रह सकी क्योंकि उस समय उसका पति कर्नेल डार्मन भी जो लन्दन से लौट आया था, उसके साथ था। आगे आगे एमिलिन थी और उसके पीछे पीछे कर्नेल डार्मन था; क्योंकि जिस रास्ते से ये दोनों जा रहे थे, वह बहुत तङ्ग था और केवल एक ही आदमी उसपर से चल सकता था।

कर्नेल डार्मन० । मैं समझता हूं कि हार्वी अब तक बहुत दूर निकल गया होगा।

एमिलिन० । (चौंक कर) हां, लेकिन क्या तुमको इस बात का निश्चय है?

कर्नेल० । हां है तो ऐसाही; किन्तु यदि तुम उसकी

सिफारिश न करतीं तो मैं कदापि उसके छुटकारे का उद्योग न करता। मैं समझता हूं कि तुमने इसीलिए उसकी जान बचा कि मैं उसके खूनका अपराधी न होऊं'

एमिलिन०। तुम्ही सोचो। मुझसे यह कब देखा जाता कि किसी बेकसूर का खून कराके तुम अपराधी बनते।

"ये दोनों इसी प्रकार बातें करते जा रहे थे, कि थो दूर पर इनको एक घाटी दिखाई दी, और साथही कुछ लोग के बातें करने की आवाजें भी इनके कानों में सुनाई दीं। उस जगह कुछ टूटे फूटे झोपड़े खड़े थे और जिप्सियों के दो चार खेमे भी थे। एक झोपड़े के द्वार पर आग जल रही थी और वहां से धुआँ उठकर चारो ओर फैल रहा था। यहां पहुँच कर एमिलिन कुछ चौंकी। उसे उस दिन की बात याद आई, जिस दिन उसे जिप्सी लड़का मिला था, जिसे उसने एक चवन्नी दी थी।

"कर्नल डार्मन ने उस समय लौटने का इरादा किया दोनों कुछ दूर आगे बढ़े होंगे कि वही उस दिनवाला लड़का एमिलिन के पास आकर फिर भीख माँगने लगा।

कर्नल०। दूर हो यहां से तू कौन है?

यह कहते हुए उसने अपनी छड़ी लड़के के शिरपर जोर से मारी, जिससे उसका शिर चकराने लगा और वह रो उठा।

एमिलिन०। हाय! बेचारे बच्चे को क्यों मारे डालते हौ? अफसोस! तुम बड़े निर्दयी हौ। भला उसने क्या अपराध किया था। हाय बेचारा लड़का! न मालूम यह किसका बच्चा है देखो तो बेचारा कैसा बिलक २ कर रो रहा है!

"वह यही कह रही थी कि एक ओर से आवाज आई, "हेन

नरी ! आ मेरे बच्चे आ ! क्या हुआ; तू क्यों रोता है ? मूर्ख ! ैसे समझाता हूं कि शाम को न निकला कर।"

"लड़का रोता हुआ उस ओर चला जिधर से आवाज़ थी; परन्तु साथही एक फटे हुए खेमे से एक लांबा और बसूरत आदमी मैले कुचैले कपड़े पहने हुए निकल आया।

आदमी०। क्यों ! रे तुझे किसने मारा है ?

कर्नल डार्मन०। (ताज्जुब से) ओहो, हार्वी ! तुम हो ! तुम भी विचित्र आदमी हो ! तुम अबतक यहां क्यों ठहरे रहे ? क्या तुन मुझे बदनाम कराओगे ?

वाल्टर०। (क्योंकि वह वास्तव में वाल्टर था; किन्तु कर्नल डार्मन यह हाल नहीं जानता था) क्या आप पूछते हैं कि मैं यहां क्यों हूं ? मैं—

"यह कहते कहते वह रुक गया। कर्नल डार्मन ने फिर पूछा,-हां २ तुम। आगे कहो।"

वाल्टर०। (उदास होकर) जी कुछ नहीं। यही कहता था, कि मैं अचानक इन जिप्सियों की ओर आ निकला। यहां मुझको यह गरीब बच्चा मिला; जिसकी बेरहम मां इसकी खबर नहीं लेती और यह भीख मांग कर अपना पेट भरता है।

कर्नल०। (उस जिप्सी लड़के की ओर उंगली दिखा कर) तो क्या वह यही लड़का है ? लेकिन तुमको दूसरों के बच्चों की फ़िक्र करते फिरने का क्या अधिकार है? और मान लो कि तुमने यह काम उपकार के लिए किया है, तौभी यह ठीक नहीं है। क्या तुम यह नहीं जानते कि यदि किसी को गर मालूम हो जायगा कि मैंने तुमको चुपचाप भगा दिया है मेरी कितनी बदनामी होगी ? (लड़के की तरफ देख कर) ह किसका लड़का है ? कैसा गन्दा है।

वाल्टर० । महाशय ! यह मेरा लड़का है ।

एमिलिन० । (बहुत बेचैन होकर भर्राई हुई आवाज में
वाल्टर ...... वाल्टर ! क्या यह ..... यह हमारा बच्चा ?

" वह अपने को न रोक सकी । जोश में आ गई।
जिप्सी लड़के को उठा के अपनी छाती से लगा लिया ।

कर्नल० । (गुस्से से लाल होकर) हां, यह बात है
वाल्टर ! यह क्या है तुरन्त बता,—यह तेरा लड़का कैसे हुआ

" एमिलिन अपने पति के पांवों पर गिर पड़ी, और रो
कर कहने लगी,—" ईश्वर के लिए मुझपर कड़ाई न करो;
सब बातें साफ २ कह देती हूं । "

कर्नल० । कम्बख्त ! तू ऐसी दुष्टा है!अब मुझपर सब हा
खुला । अपनी शादी से पहले जब तू फ्रान्स गई थी तो स
का केवल बहानाही बहाना था; असल में तू अपने हरामी लड़
को जनने गई थी; ताकि यह भेद किसी पर न खुले ।

एमिलिन० । (रोते हुए) बेशक यही बात है । लेकिन अ
बस करो । इन बातों से मेरा कलेजा फटा जाता है ।

कर्नल० । अब क्यों न कलेजा फटेगा। दुष्टा ! पिशाचिनी
अब भी मुझसे बात बनाती है ? छिनाल कहीं की ! जा,
जाता हूं, यह तेरा चाहनेवाला तेरे पास खड़ा है और यह ते
हरामी लड़का भी मौजूद है । दूर हो मेरे सामने से, मैं
अब जाता हूं ।

" यह कहता हुआ कर्नल मुड़कर चला, किन्तु तुरन्त उस
...न को कमजोर आवाज से पुकारते सुना,—"आह ! ठ
ईश्वर के लिये थोड़ी देर और ठहर जाओ । "

" ...ज हार्मन ने मुड़कर देखा । एमिलिन जमीन प